हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकरका ९९ वाँ ग्रन्थ

चार कहानियाँ

लेखक

सुदर्शन

प्रकाशक

हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर प्राइवेट लिमिटेड

बम्बई

प्रकाशक
नाथूराम प्रेमी, मैनेजिंग डायरेक्टर
हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर प्राइवेट लिमिटेड
हीराबाग, गिरगाँव, बम्बई

तीसरा संशोधित संस्करण
जुलाई, १९५७

मुद्रक
ओम्‌प्रकाश कपूर
ज्ञानमण्डल लिमिटेड
वाराणसी (बनारस) ५१४८-१४

यह दुनिया एक कहानी है।

परमेश्वर दुख-सुख चुनता है,
दुनियाकी कहानी बुनता है
नर सुनता है, सर धुनता है
ऐसी इसमें दिलचस्पी है, ऐसी रंगीन बयानी है
यह दुनिया एक कहानी है।

भूमिका

दुनिया एक कहानी है, जिसे भगवान्ने कहा है। कहानी एक दुनिया है, जिसे आदमीने बनाया है। और दुनियाकी कहानी और कहानीकी दुनिया दोनों मनोहर और मधुर है। आदमीका मन दोनोकी तरफ दौडता है, दोनोके साथ रहकर खुश होता है, और दोनोसे बिछुड़ते समय उसकी आँखोमे दुःख और सन्तापके आँसू भर आते हैं।

दुनिया कब बनी और कब इसका अन्त हो जायेगा, यह कोई नही जानता। कहानीका कब जन्म हुआ, और कब इसका अन्त होगा, यह भी कोई नही कह सकता। हम केवल यह कह सकते है कि जबसे दुनिया है, तबसे कहानी है; जबतक दुनिया रहेगी तबतक कहानी रहेगी। दोनो अनादि है, दोनो अमर है, दोनो अजर हैं।

दुनिया भगवान्की कहानी है, मगर उसके पात्र असुर भी हैं। कहानी आदमीकी दुनिया है मगर उसके पात्र देवता भी हैं। भगवान् अपनी कहानीके पात्रोंको बुराई-भलाईकी स्वतत्रता देता है, और उन्हे देखकर कहानी-लेखककी दुनिया बनती है। कहानी-लेखक अपनी दुनियाके जीवोंको वचन और कर्मकी स्वतन्त्रता देता है, और उन्हे देखकर भगवान्की दुनिया शिक्षा ग्रहण करती है, और अपने लिए जगत् और जीवनके रास्ते ढूँढती है।

जब भगवान् दुनियाकी रचना करता है, तो इस इरादेसे करता है, कि उसके जीव अमन-अमान, प्यार-मुहब्बत और पवित्रताके राजमार्गपर चलेंगे, और चार दिनके नश्वर जीवनमे अपने दिलोंको और दिलोंकी कामनाओंको आवारा न होने देंगे। मगर कई लोग अपने प्रभुकी इच्छाको भूल जाते हैं और अपने लिए अँधेरे और अटपटे रास्ते पसन्द कर लेते हैं।

लेकिन फिर भी भगवान्‌की इच्छा फलती है और दुनियामे पुण्यका प्रकाश कम नही होता।

कहानी-लेखक जब कहानी बनाने बैठता है, तो वह भी इस इरादेसे बैठता है कि उसकी कहानीमे अँधेरा और अँधेरेकी ठोकरे न होंगी। मगर उसके कुछ पात्र उसकी इच्छाके विरुद्ध विद्रोह करते है और अपने लिए वह मार्ग चुन लेते है, जो प्रकाशसे शुरू होकर अथाह अँधेरेमे गुम होता है। मगर इस विरोध और विद्रोहसे भी उसका कहानी-ससार नष्ट और भ्रष्ट नही होता और उसकी कहानीमे मगल-प्रकाश जगमगाता रहता है।

दुनियामे बुरे आदमी हैं, मगर दुनियाका उद्देश्य बुरा नही। इसी तरह कहानीका कोई पात्र गुनाहका ग्राहक और पापका प्यासा हो सकता है, मगर कहानीका उद्देश्य पापको मधुर-मनोहर बनाना नही।

कई आदमी कम-समझ है, वे दुनियाके दुर्व्यसनोको देखकर दुनियासे घृणा करने लगते हैं और जंगलो और वनोमे जाकर समझ लेते है, कि हम दुनियासे बाहर निकल आये। मगर वह अपने आपको धोखा देते है—उनका शरीर, उनकी आत्मा, उनका व्यक्तित्व भी तो इसी दुनियाका भाग है। इस अपने शरीर, आत्मा, व्यक्तित्वका कौन त्याग कर सकता है? कई आदमी, जिनके स्वभावमे रगीनी नहीं है और जिनका दिल काव्य और कलाकी कल्पनासे कोरा है, कहानीका अँधेरा देखकर घबरा जाते है और कहानियोकी किताबे पढ़ना बन्द करके समझ लेते है कि हमने अपने जगत् और जीवनसे कहानीको निकाल दिया। मगर यह उनकी भयंकर भूल है। उनका अपना जीवन और उस जीवनकी एक-एक घटना एक-एक कहानी है। आदमी जबतक जीता है, और जबतक उसके नथनोंमें जीवनका सॉस आता-जाता है, तबतक अपने प्राणोसे क्योंकर जुदा हो सकता है? आदमी जबतक बीती हुई बातको याद करता है और भावी बातका चिन्तन करता है, तबतक कहानीकी दुनियासे बाहर नही जा सकता। यह असम्भव है।

जब आदमी बच्चा होता है तो बड़ोसे कहानी सुनता है, जब बूढ़ा

होता है तो छोटोंको कहानी सुनाता है, जब मर जाता है तो आप कहानी बन जाता है।

मगर इतना ही नही—

यह दुनिया भी कहानी है, कहानी-लेखक भी कहानी है, भगवान् भी कहानी है।

धर्मने कहा—भगवान्ने कहानी-लेखकको बनाया है। अगर भगवान् न होता, तो कहानी-लेखक भी न होता।

यह सुनकर कहानी-लेखकने अभिमानसे गरदन ऊँची की और मुस्कराकर कहा—तू कहता है, भगवान्ने मुझे बनाया है। मै कहता हूँ, भगवान्को मैने बनाया है। अगर मै न होता तो भगवान् भी न होता।

भवानीपुर, कलकत्ता
९ नवम्बर, १९३८

सुदर्शन

पत्थरोंका सौदागर

१

दसहरेके दिन थे। सिकन्धीरकी अन्धकारमय भूमि चन्द्रलोक बनी हुई थी। मकान और दूकाने दुलहिनकी तरह सज रही थी, सड़के शीशेकी तरह चमक रही थी, प्रजा पंछियोंकी तरह खुश थी। क्या मजाल जो सडकपर कही तिनका भी पड़ा मिल जाय। महाराजके आदमी रोज देखने आते थे। शहरसे बाहर सुन्दर खेमोकी दो कतारे दूरतक चली गयी थी। इनमे हिन्दुस्तानकी मशहूर गानेवालियॉ ठहरी हुई थी। कोई लखनऊसे आयी थी, कोई इलाहाबादसे; कोई बम्बईसे आयी थी, कोई कलकत्तेसे। यह सब अपनी-अपनी कलामे उस्ताद थी। किसीकी फीस पॉच सौ रुपया दैनिक थी, किसीकी एक हजार। दो-तीन ऐसी भी थी, जो तीन हजार रुपया रोजानापर आयी थी। खेमोके इस शहरमे हर समय रौनक रहती थी। हर समय खुशी खेलती थी। ऐसा मालूम होता था, जैसे एक छोटा-सा शहर बस गया है। यहॉ यौवन नाचता था, सौन्दर्य गाता था, आनन्द चुहल करता था। जीवनकी ऐसी जीती-जागती, ऐसी हॅसती-खेलती, ऐसी फली-फूली नगरी किसने देखी होगी? नगरी क्या थी, जमीनपर स्वर्गपुरी उतर आयी थी।

शहरके दूसरी तरफ एक और शहर बसा हुआ था। यहॉ ब्राह्मण और पण्डित विराजमान् थे; धोतियॉ बॉधनेवाले, तिलक लगानेवाले, माला फेरने-वाले। उनमेसे कोई भी ऐसा न था जो पचास रुपये रोजानासे अधिक

पाता हो, मगर उनके लिए यही बहुत था। यहाँ हर समय शान्ति रहती थी। न कोई बोलता था,, न कोई चिल्लाता था, न कोई शोर मचाता था। सब अपने-अपने खेमेमे मस्त पड़े रहते थे। उनका समय या तो भाँग रगड़नेमे गुजरता था, या पान चबानेमे, या रियासत के गुदगुदे पलँगोपर टाँगे फैलाकर सोनेमे। इसके सिवाय उन्हे और कोई काम न था। हवनके लिए सामग्री मिल जाती थी, तो हवन कर लेते थे, न मिलती थी, तो न करते थे। मानो वह इस दुनियाके लोभी जीव नही, शान्ति और सन्तोषकी मूर्तियाँ थी। मगर खानेके समय उनमे ऐसी हलचल मच जाती थी कि देखकर हैरानी होती थी। बढ़-बढ़कर हाथ मारते थे। दहाड़-दहाड़ कर माँगते थे। एक दूसरेसे शर्त बद-बदकर खाते थे। दिन-रातके चौबीस घण्टोमे एक यही समय था, जब वह एक दूसरेको ललकारते थे और साबित करते थे कि वे भी जीते-जागते आदमी है।

महाराज पृथ्वीचन्द्र बहादुर हँसमुख और उदार आदमी थे। यो उनकी सालाना आमदनी चार-पाँच लाखसे ज्यादा न थी। रियासतका हाल भी सन्तोषजनक न था। उसमे न पाठशालाएँ थी, न अस्पताल, न धर्मशालाएँ। सड़कोने दाँत निकाल दिये थे। कर्मचारियोको कई-कई महीने वेतन न मिलता था। हर साल सैकड़ों आदमी मौसमी बुखारका शिकार हो जाते थे। जिस साल वर्षा न होती, उस साल तो किसानोकी दशा देखी न जाती थी। महाराज यह सब-कुछ सह सकते थे और सहते थे। लेकिन दसहरेके दिनोमे यह उत्सव न हो; यह न सह सकते थे, न सहते थे। यह उनके जीवन-सिद्धान्तके विरुद्ध था। रियासतमे यह उत्सव सदासे मनाया जाता रहा है, अब कैसे न मनाया जाये? महाराजकी नाक न कट जायगी?—किसानोपर खास लगान लगे, रियासतपर कर्ज चढ़ जाय, राज-घरानेके गहने बेचने पड़ें, मगर यह वार्षिक उत्सव जरूर हो। सारे हिन्दुस्तानकी मशहूर वेश्याएँ बुलाई जाती, राजो-महाराजोंको निमन्त्रण भेजा जाता,—दस दिनतक रुपया पानीकी तरह बहाया जाता। महाराजकी इसी दरिया-दिलीने सिकन्धीरका नाम दूर-दूरतक मशहूर कर

दिया था। कोई साल ऐसा न जाता था, जब उनके उत्सवके चित्र 'टाइम्स' और 'स्टेट्समैन'मे न छपते हो। महाराज उन्हे देखकर किसी दूसरी दुनियामे पहुँच जाते थे और झूमने लगते थे। इतना खर्च करके उन्हें यही मिलता था।

२

मगर कुँवर सूर्यप्रकाशचन्द्र महाराजसे बिलकुल उलटे थे। उन्हे महाराजकी यह रंगरेलियाँ जरा भी पसन्द न थीं। वे कहते थे, यह उत्सव नही, रियासतकी मौत है। इन दिनो हम गाना नही सुनते, दुःखी प्रजाके प्राणोकी चीत्कार सुनते हैं। हमारे पास प्रजाके बच्चोको शिक्षा देनेके लिए रुपया नही, मगर आचार और सभ्यताका लहू चूस लेनेवाली वेश्याओंके लिए रुपया है! यह अन्धेर नही तो और क्या है? वह इस उत्सवका सदा विरोध किया करते थे। उनकी युक्तियोंके सामने महाराजका मुँह न खुलता था। मगर वह बड़े थे। और कुँवर छोटे थे। बड़ा आदमी हारकर भी जीत जाता है, छोटा आदमी जीतकर भी हार जाता है। महाराज कुँवरकी युक्तियोंका जवाब न दे सकते थे, मगर उनके लिए यह उत्सव बन्द करना असम्भव था। उनके खयालमे यह उत्सव उनके कुल-गौरव और मान-मर्यादाका विज्ञापन था। कुँवरके लिए यह मान-मर्यादा रियासतका काला धब्बा था। मगर वे इसे धो न सकते थे। अगर धो सकते, तो अपना लहू भी दे देते।

रातका समय था, महाराज अपने विलास-महलमें बैठे शराब पीते थे और लखनऊकी प्रसिद्ध वेश्याओंकी गजलें सुनते थे। कुँवर सूर्यप्रकाशचन्द्र अजमेरके चीफ्स कालेजमे पढ़ते थे। इन दिनों कालेज बन्द हो जाता है। हर साल कुँवरसाहब घर आ जाते थे; इस साल उन्होंने लिख भेजा था,

मेरा इरादा इन छुट्टियोंमे पंजाबकी तरफ जानेका है, इसलिए घर न आ सकूँगा। महाराजा साहब निश्चिन्त थे। स्त्री, सुरा और सगीत तीन चीजे थी, जिन्हे महाराज इस संसारका स्वर्ग कहा करते थे। इस समय तीनो मौजूद थी। महाराजका दिमाग आसमानपर था; मदिरा पीते थे, मोहिनी मूरतें देखते थे और मदभरी ताने सुनते थे। सहसा एक दरबारीने आकर धीरेसे कहा—कुँवरसाहब आ गये!

महाराज चौक पड़े। हाथका गिलास हाथमे ही रह गया। मन मसोसकर बोले—वे तो कहते थे, हम तो पजाब जा रहे है। सारा मजा किरकिरा हो गया! अब फिर वही उपदेश सुनने पड़ेगे।—कहाँ है?

दरबारीने कानके पास मुँह ले जाकर कहा—इधर ही आ रहे थे। खाँ साहब करमदीनने रोक लिया और उनसे बाते करने लगे। मुझे इशारेसे इधर भेज दिया है। (वेश्याओंकी तरफ इशारा करके) क्या इनसे कहूँ, चली जायें?

महाराजने कुछ देर सोचा, और तब कहा—कोई जरूरत नही, वह मेरा बेटा है, मैं उसका बेटा नही हूँ। मैं आज उसे बता देना चाहता हूँ कि वह सिकन्धीरमे हो या अजमेरमे, इससे दसहरेके उत्सवपर कोई असर नही पड़ सकता। आने दो।

दरबारीने सिर झुकाया और चुपचाप बाहर चला गया। थोड़ी देर बाद कुँवरसाहब आकर महाराजके सामने खड़े हो गये। अखाड़ेकी परियोपर सहमकी दशा छा गयी। वे कुँवरसाहबका स्वभाव जानती थी, उनके आते ही बाहर चली गयीं। उनको बाहर जाते देखा तो महाराजके मुसाहिब भी उठ गये। देखते-देखते सारा हॉल खाली हो गया। अब प्रत्यक्षमे वहाँ बाप-बेटेके सिवाय कोई भी न था मगर मदिराकी मस्ती थी, पवित्रताका प्रकाश था; शासनकी सत्ता थी, जवानीका जोश था। और उनके बीचमे एक बाप और एक बेटा एक दूसरेके सामने खड़े थे, और इस बातपर तुले हुए थे कि आज कुछ निश्चय करके रहेगे।

कुँवरने क्रोधकी उठती हुई लहरको दबाकर धीरेसे कहा—आपको याद है, आपने पिछले साल मुझे एक वचन दिया था ?

महाराज—(बेपरवाहीसे) मुझे कुछ याद नहीं। मैंने कोई वचन नही दिया था।

कुँवर—अबके फिर यह वेश्याएँ बुलायी गयी हैं। इनपर कितना रुपया खर्च हो जायगा ?

महाराज—मुझसे ये बाते पूछनेवाले तुम कौन होते हो ? जितना भी खर्च हो जाय, मुझे परवाह नही।

कुँवर—दो लाखसे कम क्या होगा ?

महाराज—दो लाख क्या, शायद चार लाख हो जाय। बल्कि मेरा ख्याल है, इस साल पाँच लाखसे कम न होगा, ज्यादा ही होगा।

कुँवर—(और भी विनम्रतासे) मगर इसका परिणाम क्या होगा ? रियासतपर कर्ज चढ़ जायगा।

महाराज—मुझे इसकी जरा भी परवाह नही। जबतक मै जीता हूँ यह उत्सव हर साल धूम-धामसे मनाऊँगा। इसके बाद तुम इन दिनों सोग मनाया करना, मैं तुम्हे रोकने न आऊँगा। अब मेरा राज्य है, उस समय तुम्हारा राज्य होगा। मै तुम्हारे काममें दखल देने न आऊँगा, तुम मेरे काममे दखल न दो, और जो मै करता हूँ, चुपचाप देखते जाओ।

कुँवरसाहब सोचने लगे, अब इस बातका कुछ जवाब दूँ या चुप हो रहूँ ?

महाराज—आखिर तुम क्या चाहते हो ? यह त्योहार बन्द कर दूँ, तो तुम खुश हो जाओगे ?

कुँवर—बिलकुल नही। दसहरा हमारी बहादुरीकी यादगार है। इन दिनों हमे अपना भूला हुआ जमाना याद आता है। इन दिनो हमारे सोये हुए भाव जागते है। इन दिनों हमारी रगोमे पुराना लहू दौड़ने लगता है। मै इन वेश्याओंको बुलानेका विरोधी हूँ। इस

पवित्र उत्सवमे ये क्यो पॉव रख जाये ? ये समाजका लहू चूसनेवाली जोके है । ये हमारे नौनिहालोंका कलेजा खा जानेवाली डायने हैं । ये हमारे घरोकी शान और शान्ति मिटा देनेवाली बीमारियॉ हैं । ये हैजे और प्लेगसे भी भयानक है, तपेदिकसे भी भयानक है, काले सॉपोसे भी भयानक हैं । हम अपना धन गरीबोसे छीनकर इनको क्यो दे ? जितना धन दस दिनोंमे ये ले जाती हैं, उससे साल-भर कई कालेज चल सकते हैं, कई अस्पताल चल सकते हैं ।

महाराजके पास इसका कोई जवाब न था, लाजवाब होकर बोले— तो क्या करें ?

कुँवर—जो ब्राह्मण हैं उनके खेमोमें दिया भी नही जल रहा है, यहॉ बिजलियॉ जल रही हैं । मैं ऐसी अन्धेरनगरीमे पानी भी नही पीना चाहता । इससे तो बाहर जाकर भीख मॉग खाना कही अच्छा है । वहॉ और कुछ न होगा, चित्तकी चॉदनी तो होगी ।

यह कहकर कुँवरसाहब डर गये कि मुँहसे क्या निकल गया । वे चाहते थे, हो सके, तो अपने शब्द लौटा ले । लेकिन मुँहसे निकले हुए शब्द वापस नहीं आते । अब महाराजको भी क्रोध आ गया । कुरसीपर बैठे थे, जोशसे उठकर खड़े हो गये, और ईंटका जवाब पत्थरसे देकर बोले—तुम आज चले जाओ । मेरी रियासत सूनी न हो जायगी, यह विश्वास रखो ।

कुँवर—मै भी यहॉसे बाहर जाकर भूखा न मर जाऊँगा, यह विश्वास रखिए ।

यह कहकर कुँवरने बेपरवाहीसे महाराजकी तरफ देखा और वे बाहर निकल गये ।

थोड़ी देर बाद विलास-महलमे फिर नर-पिशाच जमा थे । फिर तबलेपर थाप पड़ी, फिर सुरीली तानें गूँज उठी, फिर शराबका दौर शुरू हो गया ।

३

इधर राग-रंगके ये जलसे हो रहे थे, उधर कुँवर सूर्यप्रकाशचन्द्र गाड़ीमे बैठे दिल्ली जा रहे थे। क्या करेगे, कहाँ रहेगे, उनका प्रोग्राम क्या होगा, इन सब बातोंका उन्हे कुछ भी ख्याल न था, न उन्हे इस बातकी कुछ चिन्ता थी। वे केवल यह चाहते थे कि रियासतसे निकल जाये। वहाँ उनका कोई मुँह न देख ले। वे अगर चाहे तो किसी भी राजासे दस-बीस हजार रुपया मँगवा सकते हैं। यह उनके लिए जरा भी मुश्किल नही। जिसे एक पत्र लिख दे, वही भेज देगा। मगर उन्होने निश्चय किया कि किसीसे भी रुपया न माँगूँगा। अब राजा-महाराजाओके साथ उनका कुछ वास्ता नही। वे अगर उन्हे रुपया भेजेगे तो उनके बापकी खातिर भेजेगे, उनकी खातिर नही और यह वे किसी तरह भी न सह सकते थे। बापसे लड़कर घरसे निकलना और फिर बापके मित्रोसे सहायता लेना, उनके सिद्धान्तके विरुद्ध था। इस समय उनके पास लगभग तीन हजारके नोट थे। यह सिर्फ एक महीनेका खर्च था। मगर अब वे कुँवर नही, मामूली आदमी है। अब उन्हे एक-एक पैसेपर मुहर लगानी होगी, तभी गुजारा होगा। कुँवर साहबको ख्याल आया कि उनके कालेजमे एक क्लर्क था। उसकी तनख्वाह सिर्फ एक सौ रुपया महीना थी। और वह ब्याहा हुआ था और उसके कई बच्चे थे। आखिर वह भी तो किसी तरह गुजारा करता ही होगा? मै तो अकेला हूँ, क्या मेरे लिए एक सौ रुपया महीना काफी नही? कुँवरसाहबने कुछ देर सोचा और तब निश्चय किया कि एक सौ रुपया मासिकसे एक पाई भी ज्यादा खर्च न करूँगा। तीन हजार रुपया है, अढ़ाई साल मजेसे कट जायँगे। इस बीचमें कोई-न-कोई वसीला निकल आयेगा। भगवान्‌की राहे न्यारी है।

अब रातका एक बज गया था। कुँवरसाहबकी आँखे बन्द होने

लगी। उन्होने पॉवसे बूट निकाल दिया, मोजे उतार दिये, कोट उतारकर खूँटीके साथ लटका दिया और सोनेका निश्चय किया। एकाएक वे चौक पड़े—बिस्तरा कहाँ था ? जिन्दा-दिल कुँवरने अपनी भूलपर पूरे जोरसे कहकहा लगाया और वे कमरेकी चिटखनीको अन्दरसे बन्द करके खाली सीटपर लेट गये। यह पहला मौका था जब वे बिना सामानके सफर कर रहे थे। इस समय तक उन्होने बहुतसे सामान और कई-कई नौकरोंके साथ सफर किया था। आज उनके साथ कोई सामान, कोई नौकर न था।

जब उनकी ऑख खुली, उस समय दिन निकल चुका था, और गाड़ी गाजियाबादके स्टेशनपर खड़ी थी। कुँवरको पहले तो सदेह हुआ कि रातकी घटनाऍ घटनाऍ न थी—थके हुए मनके सपने थे। मगर फिर देखा कि वे सचमुच गाड़ीमे है और गाड़ी दिल्ली जा रही है, तो निश्चय हो गया कि रातकी घटना सपना नही, सच है और वे सचमुच घरसे निकल आये है। कुँवरसाहब उठते ही चाय पीनेके आदी थे। सामने चाय देखते ही उनके जीमे आया, आवाज देकर बुला ले। लेकिन फिर रातका फैसला याद आ गया। सोचा, ऐसी फजूल-खर्चीसे सौ रुपयेमे गुजारा हो चुका।

कुँवरसाहबने चाय पीनेका विचार छोड़ दिया और वे 'स्टेट्समैन' का नया अक खरीदकर पढ़ने लगे।

पहले उन्होंने 'वाण्टेड'के कालम देखे, इसके बाद वे ताजी खबरे पढ़ने लगे। सहसा उनके हाथोमे अखबार कॉपने लगा। आठवे पेजके तीसरे कालममे यह खबर छपी थी—

पचास हजार रुपया इनाम

पहाड़ोके महाराज काश्मीर-नरेशने घोषणा की है कि जो आदमी काश्मीरके पहाड़ी लोगोके रस्म-रिवाजपर सबसे अच्छी किताब लिखेगा, उसे पचास हजार रुपया इनाम दिया

जायगा। यह किताब अँगरेजी, उर्दू, हिन्दी, पंजाबी, किसी भी भाषामे हो, लेकिन दो सौ पेजसे कमकी न होनी चाहिए। इनामके लिए सब किताबे २२ दिसम्बरसे पहले चीफ सेक्रेटरीके पास पहुँच जायँ। काश्मीर-नरेशका निर्णय अन्तिम होगा।

कुँवरको आँखें मिल गयी। कई मिनटतक अखबारको जाँघपर रखे सोचते रहे। यह मामूली खबर न थी, उनके दुर्भाग्यके अँधेरेमे जगमगाती हुई रोशनी थी—जैसे काले अक्षरोमे उज्ज्वल उपमा छिपी हो। इस उपमाने उनका मन मोह लिया। भटकते हुएको रास्ता मिल गया; अटकते हुएको हिम्मत मिल गयी।

उन्होने गाड़ीकी खिड़कीसे बाहर झाँककर देखा; वृक्ष, खेत, पानीके जौहड़, बिजलीके खम्भे उड़े जा रहे थे। पता नही किधर, किस देशको। यही दशा कुँवरकी भी थी। वे भी गाड़ीमे बैठे उड़े चले जा रहे थे। उनकी तरह वे भी अकेले थे। उन्हे भी यह पता न था कि वे किधर जा रहे हैं। लेकिन अखबारके समाचारने उनकी मुश्किलको दूर कर दिया। अब उनके सामने एक रास्ता, एक कर्तव्य—एक उद्देश्य था। कितनी दूर, मगर कितना साफ; कितना कठिन, मगर कितना मनोहर! कुँवरने आँखे बन्द कर ली और सफलताके सुन्दर सपनोंमे लीन हो गये। घरसे दूर जा रहे थे, कामयाबीके पास आ रहे थे।

४

तीसरे दिन वे एक हैंड-बैग लिये रावलपिण्डीसे पचास मील परे पहाड़पर चढ़ रहे थे। एक तरफ गगन-भेदी पहाड़ खड़े थे, दूसरी तरफ नीचे जेहलमका सफेद पानी पारेके साँपकी तरह लहरा रहा था, और बीचमे रस्सेकी-सी सड़क पहाड़के चारो तरफ चक्कर खाती हुई धीरे-धीरे ऊँची

होती जाती थी, और उस सड़क और नदीके बीचकी तराईमे छोटे-छोटे खेत थे, छोटे-छोटे झोपड़े थे, छोटे-छोटे झरने थे। कुँवर सूर्यप्रकाशको यह दृश्य ऐसा मनोहर मालूम हुआ कि उनके पॉव रुक गये। यह आदमियोकी कारीगरी न थी, प्रकृतिका सौन्दर्य था। यहॉ वसन्त खेलता था, यहॉ लालित्य नाचता था, यहॉ आह्लाद गाता था। यहॉकी वायुमे मद मिला था। आकाशको उन्होंने इतना महान्, इतनी दूरतक फैला हुआ, कभी न पाया था। पहाड़पर हर साल जाते थे, मगर मोटरमे बन्द होकर। और मोटरकी सवारीमे इतनी फुरसत कहॉ कि कुदरतके सुन्दर दृश्योको काव्यकी ऑखोसे देख सके। राग और रगका रसभरा देश उन्होने पहली बार देखा, और देखकर मोहित हो गये। वह इस दृश्यावलीमे खो-से गये। तग शहरोमे यह बात कहॉ? इस खुली जगहके सामने शहर उन्हें जेलखानेसे मालूम होने लगे जहॉ दम घुटता है, विचार घुटता है, आत्मा घुटता है।

इतनेमे हॉर्न बजा और इसके साथ ही एक मोटर पाससे निकल गयी। कुँवर सूर्यप्रकाशने उसकी तरफ देखा और आगे बढ़े। कुछ ही मिनटमे मोटर पहाड़के चक्करदार रास्तेमे आँखोसे ओझल हो गयी। कुँवर इधर-उधर देखते हुए फिर चलने लगे। सामने एक लड़की आ रही थी, जिसकी पीठपर उसका छोटा भाई था। कुँवरने उसे देखा और मुस्कराकर कहा—यह तुम्हारा भाई है क्या? कैसा प्यारा बच्चा है! क्या नाम है इसका?

लेकिन लड़की डरकर पीछे हट गयी। उसने भाईको पीठसे उतार दिया और दोनों हाथ बॉधकर खड़ी हो गयी।

कुँवरको आश्चर्य हुआ। लेकिन यह आश्चर्य ज्यादा देर न रहा। एकाएक उनकी नजर अपनी पोशाकपर पड़ी—बन्द गलेका रेशमी लम्बा कोट, सफेद चूड़ीदार पायजामा, चमकदार पेटेण्ट लेदरका बूट, सिरपर रियासती पगडी। कौन है जो देखते ही न पहचान ले कि यह कोई राजा-महाराजा है?—वे लोगोंके रीति-रिवाज जाननेके लिए आये है, लोग उनके पास भी न फटकेंगे। कुँवरने निश्चय किया, यह कपड़े,

जितनी जल्दी हो सके, उतार देने चाहिए। आदमी जिस देशमे जाय, उसी देशका लिबास पहनकर लाभ उठा सकता है।

कुछ आगे बढ़े तो एक पहाड़ी आता दिखाई दिया। तेईस-चौबीस सालकी उम्र होगी; चौडा सीना, लम्बा कद। शायद कही जा रहा था, इसीलिए धुले हुए कपड़े पहने था। कुँवरके मनकी मुराद पूरी हो गयी। वह नजदीक आया तो उससे बोले—इधर आओ।

पहाड़ीपर जैसे बिजली गिर पड़ी। हाथ बॉधकर बोला—क्या है सरकार! महाराज क्या दोस है?

कुँवर—अपने कपडे उतार दो।

पहाड़ी—अरे सरकार! यह लीड़े आपके किस काम आयँगे? आपके खिदमतगार भी तो न पहन सकेंगे।

कुँवर—(सुनी अनसुनी करके) तुम कपड़े उतार दो, वरना पुलिसके हवाले कर दूँगा। सुना तुमने! जल्दी करो।

पहाड़ी हैरान था। वह बेचारा समझता न था कि ये मेरे इन कपड़ोंका क्या करेगे? वह कुँवरकी तरफ देखकर मिन्नत-भरे स्वरमे बोला—सरकार, मै नंगा कैसे घर जाऊँगा?

कुँवरने देखा, सख्तीके बिना काम न चलेगा। उन्होने उसको गरदनसे पकड़कर झिंझोड़ते हुए कहा—कपड़े देते हो या नही? अगर तुमने अब भी आना-कानी की तो उठाकर नदीमे फेक दूँगा। समझे या नही?

यह कहकर उन्होंने अपना बैग खोला और उसमेसे एक धोती निकालकर पहाड़ीके हवाले की। पहाड़ीने चारो तरफ देखा कि शायद कोई आता हो। लेकिन वहॉ दूर-दूर तक कोई न था—न कोई मुसाफिर न कोई मोटरकार। हताश होकर वह कपड़े उतारने लगा। पॉच मिनट बाद ही कुँवरसाहब पहाडी नौजवानकी पोशाकमे खड़े थे और पहाड़ीसे कह रहे थे—मेरे कपड़े तुम ले जाओ।

पहाड़ी डरता था। उस बेचारेमें इतनी हिम्मत कहॉ कि ऐसे बहुमूल्य

कपडे पहन ले ! उसने ऐसे कपड़े आजतक न देखे थे, उसे उनको हाथ लगाते भी डर लगता था। वह समझता था, यह कपडे मेरे छूते ही मैले हो जायँगे। डरते-डरते बोला—ना सरकार, यह महारे जोग नही। यह तिहारे जोग ही हैं।

कुँवरने अपने उतारे हुए कपड़े और बूट लपेटकर एक रूमालमे बाँध दिये और उसे देते हुए बोले—ले जाओ। मै आप दे रहा हूँ। कोई हर्ज नही। ब्याह-शादीमे पहन लेना।

मगर उसमे अब भी हिम्मत न थी। लाशको चाहे कम्बलमे लपेटो चाहे अँगीठीके पास रखो, मगर वह गरम नही होती। उसे आग जलाती है, गरमाती नही है।

आखिर कुँवरने बैग उठाया और चलनेको मुड़े। एकाएक उन्हे कोई बात याद आ गयी। पहाड़ीकी तरफ घूमकर बोले—तुम्हारा नाम क्या है ?

पहाड़ी—बेली।

कुँवर—(हँसकर) यह नाम पहले तुम्हारा था, अब हमारा है। अब हम बेली है।

यह कहकर उन्होने बैगको पहाड़ियोकी तरह पीठपर रख लिया और वे कुलियोंकी तरह नगे पॉव काश्मीरकी ओर चले। पहाड़ी उनको पहले तो देखता रहा कि कही लौट न आयँ, मगर जब वे पहाड़के चक्करदार रास्तोंमे गुम हो गये, तो कपड़ोकी गठरी उठाकर चोरोकी तरह भाग गया। इतनेमें ठडी हवा चलने लगी। आसमानपर बादल छा गये और बिजली चमकने लगी।

५

थोड़ी देर बाद चारो तरफ अँधेरा छा गया और वर्षा होने लगी। ऐसे जोरसे जैसे आज सब-कुछ बहा ले जायगी। कुँवर सूर्यप्रकाश चारो तरफ देखते थे, मगर उन्हे कोई आरामकी जगह दिखाई न देती थीं। क्या करें, किधर जायँ, कहाँ आश्रय ले? चिड़ियाँ घोसलोंमे छिपी हुई थी, कीडे बिलोंमे घुस गये थे, मगर एक रियासतके राजकुमारके लिए कोई जगह न थी। वे वर्षामे भीगते, अँधेरेमे ठोकरे खाते, गिरते-पड़ते चले जाते थे। उनके बैगमे तीन हजारके नोट थे, मगर उन नोटोमे यह ताकत नही थी जो उन्हे वर्षासे बचा सकती। यह काम शायद डेढ़-दो रुपयेका छाता अच्छी तरह पूरा कर सकता, मगर इस समय वह भी न था। कुँवर साहब एक जगह ठहर गये और सोचने लगे, परदेसमे यह भी होता है।

एकाएक उन्हे एक रोशनी नजर आयी। यहाँसे कोई आध मीलकी दूरीपर एक झोपड़ेमे एक दिया टिमटिमा रहा था और उसकी मध्यम रोशनीमे पन्द्रह सालकी लड़की अपनी मरती हुई माँके सिरहाने बैठी उसकी सेवा कर रही थी। माँ हड्डियोका पिञ्जर थी, जिसमे कभी जान मालूम होती थी, कभी मालूम न होती थी। अब उसमे हाथ हिलानेकी भी शक्ति न थी। जाहिर था कि अब उसके बचनेकी कोई आशा नही। मगर लड़कीको अब भी आशा थी कि शायद बच जाय! शायद भगवान्‌की कृपा-दृष्टि हो जाय! उसके घरमे किस चीजकी कमी है?

बाहर वर्षा होती थी, बिजली चमकती थी और सन्नाटेकी हवा चलती थी—मानो ये तीनो मिलकर पहाड़को उसकी जगहसे उखाड़कर फेंक देंगी। इस तूफानमें दो दिये टिमटिमा रहे थे। दोनो जर्जर थे, दोनो पुराने थे, दोनोंका तेल धीरे-धीरे समाप्त हो रहा था और दोनोपर मृत्युके क्रूर झोंके हमले कर रहे थे। आखिर बारह बजेके करीब दोनो दिये बुझ गये।

झोपड़ेके अन्दर भी अँधेरा था, बाहर भी अँधेरा था। लड़की फूट-फूटकर रोने लगी। अब उसका इस दुनियामे कोई भी न था। क्या करे, किधर जाय, किससे सहायता माँगे? जीवनके तूफानमे कौन उसकी बाँह पकड़ेगा? दुनियाके रेलेमे कौन उसे सहारा देगा? बेगानोके ससारमे कौन उसका अपना बनेगा? पहले बाप मरा था, आज माँ भी मर गयी। आज वह अनाथ हो गयी, आज वह अकेली रह गयी।

उसने चमड़ेकी कुप्पीसे तेल उँडेलकर दीप जलाया और माँकी तरफ देखा। अब उसमे जीवनका कोई भी निशान बाकी न था। लेकिन हम अपने प्यारोकी मौतपर जल्दी विश्वास नही करते। लाश देखकर भी सन्देह होता है कि शायद मरा न हो, बेहोश हो गया हो, शायद सो रहा हो। कभी-कभी ख्याल आता है, अभी पानीका घूँट माँगेगा। आशा भी कितनी सख्त-जान है। वह मरते-मरते भी उठकर खडी हो जाती है।

यही दशा लड़कीकी थी। उसे भी सन्देह हो रहा था, शायद माँ मरी न हो। उसने अपने दोनो हाथ माँके गालोपर रख दिये और हिलाकर कहा—माँ! ओ माँ!!

माँने कोई उत्तर न दिया।

लड़कीने उसे एक बार फिर झिझोड़ा और कहा—माँ!

मगर यह माँ न थी; मौन, बेजान, ठंडी लाश थी। अब लड़कीको विश्वास हो गया कि माँ इस दुनियामे नही। वह लाशपर गिर पडी और सिसक-सिसक कर रोने लगी।

थोडी देर बाद वह फिर उठी और लाशसे कहने लगी—माँ, यह तुमने क्या किया? मुझे अकेली छोड़कर कहाँ चली गयी? अब दुनियामे मेरा कौन है? सभी बेगाने है, अपना कोई भी नही।

सहसा किसीने दरवाजा खटखटाया। लड़की चौकन्नी हो गयी। इस अँधेरी तूफानी रातमे उसके दरवाजेपर कौन आया है? किसी दूसरे समय वह दरवाजा खोलनेसे पहले बीस बार सोचती, लेकिन इस वक्त उसे जरा भी भय न था। निराशामे भय भाग जाता है।

उसने दरवाजेके नजदीक जाकर आँसुओंसे रुकी हुई आवाजमे पूछा -कौन है इस वक्त ?

एक परदेसी ।

आवाज मीठी थी, लडकीने दरवाजा खोल दिया—देखा, एक देवता-स्वरूप बाईस-तेईस वर्षका लम्बा जवान खड़ा है, सिरसे पैरतक पानीमे भीगा हुआ । हाथमे बैग है, पॉव कॉप रहे है मानो अभी गिर पड़ेगा । लिबास साफ है, चेहरेपर तेज है । उसने हजारो पहाडी देखे थे मगर ऐसा पहाड़ी आजतक न देखा था । उसके बाल चिकने थे, ऑखे चमकदार थी, कद लम्बा था और पॉव,—वे भी बहुत खूबसूरत थे । उस पहाड़के लोगोके पॉव तो ऐसे न होते थे । पता नही, यह किस देशका रहनेवाला है ।

कुँवरने कहा—जरा आज्ञा हो तो थोड़ी देरके लिए यहाँ ठहर जाऊँ । मेह बन्द होते ही चला जाऊँगा ।

लड़कीने मुँहसे कुछ न कहा, लेकिन सिर हिलाकर आज्ञा दे दी ।

६

झोपड़ेके अन्दर जाकर कुँवरने जो कुछ देखा उससे उसका दिल कॉप उठा । यह लडकी अनाथ, अकेली, असहाय है । दुनियामे ऐसा कोई नही, जिसे इसका दर्द हो, जो इसके दुःखोको अपना दुःख समझे, जो इसकी तकलीफमे इसका हाथ बटाये । क्या करेगी, अकेली कैसे रहेगी, कहॉसे खायगी ? वे उसकी सहायता करना चाहते थे, मगर सहायता करनेका कोई उपाय न सूझता था । उनके पास तीन हजार रुपया था । वे सारेका सारा उसे देनेको तैयार थे । लेकिन रुपया एक नौजवान, खूब-सूरत, कुँवारी लड़कीकी रक्षा न कर सकता था । इससे उल्टा उसके प्राण

और सतीत्व सकटमे पड़ जानेका अन्देशा था। पाप कमजोरके रूप और धनपर इस तरह लपकता है जैसे बकरीपर चीता। कुँवरसाहब सोच-सोचकर परेशान हो गये। वे इस विषयपर जितना सोचते थे, अँधेरा उतना ही बढ़ता जाता था। रोशनी नजर न आती थी।

प्रातःकाल आसपासके लोगोको मालूम हुआ, बुढ़िया मर गयी है। सब आकर जमा हो गये। लरजाँ (लड़कीका नाम) के पास कुछ भी न था। उन्होंने चन्दा जमा किया और नदीके किनारे लाश जला दी। इस समय लरजाँकी दीन-दशा देखी न जाती थी। चीख-चीखकर रोती थी और सिरके बाल नोंचती थी। सबकी आँखे भीगी थीं। स्त्रियाँ उसे धीरज देती थी। कहती थी, बेटा, जो हो गया, वह हो गया। मौतसे किसीका जोर नही चलता। बड़े-बड़े बादशाह नही रहे, हम-तुम किस गिनतीमे हैं? मगर लरजाँके आँसू न थमते थे। गरम पानीका एक सोता था जो बराबर बहा जाता था। उसके सामने एक अनिश्चित, भयानक और अँधेरा भविष्य फैला हुआ था। सोचती थी, अब इस दुनियामे मेरा कौन है?

जब लाश जल चुकी तो सब आकर झोपड़ेके बाहर बैठ गये और सोचने लगे—अब लरजाँ कहाँ रहेगी?

एक आदमीने कुँवर साहबसे पूछा—भाऊ, तुम कौन हो?

लरजाँ रो रही थी। यह सवाल सुनकर उसके कान भी खड़े हो गये।

कुँवरने गम्भीरतासे जवाब दिया—परदेसी हूँ। बड़ी दूरसे आया हूँ। अब इस बेचारीके लिए कुछ सोचो। कहाँ रहेगी? यहाँ अकेले रहना तो मुश्किल होगा। रो-रोकर मर जायगी।

पहाड़ियोंके चौधरीने हुक्केका कश लगाकर कुँवरकी ओर देखा और कहा—अरे नानकी मर गयी है तो क्या हुआ, हम तो नहीं मर गये। लरजाँके लिए किसी चीजका टोटा नही। पहले यह खायगी फिर हम खायेगे। पहले यह पीयेगी, फिर हम पीयेगे। इसे क्या फिकर है? यह मेरे घरमे रहेगी। मेरी दो छोकरियाँ पहले है, एक और सही। गुजर हो जायगी। देनेवाला सकर भगवान् है। कोई साला क्या दे सकता है?

मैं समझूँगा, मेरी तीन छोकरियाँ हैं। लरजाँको क्या फिकर है ?

दूसरेने कहा—सच कहते हो भाऊ, लरजाँको क्या फिकर है। फिकर करनेको हम बैठे है। इसकी माँ नही मरी, हमारा एक बाजू टूट गया है और टूटा बाजू गले पडता है।

चौधरीकी दोनों लड़कियाँ चन्दी और मल्की लरजाँके पास आ बैठी। चन्दीने कहा—वहाँ तुझे जरा तकलीफ न होगी। चल तेरे कपडे-बरतन उठा लूँ। अब तू हमारी बहन है।

लरजाँने रोते हुए कहा—मै यह जगह छोडकर कही न जाऊँगी। यह मेरे माँ-बापका घर है। यही रहूँगी।

यह कहते-कहते उसकी चीख निकल गयी। उससे और कुछ न कहा गया। अडोसी-पड़ोसी भी रोने लगे।

चौधरी बोला—यह तो पगली है, यहाँ कैसे रहेगी ? यहाँ रातको इसकी माँका भूत आयगा। अकेली होगी तो डरके मारे मर जायगी। चल चन्दी, इसका लीडा-लत्ता उठा ले। जहाँ हम, वहाँ यह।

लरजाँके आँसू थम गये। उसने दृढ़तासे कहा—कपडा-लत्ता बेसक ले जाओ। पर मै यही रहूँगी।

एक आदमीने गुस्सेमें कहा—यहाँ रहेगी तो चार रोजमे मर जायगी। तुझे यहाँ कौन खिलायेगा, बोल ?

लरजाँने ईटका जवाब पत्थरसे दिया, बोली—जो तुझे देता है, वह मुझे भी देगा। मेरी माँ मरी है, मेरा परमेसर नही मरा। उसे सबोका फिकर है, कुछ तुम्हारा ही फिकर नही है।

चौधरीने सोचा, इस समय चुप रहो, अपने-आप मान जायगी। चोट ताजी हो तो दर्दका अनुभव नही होता। पूरा अनुभव बादमे होता है। थोडी देर सब मिलकर सलाह करते रहे, इसके बाद अपने-अपने घरको चले गये।

अब वहाँ सिवाय लरजाँ और कुँवरके कोई न था।

कुँवरने नरमीसे फटकार कर कहा—तुमने यह क्या किया ? चौधरीके

घर चली जाती, तो तुम्हे जरा तकलीफ न होती। लड़कियोके साथ दिल बहला रहता। यहाँ इस झोंपड़ेमे तुम्हारा कौन है?

लरजॉने कुँवरकी तरफ अजीब ऑखोसे देखा। वह ऑखे कहती थी, तुम्हे क्या मालूम, मैं क्यो नही गयी?

कुँवरसाहब कुछ-कुछ समझ गये। थोड़ी देर पहाडीकी ऊँची चोटियो-की तरफ देखते रहे। इसके बाद ठडी सॉस भरकर बोले—तो क्या करोगी; यह भी सोचा?

लरजॉके पास कोई जवाब न था।

कुँवर साहब जरा आगे खिसक कर मीठी आवाजमे बोले—मुझे एक बात सूझी है, कहूँ?

लरजॉकी मौन ऑखोने पूछा—क्या?

कुँवर—यहॉ कोई गरीब बूढ़ी स्त्री नही जो बिल्कुल अकेली हो।

लरजॉ—(कुछ सोचकर) एक बुढ़िया किरपी है। बेचारी अपने छोकरेके हाथों बहुत परेसान है। वह बेईमान उसे रोज़-रोज मारता है। यहाँ आया करती थी, पर अब क्या करने आयगी। मॉ उसे कभी-कभी धान-चावल दे दिया करती थी। उसकी गुजर-बसर हो जाती थी।

कुँवर—उसे बुला लो। तुम्हारे खाने-पीनेका प्रबन्ध मै कर दूँगा। कितने रुपयेमे काम चल जायगा तुम्हारा?

लरजॉकी ऑखें खुलीकी खुली रह गयी। उसने एक ऐसी बात सुनी थी जिसका उसे ख्याल भी न था। उसे अपने दिलमे एक लहर-सी उठती हुई मालूम हुई। उसे दबाकर धीरेसे बोली—मुद्दा तुम कबतक मेरी मद्दत करते रहोगे?

कुँवर—(मुस्कराकर) जबतक मैं जीता हूँ। बोलो, तुम्हे कितने रुपये महीना मिल जायँ तो दोनोंका गुजारा हो जाय?

लरजॉ—(डरते डरते) पॉच-छः रुपये।

कुँवर—(लरजॉकी ऑखोमे ऑखे डालकर) बस, इतनेमे गुजारा

हो जायगा ? तो उस बुढ़ियाको बुला लो और मजेसे रहो। और हॉ, इस समय तुम्हारे घरमे खाने-पीनेका सामान है या नहीं ?

लरजॉने शर्मसे गरदन झुका ली और जवाब दिया—नही। सब कुछ खतम हो गया। पर आज तो भात-वात कुछ बनेगा नही। कोई-न-कोई भेज देगा। शायद चौधरी ही भेज दे।

इतनेमे एक औरत आ निकली। वह यह कहने आयी थी कि चौधरी कहता है, चली आओ। यहॉ रातको अकेली कैसे रहोगी। कुँवरने उसे एक आना दिया और कहा—जा, जाकर किरपीको बुला ला। कहना, तेरे फायदेकी बात है, जरा जल्दी चल।

थोड़ी देर बाद किरपी आ गयी। कुँवरने उससे कहा—बुढ़िया, तू इसके साथ रहे तो तुझे जरा तकलीफ न हो। तुम दोनोका खर्च मै दूँगा। यहॉ चली आ। वहॉ बेटेकी धौस क्यो सहती है ?

अन्धा क्या चाहे, दो ऑखे। बुढ़िया मान गयी। लरजॉको अँधेरी रातमे रोशनी मिल गयी। अब उसे अपना घर न छोड़ना पडेगा, अब उसे पड़ोसियोमे हीन होकर न रहना पड़ेगा। उसके दिलसे मुसाफिरके लिए रह-रहकर दुआऍ निकलती थी। उसके लिए वह आदमी न था, कोई देवता था, जिसे भगवानने उसकी सहायताके लिए भेजा था। बार-बार उसकी तरफ श्रद्धासे देखती थी, और दुआऍ देती थी।

जब रात हो गयी तो कुँवरसाहबने पॉच पॉच रुपयेके कई नोट निकाले और लरजॉको देकर कहा—ये अपने पास सँभालकर रक्खो। जब खर्च हो जायँगे तो और दूँगा। और देता तो भगवान् है, आदमी वसीला बन जाता है।

यह कहकर कुँवरसाहबने अपना बैग उठाया और झोंपड़ेसे बाहर निकल आये। किरपी हुक्का पीनेके लिए चिलमपर आग रख रही थी। लरजॉने कुवरसाहबसे पूछा—इस वखत कहॉ जाओगे ?

कुँवरसाहबने उँगलीके इशारेसे दिखाकर कहा—वह सामनेका झोपड़ा खाली पड़ा है। मैं वही रहूँगा।

लरजाँ चाहती थी, उन्हें जाने न दे, कहे, यहीं पड़ रहो। मगर शर्मने जबान पकड़ ली। एक भी शब्द न बोल सकी।

कुछ ही देरमें कुँवरसाहब बाहरके अँधेरेमें गायब हो गये। लरजाँने ठंडी आह भरी और कहा—भगवान् इस देवताको सलामत रखे। यह न होता, तो मेरा कौन था। कोई बात भी न पूछता। माँके मुलाहजे माँके साथ ही खतम हो गये। बेटी घुल-घुलकर मर जाती।

७

दूसरे दिन यह घटना बच्चे-बच्चेकी जबानपर थी। दोपहरके समय एक दूकानपर बैठे हुए एक आदमीने कहा—भाऊ, लरजाँकी तो परालब्ध खुल गयी। माँ मरी थी, अम्बीर परदेसी मिल गया। अब उसे क्या टोटा है? रानी बनकर बैठेगी और पकी-पकाई खायगी।

जग्गू बोला—सुना है, खूब मालदार है। पाँच पाँच रुपयेके कई लोट दे गया, और कहता है, और भी दूँगा। उसके पास कई लोट हैं।

खुशियाने आँखे नचाकर कहा—बदमास डाकू मालूम होता है। देख लेना, किसी दिन गिरफ्तार हो जायगा। पुलिसके डरसे छिपता फिरता है।

चौधरी हुक्का पी रहा था। खाँसते हुए रौनकीकी तरफ चिलम बढ़ाकर बोला—यह तुम्हारी खाम-ख्याली है। आदमी बुरा नहीं मालूम होता। जरूर कोई भगवान् है। अपने कामसे इधर आ निकला है। चार दिन रहकर चला जायगा। बदमास नहीं है।

रौनकीने चिलमपर कोयला ठीक करते हुए कहा—बदमास न होता तो आते ही उस छोकरीका महीना क्यों बाँध देता? हमारा महीना तो

किसी भड़ुएने न बॉध दिया। चिकना चेहरा देखकर फिसल पड़ा। वरना लरजॉमे और क्या बात है ?

खुशियाने मुस्कराकर कहा—उसका जमाना है भाऊ ? तुम क्या करोगे, और मैं क्या करूँगा ? परदेसीके मनमें खोट है।

सब हँसने लगे। चौधरी बोला—यह तुम्हारा भरम है ? मेरा हिरदा कहता है, उसके मनमे खोट नही। न लरजॉकी ऑखमे खराबी है। खराबी है तो तुम्हारे हिरदेमे। अगर खराब होता तो अलग झोंपड़ेमे क्यो चला जाता ? चार रुपया महीना किराया देगा।

यह झोंपड़ा चौधरीका था।

जग्गूने चौधरीकी 'हॉमे हॉ' मिलाते हुए कहा—बोलो भाऊ, क्या कहते हो ? चौधरीने लाख रुपयेकी एक बात कह दी है। अब इसका जवाब कोई क्या दे सकता है ?

रौनकीने नाराजगीसे कहा—इसका जवाब हम क्या दे सकते है, इसका जवाब समय देगा। मगर कोई यह तो पूछे कि वह यहॉ आया काहेको है ? कोई देखने लैक सहर तो है ही नही यह। अमीर है, तो दिल्ली जाय, करॉची जाय, कलकत्ते जाय, यहॉ क्या करने आया है ?

यह कहकर रौनकीने चारो तरफ देखा, जैसे ऑखों-ही-ऑखोमे कहा—अब कहो, हमारा ख्याल ठीक है या नही ?

चौधरी जा रहा था। जाते-जाते रुक गया और पीछे मुड़कर बोला—वह यहॉ सैर करने और हवा-पानी बदलने नही आया, काम करने आया है। कोई पत्थरोका बहुत बड़ा सौदागर है, यह उसका गुमासता है ? यहॉसे पहाड़के पत्थर ढूँढ-ढूँढकर भेजेगा और इनाम-बखसीस लेगा। जब काम हो जायगा, चलता बनेगा। करॉची कलकत्तेमें क्या करता ? वहॉ रेत है, पत्थर नही हैं।

चौधरीको जाते देखकर बाकी लोग भी खड़े हो गये। पल-भरमे वहॉ कोई भी न था। सब अपने-अपने घर चले गये।

उधर कुँवरसाहब अपने झोपड़ेमें एक तख्त-पोशपर बैठे किताब

लिखनेकी तैयारियॉ कर रहे थे। इतनेमे किरपी खाना लेकर पहुँच गयी। कुँवरने कलम हाथसे रख दिया और मुस्कराकर कहा—तुमने बहुत तकलीफ की। मै इन्तजाम कर लेता।

किरपी थक गयी थी। तख्तपोशपर थाली रखकर परे बैठ गयी और हॉफते हुए बोली—तकलीफ कोई नही है बेटा, रोज दे जाया करूँगी। और तुम इन्तजाम क्या करोगे? परदेसमे खाना अच्छा न मिले, तो आदमी बीमार हो जाता है। खाना अच्छा मिल जाय तो आदमीको जरा तकलीफ नहीं होती। तुम्हारे लिए तो सरीरकी जान भी हाजर है। रोज ले आया करूँगी।

कुँवर—रोज लाया करोगी? बहुत फासिला है। तुम कमजोर हो, तुमसे चला न जायगा।

किरपी—मुझसे खूब चला जायगा बेटा। लो हाथ धो लो, नहीं तो खाना ठंडा हो जायगा और ठंडे खानेमे मजा नही आता।

कुँवर हाथ धोकर खाने बैठ गये। किरपी जाकर एक घड़ा भर लायी और एक कोनेमे रखकर बोली—जब प्यास लगे, पी लेना।

कुँवर खाते-खाते मुस्कराकर बोले—तुमने तो मेरे लिए गिरस्तीका सामान जुटाना शुरू कर दिया।

किरपी—अरे बाबा, जहॉ पशु-पछीका बच्चा बैठता है, वह भी चार तिनके जमा कर लेता है। तुम तो फिर भी मानस हो।

कुँवर खाना खाकर उठ बैठे। किरपीने हाथ धुलाये और कहा—तुमने तो सब-कुछ छोड़ दिया। मजा न आया होगा।

कुँवर—(कुल्ली करके मुँह पोछते हुए) मजा न आता तो इतना क्यों कर खा जाता? पेटभर कर खा लिया।

किरपी बाहर जाकर मिट्टी ले आयी और गिलास साफ करके घड़ेके पास रख दिया।

कुँवरने गिलास देखकर कहा—इसकी क्या जरूरत है, ले जाओ।

किरपी—प्यास लगेगी तो पानी कैसे पियोगे?

कुँवरने कोई जवाब न दिया। किरपीने कहा—लरजॉको तुमने बचा लिया, वरना रो-रोकर मर जाती। चौधरीका बेटा खड़कू दारू पीता है, और घरमे जाकर हल्ला-गुल्ला करता है। लरजॉ वहॉ कभी न जाती। उसे ऐसी बातोसे घिन है।

कुँवर—अब क्या हाल है? अभी तो बहुत उदास होगी।

किरपी—रो रही है, पर रपता-रपता सँभल जायगी। बड़ी सीधी-साधी छोरी है।

यह कहकर उसने जूठे बरतन उठाये और चली गयी।

कुँवर साहब तख़्त-पोशपर लेट गये।

शामके समय किरपी खाना लेकर आयी, तो अपने साथ एक दिया भी लेती आयी। कुँवर साहब कल अँधेरेमे सोये थे। आज दिया पाकर उन्हे बहुत खुशी हुई, बोले—यह तुमने खूब सोचा। दियेकी बहुत जरूरत थी मुझे। इसके बगैर गुजारा न होता।

किरपीने हाथ धुलाकर थाल सामने रख दिया। कुँवर साहब खाना खाने बैठ गये।

किरपीने कहा—लरजॉने याद दिलाया, मुझे तो ख्याल ही न था।

कुँवर साहबके चेहरेपर मुस्कुराहट आ गयी।

किरपी—कहती थी, पूछ आना, कल क्या बनाये?

कुँवर साहबने एक हाथसे रोटी तोड़ते हुए कहा—जो मरजी हो, बना लो। मैं क्या बताऊँ? जो बनेगा, खा लूँगा।

किरपी—तुम न बताओगे तो और कौन बतायेगा? हम तो मिरच-प्याजके साथ भी मजेसे खा ले। तुम्हारा ही फिकर है।

कुँवर—मैं भी प्याजके साथ खाऊँगा।

एक दिन खाना खाते समय कुँवरने कहा—आज खाना बहुत अच्छा पका है। जी चाहता है खाता ही जाऊँ। किसने पकाया है?

किरपीका चेहरा उदास हो गया, बोली—लरजॉने।

कुँवर—खूब पकाती हैं। मेरी तरफसे शाबाश कह देना। कहना बेली तारीफ करता था।

किरपी कुछ न बोली। कुँवर साहबने उसके चेहरेकी तरफ देखा तो सब कुछ समझ गये। बिगड़ी बात बनानेके लिए बोले—कल भात किसने पकाया था? ऐसा भात मैने कभी नही खाया।

किरपीका सूखा हुआ चेहरा हरा हो गया। खुश होकर बोली—कल मैने पकाया था।

घर जाते ही लरजॉने पूछा—क्यो चाची, दिनभर क्या करते है?

किरपी—बेटी, कागदपर लिखते रहते है। कई कागद लिख-लिख कर काले कर दिये।

लरजॉ—आज कुछ कहते थे?

किरपी—कहते थे, खाना बहुत स्वादु बना है, तुम्हे साबासी दी है। लाओ पीठ ठोक दूँ।

लरजॉ—(मुस्कुराकर) कूड़ क्यो तोलती हो? उन्होने यह बात कभी न कही होगी।

किरपी—मुझे कूड तोलनेकी क्या गरज है। उन्होने जो कहा था, वह मैने तुमसे कह दिया।

लरजॉने जब यह सुना कि कुँवरने मेरे हाथका बना खाना पसन्द किया है, तो उसका चेहरा खिल उठा। सारा दिन खुश रही, दोपहरके समय किरपीसे बोली—यह परदेसी न आता तो मेरा क्या बनता! कोई मुट्ठीभर चावलकी भी मदत न देता। क्यो किरपी?

किरपी किसी विचारमे मग्न थी। चौककर बोली—और क्या?

लरजॉ—इस पराये ससारमे किसीका कौन बनता है। सकटमे अपने भी अलग हो जाते है। कोई किसीकी मदत नही करता। यह आदमी आदमी नही, देओता है। परायेकी मदत देओता ही करते हैं।

किरपी—जरूर देओता है। नही तो इस तरह मदत न करता। मेरा

बड़ा ख्याल रखता है। 'माँ' कहकर बुलाता है। मै तो उसे देखकर खुसी हो जाती हूँ। रोयाँ-रोयाँ असीरबाद देता है।

लरजाँ—परमेसर जाने, कहाँका रहनेवाला है। कही दूरका ही रहनेवाला होगा। ऐसे महापुरुस इस नरकमे तो होते नही।

किरपी—एक मेरा छोरा है, एक यह है। दोनोमे कितना फरक है। वह अपना होकर भी रोज मारता था, यह पराया होकर भी इज्जत करता है। इसमे सरधा-धरम बहुत है।

दूसरे दिन लरजाँने और भी मेहनतसे खाना पकाया और किरपीसे कहा—आज पूछना, खाना कैसा पका है। जरूर पसन्द करेंगे।

जब कुँवर साहब खाने बैठे, तो किरपीने पूछा—आज खाना कैसा बना है?

कुँवर साहबका मुँह भरा हुआ था। खाते-खाते बोले—वाह वा! आज, कलसे भी अच्छा पका है। मजा आ गया। किसने पकाया है—तुमने या लरजाँ ने?

किरपी—लरजाने।

कुँवर—(पानीका घूँट पीकर) खूब पकाती है। मेरा ख्याल था, इधरके लोग सिर्फ चावल ही पकाना जानते होगे। मगर इस लड़कीने मेरी राय बदल दी। सारा दिन क्या करती रहती है? बेकार बैठी रहती होगी, और माँको याद करती रहती होगी।

किरपी—नही बेटा, बड़ा काम करती है। कभी दीवालें लीपती है, कभी सीना-परोना ले बैठती है, कभी नदीके किनारे कपड़े धोने चली जाती है। सुबह-शाम खाना तैयार करती है। मुझे तो कोई काम करने नही देती। मै तुम्हारा खाना ही यहाँ लेकर आती हूँ, बाकी सारा काम अपने हाथसे करती है और खुसी रहती है।

कुँवर साहबने दिलचस्पी लेते हुए पूछा—यह लरजाँ कुछ पढ़ी-लिखी भी है या नहीं।

किरपी—(सिर हिलाकर) नही।

कुँवरको अफसोस हुआ, सिर झुकाकर खाना खाने लगे।

उधर लरजॉके लिए प्रतीक्षाका एक-एक पल एक-एक सालसे कम न था। दरवाजेपर खड़ी सोचती थी—देखूँ, आज क्या कहते है ? दिल बेचैन था, चाहती थी, किरपी झट-पट लौट आये। कभी अन्दर जाती थी, कभी फिर बाहर चली आती थी, मगर किरपी आती दिखाई न देती थी। जाने आज कहॉ बैठ रही है ? पहले तो इतनी देर कभी न होती थी, आज ही धीरे-धीरे चलने लगी। आखिर अन्दर जाकर और मुँह फुलाकर चूल्हेके पास बैठ गयी, कि अब न उठूंगी। मगर दो ही मिनट बाद ख्याल आया, शायद आ रही हो, चलकर देखूँ। लेकिन बाहर आकर देखा तो उसका अभी पता न था। लरजॉ हताश होकर फिर अन्दर चली गयी और बैठ गयी। लेकिन अन्दर बैठना आसान न था; दो ही मिनटमे फिर दरवाजे पर थी। इतनेमे किरपी सामने आती दिखाई दी। लरजॉका कलेजा धड़कने लगा। किरपीने आकर जूठे बरतन झोंपड़ेमे रख दिये और सुस्ताने लगी। लेकिन, लरजॉके दिलको चैन न था। उधर किरपी कुछ बोलती न थी। लरजॉ सोचती थी, कैसे पूछूँ। आखिर बहाना बनाकर बोली—क्यों किरपी, आजका खाना कैसा था ? मुझे अंदेशा है, आज पसन्द न किया होगा, जरा ऑच तेज हो गयी थी, क्यो ?

किरपीका दम चढ़ गया था। हॉंपते-हॉपते बोली—बहुत पसन्द किया बेटी ! कहते थे—मुझे मालूम न था पहाड़ी लड़कियॉ भी ऐसा स्वादु खाना पका सकती हैं। बहुत परससा की, बड़े खुसी हुए। सारा खाना खा गये, जरा भी बाकी नही छोड़ा। बरतन खाली हैं। और खाना होता, तो और भी खा जाते।

लरजॉकी ऑखे चमकने लगी। चेहरेका रग निखर आया, बोली—कुछ और भी कहते थे क्या ?

किरपी—पूछते थे, क्या पढ़ना भी जानती है या नही। मैने कह दिया 'नही'।

लरजाँ उदास हो गयी। कई दिन सोचती रही। आखिर एक दिन

उसने पड़ोसके लड़के रामभजनूको बुला भेजा। यह लड़का चौदह-पन्द्रह सालका था और यहाँसे चार मीलकी दूरीपर एक मिडिल स्कूलमे पढ़ता था। सबेरे जाता था, साँझको लौट आता था। लरजॉने सोचा, उससे क्यों न पढ़ूँ। गरीब है, चार पैसेके लोभमे पढ़ा दिया करेगा। बोली—क्यो रामभजनू, मेरा एक काम करोगे?

रामभजनूने समझा, बाजारसे कुछ मँगवाना होगा। उसने फौरन जवाब दिया—लाओ, क्या ला दूँ?

लरजॉ—लाना कुछ नही। मै पढना सुरू करूँगी। तुम मुझे रातके बकत हिन्दगी पढ़ा दिया करो। एक रुपया महीना मिलेगा। पढ जाऊँगी, तो इनाम अलग। बोलो, पढ़ा जाया करोगे?

रामभजनूने एक रुपया महीनाकी बात सुनी तो उसे दुनियाका राज मिल गया। बोला—पढ़ा दिया करूँगा। कबसे पढ़ोगी? आजसे या कलसे?

लरजॉ—कलसे। पहली किताबकी क्या किम्मत है? पैसे ले जाओ, कल आते बकत खरीद लाना।

लरजॉने एक आना दे दिया और उसे अच्छी तरह कह दिया कि वर्ण-माला लाना भूल न जाना। रामभजनू घर पहुँचा तो उसके पाँव जमीनपर न पड़ते थे। चारों तरफ नाचता फिरता था। चारों तरफ गाता फिरता था। उसके होठोंसे मुस्कराहट फूट-फूटकर निकल रही थी। कहता था, अब क्या परवाह है, एक रुपया महीना मिलेगा। उसके माँ-बाप भी उसकी खुशीमे शामिल थे! गरीबके लिए बेटेकी यह नौकरी तहसीलदारीसे कम न थी। उसकी तरफ देखते थे और फूले न समाते थे, आज उनका बेटा नौकर हो गया था। आज उसने कमाना शुरू कर दिया था। हर महीने एक रुपया कमा लिया करेगा। इतनी छोटी उम्रमे मास्टर बन गया! कितने भाग्यशाली थे वे! जमीनकी मिट्टी आसमानपर पहुँच गयी थी।

दूसरे दिनसे लरजॉने पढ़ना शुरू कर दिया।



उधर कुँवर साहब अपनी किताब लिखनेमे लीन थे। सारा दिन लिखते रहते थे। कभी-कभी रातको भी लिखते थे। पहाड़ी लोग किस तरह रहते हैं, जीवन किस तरह गुजारते है, क्या खाते हैं, क्या पीते है, उनके रीति-रिवाज क्या हैं; त्योहार क्योकर मनाते है, इन सब बातोका पूरा-पूरा वर्णन करते थे। दोपहरको खाना खाकर निकल जाते और जगलमें नीचे उतरकर नदीकिनारे बैठ जाते। यहाँ पानीके किनारे एक बहुत बड़ा पत्थर था, वही उनकी कुरसी थी, वही उनका मेज था। उसपर बैठकर पानीका शोर सुनते थे, ऊपर चारो तरफ हरे-भरे जगलकी तरफ देखते थे और फिर लिखनेमें मग्न हो जाते थे। प्रकृतिके इस मनोहर एकान्त-में बैठकर उनके मनको जो एकाग्रता मिलती थी, वह अपने राजमहलके भीतर कमरोमें भी न मिलती थी। और फिर, यहाँ अपने-आप लिखनेको जी चाहता था। मजमून अपने-आप आकर सामने खड़ा हो जाता था, उसे बुलानेकी जरूरत न पड़ती थी। कलम एक बार चलनी शुरू होती, तो फिर रुकती ही न थी, यहाँतक कि शामका अँधेरा छा जाता और शब्द दिखाई देना बन्द हो जाते। तब कुँवर साहब उठकर ऊपर चले आते और अपने झोंपड़ेमें पहुँच जाते, जिसमे अब उनकी जरूरतकी सब चीजे,—लैम्प, तौलिए, खूँटी, कम्बल, चादरे मौजूद थी। इतनेमें किरपी खाना ले आती। कुँवर साहब खाते खाते उससे बाते भी करते जाते थे। कभी पूछते—तुम्हारे यहाँ ब्याह कैसे होता है; कभी पूछते, बाल बच्चा पैदा होनेपर तुम लोग क्या करते हो? कभी भूतोंकी कहानियाँ सुनते, कभी खेतोंमें घूमते, कभी मन्दिरमे चले जाते और पूजा करनेके पहाड़ी तरीके देखते। कभी-कभी पहाड़ी लोग उनके पास आ बैठते और इधर-उधरकी

बातें करते। इसी तरह कई महीने बीत गये और किताबका लिखना जारी रहा।

एक दिन किरपी बीमार हो गयी। लरजॉने सोचा, किसी दूसरे आदमीके हाथ खाना भेज दूँ। मगर सब लोग अपने-अपने कामपर चले गये थे। विवश होकर खुद थाल उठाकर चली, तो पॉवँ उठते न थे। सोचती थी, उनके सामने कैसे जाऊँगी? उसे उनके सामने जाते शर्म आती थी, मगर फिर भी चली जा रही थी। उधर कुँवर साहब सोचते थे, आज किरपीको क्या हो गया, अभीतक नही आयी! आज उनको अपनी किताबका सबसे दिलचस्प और रगीन भाग, 'पहाड़पर प्रेम' लिखना था। वे चाहते थे, जितनी जल्दी हो सके, घरसे खाना खाकर निकल जायॅ, और उस अध्यायको पूरा कर ले। यह अध्याय उनकी किताबकी जान था। आज ही वे जल्दी चले जाना चाहते थे, आज ही किरपीके आनेमे देर हो गयी। कुँवर साहब झोपड़ेके दरवाजेपर खडे उसकी राह देखे रहे थे, और झुंझला रहे थे। इतनेमे वह दूर फासलेपर आती दिखाई दी। मगर यह वह तो न थी। न वह चाल, न वह कद। कुँवर साहबने ध्यानसे देखा। एकाएक उनके शरीरमे बिजली-सी दौड़ गयी—यह किरपी न थी, लरजॉ थी।

कुँवर साहबका कलेजा धड़कने लगा। अन्दर जाकर चुपचाप तख्त-पोशपर बैठ गये और मीठे विचारोंकी मीठी दुनियामे गुम हो गये।

लरजॉ बाहर आकर दरवाजेपर खड़ी हो गयी। उसका साया देखकर कुँवर साहबने कहा—क्यों किरपी, आज क्या हो गया? बहुत देरमे आयी। चली आओ अन्दर।

कुँवरने यह झूठ क्यों बोला, यह वे न समझते थे।

लरजॉने जवाबमें बोलना चाहा मगर उसकी जबान न खुली। क्यों, यह वह भी न समझती थी।

कुँवर साहब—(ऊँची आवाजसे) चली आओ। बाहर क्यों रुक

गयी ? आज मुझे बड़ा काम है, खाना खाते ही भाग जाऊँगा। जरा जल्दी करो, देर न हो जाय।

कुँवर साहबकी आवाजमे कॅपकॅपी थी। मगर इससे ज्यादा कॅपकॅपी उनके दिलमे थी। यह उनके लिए नया अनुभव था। ऐसा आजतक कभी न हुआ था। ऑख, हौंठ, कान—सब लाल हो गये।

बाहरसे एक मीठी और महीन आवाज आयी—आज किरपी बीमार है, मै आयी हूँ।

कुँवर साहबने ऐसा जाहिर किया जैसे उनको मालूम ही नही कि यह कोई दूसरी स्त्री है। हैरानसे होकर बोले—तू कौन है ?

यह कहते-कहते कुँवर साहब बाहर निकल आये और चौंककर बोले—कौन, लरजॉ ! अरे तुमने क्यों तकलीफ की ? मुझे कहलवा भेजती, मैं वहॉ आ जाता। यह तुमने बहुत जबरदस्ती की।

लरजॉने शरमसे जमीनकी तरफ देखते-देखते जवाब दिया—इसमे जबरदस्ती काहेकी है ? जरा-सा तो फासला है।

कुँवर साहबने उसके शरमसे तपते हुए लाल चेहरेकी तरफ देखा और कहा—लाओ, थाल मुझे दे दो। तुम थक गयी होगी।

यह कहकर कुँवर साहबने हाथ आगे बढ़ा दिये। मगर लरजॉ दो कदम पीछे हट गयी और थालको छातीसे लगाकर बोली—थक क्यों जाऊँगी ? कोई बीमार तो नहीं हूँ।

कुँवर साहब मुस्कराकर एक तरफ हट गये और लरजॉको जानेका रास्ता देते हुए बोले—अच्छा भई, माफ कर दो, भूल हो गयी।

लरजॉ अन्दर जाकर खड़ी हो गयी और चारो तरफ देखने लगी कि थाल कहाँ रखूँ। कुँवर साहबने अन्दर आकर यह देखा और कहा—तख्तपोशपर रख दो। खड़ी क्यों हो ?

मगर तख्तपोशपर कपड़ा बिछा था। लरजॉने वह कपड़ा जरा-सा हटाकर तह कर दिया और उस खाली जगहपर थाल रख दिया। इसके बाद धीरेसे पूछा—पानी कहॉ है ? हाथ धुला दूँ।

कुँवर साहबने उँगलीसे कोनेकी तरफ इशारा किया। इस समय उनकी उँगली भी काँप रही थी।

लरजॉने घड़ेसे पानी उँड़ेला और कुँवर साहबके हाथ धुलाये। तब कुँवर साहब खाना खाने लगे। लरजॉ बाहर जाकर धूपमे खड़ी हो गयी और झोपड़ेको बड़े ध्यानसे देखने लगी। कुँवर साहबने पुकारकर कहा—जरा पानी तो दे जाना।

लरजॉ लोटेसे पानी देकर फिर बाहर जाने लगी। कुँवर साहबने पानीका गिलास हाथमे लिया और मुस्कराकर कहा—बाहर भागी जाती हो। क्या तुम्हे मुझसे डर लगता है?

यह कहकर वे पानी पीते-पीते कनखियोसे लरजॉकी तरफ देखने लगे। लरजॉ सिर झुकाये वही रुक गयी। इस समय वह बड़े असमजसमे पड़ी थी। दिल कहता था, ठहर जा, शरम कहती थी, भाग जा। न बाहर जा सकती थी, न वहॉ ठहर सकती थी। थोड़ी देर बाद बोली—डर तो नही लगता। आपसे डर काहेका?

इस समय उसकी आवाज ऐसे कॉप रही थी जैसे कोई सितारके तारोंको उँगलीसे छेड़ दे और वे हिलने लगे। कुछ इसी तरहका कंपन लरजॉकी आवाजमे था।

कुँवर साहबने भातसे मुँह भर लिया और खाते-खाते कहा—डर नही लगता तो कॉपती क्यो हो?

लरजाँ—जाड़ा लगता है।

कुँवर—तो वह कम्बल पड़ा है, ओढ़कर बैठ जाओ। क्या मजाल जो फिर जाड़ा लग जाय। बड़ा गरम है।

लरजॉने जमीनकी तरफ देखते हुए चोर-नजरसे कम्बलकी तरफ ताका और चुपकी खड़ी रही। कुँवर साहब बोले—कम्बल ले लो। जाड़ा न लगेगा।

मगर जब लरजॉ अब भी अपनी जगहसे न हिली तो बोले—यह अजीब शरम है। सरदीसे कॉपती रहोगी मगर कम्बल न ओढ़ोगी।

लरजाँका मुँह शरमसे लाल हो गया। क्या कहती, क्या न कहती। कुँवर साहब धीरे-धीरे आगे बढ़े चले आ रहे थे। लरजाँ सोचती थी कि औसर मिले तो भाग खड़ी हूँ। लेकिन कुँवर साहबने अभी अपना आधा खाना भी खत्म न किया था। मुँहका भात निगलकर बोले—भई, तुम कम्बल न ओढ़ोगी तो मै खाना न खाऊँगा। यह कहे देता हूँ।

यह कहकर उन्होने खानेका थाल परे सरका दिया और कहा—मै आदमी हूँ, राक्षस नही हूँ कि तुम सरदीसे काँपो और मै मजेसे खाना खाता रहूँ। या तो कम्बल ओढ़ो या थाल उठा लो। बोलो, दोनोंमेसे क्या मजूर है ? जो तुम्हे मंजूर, वह मुझे मंजूर।

लरजाँ पछताती थी कि नाहक जाड़ेका नाम लिया। अब क्या करूँ ? उन्होने एक बात पकड़ ली, अब उसे छोड़ते ही नही हैं। निचला होठ दाँतों-तले दबाकर बोली—आप खाना खाइये। मै जाड़ेसे मर न जाऊँगी।

कुँवर—तुम थाल उठा लो। मैं भी भूखसे मर न जाऊँगा।

लरजाँको हँसी आ गयी, बोली—यह आपकी जबरदस्ती है। कोई देख लेगा, तो क्या कहेगा ?

कुँवर—क्या कहेगा ? कम्बल ओढ़कर बैठना कोई पाप नही है। और अगर यह पाप है तो यह पाप सारी दुनिया करती है। बोलो, मै सच कहता हूँ या झूठ ? मै भी हर रोज ओढ़ता हूँ।

लरजाँके पास इसका जवाब न था, चुपचाप जमीनकी तरफ देखती रही, और मन-ही-मन मुस्कराती रही। समझती सब कुछ थी, बोलती कुछ भी न थी। ऐसे समयमे कोई दूसरी स्त्री होती, तो वह भी न बोल सकती।

कुँवर साहबने बनावटी रुखाईसे कहा—तो अब उठ बैठूँ ? लो हाथ धुला दो और जाओ। किरपी अकेली होगी।

लरजाँने सहमकर कहा—आप खाना तो खा ले। क्या आज भूखा रहनेका विचार है आपका ?

कुँवर साहब—न भई, हमे मालूम हो गया, तुम हमे खाना खिलाना

नहीं चाहती। वरना जरा-सी बात है, मान लेती। हमारा जी खुश हो जाता।

यह कहते-कहते कुँवर साहब उठकर खड़े हो गये और तख्तपोशसे नीचे उतरने लगे। यह देखकर लरजॉने जल्दीसे कम्बल उठा लिया और बोली—लो भई, अब तो खा लो। मैंने हार मान ली।

कुँवर साहबने देखा कि मैदान मार लिया, तो बोले—तुम ओढ़ लो, फिर खाऊँगा, पहले नही।

लरजॉने कम्बल ओढ़ लिया, मगर शरमसे मरी जाती थी। उधर कुँवर साहब खुशीसे किसी दूसरी ही दुनियामे थे। कितनी देरतक शौककी दृष्टिसे लरजॉकी तरफ देखते रहे। मगर उसने सिर न उठाया, न उनकी तरफ देखा, न हिली-डुली। ऐसा मालूम होता था जैसे वह जीती-जागती स्त्री नही, चीनीकी निर्जीव मूर्ति है; जैसे किसी दूकानदारने किसी गुड़ियाको कम्बल ओढ़ाकर दूकानमे रख दिया हो।

९

उस दिन कुँवर साहबका दिल किताबमे न लगा। पहले तो बार-बार कुछ सोचते थे और मुस्कराते थे, बादमे ख्याल आया कि मैंने भूल की। मुझे यह करना उचित न था। लरजॉ दिलमे क्या कहती होगी? यही कि कितना ओछा और थुड़दिला है, चार पैसेसे मदद क्या कर दी कि सिरपर चढ़ बैठा। कभी-कभी ख्याल आता, कहीं नाराज न हो गयी हो। जाने मुझे क्या हो गया था, मेरे सिरपर कैसी सनक सवार हो गयी थी। अपने-आपमे ही न रहा। लरजॉ जरूर नाराज हो गयी होगी। अगर नाराज हो गयी है तो कैसे मनाऊँगा?—इसके आगे कुँवर साहबको कोई रास्ता दिखाई न देता था। सारा दिन असमंजसमें पड़े रहे। एक शब्द

भी न लिखा गया। सुबह जैसे गये थे, शामको वैसे ही लौट आये। उनको भय था कि अब लरजॉ आप खाना न लायेगी, किसी दूसरेके हाथ भेज देगी और उनकी दुनिया, दुनियाकी बहारोंसे खाली हो जायगी।

लेकिन उनके सारे अंदेशे गलत निकले। इधर दियेमे बत्ती पड़ी उधर लरजॉ खाना लेकर आ गयी। कुँवर साहबने देखा, उसके मुँहपर क्रोध अथवा नाराजगी न थी। यह देखकर उनकी छातीसे बोझ-सा उतर गया, मुस्कुराकर बोले—मेरा ख्याल था, तुम इस समय आप न आओगी, किसी दूसरेको भेजोगी।

लरजॉने खानेके थालको तख्तपोशपर रख दिया और सीधी खड़ी होकर जवाब दिया—क्यो?

कुँवर—अब इस 'क्यों' का जवाब क्या दूँ? मेरा ख्याल था, तुम न आओगी। जरा पानी ले आओ, हाथ धो लूँ।

लरजॉने कुँवर साहबके हाथोंपर पानी डालते हुए कहा—अगर आप आज्ञा दे, तो कलसे मै न आऊँ। किसी दूसरेको भेज दूँ। मै तो आपके हुक्मकी लौंडी हूँ।

कुँवरने तौलिएसे हाथ पोंछते हुए जवाब दिया—मेरा यह मतलब न था। मैं डर रहा था, कि कही तुम मुझसे नाराज न हो गयी हो। लरजॉ, सुबह मुझसे बड़ी मूर्खता हुई। मै चाहता हूँ, तुम मुझे माफ कर दो, अब ऐसी भूल न होगी। तुम्हे शायद विश्वास न हो, मै सारा दिन पछताता रहा हूँ।

लरजॉने जाकर घड़ा उठा लिया और सुनी-अनसुनी करके बोली—आप खाइये, मैं पानी भर लाऊँ।

कुँवर—रातका समय है, अकेली कैसे जाओगी? तुम रहने दो, मै आप भर लाऊँगा। इस समयके लिए तो काफी होगा। है या नही?

लरजॉ—कलका बासी है, यह न पीजिये। अभी ताजा भर लाती हूँ। रात है तो क्या हुआ, कोई मुझे उठा न ले जायगा। आप खाइये, मैं अभी आयी जरासी देरमे।

कुँवर साहब रोकते ही रह गये, मगर लरजाँने मुस्कुराकर उनकी तरफ देखा और चली गयी। कुँवर साहब खाना खाते जाते थे और मनमे सोचते जाते थे। कहाँ सिकन्धीर और कहाँ यह पहाडी जगह! कहाँ मैं और कहाँ यह लड़की! कुदरतके खेल निराले है। ऐसी सुन्दर लड़की मैंने आज-तक नही देखी, और फिर कितनी भोली है। जरा-सी धमकी दी, जाकर चुपचाप कम्बल ओढ़ लिया। अब पानी भरने चली गयी है। किरपीने तो कभी न कहा था कि यह पानी बासी है, न पियो। इसे जरूर मेरा ख्याल है। न होता तो इस समय कभी न आती। आती तो मुँह फुलाये होती। सादा पोशाकमें भी परी मालूम होती है!

इतनेमे लरजाँ घड़ा उठाये हुए अन्दर आ गयी और बोली—लो देख लो, कितनी सीघर ले आयी।

यह कहकर उसने घड़ा कोनेमे रख दिया और ओढ़नीसे मुँह पोंछकर लोटा पानीसे भरने लगी।

कुँवरने खाते-खाते कहा—दौड़ती हुई आयी हो ना?

लरजाँ—बिलकुल नही। इस तरह हौले-हौले आयी हूँ।

लरजाँने धीरे-धीरे चलकर दिखाया। कुँवर साहब कहकहा लगाकर हँस पड़े। अचानक उनकी दृष्टि लरजाँकी ओढ़नीपर पड़ी। बोले—यह तो भीग गयी है। कही बीमार न हो जाना।

लरजाँने पानीसे गिलास भरकर लोटा तख्तपोशपर रख दिया और ओढ़नीका भीगा हुआ कोना निचोड़ते हुए कहा—लो, अब बीमार न हूँगी। तुम्हारे हुकुमोने तो तंग कर दिया बाबा!

कुँवरने एक ही घूँटमे गिलासका सारा पानी खत्म कर दिया तथा और पानी लेनेके लिए गिलास बढ़ाते हुए शरारती स्वरमें कहा—मेरा ख्याल है कि अभीतक सारा पानी नहीं निचुड़ा।

लरजाँ—(तुनककर) निचुड़ गया है।

कुँवर—जो बाकी है मै निचोड़ दूँ? जरा इधर आओ तो मेरे पास।

लरजाँ—(मुस्कुराकर) तुम किरपा करो मुझपर!

लरजॉने गिलास पानीसे भर दिया और कुँवर साहब खाना खाने लगे। कुछ देर सन्नाटा रहा। वह सन्नाटा जिसमे कोई भी नही बोलता—जब हमारी बोलनेकी शक्ति जाती रहती है। सहसा कुँवरने चौंककर पूछा—अरे, किरपीका क्या हाल है? यह तो तुमने बताया ही नहीं।

लरजॉ—जूडीसे बेहोस पड़ी है।

कुँवर—कुछ दवा भी दी है या नही?

लरजाँ—अभी तो नही दी।

कुँवर—वह मेरा बैग उठा लाओ।

लरजॉने हाथ धुलाये। कुँवरने रूमालसे हाथ-मुँह साफ करते हुए कहा—दो गोलियॉ देता हूँ। जाकर अभी गरम पानीके साथ खिला देना। कल बुखार उतर जायगा।

लरजाँने आश्चर्यसे कुँवरकी तरफ देखा, और ऑखो ही ऑखोंमे पूछा, क्या तुम डाकदर भी हो? और बैग लाकर सामने रख दिया। कुँवर बैग खोलकर वेजीटेबल पिल्सकी शीशी देखने लगे और जो कुछ हाथ आता उसे उठाकर बाहर रखने लगे। इतनेमे लरजॉने एक लम्बी-सी लोहेकी चमकदार चीज हाथमे पकड़ ली और उसे उलट-पुलट कर देखते हुए पूछा—यह क्या है?

कुँवर साहबने एक हाथसे बैगके अन्दर टटोलते हुए जवाब दिया—यह टार्च है, टार्च।

लरजॉ—टार्च क्या होता है?

कुँवरने उसकी उँगली एक बटनपर रखकर कहा—जरा दबाओ।

और आप फिर बैगकी चीजें उलटने-पुलटनेमे लीन हो गये।

लरजॉने दबाया। एकाएक वह जल उठा। लरजॉने डरकर उसे जमीनपर रख दिया और आप दो कदम पीछे हट गयी। टार्च बुझ गया। कुँवरने मुस्करा कर कहा—देखा, यह भूत-विद्या है। खबरदार, फिर हाथ

न लगाना। वर्ना भूत आकर रोशनी कर देगा, और तुम डरकर बाहर भाग जाओगी।

लरजॉने टार्चको उठाकर फिर बटन दबाया और उसकी तेज रोशनी देख-देखकर बच्चोंकी तरह खुश होने लगी। कभी जलाती थी, कभी बुझाती थी, कभी कुँवरकी तरफ देखकर मुस्कुराती थी और कहती थी—यह भूत-विद्या मुझे भी आ गयी। यह देखो रोशनी हो गयी, यह देखो रोशनी बुझ गयी। और यह देखो, मै डरकर बाहर नही भाग गयी।

इतनेमें कुँवरने वेजीटेबलकी दो गोलियाँ कागजमें लपेटकर लरजॉको दे दी और कहा—गरम पानीके साथ आज रातको सोते समय खिला देना। समझ गयीं?

लरजॉने पहले गोलियाँ खोल कर देखी, फिर ओढ़नीके कोनेमें बॉध ली, फिर बोली—समझ गयी। और वह तेल गिर क्यो नही पड़ता?

कुँवर साहब बैगकी सब चीजें उसमे ठूँस ठूँस कर रखने लगे, और लरजॉकी तरफ देख-देखकर मुस्कुराने लगे। मगर लरजॉने यह सब कुछ न देखा, और टार्चकी रोशनी बाहरके पेड़ोंपर फेंकते हुए और दिलचस्पी लेते हुए पूछा—इसमें तेल कहाँ है? और यह तेल गिर क्यों नहीं पड़ता।

कुँवर—इसमें तेल नही डालते। यह तेलके बिना ही जलता है।

लरजॉ—वाह। तेलके बिना कैसे जलता है? भला तेलके बिना भी रोशनी हो सकती है?

कुँवर—हो सकती है या नही, इसका तो पता नहीं पर हो रही है। अब तुम न मानो तो कोई क्या करे? इसके अन्दर बैटरी है, उससे···

लरजॉने गला छुड़ानेके लिए कहा—चलो भई, मान लिया, हो जाती होगी। अब तुमसे झगड़ा कौन करे? तुम्हे झगड़ेकी बहुत आदत है।

यह कहकर उसने टार्च हाथसे रख दिया, लेकिन उसकी ऑखें उसीपर जमी थीं। कुँवर साहब भाँप गये कि टार्च लरजॉको पसन्द आ

गया है, बोले—ले जाओ। कभी अँधेरेमे बाहर जाना पड़ता होगा। बड़े कामकी चीज है। मैं और मँगवा लूँगा।

मगर लरजॉने टार्च न लिया और जूठे बर्तन उठाकर चलनेको तैयार हो गयी। कुँवरने एक हाथसे उसे रुकनेका इशारा किया, दूसरे हाथसे लैम्प बुझाते हुए बोले—चलो, मैं भी चलता हूँ। किरपी कहेगी मुझे देखने भी नही आया। तुम्हे पहुँचा आऊँगा, उसे देख आऊँगा।

थोड़ी देर बाद रातके अँधेरेमे टार्चकी सहायतासे दोनो पत्थरोंसे बचते हुए जा रहे थे। अचानक कुँवर साहबका पॉव फिसल गया, गिरते-गिरते बचे। लरजॉने बचपन और सादगीसे अपना हाथ बढ़ाकर कहा—तुम तो गिर ही गये थे। लो, मेरा हाथ पकड़ लो।

कुँवरने लरजाँका हाथ पकड़ लिया और पॉव जमा-जमाकर चलने लगे; ठीक उसी तरह जिस तरह आशा-निराशा लोगोंका हाथ थामकर उन्हे चलाती है।

कुँवरने कहा—तुमने मेरा हाथ पकड़ा है, अब छोड़ न देना। सारी उम्र पकड़े रहना।

लरजॉने हाथ छोड़ दिया और कहा—धत्।

१०

कुछ तो इसलिए कि पहाड़पर चोरी नही होती, कुछ इसलिए कि कुँवर साहब बेपरवाह आदमी थे, जब वे बाहर जाते थे, तो किवाड़ बन्द कर जाते थे, ताला न लगाते थे।

एक दिन शामको किताब लिखकर लौटे तो झोंपड़ा शीशेकी तरह चमक रहा था। हर एक चीज करीनेसे रखी थी, फर्श साफ था, दीवारें मिट्टीसे लेपी हुई थीं, छतपर जालेका नाम न था। कल यही झोंपड़ा मैला-

कुचैला था, आज नहा-धोकर साफ-सुथरा बन गया था। कल ऐसा मालूम होता था कि रो रहा है, आज ऐसा मालूम होता था, कि मुस्करा रहा है। आकाश-पातालका अन्तर पड़ गया था। काया ही पलट गयी थी।

कुँवर साहब देखते ही समझ गये कि यह लरजाँका काम है। किरपीसे यह आशा न थी, न उसे सफाईका इतना ख्याल था, न वह अभी इतनी दूर चलकर आ सकती थी। जरूर मेरी अनुपस्थितिमें लरजाँ यहाँ आकर सफाई कर गयी है। कुँवर साहबके सामने नया ससार खुल गया। पहले समझते थे, लरजाँ रूपवती है, भोली-भाली है, अब मालूम हुआ सुघड़ और घर-गृहस्थीके कामोमे भी कुशल है। बिना कहे काम करती है, शौकसे करती है। कुछ ही घटोमे मिट्टीके झोंपड़ेको शीशा बना दिया। इस शीशेमे उन्होने लरजाँकी जो तस्वीर देखी, वह कितनी मन-मोहनी थी, कितनी चित्ताकर्षक। कुँवर साहबपर जादू हो गया।

एक सप्ताह इसी तरह रंगीन सपनोमे बीता। इसके बाद किरपीका बुखार उतर गया और लरजाँका आना-जाना बन्द हो गया। अब फिर किरपी खाना लेकर आती थी। कुँवर साहबको खानेमे वह पहले-सा स्वाद ही नहीं आता था। पहले उनका भोजन घटेभरसे कममे समाप्त न होता था, धीरे-धीरे खाते थे और शौकसे खाते थे। अब दस ही मिनटमे हाथ धोकर उठ बैठते थे। पहले थालकी हर एक चीज समाप्त कर देते थे, अब कुछ खाते थे, कुछ छोड़ देते थे। एक दिन लरजाँने पूछा—ये खाना क्यो छोड़ देते हैं? पहले तो खूब मजेसे खाते थे।

किरपी—अब भी मजेसे खाते है।

लरजाँ—मजेसे खाक खाते है, आधा थाल तो वापस आ जाता है। कुछ बीमार तो नही हैं?

किरपी—बीमार तो नही है। हाँ, काम ज्यादा करते है, हर वखत कुछ सोचते रहते हैं।

लरजाँ—काम करनेसे भूख तो नहीं कम हो जाती, उलटा बढ़ जाती

है। जरूर कुछ बीमार होगे। आज खाना लेकर मै जाऊँगी। देखूँ, क्या बात है जो खाना कम खाते हैं।

किरपीने मुस्कराकर कहा—सायद तुम्हे कुछ बता दे, मुझसे तो कुछ कहा नही।

उस दिन फिर लरजॉ खाना लेकर गयी। कुँवर साहब लिखे हुए कागज नम्बरवार लगाकर बम्बईके किसी प्रेसको भेजनेकी तैयारियॉ कर रहे थे। उनकी आधी पुस्तक समाप्त हो चुकी थी। लरजॉको आते देखकर चौक पडे और मुस्कराकर बोले—अरे! आज फिर किरपी बीमार हो गयी क्या? यह बुढ़िया अब बहुत तंग करने लगी। इसे कहो, बार-बार बीमार न हो। इस तरह काम न चलेगा। तुम्हे खाना लाना पड़ेगा। क्या बीमारी है उसे अबके?

लरजॉने थाल रखनेके लिए तख्तपोशपर जगह बनाते हुए कहा—क्यों गरीबको फिर बीमार करते हो, अभी तो तपस्या करके उठी है। पहली कमजोरी भी दूर नही हुई। अबके बीमार हुई, तो छै महीने-तक न उठेगी।

कुँवर—किसीके कहनेसे क्या होता है? आज तुम खाना लेकर आयी, तो मैंने समझा, शायद फिर बीमार हो गयी। अगर वह बीमार नही है, तो आज तुम कैसे आ गयी? पर हमारा तो जलसा हो गया। वह रोज न आये, हमारा रोज जलसा हो जाया करे।

लरजॉ—(शरमाकर) चलो, हमे न छेड़ो। अपना खाना खाओ और अपनी किताब लिखो।

कुँवरने अपने कागजोंको चारपाईपर रख दिया और तख्तपोशपर थालके सामने बैठकर कहा—लाओ, हाथ धुला दो।

लरजॉने हाथपर पानी डालते हुए कहा—यह आप आजकल खाना क्यो कम खाते है, भूख आधी भी नही रही पहलेसे।

कुँवरने तौलियेसे हाथ पोछे और लरजॉकी ऑखोमें ऑखे डाल कर उत्तर दिया—वाह, कम कौन खाता है, खूब डटकर खाता हूँ।

यहाँ पहाड़पर आकर तो मेरी भूख बढ़ गयी। जब आया था, तब दुबला-पतला था। अब मोटा-ताजा हो गया हूँ।

कुँवर साहब सचमुच मोटे-ताजे हो गये थे, मुँह भी चिकना-चिकना निकल आया था, शरीर भी भर गया था। मगर लरजाँ यह बात जबानपर न लाना चाहती थी; बोली—यह तुम्हारा भरम है। जैसे आये थे, वैसे ही हो। कहने लगे, मोटा हो गया हूँ। जरा शीशेमे मूँ तो देखो।

कुँवरने परॉठेसे एक टुकड़ा तोड़ा ही था कि लरजाँने कहा—यह नहीं, पहले कढ़ी और भात खाओ। आज कढ़ी बहुत अच्छी बनी है।

कुँवरने मुस्कराकर परॉठा छोड दिया और चावलोमे कढी डालकर बोले—अगर किरपी भी इसी तरह खिलाती तो सारा खाना खा जाता। वह चुपचाप बैठी रहती है। अब खाना तुम ही लाया करो। वह केवल लाती है, तुम लाती भी हो, खिलाती भी हो।

यह कहकर वे भात खाने लगे। लरजाँने जवाब न दिया।

कुँवरने पूछा—क्या सोचती हो?

लरजाँने उत्तर दिया—अगर मै खाना लाऊँगी, तो किरपी अपने दिलमे क्या कहेगी? इतना सोच लो।

कुँवरने चावल गलेसे उतारते हुए कहा—क्या कहेगी? वह खाना लाये या तुम लाओ। इससे क्या फर्क पड़ जायेगा? मै न तुमको इनाम देता हूँ, न उसको। आज कढ़ी सचमुच बहुत अच्छी पकी है—अगर तुमने बनायी है, तो शाबाश।

लरजाँ—बड़ी बदनामी होगी। लोग तो अब भी भाँत-भाँतकी बाते बना रहे हैं। तानोंके तीर ऐसे मारते हैं कि कलेजा छलनी हो जाता है।

कुँवर—मेरे सामने तो आकर कोई चूँ भी नही करता, पीठपर जो चाहे कहें। लेकिन लरजाँ इससे हमारा क्या बिगड़ता है? जो बकते है, बकने दो, और मस्त रहो। मस्त रहनेमे बड़े फायदे हैं; क्या कहते है वह लोग?

लरजॉकी ऑखोमे ऑसू आ गये। उसने कहा—बड़ी बेसरमीकी बातें करते है। तुमसे डरते है, तुम्हारे सामने कोई नही बोलता। मगर मेरा किसे 'भौ' है। मेरे सामने सब कुछ कह देते है।

कुँवरका हाथका ग्रास हाथमे ही रह गया। क्रोधपूर्ण स्वरमे बोले—क्या कहते हैं, जरा बताओ तो—

लरजॉ—(कुँवरकी तरफ दर्दभरी ऑखोसे देखकर) अब क्या बताऊँ, क्या कहते हैं? बस इतना काफी है कि सुनकर बदनमे आग लग जाती है, देख लेना किसी दिन खून हो जायगा। मैने एक छोकरेसे पढ़ना शुरू किया है; यह भी पाप हो गया। सौ-सौ दोस निकालते हैं।—तुम खाना खाओ। मैं भी कहॉका पचड़ा ले बैठी!

कुँवरने पराँठेका टुकडा थालमे रख दिया और कहा—लरजॉ, अब मै कुछ न खा सकूँगा। मेरी भूख भाग गयी है। तुमने पहले क्यो न बताया। बोलो, तुम्हे कौन तंग करता है, मैं उसका खून पी जाऊँगा। लो, तुम नाम बताओ।

लरजॉने कुँवरके बदले हुए तेवर देखे तो घबरा गयी। समझ गयी, ये कुछ कर डालेगे। बोली—अभी मुझे कहते थे, बकते हैं तो बकने दो। अब,आप मरने-मारनेको तैयार हो गये। भई, मरदोका भी कोई विश्वास नहीं, इधर भी चलते हैं, उधर भी चलते हैं। इनसे परमेसर बचाये।

कुँवर पागलोंकी तरह देरतक हवामे देखते रहे, इसके बाद शान्त होकर बोले—तुम रोज आया करो, मै सबसे समझ लूँगा।

लरजॉने कहा—आप खाना खाइये, मैं रोज आया करूँगी।

कुँवर साहब फिर खाना खाने लगे। फिर हँसी-दिल्लगीकी बातें छिड़ गयी। फिर लरजॉकी पकाई हुई एक-एक चीजकी प्रशंसा होने लगी। लरजॉ फिर शरमाने लगी। कुँवर फिर छेड़ने लगे। प्यार फिर पॉव पसारने लगा।

११

अब जरा भी सन्देह न था। वे ही लरजॉको चाहते हो, यह बात न थी। लरजॉ भी उन्हे चाहती थी—उनके लिए बदनामीसे भी न डरती थी। उनके इशारेपर उसने पढ़ना भी शुरू कर दिया है। उनके झोपड़ेको रोज साफ कर जाती है। जो चाहते है वही पकाती है। उन्हे अपना पाठ भी सुना जाती है। अब कुँवर साहब भी कभी-कभी उसके झोपड़ेमे चले जाते हैं और घटों बैठे बातें करते है। किताबका मसौदा (हाथलिखी कापी) रजिस्ट्री करके बम्बई भेजनेके लिए पासके शहरमे जाते हैं तो लरजॉके लिए कोई-न-कोई उपहार खरीद लाते हैं—कभी साड़ी, कभी स्लीपर, कभी मोजे। एक बार एक सुन्दर कम्बल ले आये, दूसरी बार टार्च ले आये। यह दोनों चीजे लेकर लरजॉ निहाल हो गयी। अब वह आप कह देती है, मेरे लिए यह चीज ले आना। कुँवर साहब उसकी हर एक आज्ञाका पालन करते हैं। लेकिन कभी-कभी सोचते हैं—रुपया खत्म न हो जाय। खर्च पानीकी तरह होता है, आमदनी पैसेकी भी नहीं होती। लेकिन, इस खर्चसे एक लाभ भी हुआ कि पहाड़ी लोगोंपर रौब बैठ गया। सोचते थे, जाने यह कौन है ? जरूर कोई बड़ा अमीर है, जो इस तरह दिलेरीसे रुपया खर्च करता है। सम्भव है, कोई राजा हो। सब उसकी खुशामद करने लगे। अब लरजॉ और उनके विरुद्ध जबान खोल जाय, इतना दम किसीमे न था। चौधरी तो उनका बिना खरीदा हुआ गुलाम था, हरदम उनका बखान करता रहता था। उसे निश्चय हो गया था कि मेरा भाग्य इनसे ही जागेगा। यह आदमी कोई बड़ा आदमी है। कुँवर साहब अब और भी परिश्रमसे किताब लिखते थे, उन्हे अब इसी पुस्तकपर आशा थी। सोचते थे, अगर पुरस्कार न मिला तो क्या होगा ? महाराजसे लड़कर निकला हूँ, अब किस मुँहसे उनके

सामने जाऊँगा ? लरजॉ उन्हे अभीतक पत्थरोका सौदागर समझती है। न कुँवर साहबने यह रहस्य उसपर खोला है, न खोलना चाहते है। पत्थरोका सौदागर बननेमे जो आनन्द है वह युवराज बननेमे कहॉ ? इसकी शान ही कुछ निराली है।

उधर महाराज पृथ्वीचन्द्र बहादुर कुँवरके चले जानेसे बेहाल हो रहे हैं। उस समय नशे और क्रोधमे आकर आगा-पीछा न सोचा था, अब पछता रहे है कि क्या कर बैठे ? अगर जरा भी सोच-विचारसे काम लेते, तो आज रोना न पड़ता। महारानी भी हर समय परेशान रहती है। चारो तरफ स्वर्गकी बहारें हैं, बीचमे उनका दिल जलता है। अब उन्हे कोई मुस्कराते नही देखता। जरा-जरासी बातपर रोने लगती हैं। कोई अच्छी चीज नही खाती, कहती हैं, जाने कुँवरको पेटभर खाना भी मिलता है या नही। पलंगपर लेटती है तो ठंढी आहे भरती है; कहती हैं, शायद कुँवरको चारपाई भी न मिलती हो। किसी उत्सवमे शामिल नही होतीं। सोचती हैं, जिसका जवान बेटा घरसे निकल गया हो, उसके भाग्यमे हँसना-खेलना कहॉ ! मुझे पता लग जाता तो कभी न जाने देती। मेरी आँखोंके दो आँसू उसके पॉवकी जंजीर बन जाते। राजमहलोमे पला है, भगवान् जाने कहॉ मारा-मारा फिरता होगा ! उन्हे क्या ? उनको गाना चाहिये, नाच चाहिये, लोगोकी वाह-वाह चाहिये, बस काफी है। घर चाहे नष्ट हो जाय उनकी बलासे। महाराज महारानीके सामने दम नही मारते। जानते है, मै बोला और यह गरजी। कभी-कभी आप भी ऑखें भर लेते है। सारे देशमे आदमी छोड़ रखे है कि ढूँढकर पता लाओ। लेकिन, अभीतक कुछ पता नही लगा। कुँवर भी माता-पिताको याद करके रो पड़ते है। फिर सोचते है, यह इनाम मिल जाय, तो घर जाऊँ। ताकि महाराज भी कहे, कि हॉ, बेटा घरसे निकला था, तो कुछ करके लौटा। जैसा खाली हाथ गया था, वैसा ही खाली हाथ नही लौट आया। इस तरह लौटूँ, कि हिन्दुस्तान भरमे नाम हो जाय, अपने-पराये सभी तारीफ करें।

एक दिन कुँवर अपनी किताबकी हाथलिखी कापी भेजनेके लिए डाक-घर गये थे और लरजॉ अपने झोपड़ेसे कुछ दूर एक पत्थरपर बैठी अपना पाठ याद कर रही थी। उसका झोपडा सड़क और नदीके बीचमे धानके छोटे-छोटे खेतोके किनारे था। ऊपर सड़क थी जो ऊँचे पहाड़के इर्द-गिर्द रस्सेकी तरह लिपटी हुई थी। दूर नीचे नदी बहती थी, जैसे पारेका सॉप बल खाता हुआ कही छिपनेके लिए भागा-दौडा चला जाता हो। इतनेमे सड़कपर एक मोटर दिखाई दी। लरजॉ मोटर देख-कर हमेशा खुश होती थी। उसके दिलमे न जाने क्या-क्या विचार पैदा होते थे। वह उसकी तरफ टकटकी बॉधकर देखने लगी, और सोचने लगी—यह अभी पहाड़के चक्करदार रस्तेमे गुम हो जायगी। मै यहीं बैठी रहूँगी, यह कहीकी कही जा पहुँचेगी। गरीबोके पास इतने पैसे कहॉ जो ऐसी चीजे खरीद सके? अचानक मोटर सड़कसे नीचे गिर पड़ी। लरजॉके मुँहसे चीख निकल गयी। वह चाहती थी, किसी तरह मोटरको रोक ले, लेकिन यह बात उसकी ताकतसे बाहर थी। मोटर बड़ी तेजीसे लुढ़कती हुई नीचे आ रही थी। देखते-देखते वह उससे कुछ गजकी दूरीपर आ गयी। वहॉ एक बड़ी-सी चट्टान आगेको बढ़ी हुई थी, उसपर मोटरसे एक स्त्री गिरकर रुक गयी। मगर मोटर लुढ़कती हुई नीचे चली गयी। कुछ सामान भी मोटरसे निकल आया था। उसमेसे कुछ चीजे मोटरके पीछे-पीछे लुढ़कती हुई कई पत्थरोको भी साथ लिये जाती थी। जो हल्की थी वे राहमे रुक गयी थी। लरजॉने अपनी किताब वही फेक दी और पत्थरोंपर मजबूतीसे पॉव जमाती हुई उस चट्टानपर पहुँची जहॉ औरत गिरी थी। लरजॉने झुककर देखा; उसके शरीरपर कोई घाव न लगा था, केवल बेहोश हो गयी थी। उसका पहनावा और शक्ल देखकर लरजॉको विश्वास हो गया कि यह किसी बड़े अमीर घरकी लड़की है। वह भागती हुई अपने झोंपड़ेमे गयी और किरपीसे बोली—जल्दी मेरे साथ आओ। एक मोटरिया लुढ़क गयी है। मगर उसपर जो स्त्री सवार थी वह बच गयी है, उसे उठा लायें, —जल्दी कर।

किरपी चूल्हेके पास बैठी हुक्का पी रही थी। उसने हुक्का दीवारके साथ लगाकर रख दिया और खाँसकर पूछा—कहाँ गिरी है? बहुत दूर तो नहीं है वह?

यह कहकर फिर खाँसने लगी, और खाँसते-खाँसते घुटनोपर दोनों हाथ रखकर खड़ी हो गयी।

लरजाँ दौड़नेके कारण हाँफ रही थी, रुक-रुककर बोली—पास ही है—जल्दी करो—बेहोश हो गयी है।

दोनो मिलकर उसे अपने झोपड़ेमे उठा लायी और कम्बलसे लपेटकर हाथ-पाँवपर गरम घीकी मालिश करने लगी। थोड़ी देर बाद उसने एक लम्बा साँस लेकर आँखे खोल दी और चारो तरफ देखा। इसके बाद माथेपर हाथ फेरकर बहुत धीरेसे कहा—मैं कहाँ हूँ?

लरजाँ उसे होशमे देखकर बहुत खुश हुई और बोली—तुम्हारी मोटरिया पहाड़से गिर पड़ी थी। अब तुम्हारा क्या हाल है?

किरपी—कहीं चोट तो नहीं आयी?

युवतीने लेटे-लेटे अपना शरीर हिलाकर देखा और जवाब दिया—नही। मैं सिर्फ बेहोश हो गयी थी। अब ठीक हूँ। ड्राइवरका क्या हाल है? बचा या मर गया?

लरजाँने किरपीके मुँहकी तरफ देखकर कहा—जाओ, पता लाओ। लोग नीचे गये थे, वापस आ गये होगे।

किरपी उठकर बाहर चली गयी। जब लौटी तो दोनों लड़कियाँ पुरानी सखियोंके समान घुल-मिल कर बाते कर रही थीं। कोई बेगानगी नजर न आती थी।

किरपीने कहा—तेरा नौकर बच गया है, मगर तेरी गाड़ी टूट गयी है। उसका बुरा हाल है।

युवती—और सामानका क्या हाल है? मिल गया या नहीं? बैग, चमड़ेका बक्स, बिस्तर—

किरपी—सब कुछ मिल गया। तेरे नौकरने सब कुछ सँभाल लिया है। इसकी चिन्ता न कर। मगर तेरी मोटरिया टूट-फूट गयी है।

युवती—चलो कोई बात नही। आज हम मरते-मरते बचे यही शुक्र है। जान बची लाखो पाये।

अचानक उसकी दृष्टि अपनी साड़ीपर पड़ी जो लुढ़कनेके कारण एक-दो जगहसे फट गयी थी। लरजॉसे बोली—मेरा बक्स आ जाता तो साड़ी बदल लेती, यह फट गयी है।

किरपी—ले आऊँ?

युवती—नही, मै आप-ही जाती हूँ। ड्राइवरको भी देख आऊँ कही कोई हाथ-पैर न टूट गया हो गरीबका।

फिर लरजॉसे मुस्कराकर कहा—मै अभी आयी, (चुटकी बजाकर) एक मिनटमे।

जब वह चली गयी तो किरपीने लरजॉसे पूछा—जानती हो यह छोरी कौन है?

लरजॉ—किसी बहुत बड़े अमीरकी लड़की होगी। पहनावा कैसा बढ़िया है! हाथ कैसे नरम हैं, जैसे माखनके पेड़े। और सुभाओ भी बड़ा मीठा है। बोलती है, तो मुँहसे फूल झड़ते हैं। घमण्डका नामतक नही। जरूर किसी बहुत अमीरकी छोरी होगी।

किरपी—किसी अमीरकी छोरी नही, राजेकी छोरी है, राजेकी!

लरजॉ चौक पड़ी—राजेकी छोरी! तुमने किससे सुना?

किरपी—उसके नौकरसे। बेचारा डरके मारे मरा जाता है। कहता है, राजा मेरी गरदन उड़ा देगा, मुझे सूली चढ़ा देगा, मुझे गोली मार देगा। कहेगा, गाड़ी कैसे गिर पड़ी? तू सो रहा था क्या? अगर राजकुमारीको नुकसान पहुँच जाता, तो तेरा क्या बिगड़ता?

लरजॉ कई मिनटतक सोचती रही और चुप रही, इसके बाद बोली—तो यह राजेकी बेटी है! किरपी, तुमने देखा इसके कपड़े कैसे बढ़िया हैं?

किरपी—वाह, इसके कपड़े बढ़िया न होंगे तो और किसके होंगे ? राजेकी बेटी है !

लरजॉ—इसके बापके पास तो कई सौ रुपया होगा ?

किरपी—कई सौ क्या, कई हज्जार होगा ।

लरजॉ—बेलीसे भी अमीर होगी ? (कुँवरने अपना नाम उन्हे बेली बताया था ।)

किरपी—तुम भी क्या बाते करती हो ! बेली इनके नौकरोकी भी बराबरी नही कर सकता । वह पत्थरोका सौदागर है, यह राजेकी बेटी है । बाहर जाकर इसके नौकरके कपड़े देखे तो तू दंग रह जाय ।

किरपीके यह शब्द शब्द न थे, जहरमे बुझे हुए तीर थे । लरजॉने कहा—अच्छा अच्छा, बहुत बाते न बना । उसीका खाती है, उसीको गालियॉ देती है, किरतघन कहीकी । वह सुन ले तो क्या कहे ? उसकी नेकियोका तूने खूब बदला दिया ।

किरपीको अब मालूम हुआ कि वह क्या कह गयी । लज्जित होकर बोली—मैंने बेलीको गालियॉ दी हो तो मेरी जबान जल जाय । कोई राजा होगा अपने घरमे होगा । हमारे लिए तो बेली राजेसे भी बड़ा है । जो उसने किया है, वह कोई राजा भी क्या करेगा ।

इतनेमें राजकुमारी आ गयी । उसके पीछे-पीछे एक पहाड़ी उसका चमड़ेका बक्स उठाये हुए आ रहा था । लरजॉने कहा—उसे चोट तो नही आयी ? सुना है, बड़ा डर गया है । कहता है राजा मुझे फॉसी दे देगा, गोली मार देगा ।

राजकुमारीने मुस्कराकर जवाब दिया—बेवकूफ है जो डरता है । अब इसमे उसका क्या दोष ? घुटनेपर जरा चोट आयी है, और सब ठीक है । —(पहाड़ीसे) यहॉ रख दे ।

पहाड़ीने बक्स रख दिया और बाहर चला गया । राजकुमारीने उसे खोला और कपड़े निकाल-निकालकर बाहर रखने लगी । सोचती थी, इस समय कौनसे कपडे पहनूँ । लरजॉ और किरपी एक-एक कपड़ा

देखती थी और हैरान होती थी। ऐसे कपड़े उन्होंने आजतक न देखे थे। देखकर दिल खुश होता था, ऑखे चमकती थीं।

१२

एकाएक कुँवर साहब आकर सामने खडे हो गये। राजकुमारीने घूमकर पीछेकी तरफ देखा और दोनो चौक पड़े। कुँवर साहब बिलकुल गरीब पहाड़ियोके पहनावेमे थे—सिरपर एक हल्की-सी टोपी थी, पॉव नगे थे, मिट्टीमे लथपथ। एक साधारण लोई ओढ़ रखी थी। मगर राजकुमारीने उन्हे देखते ही पहचान लिया। उसे यह आशा न थी कि जिनकी खोजमे वह इतनी दूरसे चलकर आयी है, वे यहाँ मिल जायँगे। उधर कुँवर साहबको भी यह आशा न थी कि राजकुमारी यहाँ-तक उनका पीछा करेगी। यह रियासत गजनालाकी राजकुमारी थी। इसके पिता महाराज योगेन्द्रसिह चाहते थे कि इसकी शादी कुँवर सूर्य-प्रकाशचन्द्रसे हो जाय। कुँवर साहबके पिताको भी इसपर कोई एतराज न था। और राजकुमारी इन्दिरा तो कुँवर साहबपर लट्टू थी। उनकी सभ्यता, उनकी शराफत, उनकी योग्यताने उसका मन मोह लिया था। उसने दिलमे यह प्रण कर लिया था कि अगर उनसे ब्याह न हुआ तो सारी उम्र कुँवारी रहूँगी। उधर कुँवर साहब भी राजकुमारीको नापसन्द न करते थे। अगर वे इस तरह घरसे न निकल आते, और लरजॉकी जवानी और सुन्दरता उनकी पसन्दको बदल न देती, तो उनका ब्याह इन्दिरासे होना निश्चित था। मगर अब इसकी कोई सम्भावना न थी। इन्दिरा उन्हे खोजने निकली थी। उसे विश्वास हो गया था कि कुँवर किताब लिख रहे है, जरूर काश्मीरके पहाड़ोमे होगे। अगर मोटर-दुर्घटना

न होती तो वह कहींकी कही जा पहुँचती, मगर अब कुँवर साहब उसके सामने थे।

हाँ, कुँवर साहब उसके सामने थे। पहनावा वह न था, न राजकीय ठाठ था, लेकिन शक्ल वही थी। दोनो चौंक पड़े। मगर अभी उनके मुँहसे हैरानीका कोई शब्द निकलने न पाया था, जिससे उनका राज खुल जानेका भय हो, कि कुँवरने राजकुमारीको इशारेसे कह दिया, चुप, इन लोगोके सामने कुछ न बोलना। राजकुमारी सँभल गयी और फिर उसी तरह अपना बक्स उलटने-पुलटने लग गयी। कुँवरने ऐसा प्रकट किया कि वह इस लड़कीको देखकर घबरा गया है। गरीब आदमी है, ऐसी अमीर लड़की उसने आजतक न देखी होगी।

लरजाँ बैठी कपड़े देख रही थी। कुँवरको देखते ही उठकर खड़ी हो गयी और उनके पास आकर धीरेसे बोली—जानते हो यह कौन है?

कुँवरने अपने दिलमे कहा, तुमसे ज्यादा जानता हूँ मगर जाहिरमे मुस्कराकर कहा—अब मुझे क्या मालूम कौन है? तुम्हारी कोई सखी-सहेली होगी। बहुत अमीर मालूम होती है! कौन है यह?

लरजाँ—(ऐसे जैसे वह कुँवरको चौका देगी) यह एक राजेकी बेटी है, राजेकी!

कुँवर—(चौंककर) अरे, राजेकी बेटी! यहाँ कैसे आ गयी? क्या तुम्हारी सखी है?

लरजाँने उन्हे सारी घटना सुनायी और मुस्कुरायी, मानो कह रही हो—देखा, हमारे घरमे राजेकी बेटी आयी है।

उसे क्या मालूम था कि इससे पहले उसके घरमें एक राजेका बेटा भी आ चुका है।

कुँवर साहबने कुछ सोचकर कहा—राजेकी बेटी है, तो कुछ खातिर करो। यह भी क्या कहेगी कि किसी पहाड़िनके घरमे गयी थी। कुछ खिला-पिला दो!

लरजाँ उदास हो गयी। उसे अब अपनी गरीबीका ख्याल आया,

बोली—क्या बनाऊँ ? इसके लिए मेरे पास क्या है ? मेरा खाना कभी पसन्द न करेगी। तुम बताओ, क्या करूँ ?

कुँवर—पहले दौड़कर किसीके यहाँसे दो सेर दूध ले आओ।

लरजॉने बरतन उठाया और धीरेसे बाहर चली गयी। इसके बाद उसने किरपीसे कहा—तुम जाकर बाजारसे बहुत बढ़िया चाँवल ले आओ दो आनेके। चार आनेका पिस्ता और किशमिश भी ले आना।

दोनो चली गयीं।

अब मैदान साफ था। राजकुमारी और राजकुमार दोनो आमने-सामने खड़े थे। दोनों एक-दूसरेकी ओर देखते थे। दोनोंके दिलोमे भावोकी भरमार थी। लेकिन दोनोकी जबानमे बोलनेकी ताकत न थी।

आखिर कुँवरने मुस्करानेकी कोशिश करते हुए कहा—खूब मिले इन्दिरा, ऐसी दुर्घटनामे तुम्हारा बच जाना चमत्कारसे कम नही। जहाँसे तुम गिरी थीं, वहाँसे गिरकर कोई मुश्किलसे ही बच सकता है। परमात्माने बड़ी दया की। इधर कैसे आयी थी ?

इन्दिराने सिरपर साड़ी ठीक करते हुए जवाब दिया—तुम्हें ढूँढ़ने निकली थी। मैं तो इसे दुर्घटना नही समझती। इसने तुमसे मिला दिया। नही तो न जाने कहाँ-कहाँ भटकती फिरती और तुम्हारा पता कब मिलता ? मुझे विश्वास तो हो गया था कि तुम इनाम पानेके लिए किताब लिख रहे हो। मगर यह पता न था कि यहाँ मिलोगे। (सिरसे पाँवतक देखकर) क्या शक्ल बना रखी है ! महाराज देखे तो क्या कहे ? कहाँ यह पहाड़ी, कहाँ वह राजकुमार।

कुँवर—मगर इस समय मैं पत्थरोंका सौदागर बेली हूँ, रियासत सिकन्धीरका राजकुमार नही। राजकुमारोका यहाँ क्या काम ?

इन्दिरा—तुम्हारे चले आनेसे महाराज और महारानीका बुरा हाल है। अब गुस्सा थूक दो और घर चलो, तुम्हे देखकर जी जायँगे। तुम्हारी किताब खत्म हुई या नही ?

कुँवर—(सिर हिलाकर) अभी कहाँ खत्म हुई। कमसे कम दो महीने और लगेंगे तब जाकर खत्म होगी।

इन्दिरा—मगर यह काम ऐसा नहीं कि वहाँ न हो सके। तुम्हे जो कुछ देखना था, वह तो तुम देख चुके। अब तो केवल लिखना बाकी है, वह वहाँ भी लिखा जा सकता है।

कुँवर—नही, नही, नही। जो वायुमण्डल यहाँ है, वह वहाँ कहाँ? यहाँ हर एक चीज आँखोंके सामने है, वहाँ केवल दिमागमे होगी। और फिर यह सन्तोष, यह सादगी, यह प्राकृतिक दृश्य, यह पहाडी सौन्दर्य वहाँ कभी न मिलेगा। यहाँपर मुझे इलहाम होता है, विचार आपसे आप उड़े चले आते हैं। लिखनेके बाद पढ़ता हूँ तो यह मालूम होता है कि ये मेरे विचार ही नहीं है। यहाँ आकर मैं बड़ा लेखक बन गया, जो सदा अमर रहते हैं। वहाँ जाकर फिर वही छोटा-सा राजकुमार रह जाऊँगा, जो आज पैदा होते है, कल मरते हैं, परसो लोगोको याद भी नही रहते। तुम देखना, लोग मेरी किताब पढ़कर दंग रह जायँगे। अजीब चीज बन रही है। और चीज नहीं है, चमत्कार है।

इन्दिराने कुँवरको चुभती हुई आँखोसे देखा और साड़ीके कोनेको उँगलियोसे मरोड़ते हुए पूछा—यह लरजाँ कौन है? तुम्हारी बडी तारीफ करती है। बात-बातमे बेलीका बखान होता है।

कुँवरका कलेजा धड़कने लगा। समझ गये, जिस समयकी प्रतीक्षा थी, वह आ पहुँचा। सँभलकर बोले—एक पहाड़ी लड़की है। गरीबकी माँ मर गयी है।—अब इसका यहाँ कोई भी नही है, बिलकुल अकेली है। मैं न होता तो इसे बहुत कष्ट होता।

इन्दिरा—जब चले जाओगे तो क्या करेगी?

यह कहकर उसने कुँवरकी तरफ ऐसी आँखोसे देखा जो दिलका हाल भी पढ़ सकती हैं। कुँवरने कुछ मिनट सोचा कि इसका क्या जवाब दूँ, आखिर बोले—इसे भी साथ ले चलूँगा, यहाँ रहकर क्या करेगी? अब जहाँ मैं, वहाँ यह।

इन्दिरा आकाशसे गिर पड़ी। पर एक ही क्षणमे सँभलकर उसने दूसरा वार किया—लोग क्या कहेंगे ?

कुँवर साहब इस वारके लिए भी तैयार थे, बोले—मै लोगोंके कहनेकी इतनी परवाह नही करता। वे जो चाहे कहें। उससे मेरा क्या बनता बिगड़ता है।

इन्दिराका यह वार भी खाली गया। उसने देखा, कुँवर हाथसे निकला जाता है। उसे आश्चर्य हो रहा था कि एक मामूली गरीब पहाड़ी लड़की एक सुन्दर राजकुमारीसे जीत जाय और वह खड़ी-खड़ी मुँह ताकती रह जाय। उसका चमकता हुआ चेहरा उदास हो गया, जैसे चाँदपर काले बादल छा गये हो। उसकी आँखोमे आँसू भर आये जैसे फूलोंपर ओस पड़ गयी हो। उसने तिलई बूटकी एड़ीसे जमीनको कुरेदते हुए धीरेसे कहा—महाराज कभी न मानेंगे।

इन शब्दोमे कितनी वेदना थी! कुँवर साहबको राजकुमारीपर बहुत दया आयी। सोचने लगे, बेचारी मेरे लिए कितनी दूरसे दौड़ती हुई आयी है! दो मीठे शब्द सुनकर उसका सारा सफर सफल हो जाता। लेकिन उनके पास उसके लिए मान था, सहानुभूति थी, पर प्रेम न था। इस समय जरा भी नरम हो जाते तो फिर स्थितिको सँभालना कठिन हो जाता। दृढ़तासे बोले—मैं रियासत छोड़ सकता हूँ, इस गरीब लड़कीको नही छोड़ सकता। यह मुझे रियासतसे भी प्यारी है। और यह बाते मै जोशमे नहीं कह रहा, समझ-सोचकर कह रहा हूँ।

कुँवरका एक-एक शब्द राजकुमारीके दिलपर हथौड़ेकी चोट था। अब उसमे बोलनेकी शक्ति न थी। बोलती क्या, उसके जीवनका सुन्दर सपना बिखर गया था। उसकी लहलहाती आशाओपर पानी फिर गया था। उसने लोहेको भी चीर देनेवाली दीन आँखोंसे कुँवरकी तरफ देखा और ठढी आह भरकर गर्दन झुका ली, मानो अपनी हार मंजूर कर ली। क्या वह इसी हारके लिए इतनी दूरसे चलकर आयी थी ?

कुँवरने बहुत धीरेसे अपना हाथ उसके कंधेपर रखा और कहा—

इन्दिरा, मेरी एक प्रार्थना है। मै चाहता हूँ, तुम लरजॉसे इस मामलेमे कुछ न कहो। शायद तुम यह सुनकर हैरान होगी कि वह कुछ भी नही जानती। वह यह भी नही जानती कि मेरे दिलमे उसके लिए क्या भाव है। वह मुझसे बहुत स्वतन्त्रतासे मिलती है। मेरे साथ मिलकर हॅसती है, खेलती है। मगर तुमने उससे कुछ भी कह दिया तो मेरी सारी खुशी मिट्टीमे मिल जायगी। यह कहकर कुँवरने राजकुमारीके सामने घुटने टेक दिये, और उनकी ऑखोमे पानी भर आया।

कुँवरने राजकुमारीसे मौन भाषामे कहा कि तुम हारकर भी जीत गयी हो। मै अब तुम्हारे सामने नाचीज हूँ। तुम चाहो तो मेरी सारी खुशी मिट्टीमे मिला सकती हो।

राजकुमारीने सहमी हुई ऑखोंसे दरवाजेकी तरफ देखा और राजकुमारका हाथ पकड़कर उठाते हुए कहा—तुमने मेरा दिल तोड़ दिया है, मगर मैं प्रतिज्ञा करती हूँ कि मेरे मुँहसे कोई भी शब्द न निकलेगा। मैं तुम्हारा दिल न तोड़ूँगी।

यह कहकर उसने अपना रेशमी रूमाल निकाला और ऑखें पोंछने लगी। कुँवरके दिलसे धुँआ-सा निकलने लगा। मगर वह कुछ कर न सकता था। ताकतवर होकर भी पूरा बेबस था।

१३

रातको खाना खानेके बाद दोनो सखियॉ कुप्पीकी मध्यम रोशनीमे पुआलपर अपने-अपने कम्बल ओढ़कर लेट गयीं और बाते करने लगी।

राजकुमारीने कहा—तुम खाना खूब बनाती हो। तुम्हारा खाना खाकर मुझे तो मजा आ गया।

लरजॉ—यह तो आपकी कृपा है, नही तो आपके यहॉ अच्छेसे अच्छे

रसोइये होगे। मै क्या पका सकती हूँ, जो साग-पात मिला, भून-भानकर रख दिया।

राजकुमारी—मगर जो मजा इस भूने-भाने साग-पातमे है, वह उन खानोमे नही। मुझे तो तुमसे प्रेम हो गया है। सोचती हूँ, कल कैसे जाऊँगी ? जी यही रह जायगा।

लरजॉ—आप चली जायँगी तो मै आपको याद भी न आऊँगी। अलबत्ता मैं आपको कभी न भूलूँगी। आपको मेरे जैसी हजारों मिल सकती हैं, मुझे आप जैसी एक भी न मिलेगी। याद करूँगी और रोऊँगी। फिर कभी इधर आओ तो जरूर मिलना, मै राह देखती रहूँगी, इतिजार करती रहूँगी। पर आपको कभी ख्याल भी न आयेगा।

राजकुमारीने लरजॉकी ओर प्यारसे देखा और कहा—बहन, यह तुम्हारी भूल है। तुमने कुछ ही घंटोमे मेरा मन मोह लिया है। तुम कहती हो, इधर आओ तो मिलना, मै कहती हूॅ, मै हर साल तुम्हे मिलनेके लिए आया करूँगी और कई-कई दिन ठहरा करूँगी।

लरजॉ—(खुश होकर) इकट्ठी घूमा करेंगी। कभी ऊपर पहाड़पर जायँगी, कभी नीचे नालेके किनारे जाकर बैठेगी। कभी सैर करेंगी, कभी नहायँगी। खूब मजे होगे।

राजकुमारी—अगली बार जब आऊँगी तो तुम्हे मेरे साथ मेरी रियासतमे चलना होगा। चलोगी न ? मोटरकी खूब सैर कराऊँगी।

लरजॉ आसमानमे उड़ने लगी। बोली—जरूर चलूँगी। कब आओगी ? सच-सच बताओ।

राजकुमारी—यह वहॉ जाकर लिखूँगी, अभी कुछ नही कह सकती। तुमने बेलीको खाना भेज दिया या मेरी बातोमे उसे भी भूल गयी। कौन ले जायगा ?

लरजॉ—किरपी ले जायगी। तुम थक तो नही गयी, कहो, तो पैर दबा दूँ।

राजकुमारी—अरे बहन, क्यों काँटोमे घसीटती हो। पहले ही मै तुम्हारी बहुत कृतज्ञ हूँ। तुमने मुझपर बड़े उपकार किये हैं।

लरजाँ लेटी हुई थी, उठकर राजकुमारीके पास आ बैठी और पाँवकी ओर हाथ बढ़ाकर बोली—क्या उपकार किया है मैने तुमपर? बैठने लायक जगह भी तो नही है यहाँ। तुमको घरमे हजारो सुख होगे, यहाँ एक भी नही। लाओ, जरा पाँव दबा दूँ, घिस न जाऊँगी।

राजकुमारीको लरजाँकी इस सादगीपर बे-अखतियार प्यार आया। उसने अपना बढ़िया कम्बल अपने शरीरके इर्द-गिर्द लपेट लिया और उठकर बैठ गयी। बोली—तुमने मेरे प्राण बचाये है। अगर तुम वहाँसे मुझे न उठा लाती तो मेरा बचना असम्भव था। बेहोशीमे जरा भी करवट बदलती तो नीचे लुढ़क जाती। कौन बचाता? सीधी मौतके मुँहमे उतर जाती।

लरजाँ—तुम्हें मैने नही बचाया, भगवानने बचाया है। आदमी आदमीको क्या बचायेगा?

राजकुमारी—यह तुम्हारी विनय-शीलता है। कोई और होता तो डींगे मारते न थकता, कि मैंने यह किया है, और वह किया है।

लरजाँने कोई उत्तर न दिया, चुपचाप छतकी ओर देखने लगी। राजकुमारीने प्रसंग बदलकर कहा—यह बेली कौन है?

लरजाँके मुँहपर शर्मकी लाली दौड़ गयी, बोली—पत्थरोका एक सौदागर है। यहाँ पत्थर देखने आया है।

राजकुमारी—मेरा मन कहता है कि यह आदमी तुम्हारे लिए बना हुआ है। जरूर यही बात है। इधरसे जाता होगा। तुम्हे देख लिया, पत्थरोंका सौदागर बन बैठा।

लरजाँ—नही बहन, बेली ऐसा आदमी नही। मुझे उसपर पूरा-पूरा भरोसा है। तुम उसे जानती तो ऐसा न कहती।

राजकुमारीने दिलमे कहा, तुमसे ज्यादा जानती हूँ, प्रकटमे बोली—मगर उसका दोष नही। तुम्हारा रूप ही ऐसा है कि जो देखे वही अपनी

सुध-बुध भूल जाय, जो देखे, वही पागल हो जाय। गरीब बेली क्या करता ? तुम किसी राजाकी रानी होने योग्य हो, यहाँ झोंपड़ेमे रहने योग्य नही।

लरजाँ—वाह, बड़ी सुन्दर हूँ न ! तुम्हारी तो जूतीकी भी बराबरी नही कर सकती। यह कहकर उसने राजकुमारीके तिलई जूतेकी तरफ देखा। इधर राजकुमारीको डाह हो रही थी कि मै लरजाँ ही होती। उसने कहा—मैं भविष्यवाणी करती हूँ, तुम किसी दिन रानी बनोगी। अपने मास्टरसे जल्दी-जल्दी पढ लो, नही तो पीछे तकलीफ होगी। रानीके लिए पढ़ाई बड़ी जरूरी चीज है।

लरजाँने मुँह फुला लिया और कहा—जाओ, मै तुमसे नही बोलती। तुम छेड़ती हो।

राजकुमारीने लरजाँके गालपर धीरेसे एक चपत लगाकर कहा—दिलमे तो प्रसन्न हो रही है, मुँहसे कहती है, तुम छेड़ती हो। लगाऊँ एक दो तीन और चपतें।

दोनों सखियाँ खिलखिलाकर हँस पड़ी।

कुछ देर बाद लरजाँने पूछा—राजा लोगोका महल कितना बड़ा होता है ? इस झोपड़ेसे तो बहुत बड़ा होता होगा ?

राजकुमारी पहले तो उसकी सादगी और भोलेपनपर मुस्करायी, फिर बोली—महल देखो तो दग रह जाओ। ऐसे-ऐसे सैकड़ों झोपड़े उसके आँगनमे समा जायँ। और फिर कमरे ऐसे सजे होते है कि तुमसे क्या कहूँ। देखकर दिल प्रसन्न हो जाता है। फर्शपर कालीन ऐसे सुन्दर होते है, दरवाजोपर मोतियोके पर्दे ऐसे कीमती होते है कि क्या कहना। फिर बिजलीके पखे, बिजलीके लैम्प, बिजलीके चूल्हे। अभी अँधेरा है, अभी तुमने बटन दबा दिया, कमरेमे रोशनी हो गयी। बटन दबाया, पंखा चलने लगा। बटन दबाया, चूल्हा गरम हो गया। एक-एक आदमीपर कई-कई नौकर होते हैं। कोई बीस आदमी तो हमारे यहाँ केवल कमरोंकी सफाईके लिए हैं। दरबान अलग, पहरेदार अलग, खानसामे अलग।

राजकुमारी बोलती जाती थी और लरजॉ आश्चर्यसे ऑखे फाड़-फाड़-कर सुनती जाती थी। कभी-कभी उसे सन्देह होता था कि राजकुमारी झूठ बोल रही है। कभी सोचती थी, इसे झूठ बोलनेकी क्या पड़ी है ? जब इसके यहॉ जाऊँगी तब देख लूँगी। इतनेमे ग्यारह बज गये और लरजॉ सो गयी। मगर राजकुमारीकी ऑखोमे नींद न थी। कुँवरको ढूँढ़ने निकली थी, यहॉ आकर उसे सदाके लिए गॅवा बैठी ! निराशामे नींद कहॉ ?

दूसरे दिन इधर राजकुमारी चलनेको तैयार हो रही थी, उधर लरजॉ बैठी चुपके-चुपके रो रही थी। सोचती थी, राजकुमारी चली जायगी, तो उसका दिल कैसे लगेगा ? राजकुमारीको कुँवरपर क्रोध था, लरजॉपर क्रोध न था। सोचती थी, उस गरीबका क्या दोष ? कुँवरने उसके घरमे जाकर उसको घेर लिया था, यह उसके पास नही गयी। उसे तो यह भी पता नही, यह कौन है कौन नही है।

दोपहरके समय जब किरायेकी मोटर आ गयी और ट्रकके सिवाय राजकुमारीका सब सामान उसमे रख दिया गया तो उसने लरजॉको गलेसे लगा लिया और भर्राई हुई आवाजमे कहा—बहन सच कहती हूँ, यहॉसे जानेको जी नहीं चाहता। लेकिन क्या करूँ, इस समय रुक नही सकती। फिर आऊँगी तो कई दिन रहूँगी।

लरजॉने चुपचाप राजकुमारीकी ओर देखा और गरदन झुका ली। उसके मुँहसे एक शब्द भी न निकला।

राजकुमारीने कहा—तुमने मेरी जो खातिर-तवाजो की है, वह मुझे सदा याद रहेगा।

लरजॉने फिर भी कोई जवाब न दिया, अपनी बड़ी-बड़ी हैरान ऑखोंसे राजकुमारीकी तरफ देखती रही।

इतनेमे ड्राइवरने आकर कहा—सरकार चलिये, मोटर आ गयी है।

राजकुमारीने किरपीको बुलाकर दस रुपयेका नोट दिया। गॉवके दूसरे आदमियोमे रुपये बॉटे; किसीको एक, किसीको दो। कई बच्चे आकर झोपड़ेके सामने खड़े हो गये थे, उन सबको पैसे दिये। इसके बाद लरजॉ-

को घसीटकर झोपड़ेके अन्दर ले गयी। वहाँ जाकर उसने अपना बक्स खोलकर उसमेसे गहनोका डिब्बा निकाला और उसे खोलकर लरजॉके सामने रख दिया। लरजॉ उसके मुँहकी तरफ देखने लगी। मानो चुपकी भाषामे पूछने लगी—तुम्हारा क्या मतलब है?

राजकुमारीने मुस्कराकर कहा—यह तुम्हारे लिए है, मेरी तरफसे प्रेमकी भेट।

लरजॉ चौंक पड़ी। वह गरीब थी, उसे ठीक-ठीक मालूम न था कि इन गहनोकी क्या कीमत होगी, लेकिन इतना समझती थी कि उनकी कीमत कम न होगी। उसने यह भी समझ लिया कि इतना रुपया सारे गॉवमे किसीके पास न होगा। यह गहने अत्यन्त सुन्दर हैं। इन्हे पहनकर वह परी मालूम होने लगेगी। सारे गॉवकी स्त्रियॉ उससे डाह करेगी। बेलीको भी आश्चर्य होगा। कहेगा, तू तो सचमुच राजकुमारी बन गयी। इसके उत्तरमे वह क्या कहेगी? कुछ भी नही, केवल मुस्करा देगी, और उसकी तरफ कनखियोंसे देखेगी।

लेकिन दूसरे ही क्षण उसके विचार बदल गये। उसने डिब्बेको बन्द करके ट्रंकमे रख दिया और राजकुमारीकी तरफ सजल ऑखोसे देखकर कहा—बहन, यह चीजे तुम्हारे जैसे धनियोंके लिए हैं, हम गरीबोको इनकी जरूरत नही। तुम्हारा प्रेम बना रहे, मेरे लिए यही सब कुछ है। मुझे जेवर नही चाहिये, तुम्हारा प्रेम चाहिये।

राजकुमारीने डिब्बा निकालकर लरजॉके बिछौनेके नीचे रख दिया और ट्रंक बन्द करके कहा—देखो, अगर तुमने अब लौटाया तो मैं समझूँगी, तुम्हे मुझसे जरा भी प्यार नही। जहाँ प्यार होता है, वहॉ इनकार नही होता।

लरजॉकी ऑखोंमे कृतज्ञताके ऑसू आ गये। वह राजकुमारीके गलेसे लिपट गयी और रोने लगी। मगर उसके दिलमे जो खुशी थी, उसे कौन बयान कर सकता है? राजकुमारीके होठोंपर मुस्कराहट थी। मगर उसके

दिलमे जो अँधेरा छाया हुआ था, उसे कौन जान सकता है? बड़ेसे बडा कलाकार भी नही।

राजकुमारीने ड्राइवरसे कहा—यह ट्रंक ले जाकर मोटरमे रख दो।

ड्राइवरने ट्रंक उठा लिया और बाहरकी तरफ चला। एकाएक कुँवर साहब आकर राजकुमारीके सामने खड़े हो गये और बोले—सारा गॉव आपको दुआऍ दे रहा है। आपने तो सबको मोह लिया।—क्या तैयार हो गयी सरकार?

राजकुमारीने कुँवरकी ओर ऐसी ऑखोसे देखा जिनमे शिकायतोके दफ्तर भरे हुए थे और कहा—हॉ भई, अब और क्या करे? तुमने तो हमारी बात भी न पूछी, अपने झोपड़ेमे जाकर सो रहे, अब आये हो!

इस वाक्यमे जो ताने छिपे हुए थे, उनसे कुँवरका दिल छिद गया। धीरेसे बोले—सरकार, आपने सारे गॉवको इनाम दिया, पर हमे तो कुछ न मिला। हमी अभागे रह गये।

राजकुमारीने हृदयसे रोकर लेकिन होठोसे मुस्कराकर कहा—सब्र करो। तुम्हे ऐसी बढ़िया चीज मिलेगी कि खुश हो जाओगे, निहाल हो जाओगे, अपना भाग्य सराहोगे।

मगर जब वह मोटरपर सवार हो गयी और मोटर कुछ दूर निकल गयी तो उसकी ऑखे सजल हो गयी थी और उसे पहाड़के हरे-भरे दृश्योंमें कोई हरियाली दिखाई न देती थी। पहले उसका दिल रोता था, अब ऑखे भी रो रही थीं। आशा लेकर आयी थी, निराशा लेकर जा रही थी। मगर उस निराशाको देखनेवाले कितने है।

उधर कुँवर और लरजॉ झोपड़ेमें खड़े बाते कर रहे थे। किरपी पानी भरने गयी थी।

लरजॉ—उसका सुभाओ बड़ा मीठा था। मेरा जी चाहता था, उसे जाने न दूँ, यही रख लूँ।

कुँवर—क्या कहना! राजेकी बेटी है। गॉवके लोग उसका यश गा रहे है। जिससे पूछो वही तारीफ करता है।

लरजॉ—तुमने भी इनाम मॉगा था, तुम्हारी यह बात मुझे अच्छी नही लगी। क्या ले लिया! साफ टाल गयी। बिना मॉगे मोती मिल जाते है, मॉगनेसे भीख भी नही मिलती। और फिर तुम्हे जरूरत ही क्या है? तुम्हारे पास सब-कुछ है। भगवानने सब कुछ दे रखा है। तुम्हे मॉगना न चाहिये था। तुमने मॉगकर आबरू खो दी।

कुँवर—अच्छा, मैने तो मॉगकर कुछ न पाया, तुमने तो कुछ न मॉगा था। तुम्हे क्या मिला, बताओ?

लरजॉ—(तुनककर) मुझे तो ऐसी चीज मिली है कि तुम देखकर दग रह जाओगे।

कुँवर—(मुस्कराकर) तो मुझे भी ऐसी चीज मिली है कि तुम्हे सुनकर आश्चर्य होगा।

लरजॉ—बिलकुल झूठ बोलते हो। दिखाओ तो क्या मिला तुम्हें?

कुँवर—पहले तुम दिखाओ, तुम्हे क्या मिला?

लरजॉ—मुझे ऐसी चीज मिली है जो सारे गॉवमे किसीके पास न होगी। अनमोल चीज है।

कुँवर—सच कहती हो क्या?

लरजॉ—बिलकुल सच।

कुँवर—तो मुझे भी ऐसी चीज मिली है जो उसकी रियासत-भरमे किसीके पास न होगी।

लरजॉ—बिलकुल झूठ?

कुँवर—बिलकुल सच।

लरजॉ—तो दिखा क्यों नही देते? हमे भी मालूम हो कि तुम्हे कौन-से हीरे-मोती दे गयी है।

कुँवर—पहले तुम दिखाओ?

लरजाँ—फिर तुम्हे भी दिखाना होगा, यह कहे देती हूँ।

कुँवर—जरूर दिखायेंगे। दिखायेगे क्यो नही?

लरजॉने बच्चोकी तरह शोखीसे कहा—तो ऑखे बन्द कर लो। जब कहूँ तब खोलना।

कुँवरने ऑखे बन्द कर ली।

लरजॉने अन्दर जाकर डिब्बा निकाला, फिर जमीनपर कपड़ा बिछा-कर सारे गहने उसपर फैला दिये। इसके बाद कुँवरके कन्धेपर हाथ मार कर कहा—लो, अब ऑखे खोल दो और देखो।

कुँवरने ऑखे खोलकर इतना जेवर देखा तो सन्नाटेमे आ गये। यह क्या! राजकुमारी लरजॉको इतना-कुछ दे गयी होगी, उन्हे यह गुमान भी न था। वे समझते थे, शायद सौ-पचास रुपये दे गयी हो। लेकिन सारे गहनोका डिब्बा दे गयी होगी यह उन्हे ख्याल भी न था। आश्चर्यसे बोले—लरजॉ, तुमने तो राजकुमारीको लूट लिया, यह हजारोंका माल है, मामूली चीज नहीं।

लरजॉने गहनोको शौकसे देखा और फिर कुँवरसे कहा—अब तुम बताओ, तुम्हे क्या दिया?

यह कहकर मुस्कराने लगी, गोया कहती थी, मुझे बहुत दिया है, तुम्हे क्या दिया होगा?

कुँवर—तो अब तुम भी ऑखे बन्द कर लो। जब कहूँ तब खोलना। जिस तरह तुमने अपनी चीज दिखायी है, उसी तरह हम भी दिखायेंगे, तुमसे पीछे थोड़ा ही रह जायेंगे?

कुँवर साहब दबे पॉव अन्दर जाकर एक शीशा उठा लाये और उसे डिब्बेके सहारे ऐसी जगह रख दिया, जहॉसे उसमे लरजॉका मुँह साफ-साफ दिखाई देता था। इसके बाद आप उसके पीछे जाकर खड़े हो गये और उसके कन्धेपर उसी तरह हाथ मारकर बोले—बस, अब ऑखें खोल दो और देखो, हमे क्या मिला है।

लरजॉने ऑखे खोलकर देखा तो सामने केवल एक शीशा था और कुछ भी न था। मुस्कराकर बोली—कहाँ है वह तुम्हारी रियासत-भरमे कीमती चीज, हमे तो दिखाई नहीं देती कही भी।

इनाम मिल जाय तो भाग्य खुल जाय, नसीब जाग उठे, सारे भारतवर्षमे धूम मच जाय। फिर वे भी कह सकेगे कि वे अपने पॉवपर खड़े हो सकते हैं। उन्हे केवल बाप-दादोके धनका भरोसा नही है। इस समयतक लरजॉ हिन्दी पढ़ने-लिखनेमे काफी निपुण हो गयी थी। अब छोटे मास्टरको छोड़कर कुँवर साहबसे अंग्रेजी पढ़ने लगी। उनको कोई काम न था, जी लगाकर पढ़ाने लगे। उसे पढ़नेका शौक था, जी लगाकर पढ़ने लगी। दो-ढाई महीनेमे उसे अग्रेजीके कई छोटे-छोटे वाक्य याद हो गये।—खाना खाओ। पानी पीओ। आज बहुत सरदी है। नालेमे बाढ़ आ गयी। मै तुमसे न बोलूँगी। किरपी बडी सुस्त है, बहुत धीरे-धीरे काम करती है। ये लो, बिल्लीने चूहा पकड़ लिया—इस तरहके कई वाक्य फरफर बोलने लगी। उसकी मस्तिष्क-शक्ति देखकर कुँवर साहब दंग रह जाते थे। जो पाठ एक बार पढ लेती, फिर कभी न भूलती। वह पढ़कर खुश होती थी। कुँवर पढ़ाकर खुश होते थे। किरपी देखकर खुश होती थी। उसे अब इन दोनोंसे प्यार हो गया था।

तीसरे पहरका समय था। लरजॉ नालेके किनारे एक बड़े पत्थरपर बैठी अंग्रेजी लिखनेका अभ्यास कर रही थी और कुछ दूर कुँवर दूसरे पत्थरपर बैठे किसी गहरे विचारमें लीन थे। इतनेमे लरजॉने थककर कापी पत्थरपर रख दी और कुँवरके पास आकर कहा—मैं कहती हूँ, यह राजा-महाराजा लोग तो बड़े सुखी होते होगे।

कुँवर साहब चौक पड़े, बोले—क्या कहा तुमने?

लरजाँ—(हँसकर) मैने कहा, यह राजा-महाराजा लोग तो बड़े सुखी होते होगे।

कुँवर—क्यो, केवल इसलिए कि उनके पास धन-दौलत है?

लरजॉ—आखिर धन-दौलत ही तो दुनियामें सबसे बडी चीज है। जिसके पास धन-दौलत हो, वह क्यो सुखी न होगा? मै सोचती हूँ, मै किसी राजाके घर पैदा होती तो बडा मजा होता।

कुँवर—(गम्भीरतासे) यह तुम्हारी भूल है। धनमे सुख नहीं है,

न सन्तोष है। कई आदमी ऐसे है जिनके पास लाखो रुपये है, मगर फिर भी उनके दिलको चैन नही। कई आदमी ऐसे हैं जिनके पास पैसा भी नही, फिर भी प्रसन्न हैं और फिर राजो-महाराजोके सिरपर तो कई जिम्मेदारियाँ होती है। बेचारे हर समय परेशान रहते है। उनको सुखी समझना दुनियाकी सबसे बड़ी मूर्खता है। वे सुखी नही हैं।

लरजॉ—(आश्चर्यसे) अच्छा ! मेरा ख्याल था, यह लोग बड़े आनन्द-मजेमे होगे। उन्हे कोई दुःख न होगा।

कुँवर—दूसरे लोगोकी तरह कई राजे भी ऐसे है जिनका जीवन आहो और गुनाहोमे कटता है, जिन्हे दया ओर धर्मका विचार ही नही है, जिन्हे पवित्रता और पाकीजगीकी चिन्ता ही नही है। कई ऐसे है जो अपने कर्तव्यको पूरा नहीं करते, न इसकी जरूरत समझते है। बताओ, उनके दिलको चैन मिल सकता है ? कभी नही।

लरजॉ—जो ऐसे है, उनको चैना क्या मिलेगा ? उन्हे तो शायद रातको नीद भी न आती होगी।

कुँवर—कई राजे ऐसे हैं जिनके पास जाकर तुम डर जाओ। उन्हे केवल अपना ख्याल है, और किसीका ख्याल नही।

लरजॉ—तो मै आजतक भूलमे थी ?

कुँवर—तुम उनके मुकाबिलेमे देवी हो। अच्छा, एक बात बताओ। तुम राजकुमारी इन्दिराको तो न भूली होगी ?

लरजॉ—(सिर हिलाकर) उसे भूल जाऊँ तो मै समझूँगी मै औरत नहीं, शैतान हूँ।

कुँवर—वह भी सुखी नही है। उस दिन तुम्हारे नाम जो पत्र आया था वह आँसुओसे भीगा हुआ था। अब सोचो, उसके पास किस चीजकी कमी है ? उसकी कौन-सी इच्छा है, जो पूरी नही होती ? पिता राजा है। नौकर-चाकर सेवा करनेको है। महल रहनेको है। अच्छेसे अच्छे कपड़े पहननेको है। अच्छेसे अच्छा भोजन खानेको है। जो चाहे मँगवा ले, जो चाहे खरीद ले। लेकिन यह सब होते हुए भी उसका जीवन आनन्दमय

नही है। इससे क्या यह सिद्ध नही होता कि आनन्द और शान्ति धनमे नहीं, किसी दूसरी चीजमे है?

लरजॉ—मगर राजकुमारीको क्या· दुःख है? मेरा जी चाहता है, उड़कर उसके पास चली जाऊँ और उसे देख आऊँ। उसने मुझे एक ही दिनमे मोह लिया। उसे घमण्ड तो छू भी नही गया। उसकी रियासत यहॉसे कितनी दूर है? चलो चले, मुझे देखकर वह खुश हो जायगी। उसे खुश देखकर मै खुश हो जाऊँगी। चलोगे?

कुँवर—अभी नही। कुछ दिन और ठहर जाओ।

इतनेमे ऊपरसे कोई उतरता दिखाई दिया। दोनो सिर उठाकर देखने लगे। यह तार-घरका चपरासी था। कुँवरका कलेजा धड़कने लगा। उन्होने अपने एक काश्मीरी मित्रसे कह रखा था कि इनामके नतीजेका समाचार उन्हे भेज दे। जहॉ कुँवर रहते थे, वहॉ तार-घर न था। तारघर वहॉसे दस मीलकी दूरीपर था। कुँवर साहब डाकबाबूके पास तार ले जानेवालेकी फीस जमा करा आये थे जिससे जो भी तार आये, उनके पास पहुँचा दिया जाय। इसी क्षणके लिए उन्होने इतनी कठिन तपस्या की थी। इसी क्षणके लिए वे उतावले थे और अब तारघरका आदमी तार लेकर आ रहा था। यह इनामका निर्णय न था, उनके भाग्यका निर्णय था। वे उठकर खड़े हो गये। लरजॉको चुप रहनेका इशारा किया और तारघरके चपरासीसे पूछा—मेरा तार है क्या? लाओ।

चपरासीने कुँवरके पास पहुँचते हुए झुककर सलाम किया और तार-का लिफाफा और हस्ताक्षरके लिए कागज उनके हाथमे दे दिया।

कुँवरने कॉपते हुए हाथोसे लिफाफा लिया, फिर चपरासीसे पेंसिल ली और हस्ताक्षर करके कागज लौटा दिया। चपरासी वही खड़ा रहा। कुँवरने कहा—जाओ।

चपरासी उनसे डरता था। उसने फिर झुककर सलाम किया और वापस चला गया। लरजॉ दौड़ती हुई कुँवरके पास आयी और उनके

कन्धेपर हाथ रखकर बोली—क्या है ? वह कौन था ? क्या देने आया था ? तुम्हे सलाम क्यों करता था ?

कुँवरने इसका जवाब न दिया । लिफाफा खोलकर तार पढ़ने लगे । पढ़ते-पढ़ते उनका चेहरा खिल उठा और ऑखे चमकने लगी । उनकी मेहनत अकारथ न गयी थी । उन्हे इनाम मिल गया था । इस समय उनकी प्रसन्नताका ठिकाना न था, झूमते थे ।

लरजॉने उनकी छातीपर प्यारसे मुक्का मारकर उत्सुकतासे पूछा—क्या खबर है ? बताते क्यों नही ?

कुँवरने मुस्कराकर उसकी तरफ देखा और उसके सिरपर हाथ फेर-कर जवाब दिया—काश्मीरमे मेरा एक अमीर दोस्त रहता है । उसके घर बेटा पैदा हुआ है । इस खुशीमे श्रीमान्‌जी जलसा करने जा रहे हैं । मुझे भी बुलाया है । जाना पड़ेगा ।

लरजॉके दिलमे गुदगुदी-सी हुई । कुँवरकी तरफ देखकर बोली—मुझे भी ले चलो, काश्मीर देख आऊँगी ।

कुँवर साहब अस्वीकार न कर सके, बोले—चलो, क्या हर्ज है, ले चलेंगे तुम्हे भी ।

थोड़ी देर बाद इधर लरजॉ अपने झोपड़ेमे हॅस-हॅसकर किरपीसे काश्मीर जानेकी बाते कर रही थी, उधर कुँवर साहब अपने मकानमे बैठे अपने भविष्यकी बाते सोच रहे थे ।

इसके पन्द्रह दिन बाद २५ सितम्बरको श्रीनगरमे बड़ा भारी जलसा था, जिसमे कुँवरको इनाम दिया जानेवाला था । इसी अवसरपर महाराज काश्मीरने वायसरायको भी निमन्त्रण दिया कि वे कुँवरको इनाम अपने हाथसे दे । वायसराय बहादुरने यह निमन्त्रण स्वीकार कर लिया । इसके-सिवाय भारत-भरके राज-मण्डलको भी बुलाया गया था । शहरमे बड़े जोरोकी तैयारियॉ हो रही थी । कुँवरके पिता महाराज पृथ्वीचन्द्र बहादुर और उनकी महारानी तो फूले न समाते थे । उनका खोया हुआ लाल ही न मिला था, उसने उनका नाम भी रोशन कर दिया था । राजों-महा-

राजोने उनको बधाईके तार भेजे, समाचारपत्रोने कुँवरके चित्र छापे, कई समाचारपत्रोने जलसेकी खुशीमे खास नम्बर निकाले। महाराज यह सब कुछ देखते थे और प्रसन्न होते थे। वे चाहते थे २५ सितम्बर जल्दसे जल्द आ जाय और वे अपने रूठे हुए बेटेको मना ले। महारानीने इस खुशीमे हजारों रुपए दान किया और एक मन्दिर बनवाना शुरू करवा दिया। कैदी छोडे गये, नौकरोको तरक्कियाँ दी गयी।

२३ सितम्बरको कुँवरने किरपीसे कहा—तुम भी चली चलो। फिर जाने ऐसा अवसर हाथ आये न आये।

लेकिन किरपी तैयार न हुई, बोली—सब लोग चले गये तो घरको कौन देखेगा? न बाबा, मैं न जाऊँगी। तुम जाओ। मैं यही रहूँगी, और मकानकी चौकसी करूँगी।

लरजॉने कहा—गहने ले चलूँ?

कुँवरने जवाब दिया—क्या जरूरत है, यही रहने दो। अगर चोरीका भय है तो किरपीसे छिपाकर जमीनमे गाड़ दो। आकर निकाल लेना।

लरजॉने ऐसा ही किया और निश्चिन्त हो गयी। कुँवरने भी एक आदमीसे कह दिया—मेरे मकानमे तुम सो रहना। किरपी घबरा न जाय।

१५

दूसरे दिन सन्ध्या समय दोनों श्रीनगरकी एक आलीशान कोठीमे थे और महाराज काश्मीरका एक दरबारी कुँवरके सामने खड़ा उनके हुक्मकी प्रतीक्षा कर रहा था।

कुँवर साहबने कहा—देखिये, मेरे साथ जो पहाड़ी लड़की है उसके लिए लिबास और गहनोका प्रबन्ध हो जाये। कल वह भी दरबारमे जायगी।

दरबारीने सिर झुकाकर जवाब दिया—बहुत अच्छा ।

कुँवर—(मुस्कराकर) वह लिबास पहनना नही जानती । किसी समझदार स्त्रीको भेज दीजिये जो उसे लिबास इत्यादि पहना दे, और अपने साथ दरबारमे ले जाये और वहॉ उसके साथ रहे ।

दरबारी—बहुत अच्छा ।

कुँवर—मेरे पास भी कोई लिबास नही है । इसका भी प्रबन्ध कर दें ।

दरबारी—बहुत अच्छा सरकार, हो जायगा ।

कुँवर—एक बात और । मै इस समय किसीसे नही मिलना चाहता । दरबानसे कह दो, चाहे कोई आये, कह दे, इस समय नही मिल सकते, जलसेके बाद मिलेगे ।

दरबारी—बहुत अच्छा ।

कुँवर—सब महाराजा लोग आ गये, या अभी आनेवाले हैं ।

दरबारी—हुजूर, कई आ गये है, कई आनेवाले है ।

कुँवर—महाराजा साहब सिकन्धीर अभी आये या नही ?

दरबारी—महाराज, वे कल पहुँचेगे ।

कुँवर—और वाइसराय बहादुर ?

दरबारी—वे कल नौ बजे यहॉ पहुँचेगे ।

कुँवरने छतकी लैम्पकी तरफ देखकर कुछ सोचा और फिर दरबारीसे कहा—आप जा सकते है । सुबह आइये । और मेरी तरफसे महाराज साहबको धन्यवाद दीजियेगा ।

दरबारी सिर झुकाकर चला गया ।

सुबह आठ बजेके लगभग जब लरजॉ नहा-धोकर निकली तो उसके सामने कपड़ोका ढेर पड़ा था । एक-एक कपड़ा देखती थी और हैरान होती थी । किसे पहने, किसे न पहने । एकसे एक बढ़कर था । एकसे एक खूबसूरत था । उसका जी चाहता था सभी रख ले, एक भी वापस न करे । लरजॉ देरतक उलट-पुलटकर देखती रही, लेकिन किसी निश्चयपर न पहुँची । आखिर मिस फिलिपने, (जिसको उसकी Companion

नियत किया गया था) कहा—क्या आपको कोई भी कपड़ा पसन्द नही ? और मॅगवा भेजूॅ ?

लरजॉ चौंककर बोली—मुझे तो सभी पसन्द है, कोई भी नापसन्द नहीं। यह कहकर फिर उन्हे उलटने-पुलटने लगी। फिर एक-एकको ध्यानसे देखने लगी। मिस फिलिप समझ गयी कि इससे साड़ी न चुनी जायगी। एक साड़ी उठाकर बोली—मेरे ख्यालसे यह पहन लीजिये। बहुत अच्छी चीज है। आपके शरीरपर खिलेगी।

लरजॉको चुननेके कष्टसे छुटकारा मिल गया, बोली—बहुत अच्छा, यही ठीक है।

मिस फिलिपने उसी कपड़ेका जम्पर निकाल दिया। लरजॉने वह भी ले लिया, और कहा—ठीक है।

अब कपड़े पहननेका सवाल था। लरजॉ मिस फिलिपका मुॅह देखने लगी। मतलब यह था, इन्हे कैसे पहनूॅ ? मिस फिलिपने दिलमे कहा, कुँवर साहब भी पता नहीं किस जगली लड़कीको पकड़ लाये हैं। प्रकटमे बोली—आइये, दूसरे कमरेमे चलकर पहना दूॅ।

लरजॉ सिर झुकाकर उसके साथ चली गयी।

आध घंटे बाद उसकी शक्ल ही और थी। कहॉ वह पहाड़ी लड़की, कहॉ यह सुन्दरी, जिसे देखकर आखें रोशन हो जायॅ, मन नाचने लगे, तबीयत हरी हो जाय। पहले मोती मिट्टीमें पड़ा था। अब मोती मखमलमे जड़ा था।

लरजॉ शीशेके सामने खड़ी हुई तो उसे सन्देह होने लगा कि शायद यह उसका प्रतिबिम्ब नही, शायद कोई दूसरी सुन्दरी खड़ी है। मगर नहीं, यह वही थी। राजकीय पोशाक और गहनोंने उसकी सूरत ही बदल दी थी। वह आनन्दसे झूमने लगी। वह चाहती थी, शीशेके सामने खड़ी अपनी सूरत देखती रहे। इस समयतक वह इन्दिराको बहुत सुन्दर समझती थी। उसकी शक्ल उसके मनमे समा गयी थी। लेकिन, आज उसे शीशे-के इस चित्रके सामने इन्दिरा भी हेच मालूम होने लगी। आज उसे पहली

बार मालूम हुआ कि वह भी खूबसूरत है, उसमे भी लुभानेकी शक्ति है। कभी अपनी तरफ देखती थी, कभी प्रतिबिम्बकी तरफ—और मुस्कराती थी, और सोचती थी, वह क्यासे क्या बन गयी ?

. अचानक उसे शीशेमे कोई अपने पीछे आता दिखाई दिया। लरजॉ चौककर पीछे मुड़ी और आनेवालेके सामने डरकर खड़ी हो गयी। सोचती थी, यह कौन है ? और यहॉ क्या करने आया है ? बेलीने तो कहा था, यहॉ कोई दूसरा आदमी पॉव भी नहीं रख सकता। जरूर यह आदमी बेलीका अमीर दोस्त है जिसके यहॉ जलसा है। शानदार पोशाक थी, हाथोमे मोटी-मोटी अँगूठियॉ। लरजॉके पॉव कॉपने लगे। न भाग सकती थी, न खडी रह सकती थी। क्या करे, क्या न करे। जाने वह स्त्री कहॉ चली गयी ? जाने बेली कहॉ चला गया ?

उस सरदारने लरजॉके कन्धेपर हाथ रख दिया और उसकी शक्ल शीशेमे देखने लगा।

लरजॉ जगली हिरनीकी तरह चौक पड़ी। उसने सरदारका हाथ अपने कन्धेसे हटाकर सख्तीसे परे झटक दिया और चिल्लाकर पूरे जोरसे बोली—बेली!

सरदार हँसता रहा।

लरजॉ फिर चिल्लायी—बेली !

सरदारने उसकी ठोड़ीके नीचे उँगली रखकर उसका मुँह ऊपर उठाया और मुस्करा कर कहा—तेरा बेली तेरे सामने तो खड़ा है।

लरजॉ हैरान हो गयी। तो यह कोई और न था। उसका वही अपना बेली था। लेकिन उस बेली और इस बेलीमे कितना फर्क था। जाहिरमे उन दोनोमे कोई समानता न थी। कहॉ वह एक कम्बल ओढ़नेवाला, नंगे सिर, नगे पॉव रहनेवाला पत्थरोका सौदागर, कहॉ यह राजोकी-सी पोशाकमे सजा हुआ सजीला जवान !

दोनों खिलखिलाकर हँस पड़े और देरतक हॅसते रहे।

लरजॉ बोली—तुम तो पहचाने ही नही जाते। मै धोखा खा गयी। मैने समझा कोई और है।

यह कहकर उसने कुँवरको सिरसे पॉवतक देखा और ऑखे नचाकर मुस्करायी।

कुँवर—क्या करे, मेरे दोस्तने जबरदस्ती यह कपड़े पहना दिये। कहता है, आज तुम्हारा भी जलसा हो जाय। लाख बार नहीं की, लेकिन सुनता ही नही। हारकर मानना पड़ा।

लरजाँ—मुझे तो तुमने देखते ही पहचान लिया होगा।

कुँवर—बिलकुल नही। मैं समझा, कोई रानी है। ध्यानसे देखा तो तुम थीं। क्या कहने! कलतक लरजॉ थी, आज लरजॉ रानी बन गयी। बस, ऐसे ही कपड़े पहना करो और मै बाजी लगाता हूँ कि किरपी तुम्हे कभी न पहचानेगी।

लरजाँ—(शरमाकर) तुम किरपीकी कहते हो, मै कहती हूँ, मुझे गॉवभरमें कोई न पहचान सके।

कुँवर—(मुस्कराकर) सच कहता हूँ मुझे तो अब तुमसे बातचीत करते भी डर लगता है।

लरजाँ—वाह! आये है बड़े डरनेवाले! अभी तो तुमने मुझे डरा दिया था। यह तुम्हारा दोस्त क्या बहुत बड़ा अमीर है ?। इतने कपड़े मँगवाकर मेरे सामने रख दिये कि मैं तो हैरान रह गयी।

कुँवर—(रिस्ट-वाचमे समय देखकर) लेकिन तुमने साडी बहुत बढ़िया पसन्द की। ऐसी साड़ी और किसीके पास न होगी। सब आदमी तुम्हारी तरफ देखेगे। रानी मालूम होती हो।

लरजॉने अपने तिलई बूटकी ओर देखा और कहा—मेरा ख्याल है, तुम्हारे कपड़े बहुत बढ़िया है। सब स्त्रियॉ तुम्हारी तरफ देखेगी। (मुस्कराकर) राजा मालूम होते हो।

कुँवर—ईश्वरसे क्या दूर है। सम्भव है, तुम रानी बन जाओ, मै

'राजा बन जाऊँ। ईश्वर जो चाहे कर दे। उसके घरमे किसी चीजकी कमी नहीं।

लरजॉने कहा—कल जब फिर वही कपड़े पहनोगे फिर पूछूँगी? चले हैं, राजा साहब बनने। जलसा कब शुरू होगा?

कुँवर—एक बजे। अभी ग्यारह बजे है। दो घण्टे और है। खाना खा ले तो चले। जिस स्त्रीने तुम्हे कपड़े पहनाये है, वही तुम्हारे साथ रहेगी। मगर उससे कोई बात-चीत न करना। जो कुछ हो रहा हो, चुप-चाप देखती जाना। और उसके साथ ही लौट आना। मै तुमसे यही मिलूँगा। जो कुछ पूछना हो, मुझसे पूछना।

लरजॉ—बहुत अच्छा। मगर बात-चीत करनेमे क्या हर्ज है?

कुँवर—यह तुम नही जानती, मैं जानता हूँ।

इसके बाद कुँवर जरा बाहर चले गये। लरजॉ फिर शीशेके सामने थी। बार बार अपनी शक्ल देखती थी और मोह और मस्तीसे झूमती थी। वह अपनी ही शक्लपर मोहित हो गयी थी। वह अपने-आपको देखनेमे ऐसी लीन हुई कि एक घण्टा बीत गया और उसे मालूम भी न हुआ। इतनेमे कुँवरने आकर उसकी यह दशा देखी 'और अर्थ-पूर्ण भावसे मुस्कराकर कहा—शीशा देखनेके लिए सारी रात पड़ी है। जी भरकर देख लेना। कोई इसे उठाकर थोड़ा ले जायगा! इस समय जरा कामका ख्याल करो।

लरजॉ शरमसे पानी-पानी हो गयी मगर सुन्दरताका अभिमान अब भी वैसा ही था।

१६

एक बजे जलसा शुरू हुआ। दरबार महाराजों, अमीरों और वजीरोंसे खचाखच भरा हुआ था। एक तरफ महिलाएँ बैठी थीं। सभापति

वायसराय थे। महाराजा काश्मीरने अपने भाषणमे कुँवर सूर्यप्रकाश सिहकी दिल खोलकर तारीफ की। कहा—इस इनामके लिए कोई ग्यारह सौ किताबे आयी। कुछ किताबे ऐसे लेखकोकी लिखी हुई हैं, जिनकी कलमका दबदबा भारतके कोने-कोनेमे है। किताबे सब अच्छी है, लेकिन जो चीज युवराजकी किताबमे है, वह दूसरी किसी किताबमे नही। दूसरी पुस्तकोसे केवल परिचय प्राप्त होता है, कुँवर साहबकी पुस्तक पढ़कर ऑखोतले चित्र खिच जाता है। ऐसा जोरदार बयान जज साहबानको और किसी पुस्तकमे नही मिला। और इसका सबब यह है कि जहॉ दूसरे लेखकोने काश्मीरकी सैर की, चित्र खीचे, जरूरी बाते नोट की और फिर पुस्तक लिखनेके लिए घर चले गये; वहॉ कुँवर सूर्यप्रकाश सिहने अपने राजकीय जीवनका पूरा एक वर्ष इसी देशमे गुजारा। और डाक-बॅगलेमे रहकर नही, खेमेमे रहकर नहीं, गरीब पहाड़ी बनकर। यह वीर नवयुवक पूरे एक सालतक गरीबोंकी तरह नंगे सिर, नंगे पॉव, एक लम्बा कुर्ता पहिनकर, एक मामूली कम्बल ओढ़कर काश्मीरके गरीब लोगोका-सा जीवन गुजारता रहा! यह एक वर्षके तीन सौ पैसठ दिनोका अध्ययन है जिसने इस पुस्तकमे जान डाल दी है। (तालियॉ)

सभापति महोदय और सज्जनों, कलतक यह नवयुवक वीर उन्ही गरीबाना कपड़ोंमे था। जब वह इस जलसेमे शामिल होनेके लिए श्रीनगर आ रहा था, उस समय भी उसके शरीरपर एक लम्बा कुरता और कन्धेपर एक साधारण कम्बल था। कलतक उसके पॉवमे कोई जूता न था, कल तक उसके सिरपर कोई पगड़ी न थी, कलतक उसकी देहपर कोई कोट न था। मैने उसे इस पोशाकमे देखा तो मुझे गर्व हुआ। (तालियॉ)

सभापति महोदय और सज्जनो, मुझे गर्व हुआ कि नरेन्द्र-मण्डलमे ऐसा सादा, ऐसा मेहनत-पसन्द आदमी भी है। मै महाराजा साहब सिकन्धीरको बधाई देता हूँ कि उनके बेटेको यह श्रेय मिला (तालियॉ)। मै महाराजोंको बधाई देता हूँ कि उनकी बिरादरीके एक नवयुवकने साहित्य-क्षेत्रमे यह

ऊँचा स्थान प्राप्त किया (तालियाँ)। मै वाइसराय बहादुरके जरिये ब्रिटिश एम्पायरको बधाई देता हूँ जिसके एक राजाने अपनी लेखनीसे इनाम जीता (तालियाँ)।

सभापति महोदय और सज्जनो, आप यह सुनकर खुश होंगे कि मैंने अपने आदमीसे कहकर कुँवर सूर्यप्रकाश सिंहका उन्ही कपड़ोमे फोटो उतरवा लिया है (कहकहा)। और वह फोटो हमारे दरबारकी शोभा होगा (कहकहा)। और मुझे आशा है कि कुँवर साहब मुझे इस गुस्ताखी-के लिए क्षमा करेगे (कहकहा)।

सज्जनो, मै इससे भी दो कदम आगे जाता हूँ और चाहता हूँ कि ईश्वर करे, कुँवर साहबके जीवनमे उनकी इस तरह कमसे कम एक बार फिर गुस्ताखी हो और इस गुस्ताखीपर हम सब मिलकर एक बार फिर उनको बधाई दे (कहकहा और तालियाँ)। और इसके साथ ही इनाम भी दें।

महाराजा साहब भाषण देकर बैठ गये; लेकिन, लरजाँ कुछ न समझ सकी। उसने धीरेसे मिस फिलिपसे पूछा—इन्होने क्या कहा है?

मिस फिलिप—(लरजाँके कानमे बहुत धीरेसे) इन्होने एक पुस्तक लिखनेपर पचास हजार रुपया देनेकी घोषणा की थी। यह इनाम राज-कुमारने जीत लिया है, उसकी तारीफ करते है।

यह कहकर मिस फिलिप प्लैटफार्मकी तरफ देखने लगी। लेकिन लरजाँने फिर उसके कन्धेको हिलाकर कहा—कौन राजकुमार है वह?

मिस फिलिप—(मुस्कराकर धीरेसे) कुँवर सूर्यप्रकाश सिंह। मेरा ख्याल है, तुम उन्हे जानती हो।

लरजाँ—(बेपरवाहीसे) नही, मै नही जानती। कहाँ बैठे है?

मिस फिलिपने उँगलीसे प्लैटफार्मकी ओर इशारा किया। लरजाँने कुरसीसे उठकर देखनेकी कोशिश की, मगर मिस फिलिपका इशारा किस आदमीकी तरफ है, यह न समझ सकी। इधर मिस फिलिपने भी ज्यादा परवाह न की। उसका ख्याल था, यह सब कुछ जानती है।

अब वायसराय बहादुर खड़े हुए। उन्होने भी कुँवर साहबकी योग्यता और परिश्रमकी तारीफ की और पचास हजारका चेक आगे बढ़ाकर कहा—यह कुँवर साहबकी भेट है। और मुझे गर्व है कि यह काम मुझे सौंपा गया है। आजकी यह घटना मेरे जीवनमे सदा जीती रहेगी। ऐसे मौके रोज-रोज नहीं आते, कभी-कभी आते हैं।

मिस फिलिपने लरजॉके कानमे कहा—अब कुँवर सूर्यप्रकाश सिंह खड़े होगे, अच्छी तरह देखना। और लरजॉ बड़े ध्यानसे देखने लगी। एक लम्बा नवयुवक आगे बढ़ा। उसने पहले चेक लिया, फिर वायसराय बहादुरको फौजी सलाम किया।

दरबार तालियोंसे गूँज उठा, लरजॉ भी तालियॉ पीट रही थी, और खुश थी।

अब वह नवयुवक प्लेटफार्मपर खड़ा था और कुछ बोलना चाहता था। लरजॉने उसे देखा और सन्नाटेमे आ गयी—यह तो उसका बेली था। यह तो पत्थरोका सौदागर था।

लरजॉकी ऑखोंमे दीवारें चक्कर खाने लगीं। क्या समझा था क्या हो गया? उसे राजकुमारी इन्दिराके शब्द याद आ गये कि यह आदमी तुम्हे धोखा दे रहा है। तो उसका सन्देह गलत न था? यह सचमुच राजेका बेटा है! फिर ख्याल आया, मैं गरीब, यह राजेका बेटा, इसका मन मुझसे न मिलेगा। सम्भव है, चार ही दिनके बाद निकालकर बाहर फेंक दे। उस समय मै उसका क्या बिगाड़ लूँगी? लरजॉकी ऑखोमे ऑसू आ गये। सोचती थी, इसने बड़ा धोखा दिया। पहले मालूम होता कि यह आदमी ऐसा झूठा है तो इससे बात भी न करती। कहता था, पत्थरोंका सौदागर हूँ। जो शुरूमें ही धोखा दे रहा है, वह आगे चलकर क्या-क्या गुल न खिलायेगा।

कुँवर साहब भाषण दे रहे थे। लोग चुपचाप ध्यानसे सुन रहे थे। उनके अनुभव ऐसे दिलचस्प, ऐसे रंगीन, ऐसे मजेदार थे कि लोगोंको उपन्यासका-सा स्वाद आ रहा था। मगर लरजॉको इसमे जरा भी दिल-

चस्पी न थी। वह अपने ही विचारोंमें डूबी हुई थी। उसे अब यह भी मालूम न था कि उसके इर्द-गिर्द क्या हो रहा है। यहाँतक कि जलसा समाप्त हो गया और लोग उठ खड़े हुए। जब वायसराय बहादुर और उनके स्टाफके आदमी जा चुके तो दूसरे लोग भी चले। लरजाँ मिस फिलिपके साथ बाहर आयी। वहाँ सैकड़ों मोटर और गाड़ियाँ खड़ी थी। लरजाँ भी मिस फिलिपके साथ अपनी मोटरमे बैठ गयी और कोठीपर जा पहुँची। इस समय उसकी आँखोमे जमीन-आसमान घूम रहे थे।

थोड़ी देर बाद उसने अपने यह कपड़े उतारकर कुरसीपर रख दिये और फिर अपने वही पुराने कपड़े पहन लिये। शीशेमें मुँह देखा तो वह बात ही न थी। अभी कुछ देर पहले यह कपड़े पहनकर कितनी खुश हुई थी! लरजाँकी आँखोंमे आँसू आ गये, मगर उसके संकल्पमे फर्क न आया। दरबान सदर फाटकपर बैठा ही रह गया और लरजाँ चुपचाप पिछले दरवाजेसे बाहर निकल आयी। इस समय उसका दिल इतना भारी हो रहा था जैसे उसपर किसीने पत्थर रख दिया हो, जैसे सिरपर कोई संकट आ पड़ा हो।

तीन बजे वह एक लारीमे बैठी अपने गाँवको जा रही थी।

१७

दरबार समाप्त हो चुकनेपर कुँवर साहबको दोस्तोने घेर लिया और बधाइयाँ देने लगे। इनमेसे कई उनके साथ कालिजमें पढ़े थे। कई उनकी रियासतमे उनके अतिथि रह चुके थे। कुछ ऐसे भी थे जिनकी रियासतमे वे गये थे। सब एक ही आयुके थे। हँस-हँसकर बाते करते थे और एक दूसरेको छेड़ते थे। मगर कुँवर साहबका दिल यहाँ न था। वे चाहते थे, जितनी जल्दी हो सके लरजाँके पास पहुँच जायँ। आज उसे

सब कुछ मालूम हो गया है। जाने क्या सोच रही होगी। सम्भव है, नाराज हो कि मुझे अँधेरेमें क्यो रखा? सम्भव है, खुश हो रही हो कि यह तो राजकुमार निकल आया। आज वे जाकर उसके सामने अपना दिल खोलकर रख देगे। आज उससे साफ-साफ कह देगे कि मै तो तुमसे ब्याह करना चाहता हूँ, बोलो कोई आपत्ति तो नही? लेकिन दोस्त उनको छोड़ते ही न थे और कुँवर झुँझलाते थे।

कोई पूछता, यार तुमने सालभर झोपड़ेमे गुजारा कैसे कर लिया? हमसे तो वहाँ एक दिन भी न रहा जाय। कोई कहता, पचास हजारका इनाम मिलनेकी आशा हो तो सब कुछ हो जाता है। मुझे दो, मै दो साल पड़ा रहूँ। मामूली बात है।

कोई कहता, सुना है, एक परीने इनपर जादू कर दिया था। वरना यह ऐसे कहाँके भक्त थे जो साल भर तपस्या करते रहते।

एक राजकुमारने कहा—भाई, वह चित्र उड़ाओ जो काश्मीर-नरेशने बनवाया है। देखे यह भला आदमी लम्बा कुरता पहनकर कैसा मालूम होता है? पाँव भी नगे, सिर भी नगा। (मुँह बनाकर) अजीब सूरत बनी होगी। क्यो भाई?

इसपर सबने कहकहा लगाया। चमन खिल गया।

फिर एक बोला—मगर वह लड़की कौन है, जिसके लिए आपने जोग ले लिया था?

दूसरा—घबराते क्यो हो, किसी दिन दिखा देंगे। एक जोगिन है, और कौन है?

तीसरा—तो यह इनाम उसीको मिलना चाहिये, इसपर इनका कोई अधिकार नही। पुस्तककी लेखिका वह है, इनाम इन्हे मिल गया। यह सरासर बे-इन्साफी है।

राजकुमारने मुस्कराकर उसकी ओर देखा, लेकिन मुँहसे कुछ न कहा।

पहला—तो चलो, उसको भड़का दे, कि इनाम तुम्हारा है। ये मुँह

देखते ही रह जायँ। (कुछ देर चुप रहनेके बाद) यार, मजा आ जाय, अगर समाचारपत्रोमे यह निकल जाय कि किताब लिखनेवाली एक औरत है। राजकुमारका सिर्फ नाम ही नाम है।

कुँवर—(मुस्कराकर) लेकिन तुम्हे तो फिर भी कुछ न मिलेगा! कोई ऐसा उपाय सोचो, जिससे यह इनाम तुम्हे मिल जाय।

दूसरा—इन्हे इनाम मिलेगा! दो लाइने लिखते है, चार गलतियॉ करते हैं!

पहला—हम तो चाहते है, इनसे छिन जाय। लेनेवाला चाहे काला चोर हो, हमसे उससे कोई सरोकार नही।

तीसरा—काला चोर बननेको मै मौजूद हूँ। (कुँवर सूर्यप्रकाश सिहके कन्धेपर हाथ रखकर) क्यो भाई?

कुँवर—(मुस्कराकर) बड़ी दया आपकी, जो आप इतनी कुरबानी कर रहे हैं। लेकिन अब यहॉ कबतक खड़े रहोगे? सारी दुनिया तो चली गयी, हम अभी यहीं डटे हैं। चलो, चले।

पहला—दिलमे कुछ हो रहा होगा। कहॉ जाओगे, वहीं?

कुँवर—महाराजके पास जाऊँगा और कहॉ जाऊँगा? अभीतक नहीं मिला, राह देख रहे होगे।

दूसरा—अरे मेरे यार, अभीतक नही मिले? तुमने तो कमाल कर दिया। भागके जाओ, एक मिनट न ठहरो। (दूसरोसे) चलो भाई, अब न रोको, नहीं तो—

तीसरा—आज कोई इनके मॉ-बापसे पूछे। खुशीसे फूले न समाते होगे। क्यो भाई, जलसा कब दोगे? और सबको एक-एक पुस्तक भी मिलनी चाहिये। आजके दिनकी यादगार।

चौथा—अब इस समय जाने दो। यह बाते फिर हो लेगी। (कुँवरसे) कहॉ ठहरे हो? वहॉ आ पकड़ेंगे।

कुँवर—निशातबागकी सड़कपर जो हरे रगकी कोठी है, वही।

यह कहते-कहते वे बाहर चले आये और अपनी मोटरमे बैठ गये।

इसके साथ ही दूसरे राजकुमार भी अपनी-अपनी गाड़ीमे बैठकर चले गये। अब वहाँ कोई भी न था।

कुँवरके पिता महाराज पृथ्वीचन्द्र सिह और उनकी रानी कुँवरकी प्रतीक्षा कर रहे थे। इतनेमे कुँवरने आकर महाराजके चरणोमे सिर रख दिया। महाराजकी खुशीका ठिकाना न था। उन्होने बेटेको जमीनसे उठाकर गलेसे लगा लिया और रोने लगे। खुशी इतनी थी कि दिलमे समाती न थी। हँसते भी थे, रोते भी थे। पिताके बाद कुँवरने माँके पाँव पकड़े। माँ बेटेके दुःखमे रो-रोकर आधी रह गयी थी। इस समय वह महारानी मालूम ही न होती थी। मुँहकी हड्डियाँ निकल आयी थी। आखे अन्दरको धँस गयी थी। कभी उनके दर्शन करके कुँवरका दिल खिल उठता था, लेकिन आज उन्हे देखकर कुँवर साहब डर गये। बेसमझ बच्चेने पेड़को वसन्तमे हरा-भरा देखा था, पतझड़का ठूँठ देखकर पहचानना भी मुश्किल हो गया। न वह चिकनाई थी, न वह गदराहट। कुँवर साहबको आश्चर्य हुआ, बोले—आपकी तो शक्ल ही बदल गयी। क्या बीमार थी?

महारानीने रोते-रोते हँसकर कुँवरको अपने पास सोफेपर बिठा लिया और कहा—बेटा, तुम्हारी ही बीमारी थी। अब बच जाऊँगी।

महाराज बोले—अरे भई, यह जिन्दा है यही गनीमत समझो। तुम्हारे बाद इन्होने खाना-पीनातक बन्द कर दिया। दिनको जब देखो, रो रही है और तुम्हारी बाते कर रही हैं। रातको जब देखो, जाग रही है और तुम्हारे बारेमे सोच रही है। अब मै क्या कहूँ तुमसे, मैने इन्हे किस-किस तरह समझाया है। लेकिन इनपर जरा असर न होता था। (महारानीकी ओर देखकर) अब तो मुस्करा रही है। जाने यह मुस्कराहट पहले कहाँ चली गयी थी!

महारानी—(मुस्कराकर) यहाँ चली आयी थी।

कुँवर—मै इन्हे अकेला देखता तो पहचानना कठिन हो जाता। हड्डियाँ निकल आयी है।

महाराज—तुम मुझसे नाराज थे, इनसे तो नाराज न थे। अगर इनको कभी-कभी पत्र लिखा दिया करते तो इनकी यह दशा न होती। न सेहत बिगड़ती, न देह सूखती।

महारानी—इतना तो धीरज हो जाता कि तुम अच्छी तरहसे हो, चार दिनमे आ जाओगे। मगर तुम तो ऐसे गये कि एक पत्रतक न लिखा। मेरे दिलमे बुरे-बुरे विचार आते थे। सोचती थी, जाने उसे खानेको भी मिलता है या नही। जाने उसे कोई देखनेवाला भी है, या नही।

कुँवर—देख लो, मै परदेशमे फाके करते-करते मोटा हो गया। आप घरमे खा-पीकर भी कमजोर हो गयी।

महारानी—चल झूठा कहीका, कहता है मोटा हो गया हूँ। जरा शीशेमे अपना मुँह तो देख, वह बात ही नही रही।

कुँवर—अब आपके लिए तो सदा ही कमजोर रहूँगा। यह आपका दोष नही, माँकी आँखोका दोष है।

महारानी—जिस दिन इन्दिरासे मालूम हुआ कि तू पुस्तक लिख रहा है, उस दिन सन्तोष हुआ। मैं चाहती थी, तेरा पता मिल जाय तो उड़कर तेरे पास पहुँच जाऊँ और तुझे गलेसे लगा लूँ। लेकिन तूने, भगवान जाने, उसे क्या सिखा दिया था कि वह सब कुछ बताती थी, यह न बताती थी कि तू कहाँ है? बस मन मारकर रह गयी। तू इतना संगदिल है कि तुझे माँ-बापका ख्याल भी न आया।

महाराज—महल काटनेको दौड़ता था।

कुँवर—देख लीजिये, इनाम जीत लिया।

यह कहकर उन्होने जेबसे पचास हजारका चेक निकाला और महाराजके चरणोमे रख दिया।

महाराजने चेकको उठाकर चूम लिया और कहा—यह चेक नही, हमारी रियासतका गौरव है। ऐसा अनमोल हीरा मेरे खजानेमे दूसरा नहीं है।

कुँवर—(सिर झुकाकर) मेरी पहली कमाई आपकी भेट है।

महाराजने मुस्कराकर चेक कुँवरको लौटा दिया और कहा—सिकन्धीर चलो। वहाँ तुम्हारे लिए एक और इनाम तैयार है।

कुँवरने चौककर महारानीकी तरफ देखा और आँखो ही आँखोमे पूछा—यह क्या कह रहे हैं?

महारानीने कहा—इन्होंने दसहरेपर नाच-गाना बन्द कर दिया है। इस बार वह सारा रुपया गरीबोपर खर्च होगा। कथा होगी, जलसे होंगे, लेकिन नाच न होगा। (मुस्कराकर) पूरे भक्त बन गये है। और भक्त क्या, भक्तराज समझो। सारी प्रजा हैरान है।

कुँवरकी आँखोंमे आँसू आ गये। महाराजकी तरफ श्रद्धापूर्ण आँखोसे देखकर बोले—मुझे यह इनाम पानेका जो आनन्द था वह इस खुशखबरीको सुनकर दूना हो गया है। मेरा इनाम पचास हजारका इनाम नही—ऐसे कितने ही पचाच हजार आपसे ले चुका और कितने ही और लूँगा। मेरा सच्चा इनाम यह है कि आपने जातीय उत्सवकी महत्ता समझ ली और रियासतके निर्धनोंकी पुकार सुन ली। सम्भव है, उस दिन मेरे मुँहसे कोई अपशब्द निकल गया हो। मै उसके लिए क्षमा चाहता हूँ। यह मेरी उद्दण्डता थी।

यह कहते-कहते कुँवर साहब फिर महाराजके पाँवसे लिपट गये। महाराजने उन्हे उठाकर फिर गलेसे लगा लिया और कहा—मुझे तेरी उद्दण्डतापर गर्व है। मैं चाहता हूँ तू सारी आयु वैसा ही उद्दण्ड बना रहे, और मुझे सीधा रास्ता दिखाता रहे।

महारानी सामने खड़ी पिताके प्यार और पुत्रकी श्रद्धाका यह स्वर्गीय दृश्य देखती थी और खुश होती थी। इस समय उनका रोम-रोम मुस्करा रहा था। वह खिली जाती थी। वह निहाल हो रही थी। आज उन्हे खोया हुआ बेटा ही न मिला था, उनके बेटेको पिताका प्यार भी मिल गया था;—वह चीज जिसे स्त्री दुनियामे सबसे अधिक चाहती है। आज उनकी-सी भाग्यवती दुनियामें कौन होगी? आज उनकी उदास आँखे अबोध बालककी तरह हँस रही थीं। आज उनका पीला चेहरा गुलाबके

फूलकी तरह खिला हुआ था; चाँदकी तरह चमकता था। खुशी इतनी थी कि छिपाये न छिपती थी।

महारानीने बेटेके सिरपर अशर्फियाँ वारकर गरीबोंमें बाँटी। कोठीके बाहर सैकड़ों फकीर जमा हो गये थे। कोई खाली हाथ न गया। कुँवर साहबने अपने नौकरोंको इनाम दिया, सबसे हँस-हँसकर बातें की। उनकी खैर-खबर पूछी। चारों तरफ आनन्दकी लहर दौड़ गयी। रूठी हुई खुशी कई साल बाद इस घरमे वापस आयी। बाते होने लगी।

१८

कुँवर साहब यहाँसे चले तो रातके ग्यारह बज चुके थे। दिलमे डरते थे कि लरजाँ भरी बैठी होगी। कहेगी, तुमने अभीसे बेपरवाही शुरू कर दी, आगे चलकर क्या हाल होगा? सोचते थे, कैसे समझाऊँगा? मगर वहाँ जाकर देखा तो कमरा खाली पड़ा था। कुँवर साहबका कलेजा सन्-से हो गया। एक-एक करके सब कमरे देखे, मगर लरजाँ कहीं भी न थी। न अपने कमरेमें, न उनके कमरेमे। दरबानसे पूछा तो उसने कहा— सरकार, इधरसे तो गयी नही, शायद पिछले दरवाजेसे निकल गयी हों। फिर ड्रेसिंग-रूममे आये। वहाँ एक कोनेमे कुरसीपर लरजाँके वे गहने और कपड़े रखे थे जो पहनकर वह फूली न समाती थी। पास ही उसका तिलई जूता पड़ा था। कुँवर साहब एक-एक वस्तुको देखते थे। और ठढी आहे भरते थे। पेड़ उसी तरह खड़ा था, मगर उसपर चहकनेवाला पंछी कही दिखाई न देता था। कुँवर साहब सोचते थे, कहाँ गयी होगी? अपने झोपड़ेके सिवाय उसे और कौन-सी जगह पसन्द है? जरूर वही गयी है। उन्हें यह ख्याल तो था, कि लरजाँ नाराज होगी और लड़े-झगडेगी। लेकिन यह ख्याल न था कि वह उन्हे छोड़कर चली जायगी।

इतना सन्तोष था कि उसके पास कुछ रुपये है, अगर जरूरत पड़ी तो किसीके मुँहकी तरफ न देखेगी। जो चाहेगी, खर्च कर लेगी। इतनेमे घड़ीने चार बजा दिये, कुँवर साहब चौककर खड़े हो गये। दूसरे कमरेमे आकर उन्होने अपने पिता और महाराजा काश्मीरके नाम पत्र लिखे और उन्हे मेजपर रख दिया। इसके बाद दरबानको बुलाकर कहा—एक चिट्ठी महाराजा सिकन्धीरके नाम है, दूसरी महाराजा काश्मीरके नाम। प्रातःकाल उनके पास पहुँच जायँ। और ड्राइवरको बुलाओ, मुझे इसी समय जाना है।

कुछ देर बाद वे मोटरमे बैठे लरजॉके गॉवको जा रहे थे। इस समय उनके चेहरेपर खुशी भी थी, चिन्ता भी। खुशी इसलिए कि अभी लरजॉ-के पास जा पहुँचेगे। चिन्ता इसलिए कि अगर वह वहॉ भी न मिली तो कहॉ ढूँढूँगा? कभी आशासे दिलका कमल खिल उठता था, कभी निराशासे दिलका कमल मुरझा जाता था। यहॉतक कि नौ बजते-बजते, वे लरजॉके झोंपड़ेके सामने जा पहुँचे।

मगर दरवाजा अन्दरसे बन्द था। कुँवरने दरवाजा खटखटाया।

अन्दरसे आवाज आयी—कौन है?

कुँवर साहबकी ऑखे चमकने लगीं—यह लरजॉकी आवाज थी। उनकी जानमे जान आ गयी। घमण्डसे बोले—हम हैं—राजकुमार सूर्यप्रकाश सिह रियासत सिकन्धीरके उत्तराधिकारी। दरवाजा खोल दो।

लरजॉ दरवाजेके पास आ गयी, मगर उसने दरवाजा नही खोला। रुखाईसे बोली—आप क्या चाहते हैं?

कुँवर साहबने दरवाजेपर तबला बजाते हुए हँसकर कहा—हमारी लरजॉ रानी खो गयी है। सुना है, वह यहॉ इस जगह छिपी बैठी है। हम तलाशी लेने आये है।

लरजॉ—यहॉ कोई रानी-वानी नही। यह गरीबका झोपडा है, राजे-का महल नहीं। आप कही और देखिये।

यह कहकर लरजॉ अन्दर चली गयी। कुँवर साहबको आश्चर्य हुआ।

दरवाजेपर जोरसे हाथ मारकर बोले—लरजॉ यह मै हूँ। क्या आवाज नही पहचानती, दरवाजा खोल दे।

लरजॉ दरवाजेके पास आ गयी और धीरेसे बोली—भगवान जाने, आप कौन है, कौन नही हैं। मै बेलीको छोड़कर और किसी दूसरे पुरुष-को नही जानती।

कुँवर—अरे मै अब इतना पराया हो गया! लरजॉ, मै तुम्हारा वही बेली हूँ, बेली।

अब कुँवर साहबकी आवाज कॉप रही थी।

लरजॉ—वह नगे सिर, नगे पॉव रहता है, आपका शरीर बढ़िया कपड़ोमे लिपटा हुआ है। वह अपने मित्रसे मिलने गया है, आप पचास हजार रुपया इनाम लेकर आये हैं। आप वह नही है।

यह कहते-कहते उसके शब्द होठोपर जम गये और आवाज गलेमे फॅस गयी। कुँवर साहबने भर्रायी हुई आवाजमे कहा—लरजॉ!

लरजॉ—अगर वे आते, तो यह दरवाजा एक मिनटमे खुल जाता। मै उनको जानती हूँ। (ठंढी आह भरकर) भगवान जाने, वे कहॉ चले गये। यह दरवाजा उनके लिए सदा खुला है, मगर और किसीके लिए नहीं। यहॉतक कि किसी राजकुमारके लिए भी नही!

यह कहकर वह अन्दर चली गयी। कुँवर साहब हैरान रह गये। जो-जो उमंगे लेकर आये थे, उन सबपर पानी फिर गया। कुछ देर उसी तरह वहॉ खडे रहे और कुछ सोचते रहे, इसके बाद लौटकर मोटरमें बैठ गये। जैसे कोई जुएमे अपनी सारी पूँजी हारकर घर लौट रहा हो और सोचता हो कि अगर और कुछ मिल जाये तो उसे भी लाकर दॉवमे लगा दे। जैसे कोई मुर्दको जलाकर जा रहा हो, और सोचता हो क्या यह अब कभी न मिलेगा?

लरजॉने उनको इस तरह जाते देखा तो झट दरवाजा खोल दिया और उनके पीछे दौड़ी। मगर जबतक वह गाड़ीके पास पहुँचे, गाड़ी रवाना हो चुकी थी। लरजॉ एक पत्थरपर बैठ गयी और फूट-फूटकर

रोने लगी। वह चाहती थी, गया हुआ समय लौट आये, और उसके साथ ही एक बार कुँवर भी लौट आये। मगर कुँवर और समय दोनों जा चुके थे। वह सामने खड़ी देखती थी और कुछ कर न सकती थी। केवल रोती थी और गाड़ीकी तरफ देखती थी। थोड़ी देर बाद गाड़ी भी आँखोसे ओझल हो गयी। अब लरजॉके लिए संसार अँधेरा था, रोशनी कही भी न थी। उस गाड़ीके साथ ही उसके जीवनकी सारी खुशियाँ भी चली गयी थीं।

रातके दस बजे उसके दरवाजेपर फिर किसीने दस्तक दी। उस समय किरपी सो गयी थी, मगर लरजॉकी आँखोमे अभीतक नीद न थी। पुआलपर बैठी सोचती थी, मैने क्या कर दिया! चौककर बोली—कौन है इस वक्त?

—तुम्हारा बेली।

लरजाँकी रग-रगमें प्रसन्नताकी लहर दौड़ गयी—यह वही थे। उसने उठकर दरवाजा खोल दिया और देखा, सामने उसका बेली खड़ा है। वही लम्बा कुरता, वही कम्बल, नगे पॉव, नंगा सिर। लरजॉने एक क्षण-तक अपनी काली बड़ी-बड़ी, आश्चर्ययुक्त आँखोंसे उनकी ओर देखा और इसके बाद दौड़कर उनसे लिपट गयी। आशा और प्रेम गले लगकर रोने लगे।

कुछ देरतक प्रेमी और प्रेमिका इसी तरह खड़े रहे। इसके बाद अन्दर जाकर पुआलपर बैठ गये और बातें करने लगे। कुँवरने पूछा—तुम अभीतक सोयी क्यों न थी?

लरजॉने कुँवरके ठण्ढे पॉवोंको कम्बलमें लपेटते हुए उत्तर दिया—नीद न आती थी महाराज!

कुँवर—(मुस्कराकर) यही तो पूछता हूँ, देवीजीकी नीद आज कहाँ चली गयी थी?

लरजॉने भी मुस्कराकर कुँवरकी तरफ देखा और शरमाकर जवाब दिया—देवीजीकी नीद आज एक देवताजीको ढूँढ़ने चली गयी थी।

कुँवर—उस समय तो कहती थी, मै नही जानती तुम कौन हो, भाग जाओ यहाँसे !

लरजॉ—वह कोई राजकुमार था, तुम न थे। तुम आये, तो एक मिनटमे दरवाजा खुल गया।

कुँवर—मगर वह राजकुमार तो तुम्हारी पूजा करता है। मेरा ख्याल है, तुम्हारे बिना उसका जीवन नष्ट हो जायगा।

लरजॉने कुँवरको तिरछी चितवनसे देखा और मुस्कराकर कहा—तो यह कहिये, आप उसकी सिफारिश लेकर आये है, क्यो ?

कुँवर—अब जो चाहो, समझ लो। बेचारा सारा दिन रोता रहा है। आशा दिलाओ, तो जी जाय।

लरजॉ—ना बाबा ! मेरे लिए मेरा पत्थरोका सौदागर सब कुछ है, मुझे राजकुमार नहीं चाहिये। राजकुमारोंका क्या है, आज मुझसे प्यार जता रहे हैं, कल दिलसे उतार दें और किसी औरको ढूँढ़ ले तो मै उनका क्या कर लूँगी ? कुछ भी नही। सारी दुनिया उनकी हिमायत करेगी, लरजॉकी कौन सुनेगा ? मुझे राजकुमार नही चाहिये। राजकुमार बुरे, राजकुमारोकी आदतें बुरी।

कुँवर—यह तुम्हारा वहम है। पॉचो उँगलियॉ बराबर नही होती। जो महल छोड़कर यहॉ पड़ा रहा है, आखिर उसे तुम्हारा कुछ ख्याल था या नही ? बोलो।

लरजॉ—मुझे क्या मालूम, ख्याल था या नही ? यह उससे पूछिये।

कुँवर—उससे सब कुछ पूछ चुका। कहता है, अगर न मानेगी तो रियासत छोड़ दूँगा।—कम्बल ओढ़ लो, सरदी लग जायगी।

लरजॉने कम्बल ओढ़ लिया और कहा—यह तो आपने बुरी सुनायी। मगर मुझे राजकुमारोसे डर लगता है। आपनेही तो उस दिन कहा था कि राजे बेपरवाह होते हैं।

कुँवर—बड़ी भोली हो। मैंने यह कब कहा था कि सारे राजे बेपरवाह होते है ? वह राजकुमार ऐसा आदमी नहीं।

लरजाँ—(मुस्कराकर) बडा महात्मा है क्या ?

कुँवरको हँसी आ गयी, बोले—यह तुम आप देख लोगी, मै और क्या कहूँ ! इतना कह सकता हूँ कि तुम उसके दिलमे रहोगी, ऑखोंमे बसोगी । वह तुम्हारी पूजा करेगा । क्या मजाल जो तुम्हे जरा भी कष्ट हो जाय ।

लरजॉ—मगर उसके मॉ-बाप मान लेगे ? वे राजे, मैं एकदम गरीब, बल्कि कंगाल । यह रिश्ता कैसे पसन्द कर लेगे ?

कुँवर—उनसे सब कुछ तय हो चुका । वे कहते है, हमे कोई उज्र नही, जो तुम्हे पसन्द, वह हमे पसन्द ।

अब दोनों चुप हो गये और कुप्पीकी रोशनीमे एक दूसरेकी तरफ देखने लगे । इसी तरह लगभग पन्द्रह मिनट बीत गये । इसके बाद लरजॉने कुँवरकी ओर करुणामय ऑखोसे देखा और कहा—मै सीधी-सादी गरीब लड़की हूँ, मुझे धोखा न देना । मेरा एक भगवान है, दूसरे तुम हो, तीसरा कोई नही है । और मुझे भगवानसे ज्यादा तुमसे आशा है । यह आशा टूटी, तो मै कहीकी न रहूँगी । मेरी दुनिया सूनी हो जायगी ।

इस समय उसकी ऑखोमे ऑसू लहरा रहे थे ।

कुँवरने आगे बढ़कर उसके दोनों हाथ अपने हाथोमे ले लिये और प्यारसे कहा—क्या तुमने मुझे अभीतक नही पहचाना ?

लरजॉने सिर झुकाकर धीरेसे जवाब दिया—पहचाना न होता तो यह नौबत न आती । अब देखती हूँ, आप राजकुमार होकर भी वही पत्थरोंके सौदागर हैं, अमीर होकर भी वही गरीब बेली है ।

कुँवर—और मुझे ऐसा नजर आता है कि तुम राजरानी होकर भी मेरी वही लरजॉ हो जो अभी रूठती है, अभी मान जाती है ।

लरजॉ मुस्करायी ।

कुँवर—जब तुमने दरवाजा न खोला, तो मैं बड़ा चकराया । सोचता था, अब क्या करूँ ?

लरजॉ—और जब आप चले गये तो मेरी जान ही निकल गयी। सोचती थी, अगर न लौटे तो क्या करूँगी? रो-रो कर मर जाऊँगी—कोई आँसू पोछनेवाला भी न होगा।

कुँवर साहब मुस्कराये।

लरजॉ—कैसे चालाक है! कल कहते थे, हो सकता है, परमात्मा मुझे राजा बना दे, तुम्हे रानी बना दे। मुझे क्या मालूम था कि यह सब नाटककी-सी बातें है—पहले सोची हुई, पहले बनायी हुई।

कुँवर—देख लो, परमात्माने हमारी सुन ली। किसी अच्छी घड़ीमें प्रार्थना की थी। मै राजा बन गया, तुम रानी बन गयीं।

लरजॉ—झूठ बोलना कोई आपसे सीख ले। मुझे कैसे-कैसे धोखे दिये! कहते थे, हम पत्थरोके सौदागर है! अब बोलिये!

कुँवर—पत्थरोंकी सौदागरी करने निकला था, यहाँ आकर एक हीरा मिल गया, अब पत्थरोकी सौदागरी मेरी बला करे! अब तो हीरोका व्यापार करेंगे, और चैनकी बाँसुरी बजायेगे।

लरजॉने मुस्कराकर उनकी तरफ देखा और कहा—बाते बनानेमें आप किसीसे न हारेंगे। इन्हीं बातोंके जोरसे तो आपने पचास हजार रुपया जीत लिया।

कुँवर—और तुम्हे भी!

लरजॉ—आपकी यह बात झूठ है। आपने मुझे नहीं जीता, मैने आपको जीता है। अगर शक हो, तो किसीसे पूछ लो। सब मेरा समर्थन करेंगे।

दोनो हँसने लगे। अब उनके सामने दूर-दूरतक प्रकाशपूर्ण भविष्य फैला हुआ था। अँधेरा कहीं दिखाई भी न देता था।

दूसरे दिन रातके समय दो प्रेमियोंका यह झोंपड़ा खाली पड़ा था और कुँवर, लरजॉ और किरपी रावलपिंडीके स्टेशनपर गाड़ीकी प्रतीक्षा कर रहे थे।

और सिकन्धीरमे उनके स्वागत और ब्याहकी तैयारियाँ हो रही थी। महाराज खुश थे। महारानी खुश थी। रियासतके लोग खुश थे। और सबके सब अपने राजकुमारके आनेकी राह देख रहे थे, जो लड़कर गया था, इनाम और लक्ष्मी लेकर लौट रहा था।

दो मित्र थे

१

ताजबहादुर

जब मै स्कूलमे पढ़ता था, उन दिनों मुझे सबसे ज्यादा प्यार महताबरायसे था। ऐसा नेक, ऐसा होनहार, ऐसा मेहनती लड़का हमारी जमातमे दूसरा न था। वह कभी किसीसे लड़ता-झगड़ता न था, न किसीकी शिकायत करता था, न कभी देरमे स्कूल पहुँचता था। झूठ बोलना तो जानता ही न था। शरारतसे कोसो दूर भागता था। अपनी जमातमे सदा अव्वल रहता था। उसके इन गुणोके कारण सब उस्ताद उसकी तारीफ करते थे। उनको विश्वास था कि यह लड़का जरूर किसी दिन बड़ा आदमी बनेगा। बड़ा आदमी बननेके लिए जिन गुणोकी जरूरत है, उसमें वे सभी थे। वह गरीब भी था। बेचारेका बाप मर चुका था, माँ लोगोंके कपड़े सी-सी कर गुजारा करती थी और उसे पढ़ाती थी। वैधव्य और गरीबीकी भयानक रातमे महताबराय ही उसके लिए आशाका दिया था जो उसे बहुत दूर टिमटिमाता हुआ नजर आता था। यह दिया प्रकटमे बिलकुल साधारण था, लेकिन माँकी आँखोमें उसका मूल्य कोहनूर हीरेसे भी ज्यादा था।

मगर महताबरायमे एक दोष भी था। वह अपनी जमातके दूसरे लड़कोसे ज्यादा मिलता-जुलता न था। प्रायः उनसे परे-परे भागता था। शायद इसका कारण उसके मनकी स्वाभाविक निर्बलता हो। लड़के समझते थे, यह अपनी योग्यताके घमण्डमें हमे कुछ समझता ही नहीं है। इसलिए वे उससे नफरत करते थे। परिणाम यह था कि वह सब उस्तादोंका प्यारा होते हुए भी अपनी श्रेणीके विद्यार्थियोमे अछूत बना हुआ था। गरीबको कोई पास भी न बैठने देता था। जिसके पास जा बैठता, वही दूसरी तरफ मुँह फेर लेता था।

योग्यता और सज्जनताके अपमानका यह दृश्य मुझसे न देखा गया। मैंने उसकी तरफ मित्रताका हाथ बढाया और उसकी रुपये पैसेसे भी कभी-कभी सहायता करने लगा। कुछ ही महीनोमे हम एक-दूसरेके मित्र बन गये। स्कूलके सबसे धनी और सबसे गरीब लड़केमे भी ऐसा प्यार हो सकता है, यह लडकोके लिए अनहोनी बात थी। वे हमारे दिनो-दिन बढ़ते हुए प्यारको देखते थे और हैरान होते थे। अब मेरी कोई चीज मेरी न थी। महताबरायको जिस चीजकी जरूरत होती, ले लेता, मै कभी उसका हाथ न पकड़ता था। न अब महताबरायका समय उसका अपना समय था, मै जिस विषयमे कमजोर होता वह मुझे पढ़ाया करता था। यह भी न सोचता था कि मुझे पास कराते-कराते कही आप फेल न हो जाय। प्यार अपनी तरफ नही देखता।

उसका मकान हमारे ही मुहल्लेमे था। और मकान क्या था, एक टूटी-फूटी झोंपड़ी थी। उसीमे उसकी माँ खाना पकाती थी, उसीमे वह लिखता-पढ़ता था और उसीमे रातको सो रहता था। मेरे कहनेसे वह मेरे मकानमे आकर पढ़ने लगा। मगर खाना अपने यहाँ ही खाता था, और रातको सोनेके लिए भी वही चला जाता था। मेरे माँ बाप इतने धनी थे कि महताबरायको खाना खिलाना उनपर जरा भी बोझ न था। उन्होने कई बार उससे कहा, 'तुम खाना खाने घर क्यों जाते हो? यही खा लिया करो, हमारे लिए ताजबहादुर और तुम दोनो बराबर हो।' मगर महताबरायके आत्म-सम्मानने यह बात मजूर न की। उसके इस इनकारसे उसका सम्मान हमारी आँखोमे कई गुना बढ़ गया।—वह रुपये-पैसेका गरीब था, दिलका गरीब न था।

२

इसी तरह विद्यार्थी-जीवनके दस साल गुजर गये और हमने मैट्रिककी

परीक्षा पास कर ली। महताबरायने वजीफा लिया और यूनीवर्सिटी-भरमे अव्वल रहा। मुझे वजीफा तो न मिला, मगर मैं पहले दरजेमे आ गया! इस सफलतापर हम दोनो खुश थे। मै इसलिए खुश था कि महताबराय यूनीवर्सिटीमे अव्वल रहा है। महताबराय इसलिए खुश था कि मै पहले दरजेमे आ गया। और यह सब उसके परिश्रमका फल था, नही तो मुझ जैसे विद्यार्थीके लिए तो पास होना भी आसान न था। अब हमारा प्यार और भी बढ गया। मेरे माता-पिता भी उसे अपने बेटेकी तरह चाहते थे। जब मै नैनीताल जाने लगा तो मेरा दिल उदास हो गया। विचार आया, महताबरायके बिना कैसे रहूँगा? और फिर एक-दो दिनकी बात न थी, तीन महीनेकी बात थी। मेरी ऑखोमे ऑसू आ गये। पिताजीने यह देखा तो कहा—महताबरायको भी ले जाओ। गर्मियोंमे यहॉ रहकर क्या करेगा? दोनो चले जाओ। अकेले क्या करोगे, दिल भी तो नही लगेगा।

जिस तरह बिजलीका बटन दबानेसे देखते-देखते अँधेरेमे रोशनी हो जाती है, उसी तरह मेरे अन्धकारमय दिलमे भी रोशनी हो गयी। कुम्हलाया हुआ कमल खिल गया। दौड़ा-दौड़ा उसके घर गया और बोला—सामान बॉध लो, कल नैनीताल चलना होगा।

महताबरायने मेरी तरफ प्यारसे देखा और मुस्कराकर जवाब दिया—तुम चले जाओ। हमारे भाग्यमे लखनऊकी गर्मियॉ लिखी है। हम कहॉ चल सकते हैं? हम नही चलेगे।

मैने बनावटी क्रोधसे कहा—वाह, चलोगे क्यो नही? तुम्हे बॉधकर भी ले चलूँगा।

महताबराय—हमे वहॉसे दो-चार सेर ठण्ढी हवा भेज देना, हमारा काम उसीसे चल जायगा।

मैं—दो-चार सेर ठण्ढी हवासे क्या बनेगा? चलो ठण्ढी हवा और ठण्ढे पानीके देशमे ले चले। मोटे-ताजे होकर लौटोगे।

महताबराय—तुम मोटे-ताजे हो जाओगे तो मै समझूँगा, मै ही मोटा-ताजा हो गया।

मैं—ऐसे रगीन दृश्य हैं कि देखकर तुम्हारा जी खुश हो जायगा। तुम्हारा आत्माराम नाचने लगेगा।

महताबराय—एक-एक चीजका हाल लिखना। तुम जो कुछ वहाँ जाकर देखोगे, हम तुम्हारी आँखोंसे यहाँ घर बैठे ही देख लेंगे।

मैं—हमारी जमातके कई और लड़के भी जा रहे हैं। खूब मजा रहेगा। खायेंगे, पीयेंगे, ऐश करेंगे।

महताबराय—हमे किसीसे क्या लेना है? हमे तो यह खुशी है कि तुम जा रहे हो।

मैं—अरे, तो क्या तुम सचमुच न चलोगे? साफ-साफ कहो।

महताबरायने शान्त भावसे जवाब दिया—नैनीताल अमीरोंकी सैरगाह है, गरीबोका नही। और हम दुर्भाग्यसे उन लोगोमे हैं जिन्हे प्रायः गरीब कहा गया है। नैनीताल वह जाय जिसके पास पैसा हो, हमारे पास भूख-प्यासके सिवा और क्या है?

मैं—इस तरफसे तुम निश्चिन्त रहो। तुम्हारा एक पैसा भी खर्च न होगा। तुम अपना सामान बाँधकर गाड़ीमे बैठ जाओ। इसके बाद हम जानें और हमारा काम जाने।

महताबरायकी आँखोमें आँसू भर आये। बोला—भैया, तुम्हारे उपकारोंसे पहले ही बहुत दबा हुआ हूँ, और न दबाओ।

मैं—मालूम होता है, तुम हमे अभीतक पराया ही समझ रहे हो?

महताबराय—यह तो अपने दिल से पूछो। हमसे क्या पूछते हो?

मै—बहुत अच्छा। तुम न जाओगे तो हम भी न जायँगे।

महताबराय—अरे मेरे यार, तुम तो नाराज हो गये। मगर तुमने तो वहाँ मकान भी ठीक कर लिया है।

मै—इससे तुम्हे क्या? हम बड़ी आशा लेकर आये थे, तुमने हमारा दिल तोड़ दिया!

यह कहकर मै बाहर निकल आया? महताबरायने पीछेसे आवाज दी—अरे भई, जरा एक बात तो सुनते जाओ।

मैंने गरदन पीछे मोड़कर देखा और रुखाईसे कहा—कहो, क्या कहते हो ?

महताबराय—तुम हमारे लिए न रुको, बीमार हो जाओगे ।

मैंने उसे जलानेके लिए जवाब दिया—बीमार हो जायँगे, तो तुम्हारी बलासे ।

महताबराय—तुम्हारा मतलब क्या है ?

मै—मेरा मतलब यह है, कि तुम्हे मेरी जरा परवाह नही ।

यह तीर निशानेपर बैठा । महताबरायने आकर मेरे गलेमे बाहे डाल दी और मुझे मनाने लगा । मगर मैने साफ कह दिया कि तुम न जाओगे तो मै भी न जाऊँगा । यह मेरा आखिरी फैसला है ।

आखिर महताबरायको मानना पड़ा । दूसरे दिन हम दोनों लखनऊसे चल पड़े । गर्मियोंके यह तीन महीने ऐसे दिलचस्प, ऐसे रंगीन, ऐसे मजेके थे कि आज भी याद आते है तो कलेजेमे हूक-सी उठती है । हाय, वे सुनहरे दिन कहाँ चले गये ?—प्यारके रसमे समोये हुए, आनन्दमे डूबे हुए । ऐसे दिलचस्प जैसे परियोकी कहानियाँ, ऐसे मीठे जैसे स्वप्न-संगीत, ऐसे पवित्र जैसे बहन-भाइयोंका प्यार ।

३

मगर अफसोस, ये तीन महीने हमारी खुशीके अन्तिम महीने थे जिनके बाद हम दोनोको चैनका एक दिन भी न मिला ।

मुझे वह दिन अच्छी तरह याद है जब हम दोनों दोस्त 'जुबिली कालेज'मे भरती हुए । उस दिन मेरा दिल जवानीकी उमगो और प्रसन्नताके प्रकाशसे भरा था । और मेरे सामने भविष्यका वह मार्ग खुला था जिसपर सफलताके फूल खिलते हैं और प्यारकी धूप खेलती है । मगर

जब मै घर लौटा तो मेरे दिलमे आशाकी जगह ईर्ष्याका विष भरा था, और मेरा भविष्य बादलोंसे घिरी हुई साँझके समान धुँधला और अनिश्चित था।

और इसका कारण एक लड़की थी—रूपरानी, जो उसी दिन कालेजमे भरती हुई थी। कदाचित् यह लड़की उस कालेजमे भरती न होती—उसने एक ही क्षणमे मेरे दिलका चैन छीन लिया। मै चाहता था, मैं उसे देखता ही रहूँ। वह मेरी ऑखोसे ओझल न हो।—मेरा पालन-पोषण धनी घरानेमे हुआ है। मै सदासे सुन्दर स्त्रियोसे मिला हूँ। मैने अच्छेसे अच्छे सिनेमा देखे है। मगर उस लड़कीका-सा रूप और रूपका जादू मैने कही नही देखा। उसने जब पहले पहल मेरी ओर अपनी बड़ी-बड़ी ऑखोसे देखा, तो मुझे ऐसा मालूम हुआ कि मैने एक क्षणमे हजारो ब्रह्माण्ड देख लिये हैं। उन ब्रह्माण्डोके सामने मेरा और मेरे धन, दोनोका कोई मूल्य न था। मै लुट गया।

मगर रूपरानीने मेरा जरा भी ख्याल न किया और उसके बाद एक बार भी मेरी तरफ न देखा। उसका सारा ध्यान महताबकी तरफ था। वह और दूसरी लड़कियॉ सबसे पिछले बेंचपर बैठती थीं। मैं और महताबराय सबसे आगे साथ-साथ बैठे थे। मैंने कई बार बहाने-बहानेसे पीछे मुड़कर उसकी तरफ देखा और उसे हर बार महताबरायकी पीठकी तरफ देखते पाया। एक बार वह अपने साथवाली लड़कीसे महताबरायकी तरफ इशारा करके कुछ बातचीत भी कर रही थी। सम्भव है वह कह रही हो कि यही लड़का यूनीवर्सिटीमे अव्वल रहा है। जरूर यही कहती होगी। और कुछ कहनेकी सम्भावना ही न थी। एक बार महताबरायने पिछली सीटवाले लड़केसे कुछ कहनेके लिए गरदन मोड़ी तो रूपरानी और उसकी ऑखें मिल गयीं।

रूपरानीने सिर झुका लिया, महताबरायका चेहरा लाल हो गया, और मेरे दिलमे आग लग गयी। उस समय मै और महताबराय एक दूसरेसे सटकर बिलकुल पास-पास बैठे थे। यों हम दोनोंके बीचमे कोई तीसरी

चीज न थी, लेकिन फिर भी हमारे बीचमे वैरका पार न किया जानेवाला सागर गरज रहा था ?

आज मुझे पहली बार यह मालूम हुआ कि जब दो मित्रोंके बीच कोई सुन्दर स्त्री आकर खड़ी हो जाती है तो वे दोनो कितनी जल्दी पराये बन जाते हैं ! उस दिन अगर कोई मुझसे आकर कहता कि तुम अपने माँ-बापकी सारी सम्पत्ति देकर यूनीवर्सिटीमे अव्वल रह सकते हो, तो मै यह प्रस्ताव आँखे बन्द करके स्वीकार कर लेता और रूपरानीका प्रेमपात्र बननेके लिए अपना सब कुछ कुर्बान कर देता । मगर अफसोस, यह मेरे बसकी बात न थी। मै किसी तरह महताबराय न बन सकता था। दुनिया गरीबसे अमीर बनना चाहती है, मै अमीरसे गरीब बनना चाहता था ।

४

महताबराय

मै कैसा नीच हूँ जो अपने दोस्तको तकलीफ दे रहा हूँ ! अगर मै कालेजमे भरती न हुआ होता तो यह नौबत काहेको आती ! वह मुझे कितना चाहता था, मुझे देखकर किस तरह खिल उठता था, गर्मियोमे मुझे किस चाव और चाहसे नैनीताल ले गया था ! जब मैने जानेसे इनकार कर दिया तो कैसा उदास हो गया था ! और आज मेरी शक्लसे भी बेजार मालूम होता है ! मुझे देखकर घृणासे मुँह फेर लेता है ! पहले एक-एक दिनमे कई-कई बार मेरे घर आया करता था, अब महीनों बीत जाते है, कभी दर्शन ही नही होते । ऐसा लगता है, वह वह नही है, मैं मै नही हूँ।

उस दिन माँजीने पूछा था—क्या तुमसे और ताजसे झगड़ा हो गया है; न तुम उसके घर जाते हो, न वह तुम्हारे घर आता है । यह सवाल न

था, मेरे हृदयपर हथौड़ेकी चोट थी। क्या जवाब देता? सिर झुकाकर चुप हो रहा। और इसका कारण रूपरानी है। न वह मुझे चाहती, न ताज मुझसे खफा होता, न हमारी दुनिया बदलती।

मगर इसमे मेरा क्या दोष? उससे कई बार कहा है, मेरा ख्याल छोड़ दो। लेकिन, वह कहती है, मेरे लिए मरना आसान है, तुम्हारा ख्याल छोड़ना आसान नही। मै कहता हूँ, मै गरीब माँका बेटा हूँ, वह कहती है मुझे गरीब ही चाहिये। क्या करूँ? कोई उपाय नजर नहीं आता, कोई रास्ता नही सूझता। रूपरानी कहती है, ब्याह करूँगी तो तुम्हीसे करूँगी, नही तो सारी आयु कुँवारी रहूँगी।

ताज समझता है, मैंने उससे रूप छीन ली है; लेकिन, सच्ची बात यह है कि रूपरानीने मुझसे ताज छीन लिया है। कभी-कभी विचार आता है, रूपरानीसे कह दूँ मेरा-तुम्हारा ब्याह होना असम्भव है। कभी-कभी यह भी सोचता हूँ, कह दूँ, मेरे ब्याहका तो बहुत दिन हुए फैसला भी हो चुका है। मगर भगवान जाने, जब वह मेरे सामने आती है तो मुझे क्या हो जाता है! सारे इरादे धरे-धराये रह जाते हैं। मुँहसे बात ही नही निकलती। चुपचाप लौट आता हूँ।

कभी-कभी ऐसा मालूम होता है कि यदि मैंने उससे कोई ऐसी-वैसी बात कह दी तो वह आत्म-हत्या कर लेगी। इस विचारसे ही मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं। मै आप मर सकता हूँ, उसे नही मार सकता—यह मेरी ताकतसे बाहर है।

मै मानता हूँ, मै उसके लायक नही, उसे किसी अमीरसे ब्याह करना चाहिये। उसकी शक्ल-सूरत, उसका रंग-रूप, उसका रहन-सहन क्या इस योग्य है कि वह अपना जीवन और जीवनकी आशाएँ मुझ जैसे दरिद्र-नारायणके साथ बाँध दे? मेरे पास तो उसके लिए मकान भी नही है। हाँ, ताजबहादुर उसके योग्य है। उसके पास मकान है, सवारी है, रुपया-पैसा है। उससे ब्याह करके नसीब जाग उठेंगे, वह राज-सिंहासनपर जा चढ़ेगी, उसे किसी चीजकी कमी न रहेगी। महलोमें रहेगी, फूलोंपर सोयेगी,

रूपरानी—(दरवाजेकी ओर देखकर) अरे लो, श्रीवास्तव भी आ गया। इसको तो खेल देखे बिना खाना हजम नहीं होता। मगर सक्सेना कहाँ है? सक्सेनाके बिना इसे खेलका मजा क्या खाक आयेगा? और सक्सेना इसके सिवा कैसे रहेगा?

इतनेमे श्रीवास्तवने हम दोनोको देखकर हाथ उठाया और 'गुड ईवनिंग' कहा। हमने भी मुस्कराकर जवाब दिया। रूपरानी उसकी तरफ देखती हुई बोली—आज अकेला ही है।

मैंने रूपरानीके पॉवपर अपना पॉव रखकर दबाया और कहा—बताओ, क्या बात है?

रूपरानीने मुझे धकेलकर अपना पॉव छुड़ा लिया और उसे हाथसे मलते हुए बोली—चलो, परे हटो। मेरा पॉव कुचल दिया। मर्द पढ़-लिखकर भी जगली ही रहते है।

मैं—और न बताओ, अबके दूसरा पॉव कुचलूँगा।

रूपरानी—अच्छा, बड़े आये हैं पॉव कुचलनेवाले। शोर मचा दूँगी तो अभी मैनेजर पकड़कर पुलिसके हवाले कर देगा। सारी चौकड़ियॉ भूल जाओगे। मिन्नते करने लगोगे?

मैं—मैं कह दूँगा, पहले इसीने चुटकी ली थी। मैंने ईंटके जवाबमे पत्थर मारा था।

रूपरानी—झूठ बोलते शर्म न आयेगी तुम्हे?

मै—(मुस्कराकर) शर्ममे यह हिम्मत कहॉ कि किसी सूरमाके सामने आ जाये। हमें देखते ही दुम दबाकर भाग जायगी।

रूपरानी खिलखिलाकर हॅस पडी और अपनी कलाईकी घड़ी देखकर बोली—लो, अब खेल देखनेके लिए तैयार हो जाओ। नही तो फिर पूछोगे, यह क्या हो रहा है?

मैने इस बातका जवाब न देकर फिर अपना वही सवाल छेड़ा—बताओ, आज क्या बात है?

रूपरानीने छतके पंखेकी तरफ देखकर कहा—खेलके बाद बताऊँगी।

मैं—कोई खास बात मालूम होती है ।

रूपरानी—सुनकर खुश हो जाओगे ।

मैं—ऐसी बात है वह ?

रूपरानी—जमीनसे उछल पड़ोगे !

मैं—अभी क्यों नही बता देती ?

रूपरानी—अभी बता दूँगी, तो तुम्हारे खेलका सारा मजा किरकिरा हो जायगा ।

मैं—खेलका मजा तो अब भी किरकिरा हो गया । लोग खेल देखेगे, हम मनके घोड़े दौड़ायेगे ।

रूपरानी ने मेरे और भी नजदीक खिसककर धीरेसे कहा—आज ताजबहादुरका बाप आया था । पिताजीने साफ इनकार कर दिया ।

शब्द साफ न थे, मगर मतलब बिलकुल साफ था । मेरा दिल जोर-जोरसे धड़कने लगा । लेकिन मैने फिर भी अनजान बनकर पूछा—काहेसे इनकार कर दिया तुम्हारे पिताजीने !

रूपरानीने लजाकर गरदन झुका ली और दायें हाथसे अपने रेशमी रूमालको बायें हाथपर लपेटते हुए रुक-रुक कर कहा—ताज-बहादुरके लिए कहते थे । पिताजीने जवाब दिया, मै गरीब आदमी हूँ, आपसे टक्कर नही ले सकता । निराश होकर लौट गये ।—चलो, यह चिन्ता भी दूर हुई । रुपयेकी मार बुरी होती है । और मुझे खतरा था, कि कहीं पिताजी रुपयेपर रीझकर 'हाँ' न कर दे । मेरा मरना हो जाता ।

मै चुपचाप बैठा रह गया । उस समय मुझमे हिलने-डुलनेकी शक्ति ही न थी ।

रूपरानीने अपनी बातको जारी रखते हुए कहा—जब ताजबहादुरका फादर चला गया, तो पिताजीने माजीसे कहा—रूप तो महताबरायको चाहती है, ताजबहादुरसे ब्याह दूँ तो उसका सारा जीवन ही बरबाद

हो जाय। न बाबा, मै पैसा न देखूँगा। लड़का शरीफ और समझदार है, अपने और रूपके लिए बहुत कमा लेगा।

इतना कहकर रूपरानी चुप हो गयी। थोड़ी देर बाद उसने मेरी तरफ विजयी ढगसे देखा और फिर कहा—कैसी खबर है, बोलो?

लैम्प बुझ गये और खेल शुरू हो गया मगर मेरा ध्यान खेलकी तरफ न था, कुछ और ही सोच रहा था।

दूसरे दिन कालेजमे ताजबहादुरको देखा तो मेरे दिलमे भाला-सा चुभ गया। निराशा और विवशताका ऐसा मुँह बोलता चित्र मैने इससे पहले कभी न देखा था। न वे खिले हुए होठ थे, न वे हँसती हुई आखे थी। फूल कुम्हला गये थे, दीप बुझ गये थे। जबतक कालेजमे रहा, उसने सिर नही उठाया। निराशाने साहसका गला घोट दिया था। अब उसमे जीवनका जरा-सा भी चिह्न दिखाई न देता था। मुझे उसकी दशापर दया आ गयी। विजयीके हजारो दुश्मन है। मगर हारे हुएसे कौन कठोर हृदय दुश्मनी करेगा? मैने निश्चय कर लिया कि रूपरानीका ख्याल छोड़ दूँगा। उससे साफ कहूँगा, मुझे तुमसे प्यार नही। उससे अनमना हो जाऊँगा, बात ही न करूँगा। देखूँगा तो मुँह दूसरी तरफ फेर लूँगा। आखिर अपने-आप पीछे हट जायगी। जो खुशी जीतकर हारनेमे है, वह खुशी जीतकर जीतनेमे कहाँ? जीत बड़ी है, मगर कुरबानी उससे भी बड़ी है। परमात्मा मुझे बल दे। मै कुरबानी करूँगा।

६

रूपरानी

सचमुच दोनोंमे बहुत फर्क है। ताजबहादुर मेरी तरफ देखता है तो ऐसा मालूम होता है कि मेरी तरफ कोई आग बढ़ी आ रही है जो आप

भी जलती है, दूसरोंको भी जलाती है। महताबराय मेरी तरफ देखता है तो ऐसा मालूम होता है कि वह ऑखे नही, प्रेमरसके दो कटोरे है, जिन्हे देखकर दिल ठण्ढा हो जाता है। एकमे पशुता है, दूसरेमे मनुष्यता है। एकमे प्रेम है, दूसरे मे स्वार्थ है।

मगर एक बातमे ताजबहादुर महताबरायसे बढ़ा हुआ है; उसे रुपये-पैसेकी कमी नही। उधर महताबराय पूरा-पूरा दरिद्रनारायण है। बेचारेकी मॉ मेहनत-मजदूरी करके पढ़ा रही है। मगर पढ़ने-लिखनेमे ताजबहादुर महताबरायका पासग भी नही। महताबराय न पढ़ाता तो ताजबहादुर मैट्रिकमे भी पास न हो सकता। इधर महताबराय यूनीवर्सिटीभरमे अव्वल रहा है! उस दिन उसका 'ऐस्से' देखकर प्रोफेसर साहब दग रह गये थे; पिछले महीने 'ग्रेटर इण्डिया'मे उसकी एक कविता प्रकाशित हुई थी जिसे पढ़कर आदमी किसी दूसरी दुनियामे पहुँच जाय। कविता क्या थी, मोतियोकी माला थी। और सिर्फ अग्रेजी का ही नही, दूसरे विषयोका भी यही हाल है। बी० ए० मे फिर अव्वल रहेगा। अजब नही, रिकार्ड तोड दे। ऐसे आदमीको जो हाथसे खो दे, उससे अभागा कौन होगा? पिताजीने बहुत अच्छा किया जो ताजबहादुरके बापकी बात नामजूर कर दी, नही तो मेरा जीवन ही नष्ट हो जाता। धन क्या है, योग्य है, कमा लेगा। और फिर शरीफ कैसा है! सारा कालेज उसकी सौगन्ध खाता है। सारा शहर उसकी प्रशसा करता है। आदमी नही, हीरा है जो गरीबीके दलदलमे फॅसा हुआ भी चमक रहा है। मगर वह हमेशा वहाँ थोड़े ही पड़ा रहेगा! आज जमीनपर है, कल आसमानपर होगा।

सुना है, पहले दोनोमे बडा प्यार था। दूध-पानीकी तरह रहते थे। मगर जबसे कालेजमे आये है, तबसे फट गये है। यह तो कुछ नही कहते, मगर ताजबहादुर हर समय उनका अपमान करना चाहता है। उस दिन कई लड़कोसे कह रहा था, 'मै सहायता न करता तो श्रीमान्‌जी एण्ट्रेंसकी परीक्षामे भी न बैठ सकते। दाखिला मैने दिया, पुस्तकें मैने दी, कपड़े मैंने दिये। अब मुझीसे अकड़ने चले है! इतना भी नही सोचते कि मॉ

घर-घरमे पानी भरती है।' उधरसे मैं गुजर रही थी। मेरे कानोंमें इन शब्दोकी भनक पडी तो मुँह लाल हो गया। जीमे आया, ऐसी गत बनाऊँ कि अट्ठी-सट्ठी भूल जाय। मगर फिर कुछ सोचकर क्रोधको पानीकी तरह पी गयी। पर इतना कह ही दिया कि उनका उपकार भी कम नहीं है, वह आपपर मेहनत न करते तो आप बारह साल भी एण्ट्रेसमे पास न होते, सारी पुस्तकें धरी-धरायी रह जाती। जो उपकार आपपर उन्होने किया है वह आपसे क्या उतरेगा? उसके सामने रुपया कोई चीज ही नही है।

यह सुनकर उसका मुँह जरा-सा निकल आया। अभी परसोंका जिक्र है, ताजबहादुरने सारे क्लासको टी-पार्टी दी, केवल उनको निमन्त्रण न भेजा। और कारण यह बताया कि उनमे यह हिम्मत कहाँ कि किसीको कोई पार्टी दे सके। जो दूसरोको खिला नही सकता, वह दूसरोका खाये क्यो? और मजा यह कि यह शब्द मुझे सुनाकर कहे। शायद उसे वहम होगा कि इस ओछेपनसे वह उन्हे मेरी निगाहोमे गिरा देगा। मगर असर उल्टा हुआ। मेरी आँखोमे वह और भी ऊँचे उठ गये। ताजबहादुरकी अगर कुछ इज्जत मेरी निगाहोंमे थी, तो वह भी जाती रही। जो धनपर इतना अभिमान करे वह आदमी नही। मेरे पास आया तो मैने साफ कह दिया कि मैं तुम्हारी पार्टीमे शामिल नही हो सकती। तुम्हे इतना भी पता नही कि अपने किसी क्लास-फेलोका इस तरह खुल्लम-खुल्ला अपमान नहीं करना चाहिये। दूसरे विद्यार्थियोने भी मेरा समर्थन किया। श्रीमान्‌जीको जवाब-तक न सूझा। उनका अपमान करने चले थे, अपना अपमान करा बैठे।

७

मगर कुछ दिनोसे देखती हूँ, उनके तेवर कुछ बदले हुए है। न वह नेहकी निगाहे हैं, न वह चाहकी चितवन। जैसे एकदम बदल गये हैं।

लाख कहती हूँ, मेरी समझका दोष है, मगर दिल नही मानता। उस दिन कहा था, जरा फिलासोफीकी एक-दो बाते समझा दो। कहने लगे, प्रोफेसर साहबसे क्यों नही पूछ लेती? इसपर मुझे जहर चढ़ गया। लेकिन उनके लिए जैसे कुछ हुआ ही नही। फिर एक दिन मैने कहा, आज बहुत अच्छी फिल्म आयी है, चलोगे? बोले, अफसोस है, मै न जा सकूँगा; अकेली चली जाओ। मैने कहा, मुझसे अकेले तो न जाया जायगा। जवाब दिया, ताजबहादुरको ले जाओ। अब इसका क्या जवाब देती? मेरी आँखोमे आँसू आ गये। लेकिन उस जालिमको जरा भी दया न आयी। मगर इससे भी ज्यादा अफसोस मुझे उस दिन हुआ जब उनको बुखार हो गया और वे कालेज न आ सके। मै दिन-भर हैरान रही, शामको उनके घर पहुँच गयी। देखा तो चारपाईपर लेटे कराह रहे थे। मै कुछ देरतक खड़ी देखती रही। इसके बाद बैठ गयी। उन्होंने मुझे देखा, मगर जबानसे कुछ न कहा। यह भी नही कि तुमने बड़ा कष्ट किया। मैं ही बेशर्मोंकी तरह बैठी रही। थोड़ी देर बाद बोली—अब क्या हाल है? जी कैसा है?

उन्होंने आँखे खोल दी, और धीरेसे कहा—अच्छा है।

मैने अपना हाथ उनके माथेपर रख दिया—क्या दवा पी है, और किस डाक्टरका इलाज है?

वे—कुनीन खायी है। किसी डाक्टरका इलाज नही।

मैं—दूध पिया है या नहीं?

वे—नही।

मैं—क्यो, इस तरह तो कमजोरी हो जायगी?

वे—मुझे डर है, अगर मैं ज्यादा बोला तो बुखार बढ़ जायगा। ज्यादा बाते न करो।

मेरी छातीमे अगर कोई छुरी भी उतार देता तो मुझे इतना दुःख न होता, जितना इस बातसे हुआ। क्रोधसे बोली—मुझसे बड़ी भूल हुई जो तुम्हें देखने चली आयी।

उन्होने बेपरवाहीसे मुँह दीवारकी तरफ फेर लिया और कहा—मै तुम्हे बुलाने नही गया था। अब चली जाओ।

नहलेपर दहला पड़ा। मै जोशसे खड़ी हो गयी। ऑखोंकी पलक भी जलती हुई मालूम हुई। बोली—अब क्या तुम्हारे पास आनेके लिए भी मुझे तुमसे आज्ञा लेनी होगी ?

उन्होने दीवारकीही तरफ मुँह किये हुए जवाब दिया—अब इसका जवाब मै क्या दूँ ? अपने दिलसे पूछो।

मै जाते-जाते रुक गयी—मेरा दिल बिलकुल साफ है। तुम्हारा ही दिल बदल गया है। वह पहली बात ही नही रही।

वे—मैं गरीब हूँ। गरीबोके दिल होता ही कहाँ है।

मै—तुम तो आज लड़ते हो।

वे—बुरे आदमियोसे और क्या आशा की जा सकती है ?

मै कहर और क्रोधसे तनकर खड़ी हो गयी और चलनेको तैयार हुई।

सहसा मेरे दिलमें विचार आया, बीमारीमे आदमी चिड़चिड़ा हो जाता है। यह इनका दोष नही, बुखारका दोष है। सारा क्रोध पानी होकर बह गया। मै फिर चारपाईपर बैठ गयी और उनका मुँह जबरदस्ती अपनी तरफ करते हुए प्यारके गुस्सेसे बोली—जरा ऑखे तो मिलाओ। आज तुम्हे हो क्या गया है, लड़ाई मोल लेते हो ? कुछ बावले तो नही हो गये ?

मैंने उनकी आँखोमे ऑसू देखे। अब वह रो रहे थे और पछता रहे थे, और उनमे मुझसे ऑखे मिलानेका साहस न था। क्रोधका सामना सभी कर सकते है, प्रेमका सामना कोई नही कर सकता। यह ऑसू न थे, मेरी जीतके जीते-जागते प्रमाण थे। मैं उन्हे देखकर बाग-बाग हो गयी। वे बदले न थे, बदलनेका ढोंग रच रहे थे।

अब उन्होंने मेरा हाथ लेकर अपने सीनेपर रख लिया और रोने लगे। मगर मुँहसे कुछ न कहा।

थोडी देर बाद फिर रुखाईसे बोले—अब तुम जाओ। कोई देख लेगा तो सौ-सौ बाते बनायेगा।

मै—मुझे किसीकी बातोकी परवाह नही।

वे—(करवट बदलकर) तुम्हे न होगी, तुम अमीर हो। मुझे तो है, मैं गरीब हूँ।

मेरे दिलमें रह-रहकर ख्याल आता था, इन्हे हो क्या गया है? इस ख्यालने मेरे दिलको व्याकुल कर दिया। हरे-भरे चमनमे आग लग गयी थी।



ताजबहादुर

मेरा ख्याल गलत निकला। मैं महताबरायको शैतान समझता था; मगर वह देवता है। मैने उसके बारेमे झूठी अफवाहे उड़ायी, उसका अपमान किया, उसे गालियाँ दी, उसके विरुद्ध षड्यन्त्र रचे। वह मुझसे मिलनेके लिए मकानपर आया तो मैने उससे बात-चीत न की। मगर वह फिर भी मेरा वही पुराना मित्र महताबराय बना रहा जो मेरी गलतियाँ देखता था और मुस्कराता था। मैंने उसकी ऑखोमे घृणाके भाव कभी नही देखे, न किसीसे यह सुना कि उसने मेरे बारेमे कोई अपमानसूचक शब्द कहे हो। उसने जरूर यह निश्चय कर लिया था कि मेरे हर एक अपराधको हँसकर माफ कर देगा। मगर मुझे उसकी भलाई भी बुराई नजर आती थी। पीलियाके रोगीको हर एक चीज पीली मालूम होती है, बीमार ऑखोंको रोशनी भी चुभती है। बुखारमे शहद भी कड़वा लगता है।

रूपरानीकी तरफसे निराश होकर मैं और भी झुंझला गया। मै चाहता था, बस चले तो महताबरायकी गरदन मरोड़ डालूँ। एक वह दिन था कि उसके चेहरेपर जरा-सी भी उदासी देखकर मेरा दिल डूब जाता था। अब यह दशा थी कि अगर कोई उसकी मौतकी खबर सुना देता तो मै जी जाता। लेकिन, उसके भाग्यमे मौत न थी। मेरे भाग्यमे जिन्दगी न थी। वह मेरी छातीपर मूँग दलता था।

साँझका समय था। मै गोमतीके किनारे बैठा अपने भाग्यके अँधेरेमे रोशनीकी खोज कर रहा था। बिलकुल उसी तरह जिस तरह वह रोगी, जिसे सारे डाक्टरोंने जवाब दे दिया हो, कभी-कभी सोचता है—शायद मै अब भी बच जाऊँ। आशा सख्त-जान साँपकी तरह है जो कुचला जानेपर भी तड़पता रहता है। जरा-सी गरमी पहुँची और वह हिलने लगा, जरा-सा उसे किसीने छेड़ा और उसने फिर सिर उठा लिया। सहसा किसीने मेरे कन्धेपर हाथ रख दिया।

मैने चौककर सिर उठाया और मुड़कर देखा, महताबराय मेरे सामने खड़ा था!

मुझे हैरानी हुई। मैं नही समझता था वह कभी मुझसे बोलनेकी हिम्मत भी करेगा। मै उसे अपने जीवन और जगत्का सबसे बड़ा शत्रु समझता था, और मेरा ख्याल था, वह भी मुझे ऐसा ही समझता होगा। लेकिन, इस समय वह मेरे सामने खड़ा था और उसके मुँहपर जरा भी क्रोध, जरा भी रोष, जरा भी संकोच न था। उलटा मुस्करा रहा था।

मै घबरा गया। मेरे मुँहसे बात न निकलती थी। मुस्कराना चाहता था, मुस्करा न सकता था। बोलना चाहता था, बोल न सकता था। लेकिन महताबरायने मेरी मुश्किलको आसान कर दिया। बोला—क्यो भाई, क्या रूठे ही रहोगे? तुममें यह बूता होगा, मुझमे तो नही है। बताओ, बात क्या है?

मैंने झूठी हँसी हँसकर उत्तर दिया—तुमको मेरी परवा क्या है?

रूपरानी सलामत रहे। जबतक वह न थी, तबतक हम सब कुछ थे, अब हमारी कोई हस्ती ही नही है !

महताबरायने कहा—यह तुम्हारा वहम है। मै रूपरानीके लिए तुम्हे कुर्बान करनेको कभी तैयार नही। जरूरत हो तो उसको छोड़ दूं।

मै—अरे भाई, ऐसी बातोसे क्या लाभ ? यह बाते कहनेकी है, करनेकी नही हैं। तुम्हारी गाड़ी जिस रास्तेपर चल रही है, चलने दो।

महताबराय—क्या मतलब ?

मै—मतलब यह कि तुम्हारा मतलब कुछ भी नही है, ऐसे ही बाते बनाने आ गये हो।

महताबराय—(मेरी तरफ करुणामय ऑखोसे देखकर) तुम मुझे इतना नीच समझ रहे हो ?

मैं—यह तो तुम अपने मुँहसे कहो, मै नहीं कहता। न मुझे ऐसा कहनेका अधिकार है।

महताबराय—आखिर तुम मुझसे क्या चाहते हो ? मैं क्या करूँ कि तुम खुश हो जाओ, इतना बता दो।

मैं—मैं तो अब भी नाराज नही हूँ।

महताबराय—(मुस्कराकर) सच कहते हो क्या ?

मै—(चिढ़कर) जी नही, झूठ बोल रहा हूँ ! हरिश्चन्द्र तो सारे शहरमे केवल आप हैं, बाकी सब झूठे है।

महताबराय—लो, देख लो। यह नाराजगी नही तो और क्या है ? जरा-सी बातमे गरजने लगे।

मैं—(बेपरवाहीसे) चलो नाराजगी ही सही। अपने जीकी बात है। जी चाहा खुश हो गये, जी चाहा नाराज हो गये। इससे किसीको क्या ? अपना-अपना जी है।

महताबराय—यह तुम कह सकते हो, मै नहीं कह सकता ! मुझसे तो तुम्हारा नाराज चेहरा नही देखा जाता। तुम्हें उदास देखता हूँ तो मेरा दिल रोने लगता है।

मैं—बड़ी कृपा आपकी।

महताबराय—जहाँतक मैने सोचा है, तुम्हारी नाराजगीका कारण केवल रूपरानी है। क्या मेरा ख्याल ठीक है?

मैं—फर्ज किया, ठीक है, फिर?

महताबराय—भाई मेरे, मैने उससे साफ-साफ कह दिया है कि मुझे उससे प्रेम नही है। और मेरे विचारमे इससे ज्यादा मै और कुछ न कर सकता था। कहो, अब भी तुम खुश हुए या नही?

मैं हैरान रह गया। महताबराय यहाँतक जानेको तैयार हो जायगा, इसकी मुझे आशा न थी। दुर्भाग्य और साँझके अँधेरेमे दूर आशाका टिम-टिमाता हुआ दीपक नजर आने लगा। क्या वह सचमुच दीपक था, या मुझे अब भी किस्मत सब्ज बाग दिखा रही थी?

महताबरायने फिर कहा—अगर तुम साफ कह देते कि तुम्हे उससे प्रेम है, तो मामला यहाँतक न बढ़ता। मै पहले ही ऐसा बर्ताव करता कि उसको मेरी तरफ झुकनेका साहस ही न होता। मगर तुमने मुझसे तो कुछ कहा ही नही, दिलमे गिरह बाँध बैठे। यह तुम्हारी भूल थी। दोस्तोको एक दूसरेपर विश्वास होना चाहिये।

मेरी आँखोंमे आँसू आ गये। मैने वह सुना जो सुनना चाहता था मगर जो सुननेकी मुझे आशा न थी। ख्याल आया, यह आदमी सचमुच सूरमा है जो मेरे लिए रूपरानीको त्याग रहा है। क्या मुझमे भी यह हिम्मत है? नही, मै महताबरायके सामने बहुत छोटा, बहुत तुच्छ, बहुत निकृष्ट था। मगर मै फिर भी खुश था। डूबते हुए को किनारा मिल गया था यद्यपि उसे बचानेवाला खुद भँवरमे गोते खा रहा था।

थोड़ी देर बाद हम एक दूसरेके गलेसे लिपटे हुए हँस-हँसकर रो रहे थे। हमारे चारो तरफ साँझका अँधेरा और सन्नाटा फैला हुआ था और हमारे पाँव-तले गोमतीकी मस्त लहरे उछलती, कूदती, नाचती, गाती अपने प्रीतमसे मिलनेके लिए भागी चली जाती थीं।

९

महताबरायने जो कुछ कहा था, करके दिखा दिया। अब वह रूपरानी-की तरफ कभी देखता भी नही। कई बार मेरे सामने रूपरानी बातचीत करनेके लिए उसके पास गयी। मगर उसने मुँह फेर लिया। एक बार मैंने अपने कानोसे सुना, महताबराय कह रहा था—'तुम मुझे बदनाम कर दोगी।' रूपरानीने घृणा और तिरस्कारके ये शब्द सुने तो उसका मुँह अगारेके समान लाल हो गया। उधर महताबरायका चेहरा लाशकी तरह पीला था। मै सब कुछ समझ गया—वह केवल मेरे लिए अपने मनको मार रहा था। एक बार महताबरायने एक लड़केसे चाकू माँगा। उसके पास ही रूपरानी बैठी थी। लड़केके पास चाकू न था। रूपरानीने अपना चाकू निकालकर महताबरायकी तरफ बढ़ा दिया। मानो सुलहकी प्रार्थना की। महताबरायने ऐसा प्रकट किया कि उसने देखा ही नही और एक दूसरे लड़केकी तरफ चला गया। सुलहकी प्रार्थना नामंजूर हो गयी। रूपरानीने सिर झुका लिया। शायद सोचती होगी, अब मै इतनी बुरी हो गयी। इसके बाद सारा दिन दोनो उदास रहे। मै यह देखता था और कुढता था। एक-आध बार दिलमे यह भी ख्याल आया कि यह पाप है। सोचता था, दोनो एक दूसरेको चाहते है, मुझे उनके बीचमे खड़ा होनेका क्या अधिकार है? कभी-कभी जीमे आता था, महताबराय कितना उदारहृदय है। क्या मैं उसका अनुकरण नही कर सकता? मेरे बलिदान-से दो उजडे हुए दिल बस जायँगे। मगर बहादुरी और बलिदानके यह विचार इधर पैदा होते थे, उधर मर जाते थे। अँधेरी काली रातमे जुगनू चमकता है और छुप जाता है और इसके बाद रात पहलेसे भी अँधेरी और भयानक हो जाती है। यही हाल मेरे दिलका था।

आखिर एक दिन मुझे अवसर मिल गया। रातका समय था, मै और रूपरानी दोनो कानपुरसे लखनऊ लौट रहे थे। रेलवे स्टेशनपर मुलाकात हो गयी। मेरे दिलकी जो दशा थी, वह मै ही जानता हूँ। खुशीसे बावला हो गया। रूपरानीके पास जाकर बोला—हेलो मिस सक्सेना, किधर जा रही हो?

रूपरानीने मेरी तरफ मुस्करा कर देखा और 'लीडर'का नया परचा तह करके अपने फरके काटमे रखते हुए कहा—निगम बाबू, खूब मिले। मै यहाँ एक सहेलीसे मिलने आयी थी, अब लखनऊ लौट रही हूँ। आप कहाँ जायँगे?

मै—हम भी लखनऊ ही जा रहे है। आपके साथ सफर खूब मजेसे कटेगा। वर्ना जँभाइयाँ ले-लेकर लखनऊ पहुँचते?

रूपरानी—(अपनी रिस्टवाचकी तरफ देखकर) इसमे क्या शक है। आप न मिलते तो मुझे अनपढ़ औरतोके साथ बैठना पड़ता। अब आपके साथ बैठूँगी तो कुछ साहित्यकी बातें होगी, कुछ राजनीतिकी। मगर आप तो सेकेण्ड क्लासमे होगे, मेरा टिकट इण्टर क्लासका है। आपके साथ कैसे बैठूँगी?

मेरा दिल बाग-बाग हो गया। इस थोड़ेसे स्वर्गीय समयके लिए मै अपना सर्वस्व निछावर कर सकता था, बोला—आपके साथ इण्टर क्लास भी सेकेण्ड क्लास बन जायगा।

रूपरानीने मेरी तरफ दिलको टटोल लेनेवाली आँखोंसे देखा। वह जानना चाहती थी कि मेरे इन शब्दोका क्या मतलब है। इतनेमे एंजिनने सीटी दी और हम दोनो उचककर इण्टर क्लासके एक डिब्बेमे चढ़ गये। भाग्यवश डिब्बा बिलकुल खाली था। गाड़ी चलने लगी। मैं दरवाजेमे खड़ा स्टेशनके लैम्पोकी तरफ देख रहा था। जब गाड़ी प्लैटफार्मसे निकल गयी तो मैने दरवाजेको बन्द कर दिया और रूपरानीके सामनेवाली सीटपर आकर बैठ गया। इस समय मेरा दिल धक्-धक् कर रहा था और मेरे कान इस आवाजको सुन रहे थे।

रूपरानी अखबार देख रही थी। मुझे सीटपर बैठते देखकर बोली—असेम्बलीकी बैठक शुरू हो गयी।

मेरा ध्यान असेम्बलीकी बैठककी तरफ न था। मैं चाहता था, भगवान्‌ने अवसर दिया है तो लाभ उठाऊँ और रूपरानीके सामने अपना दिल और दिलके भाव खोलकर रख दूँ। इससे अच्छा अवसर और कहाँ मिलेगा? लोगोमे बातूनी मशहूर हूँ। देखूँ, इस समय मेरी वाक्-चातुरी काम देती है या नही? तलवार वह जो युद्ध-भूमिमे काम आये; नहीं तो देखने और दिखानेके लिए तो लकड़ी और लोहेकी तलवारे दोनों बराबर है।

मगर रूपरानी अखबार देख रही थी और गाड़ी, किसी अभागेके हाथमे आकर निकल जानेवाले अवसरकी तरह, उड़ी चली जा रही थी। सोचता था, ऐसा अवसर फिर न मिलेगा। रातका समय है, एकान्त है, गाड़ीका सफर है, जो चाहूँ कह लूँ, उसे सुनना पड़ेगा। न आप कही जा सकती है, न मुझे बोलनेसे रोक सकती है। लखनऊमे ऐसा सुनहरा अवसर कहाँ? यह मेरा सौभाग्य है जो यह अवसर मिल गया। लेकिन, वह अब भी अखबार देख रही थी। मै तिलमिला उठा। जी चाहता था, अखबार छीनकर खिड़कीसे बाहर फेक दूँ और अपने मनकी व्यथा सुना लूँ। कैसी संग-दिल है! मेरे जीवन और मृत्युका सवाल है, यह अखबार पढ़ रही है!

आखिर मैने उसकी तरफ झुककर ऊँची आवाजसे कहा—हमने सोचा था, आपसे गपशप लड़ेगी मगर आप तो अखबार ले बैठी।

रूपरानीने उसी तरह अखबार पढ़ते-पढ़ते बिना मेरी तरफ देखे जवाब दिया—आजका लीडिग आर्टिकल बड़ा जोरदार है, जरा इसे खत्म कर लूँ, तो फिर बाते होगी।

मै—वाह! हम गूँगेका गुड़ खाये बैठे है, आपको लीडिग आर्टिकल-की पड़ी है। छोड़िये इसे!

यह कहकर मैने रूपरानीके हाथसे अखबार छीनकर अपनी सीटपर

रख लिया, और देखा कि कही मेरे इस साहससे वह नाराज तो नही हो गयी।

रूपरानीने अखबार लेनेके लिए अपना छोटा-सा गोरा हाथ बढ़ाया, और दूसरे हाथसे साड़ीको ठीक करते हुए कहा—बस, एक ही पैराग्राफ बाकी है, दो-चार मिनटमे खत्म हो जायगा।

मै—भई, चलती गाड़ीमे पढ़नेसे ऑखे खराब हो जाती है।

रूपरानी—नही खराब होती, मुझे आदत है।

मैंने अखबारपर अपना दाहिना हाथ रख लिया और लैम्पकी तरफ देखकर कहा—रोशनी भी बहुत कम है। मै आपका शुभ-चिन्तक हूॅ, दुश्मन नहीं हूॅ। इस समय आपको अखबार वह दे, जो आपका दुश्मन हो।

रूपरानी—यह आपकी ज्यादती है।

मै—चलो, ज्यादती है, तो ज्यादती ही सही। मगर इस समय अखबार न मिलेगा।

रूपरानीने अपना हाथ पीछे हटा लिया और अपना सिर गाड़ीकी दीवारके साथ लगाकर कहा—बहुत अच्छा साहब, न दीजिये। अब आपसे झगड़ा कौन करे? कीजिये बाते।

अब मेरे लिए मैदान साफ था। कुछ मिनट चुप रहा और सोचता रहा कि बातचीत कहाॅसे शुरू करूॅ। आखिर मुझे रास्ता मिल गया। बोला—यह महताबरायको क्या हो गया है? हर किसीसे लड़ता है, सीधी बात करो तो भीं काटनेको दौड़ता है!

रूपरानीने दिलको छेद डालनेवाली आँखोसे मेरी तरफ देखा, फिर ठण्ढी आह भरकर कहा—मालूम होता है, वह महताबराय ही नही रहा, पहले कैसा मौजी जीव था—बात-बातपर मुस्कराता था, बात-बातपर हॅसता था। उदास होना जानता ही न था।

मै—अब चौबीस घण्टे उदास रहता है। न किसीसे हॅसता है, न बोलता है, न बात करता है। जाने क्या हो गया है?

रूपरानी—बिलकुल बदल गया।

मै—(दुःख प्रकट करते हुए) कुछ बीमार तो नही है? जरूर बीमार होगा; नही तो आदमी इतनी जल्दी कैसे बदल जाय। उसकी इस काया-पलटपर सारा कालेज हैरान है। आपसे बोल-चाल है, या आपसे भी बन्द हो गयी? मेरा ख्याल है···

मैने बात अधूरी छोड़ दी।

रूपरानीके गोरे मुँहपर दुःखके काले बादल छा गये। कुछ देर चुप-चाप गाड़ीके बाहर अँधेरेकी तरफ देखती रही। उसने ऐसी आह भरी जो छातीसे नही, पेटसे उठती मालूम होती थी और कहा—मुझसे भी नही बोलते आजकल।

अब बात-चीत ऐसी जगह पहुँच चुकी थी जो बहुत नाजुक थी। मैंने एक-एक शब्दको तोलकर कहा—हमने तो सुना था कि आपके पिताजीने उनके साथ आपका···

इसके आगे मेरी जबान न चल सकी। वाक्य अधूरा रह गया, मगर मतलब अधूरा न था।

रूपरानीके मुँहपर दुःखकी छाया आ गयी। फर्शकी तरफ देखते हुए बोली—मिस्टर निगम, मेरा ख्याल है, इस बातको यही समाप्त कर दिया जाय तो ठीक रहेगा।

मै—मुझे खेद है कि आपको इससे कष्ट हुआ। लेकिन···मै यह कहना चाहता हूँ···कि···अगर आपको···मेरा मतलब है, आपत्ति न हो, तो मैं···यानी अपने बारेमे···कुछ···दो···चार शब्द कहूँ! इजाजत है आपकी?

रूपरानीने अपनी रिस्ट-वाचको कलाईपर ठीक किया और कहा—कहिये, मेरी तरफसे इजाजत है।

मै—(रुक-रुककर) आप बुरा तो न मानेगी?

रूपरानी—अब इसके बारेमें मैं पहलेसे क्या कहूँ—अगर बात बुरा

माननेवाली न होगी तो बुरा न मानूँगी। मगर मालूम होता है, कोई खास बात है। क्यो ?

मै—खास बात न होती तो इतनी भूमिकाकी क्या जरूरत थी ? फौरन कह देता।

रूपरानीने जवाब न दिया।

मै—मेरी जिन्दगी और मौतका सवाल है। इतना ख्याल रहे।

रूपरानीने अबके भी जवाब न दिया।

मै—तो इजाजत है, कहूँ ?

रूपरानीका मुँह लज्जाकी लालीसे तमतमा रहा था। काँपते हुए होठोसे उकताये हुए स्वरमें बोली—अब एक बार तो कह दिया कि कहिये इजाजत है, और कितनी बार कहूँ ?

मैंने अपने दिलमे लम्बा-चौड़ा लेक्चर तैयार कर रखा था। सोचता था, यहाँसे शुरू करूँगा, फिर यह कहूँगा, फिर यहाँपर पहलू बदलूँगा, इसके बाद अपनी बेचैनीका हाल बयान करूँगा और उसके बाद उसके पाँवपर सिर रख दूँगा। लेकिन भगवान् जाने, उस समय मुझे क्या हुआ कि मेरे मुँहसे केवल यही चार शब्द निकले, 'मै आपको चाहता हूँ।' विद्यार्थी जानता सब कुछ था, मगर परीक्षाके समय उसकी जबानसे एक ही वाक्य निकल सका 'मैं आपको चाहता हूँ।'

यह कहते-कहते मेरी आँखें नीचे झुक गयीं।

थोड़ी देर बाद मैने सिर उठाकर रूपरानीकी तरफ देखा—वह मेरे सिरके ऊपर लकड़ीकी दीवारकी तरफ ऐसे ही, बिना किसी मतलबके देख रही थी। मगर उसके विचार जाने कहाँ थे।

अब मैंने एक बार फिर अपने शरीर और आत्माकी सारी शक्तियोंको इकट्ठा किया और जो कुछ पहले एक वाक्यमें कह चुका था, अब उसकी व्याख्या करने लगा—मैं सोता हूँ तो तुम्हारे सपने देखता हूँ, जागता हूँ तो तुम्हारे बारेमे सोचता हूँ। कालेजमे तुम दिखाई दे जाती हो तो कोई खजाना मिल जाता है। नही नजर आती, तो दिल घबरा जाता है।

सहसा रूपरानी खड़ी हो गयी और बोली—मुझे अफसोस है, मेरे मनमे आपके लिए इस तरहके भाव नही है। यह बात छोड़ दीजिये, कुछ और बात कीजिये।

मेरे दिलपर किसीने हथौड़ा मार दिया। बल्कि अगर कोई हथौड़ा मार देता तब भी मुझे इतना कष्ट न होता जितना रूपरानीके उत्तरसे हुआ। देखते-देखते मेरी आँखोमे आँसू भर आये। निराशाके क्रोधसे बोला—क्या मै महताबरायसे भी बुरा हूँ? आखिर उसमे क्या बात है जो मुझमे नही? मैं उससे हर तरह अच्छा हूँ। वह मेरी बराबरी नही कर सकता।

उस समय जोशमे यह शब्द बक गया था। मगर आज सोचता हूँ तो मुझे आप हैरानी होती है कि उस समय मुझे क्या हो गया था! कहॉ मै, कहॉ महताबराय? जमीन-आसमानका फर्क था। वह सज्जनता, वह योग्यता, वह नेकदिली मुझे छू भी नही गयी। मै उसके सामने एकदम तुच्छ हूँ। मगर उस समय मैने कह दिया—आखिर उसमे क्या बात है जो मुझमे नही? मै उससे हर तरह अच्छा हूँ।

रूपरानी मेरी अदूरदर्शितापर मुस्कराकर बोली—उनमे एक बात तो यह है कि वे इस बार भी यूनिवर्सिटी-भरमे अव्वल रहेगे। आप शायद पास भी न हो सकें। कहिये ठीक है, या नही?

मै—यूनिवर्सिटी-भरमे अव्वल रहना खेल-मजाक नही है। यों कोई गप्पे मारता फिरे तो उसे कौन रोक सकता है? अपने मुँहसे जो कुछ चाहे कह ले। मै चाहूँ, मै भी कह लूँ। मगर मै कहता नही।

रूपरानी—कहते है, अव्वल न रहा तो नाम बदल देना।

मै—उस समय बगलें झॉकने लगेगे, ऑखे न मिलायेगे।

रूपरानी—यह आपका वहम है। उनके लिए जरा भी मुश्किल नहीं। आपमे यह आत्म-विश्वास है? कहिए 'मै अव्वल रहूँगा?'

मै—अगर आप आशा दिलाये, तो मै भी जान लड़ा दूँ। अव्वल रहना क्या मुश्किल है?

रूपरानीने कुछ देर सोचकर कहा—चलो, अगर आप यूनिवर्सिटी-भरमे अव्वल रह जाये, तो मुझे इनकार न होगा।

आशाका हरा-भरा मैदान बिल्कुल मेरे सामने आ गया। बोला—आपके पिताजी तो आनाकानी न करेगे ?

रूपरानी मुस्करायी और बोली—अब मै उनकी तरफसे क्या कह सकती हूँ ? मगर खैर, उनको भी मना लूँगी।

मै—तो लिख रखिये, मै यूनिवर्सिटीमे अव्वल रहूँगा।

डेढ घटेके बाद जब गाड़ी लखनऊ पहुँची, तो मेरी दुनिया ही बदल चुकी थी। अब हरएक चीज हँसती, मुस्कराती, नाचती हुई दिखाई देती थी।

१०

मगर थोड़े दिनो बाद यह हँसने, मुस्कराने और नाचनेवाली दुनिया दूर भागने लगी। किताबे लेकर बैठता तो एक सागर सामने आ जाता जो मेरे और मेरी आशाओंके बीच गरजता था। जहाँतक नजर जाती थी पानी ही पानी था। आशाकी हरी-भरी भूमि कभी बहुत फासलेपर दिखाई देती थी, कभी निराशाके उस अथाह समुद्रमे डूब जाती थी। कुछ महीनोंके बाद मुझे निश्चय हो गया कि मेरा यूनिवर्सिटीमे अव्वल रहना खामख्याली है। बल्कि कभी-कभी तो मुझे सन्देह होता था कि मै पास भी न हो सकूँगा। रूपरानी जानती थी कि यह नालायक है, बातें कर सकता है, मेहनत नही कर सकता। इसीलिए मेरे सामने ऐसी कड़ी शर्त रख दी। मै पागल था जो उसकी चालको न समझा। समझदार लडकी है, कैसी सफाईसे टाल गयी ? साँप भी मर गया, लाठी भी बच गयी।

इसपर भी मैने हिम्मत न हारी और मेहनत करता रहा। किनारा दूर

थां, पानी गहरा था, दम फूल गया था, मगर तैराक फिर भी हाथ-पॉव मार रहा था। सोचता था कि सायद बच जाये, शायद कोई लहर किनारेकी तरफ धकेल दे, शायद कोई सहारा मिल जाये, शायद कोई चमत्कार हो जाये। कभी-कभी इस दुनियामे अनहोनी बाते भी तो हो जाती है। जीवन आशाके कच्चे धागेके साथ बॅधा रहता है, इसका मुझे इसी समय अनुभव हुआ। कुछ ही दिनों बाद मेरी दशा बदल गयी। अब मुझे खाने-पीनेकी सुध न थी, खेलने-कूदनेकी सुध न थी, नहाने-धोनेकी सुध न थी, और इतना ही क्यो, मुझे कपड़े बदलनेकी भी सुध न थी। दिन-रात पढ़ता था। असम्भव था कि इतने परिश्रमका असर मेरे स्वास्थ्यपर न पड़ता। ऑखे अन्दरको धॅस गयी, चेहरा पीला पड़ गया। माता-पिताने यह देखा तो डर गये। वे कहते थे, तुझे पढ़नेकी जरूरत ही क्या है। तेरे खानेको बहुत है। कालिज छोड़ दे और पहाड़पर चला जा। लेकिन मेरे सिरपर तो दूसरी धुन सवार थी। अपने स्वास्थ्यको दिनोदिन खराब होते देखता था और फिर भी उसका ख्याल न करता था। यहॉतक कि मुझे हल्का-हल्का बुखार रहने लगा। मगर मैने फिर भी परवाह न की। अपनी मृत्युको धीरे-धीरे अपनी तरफ बढ़ते देखता था और घबराता न था, बल्कि उल्टा मुस्कराता था। जो आदमी आप मरनेको तैयार हो जाय, उसे मौतका क्या डर?

आखिर एक दिन महताबरायने मुझे एक बागमे आ पकड़ा और पूछा—यह तुमने मरनेपर क्यो कमर बॉधी है? अगर इसी तरह पढ़ते रहे तो वह दिन दूर नहीं जब तुम अपने-आपको तपेदिकके पजेमे पाओगे। अभीसे ऑखे खोलो।

जब हमारा शरीर कमजोर होता है तो हममे किसीसे ऑखे मिलानेकी हिम्मत नही रहती। दूसरोंकी तरफ देखते भी है तो सकोच और शर्मसे। उन दिनों मेरी भी यही दशा थी। मैने झेपकर महताबरायकी तरफ देखा—और किताब बन्द करके कहा—तपेदिक क्यो हो जायगा। पढ़ने-लिखनेसे तपेदिक नही होता।

महताबराय—जरा अपना मुँह तो शीशेमे देखो। हड्डियाँ निकल आयी है।

मै—वाह, मै तो समझता हूँ, मोटा हो गया हूँ। कहते है, हड्डियाँ निकल आयी है।

महताबराय—रंग भी पीला पड़ गया है। वह पहली बात कहाँ? सेबकी तरह लाल था।

यह कहते-कहते वह मेरे पास घासपर बैठ गया और मेरी किताबोको उलट-पुलट कर देखने लगा।

मैं—अब भी मेहनत न करूँ तो और कब करूँ? परीक्षा तो सिरपर आ गयी। स्वास्थ्यका क्या है, आज खराब है, कल ठीक हो जायगा। मगर परीक्षाका समय बार-बार नही आयेगा।

महताबरायने मेरी किताबें उठाकर एक तरफ रख दी और मेरे पास खिसककर कहा—मेहनत करो, इससे तुम्हे कोई नही रोकता। मगर भाई, अपने स्वास्थ्यका भी तो ध्यान रखो। जितनी मेहनत तुम कर रहे हो उतनी मेहनत सारे कालेजमे कोई नही कर रहा है।

मैं—यह परीक्षाकी बाजी नही, प्यारकी बाजी है। अव्वल न रहा तो जीवन-भर रोता रहूँगा।

महताबराय—अरे तो क्या यह सच है? सुना मैने भी था, लेकिन विश्वास न होता था। मै समझता था, किसीने गप उड़ा दी है।

मैं—गप नही, सच बात है भाई, अब तो बाजी लग गयी।

महताबराय—यह लडकी तुम्हारी जान लेकर रहेगी। आज जाकर उसकी ऐसी खबर लेता हूँ कि जन्मभर याद रखेगी।

मैं—क्या कहोगे?

महताबरायने जवाब न दिया।

मै—क्या कहोगे उसे? जरा मुझे भी तो बता दो।

महताबराय—अब तुम्हे क्या बताऊँ क्या कहूँगा? ऐसा फटकारूँगा कि इतना-सा मुँह निकल आयेगा। रोने लगेगी तुम्हारे पास आकर।

मांफी मॉगेगी और अपने-आप कह देगी कि तुम इतनी मेहनत न करो। यूनिवर्सिटीमे अव्वल रहकर क्या बनाओगे, छोडो।

मैने कुछ देर सोचा। ख्याल आया : अगर यह हो जाय तो क्या कहना! जान छूट जायगी। लेकिन फिर ख्याल आया, अब क्या बार-बार इसीसे सहायता लेता रहूँगा। सोया हुआ आत्म-सम्मान उठकर बैठ गया। धीरेसे बोला—तुम्हारी सहानुभूतिके लिए धन्यवाद। मगर यह बात मुझे पसन्द नहीं। अब तो जो बाजी लग गयी, लग गयी।

महताबरायने ठण्ढी आह भरकर मेरी ओर देखा और फिर कहा—यह काम जितना आसान तुमने समझ रखा है, उतना आसान नही है। बडी मेहनत करनी पड़ेगी।

मैं—मगर आखिर जो अव्वल रहेगा, वह भी तो आदमी ही होगा, कोई देवता तो न होगा। अगर वह मेहनत कर सकता है, तो मै भी कर सकता हूँ।

महताबराय किसी गहरे विचारमे डूब गया। सोचता था, क्या हो सकता है। थोड़ी देर बाद उसके मुँहपर चमक-सी दिखाई दी। मुस्कराकर बोला—मै भी कैसा मूर्ख था जो इतनी-सी बात भी न सूझी। लो तुम इतनी मेहनत करना छोड़ दो और अपने स्वास्थ्यका ख्याल करो। और मै तुम्हे विश्वास दिलाता हूँ कि फिर भी तुम यूनिवर्सिटी-भरमे अव्वल रह जाओगे।

मेरा मुँह आश्चर्यसे खुला रह गया—वह कैसे?

महताबराय—अब यह न पूछो। (व्यग्यसे) कोई अनहोनी बात होगी, कोई देवता आकर तुम्हे सब कुछ बता जायगा, या तुम्हारा दिमाग जाग उठेगा—उसमे रोशनी हो जायगी या तुम्हारे परचे अपने-आप लिखे जायँगे। तुम्हे मालूम भी न होगा कि क्या हो गया, और तुम अव्वल रह जाओगे।

मैं—हसी कर रहे हो मुझसे!

महताबराय—तुम्हारे सिरकी कसम, हँसी नही करता। तुम आजसे निश्चिन्त हो जाओ।

मै—और अगर परीक्षामे फेल हो गया तो—

महताबराय—मुझे गोली मार देना।

मै—मै यूनिवर्सिटी-भरमे अव्वल रहना चाहता हूँ, इतना सोच लो। यह मेरे जीवनकी सबसे बडी साध है।

महताबराय—भगवान्‌की राहे न्यारी है। उसीपर भरोसा रखो। वह सब कुछ कर सकता है।

मै—यह नही। साफ-साफ कहो, क्या करोगे?

महताबरायने मेरे कानमे कछ कहा और फिर हँसा। मगर मै सन्नाटेमे आ गया। वह सज्जन है, यह मैं जानता था, मगर मेरे लिए यहाँतक जानेको तैयार हो जायगा, इसका मुझे गुमान भी न था। आत्म-सम्मानने उठकर आँखें मली, अँगडाइयाँ ली और फिर सो गया।

मैने पढ़ना-लिखना छोड़ दिया और निश्चिन्त हो गया। शामके आठ बजे सोता था, सुबहके नौ बजे उठता था। रूपरानी मेरी ओर देख-देखकर मुस्कराती थी, मानो कहती थी कि तुम जरूर अव्वल रह जाओगे! कभी-कभी सन्देह होता था कि फेल हो जाऊँगा। हो सकता है, महताबराय ठीक समयपर धोखा दे जाय। लेकिन फिर ख्याल आता, महताबराय ऐसा आदमी नही। उसके बारेमे ऐसा सोचना भी उसके प्रति अन्याय करना है। जो कहता है, करके दिखा देता है। वह बडबोला नही है। वह अपने कहेकी कीमत समझता है।

प्रोफेसर कहते थे, बस बड़ी मेहनत करने चले थे, चार ही दिनमे जोश ठण्ढा पड़ गया! अजी जनाब, हम तो पहले ही जानते थे कि यह रोग अमीरोके बसका नही! जिनके बाप-दादे खानेको छोड जायँ उन्हे तकलीफे उठानेकी क्या जरूरत है? लड़के कहते थे, तुमने बहुत अच्छा किया जो समयपर सँभल गये, नही कोई रोग सहेढ़ लेते तो सारी उम्र हाथ मलते रहते। रूपरानी तो तुम्हे कत्ल करनेपर तुली हुई थी। तुम्हारे

लिए सुन्दर लड़कियोंकी क्या कमी है, चाहो तो दर्जन-भर ब्याह कर लो। तुम्हारे साथ कौन ब्याह न करेगा?

लेकिन जब परीक्षा-फल निकला तो सब हैरान रह गये—मै यूनिवर्सिटीमे अव्वल था!

सारे शहरमे शोर मच गया। प्रोफेसर और लड़के सुनते थे और हैरान होते थे। कहते थे, यह तो चमत्कार हो गया। कोई आकर हमसे कहता कि ताजबहादुर यूनिवर्सिटीमे अव्वल रहा है, तो हम उसपर विश्वास ही न करते। समझते, उसने पढनेमे भूल की है। कुछ लोग कहते, साहब, यह तो छिपे रुस्तम निकले। हमारा ख्याल था, पास भी न होगे, यह अव्वल रह गये। महताबरायपर सबको आशा थी, मगर वह मामूली नम्बर लेकर पास हुआ। बल्कि कुछ नम्बर और कम होते तो पास भी न होता। लोग कहते, उसे घमण्ड खा गया। कुछ कहते, पहले योग्य होगा, लेकिन अब तो रूपरानीके रूपका शिकार है। एक काम हो सकता है, पढ़ाई या प्रेम। दोनो काम एक साथ कभी नही होते। बाज कहते, जो प्यारमे फॅस गया, वह पढ़ाई क्या करेगा?

मै यह सुनता था और कुढ़ता था। मुझे रह-रहकर उसपर दया आ रही थी। कभी-कभी यह भी ख्याल आता था कि सारा रहस्य खोलकर रख दूं और उसकी इज्जत बचा लूॅ। लेकिन फिर हिम्मत छूट जाती थी। सारा दिन बधाइयॉ देनेवालोका तॉता बॅधा रहा। कालेजके सभी लड़के और प्रोफेसर आये। लेकिन रूपरानी और महताबराय न आये, गो मै उन्हीके लिए व्यग्र था। आखिर रातके नौ बजे मेरा गला छूटा और मै महताबरायसे मिलनेके लिए उसके घरकी ओर चला—गिरता हुआ—लड़खड़ाता हुआ—पग-पगपर हिचकिचाता हुआ।

लेकिन वह मकानपर न था। उसकी माँ रो रही थी और रूपरानी उसे चुप करा रही थी। मै अवाक् होकर उलटे पॉव लौट आया और अपने पलंगपर गिरकर सोचने लगा, यह क्या हो गया?

११

रूपरानी

मेरा ब्याह हो गया, लेकिन मै खुश न थी। वह मुझे चाहते थे, मेरे पॉवतले ऑखे बिछाते थे, मुझसे पूछे बिना कोई काम न करते थे। उनके घर जाकर मुझे कोई चीजकी कमी न रही। असम्भव था कि मै कोई चीज मागॅू और वह मुझे उसी वक्त न मिले। सास-ससुर दोनो मेरी बलाएँ लेते थे। कहते थे, यह बहू नही, साक्षात् लक्ष्मी है। ऐसा आराम रानियोको राजमहलमे भी न मिलता होगा। उन्होने मोटरोकी दुकान खोल ली थी। हजारोकी आमदनी थी। मगर मै फिर भी खुश न थी। मुझे अब भी रह रहकर महताबरायकी याद सताती थी। भगवान् जाने कहॉ है? किस हालतमे है? क्या करता है? परीक्षा-फल निकलनेके बाद उसने किसीको मुॅह नहीं दिखाया। सोचता होगा, लोग क्या कहेगे? उसकी बूढ़ी माँ हर समय रोती रहती थी। जिस बेटेपर इतनी आशा थी, वही छोड़ गया।

उन्होंने उसे पचास रुपये महीना बॉध दिये थे। मुझसे कहते, यह मेरे मित्रकी मॉ है। अब उसकी तारीफ करते न थकते थे। कहते थे, मैने उसे बहुत देरमे पहचाना। एक दिन कहने लगे, मिल जाय तो उसे अपनी दूकानका मैनेजर बना दूॅ। हजार रुपया महीना मॉगे, तब भी इनकार न करूॅ। वह आदमी नही, हीरा है। मरता मर जायगा, एक पैसेकी बेईमानी न करेगा। ऐसे आदमी इस दुनियामे कहॉ? मैं यह सुनती थी और मेरी छातीमे एक धुॅआ-सा उठता था—हाय महताबराय, तुम कहॉ चले गये? मुझे इतना चाहते थे, जाते समय एक बात भी न की! केवल इसलिए कि परीक्षामे अच्छे नम्बर न लिये। कभी ख्याल आता कि अब तो भगवान् कभी उन्हे मेरे सामने न लाये, वरना मेरा दिल डावॉडोल

हो जायगा। इसी तरह कई वर्ष बीत गये ओर मै एक लड़कीकी माँ बन गयी।

प्रातःकाल था। वे सोफेपर बैठे चाय पी रहे थे। मै छोटी लड़कीको गोदमे लिये उनके पास गयी और बोली—अब इस गरीबका कुछ नाम भी रखा जायगा या सोचते ही रहोगे ?

उन्होने टोस्टका टुकड़ा मुँहमे डालते हुए जवाब दिया—कोई खूबसूरत नाम सोचो।

मैं—अब क्या बताऊँ ? मेरा बताया हुआ नाम तो आपको पसन्द ही नही आता। कितने नाम बता चुकी—प्रभा, कमलिनी, शान्ति, फूलवती, प्रेमा, चाँदरानी, कुसुम, गीता।

वे—(चायका घूँट पीकर) यह सब मामूली नाम हैं, कोई और सोचो, कोई नया-सा नाम।

मैने लड़कीके सिरपर रूमाल बाँधते हुए जवाब दिया—अब तुम्हारी बेटीके लिए कोई नाम आसमानसे उतरेगा। और क्या !

यह कहकर मैने बेटीके फूले हुए गालको थपथपाया और कहा—क्यो बेटा, तेरा नाम बिल्ली रख दे ? बिल्लीकी तरह देखती है ना ?

वह चाय पीकर उठ बैठे और टाईकी गिरह बाँधते हुए बोले—अच्छा नाम पसन्द किया तुमने !—बिल्ली ! कोई प्यारा सा नाम सोचो। यह भी कोई नाम है ?

मै—(बनावटी क्रोधसे) मुझे माफ करो बाबा ! अब मैं कोई नाम रखनेकी सलाह न दूँगी। तुम ही बताओ तो आँखे बन्द करके मंजूर कर लूँ; एक शब्द न बोलूँ।

वे—अगर तुम हमारी मान लो, तो हम बता दे।

मै—हाँ बताइये। देखूँ कैसा नाम है, जिसके सामने कोई नाम पसन्द ही नही आता श्रीमान्‌जीको।

उन्होंने कुछ देर मेरी तरफ देखा और रुक-रुककर (जैसे वे इस

नामके असरको दुगुना करना चाहते हो) कहा—इसका··नाम महताबकुमारी रख दो। मुझे यह नाम पसन्द है।

मेरे दिलपर किसीने घूँसा मार दिया। बोली—इस नाममे क्या खूबी है? मुझे तो यह नाम मर्दाना-सा मालूम होता है—न लोच, न मिठास, न मोहिनी, न नवीनता।

वह टाईकी गिरह बाँधकर मेरे पास आ गये और अपना हाथ मेरे कन्धेपर रखकर मिन्नतभरे स्वरमे बोले—मै महताबरायके नामपर इसका नाम रखना चाहता हूँ। वह मेरा सबसे बड़ा हितैषी है। उसने मुझपर बड़ा भारी उपकार किया है।

मैंने उन्हे पकड़कर मेजके पास एक कुरसीपर बैठा दिया, आप उनके सामने दूसरी कुरसीपर बैठ गयी और लडकीको कन्धेसे लगाकर बोली—उन्होंने आपका क्या उपकार किया?—कोई भी नहीं। उलटा आपने उनका उपकार किया है। अब भी उनकी माँका पालन कर रहे है।

वे—नही रूप, उसने मुझे जीवन दिया है, उसने मुझे तेरा प्यार दिया है, उसने मुझे मेरा सम्मान दिया है। मुझमे यह ताकत नही कि उसका यह उपकार उतार सकूँ।

मेरे दिलमे एक अजीब सा ख्याल पैदा हुआ। मैने उनकी आँखोमें आँखें डाल दी और कहा—जीवन! मेरा प्यार! सम्मान! यह क्योकर, जरा खोलकर कहिये।

मगर अब वे पछताते थे कि मुँहसे क्या निकल गया। वे चाहते थे, किसी तरह मै उनसे इसके बारेमे सवाल न करूँ, ताकि जिस बातको वे छिपा-छिपाकर रखना चाहते थे, और जो जोशकी हालतमे उनके मुँहसे बाहर निकलनेको आकुल-व्याकुल हो गयी थी, वह उनके दिलमें ही छिपी रहे। मगर मैं मानती न थी। कहती थी—बताओ, नही आज दूकानपर न जाने दूँगी। मैने तुमसे कभी कोई बात नही छिपायी, तुम क्यो छिपाते हो? या कहो, तुम्हें मुझपर विश्वास नहीं, या जो बात है साफ-साफ कह

दो और क्या ! एक तरफ चलो, यह नही कि इधर भी और उधर भी। यह दुरंगी चाल बुरी।

वे बोले—अब तुम तो हाथ धोकर पीछे पड़ गयीं।

मै—मै तुम्हारी स्त्री हूँ। अगर उसने तुमपर उपकार किया है, तुम्हे जीवन दिया है, तुम्हारी इज्जत बचायी है, तो मुझे भी ऐसे महात्माका कृतज्ञ होना चाहिये या नही ? आप न बतायेंगे तो सम्भव है, कभी मिल जायें और मै उनका धन्यवाद भी न करूँ; तो वह अपने दिलमे क्या कहेगे ? यही कि कैसी कृतघ्न है, मैने इसके पतिके प्राण बचाये हैं, इसे इसकी परवाह ही नही। लो, अब झटसे बता दो। तुम्हे भी देर हो रही है, मुझे भी देर हो रही है।

वे—मै बतानेको तैयार हूँ, मगर मुझे डर है कि तुम मुझसे घृणा करने लगोगी।

मै—यह तुम्हारा वहम है।

वे—मेरा ख्याल है, मैं वह बात बताकर तुम्हारी आँखोमें सदाके लिए गिर जाऊँगा।

मैं—दुनियामे ऐसी कोई बात नहीं जो अब तुम्हे मेरी आँखोमे गिरा सके। तुम मेरे पति हो।

वे—मै चाहता तो न था कि तुमको अपने जीवनकी यह रहस्यमयी घटना सुनाता। मगर जब तुम नहीं मानती, तो क्या करूँ ? लो सुनो—

१२

मैने नौकरको बुलाकर लड़कीको बाहर भेज दिया और आप कान लगाकर सुनने लगी।

उन्होंने कुरसीके साथ पीठ लगा ली और सिगार सुलगाया। इसके बाद कश लगाकर धीरे-धीरे कहना शुरू किया—रूप, तुम्हे याद है, तुमने

कहा था, यूनिवर्सिटीमे अव्वल रहो तो मैं तुमसे ब्याह करूँगी, वर्ना नहीं। तुम्हे यह भी याद है, मैने तुम्हे पानेके लिए अठारह-अठारह घटे पढ़ना शुरू कर दिया था। मै अमीर था, मेरा मिजाज अमीराना था; थोड़े ही दिनोंमे बीमार पड़ गया। डाक्टर कहते थे, इसे तपेदिक हो जानेका भय है। मॉ-बाप कहते थे, पढ़ना छोड़ दो। मगर मुझे यह मजूर न था। मै जानता था, मेरी मौतका दिन निकट आ रहा है। मुझे मरना मजूर था, मगर अपमानित होकर और तुमसे हाथ धोकर जीता रहना मंजूर न था। और यूनिवर्सिटीमे अव्वल रहना मेरे लिए इतना ही कठिन था जितना गौरीशकरकी चोटीपर जा चढ़ना। उस समय मौत या निराशा मुझे सामने खड़ी दिखाई देती थी। बचावका कोई रास्ता न था। चारो ओर ॲधेरा था।

ऐसे समयमें महताबराय आगे बढ़ा। छः सालका लम्बा समय बीत गया है। मगर मुझे वह दिन अभी कलका दिन मालूम होता है। मै कालेजके साथ जो बाग है, उसमे घासपर बैठा किताबोंके साथ सिर फोड़ रहा था। महताबराय आकर मेरे पास बैठ गया और बोला—यह तुम आत्म-हत्या क्यो कर रहे हो? मैने उससे अपनी कठिनाइयाँ कही। मैने कहा, मै या तो अव्वल रहूँगा या इसी कोशिशमें जान दे दूँगा। मेरा संकल्प सुनकर उसे दुःख हुआ। मैने कालेजमे उसका तिरस्कार किया था, मैने उसे गालियाँ दी थी; नुकसान पहुँचानेकी कोशिश की थी; मगर फिर भी वह चाहता था, किसी तरह मेरी जान बच जाय। आखिर उसने कहा, तुम पढ़ना छोड़ दो, तुम फिर भी अव्वल रहोगे। मुझे हैरानी हुई। मैं समझ न सकता था कि यह कैसे हो जायगा। महताबरायने कहा, परीक्षाके अपने परचोंपर मै तुम्हारा नम्बर लिख दूँगा, तुम मेरा नम्बर लिख देना। मेरा मन इस प्रस्तावका विरोध करता था, मेरा अन्तःकरण मुझे धिक्कारता था, मगर मैने तुम्हारे लोभमे फॅसकर इस उपायको भी मजूर कर लिया। और यह है वह राज जिसे आजतक मेरे और महताबरायके सिवाय दुनियाका कोई तीसरा आदमी नही जानता। आज इस घटनाको याद

करता हूँ तो मेरा सिर लज्जासे झुक जाता है। अगर वह यह बलिदान न करता, तो उसके लिए प्रेम, प्रतिष्ठा, शान-शौकत सब कुछ था। मेरे लिए कुछ भी न था। मगर मेरे लिए उसने अपना सब कुछ निछावर कर दिया। सचमुच वह आदमी न था, कोई देवता था। और मै उसके सामने पशु था। बल्कि पशुसे भी बुरा। भगवान् जाने आज वह कहाँ है? अगर मुझे मिल जाय तो सिर-आँखोंपर बिठा लूँ। मगर ऐसे नसीब कहाँ?

यह कहते-कहते उनकी आँखोमे आँसू आ गये। बलिदान और बहादुरीकी यह अलौकिक कहानी सुनकर मेरे शरीरके रोगटे खड़े हो गये। मै महताबरायको योग्य और श्रेष्ठ समझती थी, मगर वह इतना वीर और महान् होगा, यह ख्याल न था। मेरे मनमे उसका प्रेम सो गया था, मित्रताकी यह अमर घटना सुनकर फिर जाग उठा। मै उसके प्रेमके लिए छटपटाने लगी।

मुझे रह-रहकर ख्याल आता था कि मै ऐसे महापुरुषकी स्त्री क्यों न हुई। उसके साथ मुझे फूसके झोपड़ेमे भी महलका-सा आराम मिलता। मै भूखी-प्यासी रहकर भी खुशीसे चहचहाती, नाचती, गाती फिरती।

१२

अब मेरी निगाहोंमे अपने पतिकी जरा भी इज्जत न थी। मै समझती थी, यह आदमी नही कसाई है। बल्कि उससे भी बुरे। वह जानवरोंको मारता है, इन्होंने एक आदमीको कत्ल किया है। और आदमी भी वह जो इनका मित्र था, इन्हें चाहता था, इनके लिए सब कुछ करता था। वे मेरे निकट आते, तो मेरा शरीर काँप जाता था। मै चाहती थी, उनसे कही दूर भाग जाऊँ। किसी ऐसी दुनियामे जहाँ यह न हों।—मुझे अपने धर्मका ख्याल न रहा हो, यह बात न थी। मै अपने दिलको समझाया

करती थी, मगर दिल समझता न था। मै कहती, ये मेरे पति हैं। दिल कहता, इसमे क्या है? इन्होंने जो पाप किया है, वह कम नही है। मै कहती, बचपनमे हर किसीसे भूल हो जाती है। दिल कहता, यह भूल न थी, मित्र-घात था और मित्र-घात पाप नहीं, महापाप है।

वे मुझे यह घटना न सुनाते तो मेरे हृदयमे आग क्यों लगती? अब वे मुझसे माफी माँगते थे, अपने कियेपर पछताते थे, मेरे जलते हुए दिलपर पानी छिड़कते थे। लेकिन इस पानीसे आग बुझती न थी, उलटा और भड़कती थी। जैसे यह पानी न था, मिट्टीका तेल था। अब हमारी बोल-चाल भी बन्द हो गयी। मेरा मुँह इधर, उनका मुँह उधर। दोनों एक ही घरमे रहते थे, एक ही कमरेमे सोते थे, मगर एक-दूसरेसे बातचीत किये हफ्तों बीत जाते थे। कभी बोलते भी तो सीधी तरह नही, एक दूसरेको सुनाकर। मैने ऊँची आवाजसे कह दिया, 'खाना ठण्डा हो रहा है, बादमे शिकायत होगी कि नौकर बेपरवाह हो गये है।' उन्होने मुझे सुनाकर कह दिया, 'यह कम्बख्त किताब तो फिर भी पढ़ी जा सकती है, इतना तो देखना चाहिये कि सैरका समय हो गया है। शोफर हार्न बजा रहा है, यहाँ कोई सुनता ही नही।'

जब वे दूकानको चले जाते तो सोचती, आखिर ऐसे कबतक निभ सकती है, आज आयेंगे तो बुला लूँगी। मगर जब वे सामने आते तो फिर वही जहर चढ़ आता। जी चाहता, मुँह न देखूँ। औरोंका प्रेम मुँहपर जागता है, मेरा प्रेम पीठपर जागता था। उनके मुँहसे मालूम होता था कि वे भी बोलने-बुलानेके लिए व्याकुल है। कभी-कभी बुलाने भी लगते मगर फिर पता नही क्या सोचकर चुप रह जाते। शायद डरते हों कि मै बोला तो यह दो-चार और सुना देगी। वे मुझसे बोलते न थे, लेकिन मेरा ख्याल उसी तरह रखते थे। मुझे फल मिले या नही, मैं सैर करने गयी हूँ या नही, समयपर खाती हूँ या नही, इसकी पूरी-पूरी खबर रखते थे।

एक दिन दो सखियोंके साथ सिनेमा देखने गयी। जब खेल समाप्त

हुआ और मै बाहर निकली, तो शोफर मोटरमे न था। हमे चार-पॉच मिनट प्रतीक्षा करनी पड़ी, वह जरा चाय पीने चला गया था। पता नही उन्हे किसने बता दिया। बात मामूली थी, लेकिन दूसरे दिन उन्होने शोफरको इतना डॉटा कि याद ही करेगा। वह मिन्नते करता था, माफियॉ मॉगता था, कहता था, फिर ऐसी भूल कभी न होगी। मगर वे उसकी सुनते ही न थे। कहते थे—तू मोटर छोड़कर चला क्यों गया? अब वह तेरा इन्तजार किया करेगी। उनकी दो सहेलियॉ साथ थी, वह क्या कहती होगी? यही कि इनके नौकर भी खूब है; ये हार्न बजाती हैं, वह कहीं सैर-सपाटे करता फिरता है। तेरा क्या गया? नाक हमारी कट गयी। नहीं बाबा, मुझे तुझ जैसे आदमियोंकी जरूरत नही। हिसाब चुकता करो और चलते बनो। तुम्हे नौकरियॉ बहुत, हमे नौकर बहुत। हम दूसरा आदमी रखेगे।

मैं कमरेमे बैठी सुन रही थी। जब वे यहॉतक पहुँच गये, तो मुझसे न रहा गया। ऑगनमे आकर बोली—चलो, बेचारा माफी मॉंग रहा है। अबके छोड़ दो।—(शोफरसे) फिर तो ऐसी भूल न करेगा? कानोंको हाथ लगा और माफी मॉग।

शोफरने कानोंको हाथ लगाकर कहा—बीबीजी, फिर ऐसी भूल हो जाय तो खाल उतरवा लेना!

मैने दूसरी बार फिर सिफारिश की—लो, अब तुम भी माफ कर दो। आदमी है, गधा नहीं है। अब भूल न करेगा।

उन्होने मेरी ओर देखा मगर ऑखे न मिला सके! आग बुझ गयी थी, लेकिन अभीतक राख गरम थी। बोले—अब भूल करेगा तो एक मिनटमे जवाब दे दूँगा। चलो, जाओ।

मैं कमरेमे लौट आयी। शोफर बाहर चला गया तो वे भी कमरेमे आ गये और बोले—मेरा जी चाहता है, इसको कुछ इनाम दे दिया जाय। क्यों, तुम्हारा क्या ख्याल है, बोलो?

मैने हैरानीसे उनकी ओर देखा। एक-दूसरेसे बोलनेमे जो सकोच था, वह धीरे-धीरे दूर हो रहा था।

वे फिर बोले—वह भूल न करता तो हमारी रूठी रानी क्योकर मानतीं ? उसने भूल की, हमारा काम बन गया।

मैंने बनावटी क्रोधसे कहा—चलो, भागो यहाँसे ! दूकानका समय हो गया है।

मगर वे मेरे पास आ गये।

पहले आग बुझी थी, अब राख भी ठण्ढी हो गयी। शोफरको दस रुपये इनाम मिला।

१४

ताजबहादुर

सन्ध्या समय हम मोटरमे सैरको निकले तो हमारी खुशीका ठिकाना न था। यह खुशी हमें आज कई दिनोंके बाद मिली थी।

रूपरानीका चेहरा भी चमक रहा था, बात-बातपर मुस्कराती थी। कलतक इसी चॉदपर कहर और क्रोधके बादल छाये हुए थे। कलतक दुनियामे हवा ही नही थी, आज मै पहाडकी चोटीपर चढ आया था। कलतक सिरपर एक तरहका बोझ-सा था, आज मै हवामे तैर रहा था। कल बीमार था, आज स्वस्थ होकर चहकता फिरता था। ससार ही बदल गया था।

गोमतीके पास पहुँचकर हम मोटरसे उतर आये और धीरे-धीरे टहलने लगे। यह वही स्थान था जहॉ पॉच-छः साल पहले महताबरायने आकर मेरी तरफ सुलहकी बॉह बढायी थी। मै यहॉ अकसर आया करता

था। यहाँ आकर मेरी याद हरी हो जाती थी। यहाँ मुझे महताबरायका गौरव जीता-जागता दिखाई देता था। यहाँ उसने मेरी ओर प्रेमके हाथ फैलाये थे। यहाँ उसने अपने-आपको मित्रताकी वेदीपर कुरबान किया था।

एकाएक मै चौक पड़ा। आज वहाँ उसकी ख्याली नही, असली तसवीर मौजूद थी। वही चेहरा, वही ऑखे, देखनेका वही देवताओका-सा प्यारा तरीका। मैने क्षण-भर उसकी तरफ टकटकी लगाकर देखा, और दूसरे क्षण मै दौडकर उससे लिपट गया और तीसरे क्षणमे हम दोनो हँस-हँसकर रो रहे थे, रो-रोकर हँस रहे थे, और रूपरानी पत्थरके बुतकी तरह हमारे सामने खडी हमे देखती थी, हैरान होती थी, मगर मुँहसे बोलती न थी।

थोड़ी देर बाद जब दिलोका गुबार निकल चुका, तो हम उसी जगह बैठ गये और बाते करने लगे।

सबसे पहले मैंने शिकायत की। कहा—बडे कठोर हो तुम। हमसे कुछ कहा भी नही और चुपचाप गायब हो गये! कहाँ थे, कैसे थे, क्या करते थे, सब कुछ बताओ।

महताबराय—(मुस्कराकर) पहाड़ोकी तरफ चला गया था। बड़े मजेमे था, सैर-सपाटे करता था।

रूपरानी—पहाड़ोपर जाकर आदमी मोटे-ताजे होते है या दुबले पतले? (इशारा करके) जरा इनका मुँह तो देखो, ये पहाडोसे आ रहे हैं! अन्दर धँसी हुई ऑखे, पिचके हुए गाल। जवानीमे बूढ़े हो रहे है, और फिर कहते है, पहाड़ोकी सैर करते थे!

मै—रग-रूप ही बदल गया है। क्या बीमार रहे हो?

महताबराय—बिलकुल नही। जो पहाड़ोंमें रहते है वे बीमार नही होते। तुम अपनी कहो, तुम्हारा क्या हाल है?

मैं—हम खूब मजेमे है। देख लो, लाल हो रहे है। मगर भाई, तुमने तो हमे बिलकुल ही भुला दिया!

रूपरानीने शिकायत-भरी निगाहोसे महताबरायकी तरफ देखा और

कहा—हम तो हैरान थे कि भला आदमी गायब कहाँ हो गया ? क्या एक चिट्ठी भी न लिख सकते थे ? अगर लिख देते तो हम दोनो जबर-दस्ती खीच लाते ?

मैने अनुमोदन किया—कोई दिन ऐसा न जाता था जब हम तुम्हे याद न करते हो ।

महताबराय—भाई, अब तुम विश्वास करो या न करो, मै भी तुम्हे हर रोज याद करता था ।

रूपरानीने बात काटकर कहा—बिलकुल झूठ !

बात साधारण थी, मगर मुझे बहुत बुरी मालूम हुई । ख्याल आया, रूपरानीको इस तरह बढ-बढ़कर बाते बनानेकी क्या जरूरत है ? हम बातचीत कर रहे है, सुनती जाये ।

महताबराय—अब आप अगर मेरे बारेमें यह राय बना ही बैठे है तो दूसरी बात है । वरना सच बात वही है जो मैने अभी कही है ।

मै—अरे यार, तुमने तो अपनी माँका भी ख्याल न किया, हमारा क्या ख्याल करोगे ! हम तो फिर भी पराये है ।

रूपरानीके चेहरेपर नाराजगीके निशान जाहिर हुए । मगर मै खुश था कि मैने उसपर ऐसी चोट की है जिसका उसके पास जवाब नहीं ।

महताबराय—मुझे पता लग गया था कि आपने उनके खाने-पीनेका प्रबन्ध कर दिया है, निश्चिन्त हो गया ।

मेरी चुटकीका कैसा सुन्दर जवाब था ! मै अपने दिलमे कट गया और शर्मिन्दा होकर बोला—अच्छा, अब क्या इरादा है ? यही रहोगे न ?

रूपरानी—(मुस्कराकर) रहेगे कैसे नही ! अब इन्हे जाने कौन देता है यहाँसे ?

मुझे यह बात फिर चुभी ।

महताबराय—मुझे आपके पास रहनेमे प्रसन्नता होती । लेकिन क्या करूँ, कलकत्तेमे एक सेठ साहबके लड़केको पढ़ानेकी नौकरी मिल गयी है ।

रूपरानीने मेरी ओर देखा, और मूक वाणीमे कहा, ये हमारे लिए वतन छोड़े जाते हैं !

मैं—तुम्हे नौकरीकी जरूरत ही क्या है ? मेरे पास चले आओ । एक हजार रुपया महीना दूँगा ।

महताबराय—अरे भाई, इस तरह कबतक गुजारा होगा ! तुम्हारे दर्शन हो गये, यही बहुत है । अब जाने दो । दो-चार महीने बाद फिर आकर दर्शन कर जाऊँगा ।

मैने उसके कन्धेपर हाथ रखकर कहा—मेरी मोटरोकी एजेसी है, उसका प्रबन्ध तुम सँभाल लो । मुझसे अकेले सारा काम नही होता ।

महताबराय कुछ देर गोमतीके पानीकी तरफ देखता रहा कि क्या जवाब दूँ । आखिर बोला—नही भाई साहब, मुझसे मोटरोका काम नही हो सकेगा । एक लड़का है, उसे पढ़ाया और मजेसे घर चला आया ।

रूपरानीने ठण्डी आह भरी । उसके चेहरेका रग देखकर मुझपर सारा भेद खुल गया । मै सोचमे डूब गया ।

अगर यह भेद मुझपर न खुलता तो मै महताबरायको बाँधकर भी रख लेता । लेकिन अब मेरे दिलमे उसे रोकनेकी जरा भी इच्छा न थी । अपने घरके आँगनमे विषका बीज कौन बोये ?

मैंने कहा—अच्छा, कोई अपना काम शुरू कर दो, कलकत्तेमे, बम्बईमे या मद्रासमे, जहाँ तुम्हारा जी चाहे ।

महताबरायने मेरी तरफ देखा और फिर मुस्कराकर जवाब दिया—मगर रुपया कहाँ है ?

मैंने जेबसे फौण्टेनपेन निकाला और बीस हजारका चेक काटकर उसको देते हुए कहा—रुपया यह है ।

रूपरानीको मेरी उदारता देखकर आश्चर्य हुआ । लेकिन, वह यह न जानती थी कि मै उसे लखनऊसे निकालनेके लिए इससे भी अधिक रुपया खर्च करनेको तैयार हूँ ।

मगर महताबरायने यह चेक भी लौटा दिया और कहा, भाई, तुम्हारा

धन्यवाद किस तरह करूँ ! मगर मेरा दिमाग कारोबारमे नहीं चलता। सारा रुपया खराब हो जायगा।

मेरा सिर लज्जासे झुक गया। मैं समझता था, महताबराय योग्यता और सज्जनतामेही मुझसे आगे है, मगर अब मालूम हुआ कि वह अमीरीमे भी मुझसे बढा हुआ है। उसे धनकी परवाह ही न थी, उसके लिए धनमे कोई आकर्षण ही न था, उसके ख्यालमे धनकी कोई कीमत ही न थी। बीस हजार रुपया कम नही होता। इतनी रकमके लिए दुनिया बडीसे बड़ी कुरबानी करनेको तैयार हो जाती है। मैने दस-दस रुपयोके लिए सगे भाइयोको खून खराबा करते देखा है। मगर महताबरायको गरीब होनेपर भी बीस हजारकी रकम न हिला सकी। उसने हर मैदानमे मुझपर विजय पायी थी, इस मैदानमे क्योकर हार जाता ? मैने उसकी महत्ताके सामने सिर झुका दिया। अब मेरे मनमे जरा भी सकोच न था। ख्याल आया, यह आदमी मरता मर जायगा, मगर किसीकी इज्जतपर हाथ न डालेगा। यह इसके लिए असम्भव है। यह इतना नीचे आ ही नही सकता। यह आदमी नही, देवता है। बल्कि देवताओसे भी बढ़कर है। रूपका जादू उन्हें डगडगा सकता है, इसे नही डगमगा सकता। इसने अपने मनको जीत लिया है, इसने अपनी वृत्तियाँ बाँध ली है। इससे दुनियाको काहेका डर है ?

मैने कहा—मालूम होता है, तुम मुझे अभीतक पराया ही समझ रहे हो ?

महताबराय—(मुस्कराकर) इसका एक प्रमाण तो यही है कि कलकत्तेसे चलकर तुमसे मिलने आया हूँ।

मै—अगर अपना समझते तो इतना सकोच कभी न करते। आदमी संकोच गैरोसे करता है, अपनोसे नही करता। अपनोके मुँहसे तो ग्रास भी छीनकर खा जाता है। मैने दो बाते कही, तुमने दोनो नामजूर कर दी। इसका क्या मतलब है ? क्यों रूपरानी, तुम ही बताओ ?

रूपरानीके सिरसे साड़ी खिसक गयी थी, उसे ठीक करते हुए

१५

महताबराय

बल और शक्तिकी आज्ञा टालना आसान है, मगर प्यारकी आज्ञा टालना आसान नहीं। मुझे मानना पड़ा और ताजबहादुरकी नौकरी करनी पड़ी। मुझे भय था कि चार ही दिनोमे ताजबहादुरकी ऑखें बदल जायॅगी। मालिक लाख दोस्त हो, फिर भी मालिक है। मालिक कौन जाने किस समय धौस जमानेपर उतारू हो जाय! उसे मालिक बननेमे लाभ ही लाभ है, मित्र बननेमे हानि ही हानि है, और व्यापारी बच्चा कभी अपनी हानि नही चाहता। मगर ताजबहादुर पहले मित्र था, पीछे व्यापारी। बल्कि जहॉतक मेरा उसका सम्बन्ध था, वह सोलहो आने मित्र था। मेरे मुकाबिलेमे उसे अपने कारोबाकी जरा भी परवाह न थी। मै दूकान लुटा देता, वह तब भी न बोलता। कब आता हूॅ, कब जाता हूॅ, क्या करता हूॅ, इन बातोसे उसे जरा भी सरोकार न था। वह चाहता था, मेरा मन मैला न हो, मुझे यह सन्देह न हो कि मै किसीकी नौकरी कर रहा हूॅ। उसकी इन बातोने मेरा मन मोह लिया। मै नौकर होकर भी नौकर न था, वह मालिक होकर भी मालिक न था। दूकानका स्याह-सफेद सब मेरे हाथमे था। वह आप दूकानपर आता ही न था।

मै और मेरी मॉ एक साफ-सुथरे मकानमे रहते थे और खुश थे। मगर कभी-कभी ऐसा मालूम होता था कि मेरे मनमे चोर है। यह चोर कभी दिलेर हो जाता था और मेरी ऑखोमे आ बैठता था। —कभी डर जाता था, और दिलकी तहमे जा छुपता था। और ऐसा ही चोर रूपरानीके पीछे भी लगा हुआ था। मै सोचता था, क्या यह चोर हमारा सन्तोष न चुरा लेगे? मै हर समय होशियार रहता था, लेकिन

जानता था कि अगर किसी समय जरा भी गाफिल हो गया तो चोर चोरीसे न रुकेगा।

मगर ताजबहादुर भोलानाथ था। वह कुछ भी नहीं समझता था, न मेरी और रूपरानीकी ऑखे पहचानता था। हमपर उसे जरा भी सन्देह न था। इतना भी न समझता था कि कभी इन्हे एक-दूसरेसे प्यार था, और प्यारकी आग हवाके एक झोकेसे फिर भी जाग सकती है। मै अपनी तरफसे पूरी-पूरी कोशिश करता था कि रूपरानीके पास ज्यादा न बैठूँ, मगर ताजबहादुरको इसका भी ख्याल न था। समझता होगा, जो कुछ होना था हो चुका। ब्याह हो गया, बच्चा हो गया। अब क्या हो सकता है? स्त्री-पुरुष दोनों सुबहकी सैर करने जाते थे, तो मुझे जबर-दस्ती घसीट ले जाते थे। सिनेमाका प्रोग्राम बनता था तो मै साथ जाता था। कही घूमने निकलते तो मुझे साथ लिये बिना न जाते थे। मुझे उनके साथ जानेमे सकोच होता था, उनको मुझे साथ ले जानेमे सकोच न था; जैसे मै उनके घरका आदमी था, जैसे उनकी हर एक खुशी मेरे बिना अधूरी रहती थी? इसी तरह दिन गुजरते गये, मै दूकानपर काम करता गया, रुपया कमाता गया, उनके अन्दर धँसता गया। मगर मेरा दिल बेचैन था, और यह बेचैनी दिनोदिन बढती जाती थी। कलकत्तेमे रुपया न आता था मगर दिलको चैन तो था।

एक दिन मै ताजबहादुरसे मिलनेके लिए उसके मकानपर गया तो ताजबहादुर घरपर न था। मैने लौटना चाहा, तो रूपरानीने रोक लिया। विवश होकर रुकना पड़ा। मगर मेरा दिल धक-धक कर रहा था, कि अकेलेमे क्या होगा?

रूपरानीने मुझे सोफेपर बैठनेका इशारा किया और मुस्कराकर कहा—आप हमेशा उन्हींसे मिलने आते है। क्या मै कोई नही हूँ?

मेरा दिल और भी जोरसे धक-धक करने लगा, सोफेपर बैठ गया और सिर झुकाकर बोला—यह आपकी ज्यादती है। अकेला उनसे

मिलने नही आता, आप दोनोसे मिलने आता हूँ। हाँ, जब कभी सिर्फ उनसे काम हो, तो दूसरी बात है।

रूपरानी—मैने तो सदा यही देखा है कि आप जब आये, उनसे मिलने आये, मुझसे मिलने आजतक नही आये।

मै—अब इसका क्या जवाब दूँ!

रूपरानी—(सामनेके सोफेपर बैठकर) इसका जवाब हो ही नही सकता, आप जवाब क्या देगे!

मैने जमीनकी तरफ देखते-देखते जवाब दिया—बात यह है कि दूकानपर काम बहुत रहता है।

रूप०—तो एक असिस्टेट क्यो नही रख लेते? आदमी काम उतना करे जितना कर सके।

मैने मुस्करानेका यत्न करते हुए कहा—अगर मैंने असिस्टेट माँगा, तो भाईसाहब मुझे भी जवाब दे देगे। कहेगे, चलते बनो। तुमसे इतना काम भी नही हो सकता।

रूप०—बिलकुल झूठ। वह ऐसे आदमी नही है।

मैं—आपके साथ न होगे, हमारे साथ तो हैं।

रूप०—अच्छा, आप न कहे, मै कहूँगी।

मैं—यह और भी बुरा। वह समझेगे, मैने कहलावाया है।

रूप०—मै कह दूँगी, मुझसे किसीने नही कहा। मै कहूँगी, इतना काम एक आदमीपर क्यों छोड़ रखा है? क्या उसे मार ही डालोगे? या आप साथ काम करो, या एक और आदमी दो।

मैं—यह तो उससे भी बुरा। वह सोचेगे, आपको मेरी इतनी चिन्ता क्यों रहती है? बातसे बात निकलती है। उनके दिलमे कई बातें उठ खडी होगी।—जरा दूरतक सोचिये।

रूप०—तो इसका यह मतलब है कि आपको अपनी आँखोंसे कामके बोझ-तले दबते-पिसते हुए देखूँ और चुप रहूँ।

मै—और क्या, ऐसी अवस्थामे आदमीको चुप ही रहना पड़ता है।

रूप०—चुप रहनेका मतलब है कायरता।

मैने बातको उडानेकी गरजसे कहा—कायरताका मतलब है बुद्धिमानी और समझदारी।

रूप०—(सुनी-अनसुनी करके) अगर आप मेरी जगह हो, तो आप क्या करे?

मै—कुछ भी नही। जो हो रहा है, होने दूँ। और मै आपको विश्वास दिलाता हूँ कि काम इतना नही है जो मुझे मार ही डाले।

रूपरानीने मेरी तरफ शिकायत-भरी दृष्टिसे देखा और ठण्डी आह भरकर सिर झुका लिया। मुझे ऐसा मालूम हुआ कि वह कहती है, तुम इतने निष्ठुर क्यों हो गये। मै चाहता था, उसके सामने अपना दिल खोलकर रख दूँ, उससे साफ-साफ कह दूँ कि तुमने मुझे अभीतक नहीं पहचाना। मगर मैंने अपने उमडते हुए भावोको अन्दर ही अन्दर दबाया और चलनेको उठकर खड़ा हो गया। खतरेकी जगहसे भागना ही भला।

रूपरानीने कहा—जरा बैठ जाइये, मुझे आपसे एक बात पूछना है और वह बात जरूरी है।

मैं फिर बैठ गया। रूपरानीने फर्शके गलीचेकी तरफ देखते हुए रुक-रुककर पूछा—क्या अब भी आपको मेरा ख्याल है?

यह सवाल न था, मेरे मनके चोरको पागल बना देनेवाली शराब थी। मेरा जी चाहता था, अब सब कुछ कह दूँ। मगर मैंने कहा कुछ भी नही। बोला—बिलकुल नही।

रूप०—मै भी यही चाहती थी कि अब आप मेरा ख्याल छोड़ दें।

यह कहते-कहते उसकी आँखोमे पानी आ गया और आवाज गलेमे अटक गयी। मैने अपनी हाथ-घडीकी तरफ देखा और कहा—तो अब मुझे आज्ञा है, चलूँ?

रूपरानीने सिर हिलाकर जवाब दिया—हाँ।

मैं खडा हो गया और अपने शरीरका सारा बल जमा करके बोला—अगर आप बुरा न माने तो एक बात मैं भी पूछ लूँ।

रूपरानीने उसी तरह जमीनकी तरफ देखते हुए सिरके इशारेसे जवाब दिया—पूछ लीजिये ।

मै—आपको यहाँ कोई तकलीफ तो नही है ?

रूपरानीने उसी तरह सिरके इशारेसे कहा—नही ।

मै—आप इस जीवनमे खुश है ?

रूप०—(धीरेसे) हाँ ।

मै—आपने मेरे दिलसे बोझ उतार दिया है ।

१६

मगर यह झूठ था । मेरे दिलका बोझ उतरा न था, उलटा बढ गया था । बार-बार सोचता था, रूपरानीको जरूर मेरा ख्याल है । अगर न होता तो वह यह क्यो पूछती कि अब आपको मेरा ख्याल तो नही है ? लेकिन मैं भी कैसा गधा निकला ! मुझे यह पूछनेकी क्या जरूरत थी कि आप इस जीवनमे खुश है या नही ? इसका मतलब साफ था कि मै तो इस जीवनमे खुश नही हूँ । दूसरा मतलब यह था कि मुझे भी आपका ख्याल है, और ख्याल भी इतना कि मैने मुँह फाड़कर पूछा और कहा कि मेरे दिलसे बोझ उतर गया है । रूपरानी सब कुछ भाँप गयी होगी । पढ़ी-लिखी स्त्री है, ऐसी बात तो अनपढ़ औरत भी समझ जाती । अब क्या करूँ ? यहाँ रहूँ या कही चल दूँ ? मगर कठिनाई यह है कि मै चलनेको तैयार होता हूँ तो दिल नही मानता । सौ-सौ बहाने बनाता है और रोक लेता है । कभी कहता है, अब बाहर कहाँ जाओगे, कभी कहता है, यहाँ क्या डर है । कभी-कभी यह भी कह देता है, कि यहाँ दर्शन होते रहेगे । पहले तो मैं ऐसा निर्बल कभी न था, जाने अब क्या हो गया है । कभी वह दिन थे कि मै दूसरोसे भी न डरता था, आज यह हाल है कि अपने-आपसे भी डरता हूँ ।

उधर मॉजी कह रही थी, ब्याह कर लो, अब कबतक कुँवारे बैठे रहोगे ? पासके महल्लेमे कोई लड़की देख आयी थी। कहती, ऐसी रूपवती लडकी मैने आजतक नही देखी। लड़की क्या है, चौदहवीका चॉद है। देखकर भूख-प्यास मिटती है, हाथ लगानेसे मैली होती है। बेटा, अब सोच-विचार न करो। हॉ कर दो तो मै भी तैयारियॉ शुरू करूँ। एक दिन महातावकुमारीको घर ले गया तो उसे देखकर और भी मचल पड़ी कि अब जल्दीसे ब्याह कर ले, तो तेरे बाल-बच्चे भी देख लूँ। बुढापेकी यह भूख बुरी ! मैने कहा, चार दिन और ठहर जाओ। यह सुनकर वह उदास-सी हो गयी, मगर मेरा क्या अपराध ? दिल ही नही मानता। कुछ दिन टालता रहा। आखिर एक दिन उन्होने अलटीमेटम दे दिया कि या तो मेरी पसन्दकी लड़कीसे ब्याह कर, या अपनी पसन्दकी लडकी बता, अब कुँवारा कबतक बैठा रहेगा ? फिर धीरेसे यह भी कह दिया कि अब रूपरानीका ख्याल छोड़। उसका ब्याह भी हो गया, सन्तान भी हो गयी। तेरी होती तो तेरे नामपर बैठी रहती। मगर उसने तो चार दिन भी तेरी प्रतीक्षा न की। तू कही मारा-मारा फिर रहा था, वह अपना ब्याह रचा बैठी और तू अभीतक उसके नामकी जपनी जप रहा है।

मेरा लहू सूख गया,—तो क्या मॉजीको भी ख्याल है कि मै रूपरानीके कारण ब्याह नही करता ? उस रात मेरी ऑखोमे नीद न आयी। करवटे बदलता था और जीवनके अन्धकारमें आशाका रास्ता ढूँढता था, मगर कोई रास्ता सूझता न था। ब्याह करूँ तो मुश्किल, न करूँ तो मुश्किल। मॉजी जानती सब कुछ थी, समझती कुछ भी न थी। अगर समझती तो इस तरह व्यंग्य न करती। इसी उधेड़-बुनमे रातके दो बज गये और मुझे नीद न आयी। सोचता था, क्या करूँ, क्या न करूँ।

सहसा किसीने दरवाजा खटखटाया। मुझे आश्चर्य हुआ। उठकर दरवाजा खोला तो रूपरानी ! मेरा आश्चर्य और भी बढ गया। बोला—खैर तो है ? आप इस समय कैसे आयी ?

रूपरानीने कुरसीपर बैठकर जवाब दिया—बताती हूँ।

इस समय वह हॉफ रही थी और कॉप रही थी। मैंने पूछा—क्या आप पैदल आ रही है?

रूपरानी—हॉ।

मैं समझ गया, कोई खास बात है।

रूपरानी—आज मैं सारे बन्धन तोड़ आयी हूँ। चलो, किसी ऐसी जगह चले जहॉ हमें जाननेवाला कोई न हो।

मुझे किसीने काठ मार दिया; मरी हुई आवाजमे बोला—इसका परिणाम क्या होगा, यह भी जानती हो?

रूप०—सब जानती हूँ। बेवकूफ नही हूँ।

मै—बड़ी बदनामी होगी।

रूप०—बदनामीसे तो ऋषि-मुनि भी नही बचे, हम-आप किस गिनतीमे है? इसकी परवा न करो।

मै—मेरी मानो तो तुम अब भी लौट जाओ। बड़े आराम और इज्जतका जीवन है। इसे खोकर पछताओगी।

रूप०—पछताना होता तो घरसे न निकलती। अब आप बताइये, आपमे हिम्मत है या नहीं, क्योंकि मेरा सारा जोर तो आपपर है।

मैं—मुझमे तो हिम्मत नही है।

रूप०—तो मुझे जहर खिला दीजिये ताकि सारा झगड़ा तय हो जाय। मैं अब घर जानेसे तो रही। इस जीवनका यही अन्त हो जाय।

मैंने ठण्ढी आह भरी और कहा—अगर मै जानता कि मेरे यहॉ रहनेसे यह गुल खिलेगा, तो यहॉ कभी न रहता।

रूप०—और मैं समझती, तुम आदमी नही, पत्थर हो।

मैं थोड़ी देर चुप रहा, इसके बाद बोला—ताजबहादुर क्या कहेगा, यह भी सोचा?

रूप०—जब उन्होंने तुम्हारी गरदनपर छुरी फेरी थी उस समय क्या उन्होने सोचा था कि आप क्या कहेगे? जब उन्होने छल-कपट करके मेरे साथ ब्याह किया था उस समय क्या उन्होने सोचा था कि यह क्या

कहेंगी ? आपको शायद विश्वास न आये, मगर मेरे मनमे उनके लिए जरा भी प्रेम और श्रद्धा नही है। जब उनका दॉव चला उन्होंने हमे धोखा दे दिया, जब हमारा दॉव चला हमने उन्हे धोखा दे लिया। लेना-देना बराबर हो गया। इसमे शिकायत कैसी ?

मैने शराफतका सहारा लिया और कहा—अगर उन्होने भूल की है तो इसका यह मतलब नही कि हम भी भूल करे। आगसे आग बढ़ती है, घटती नही।

रूपरानीने एक ठोकरसे रेतका घर उडा दिया; कहा—वह भूल न थी। धोखा देना था और धोखा भी ऐसा जिसके ख्यालसे ही आदमी कॉप उठे ! आप कहेगे, आपने अपनी कुरबानी की। मै कहती हूँ, आप अपनी कुरबानी कर सकते थे, मगर आपको मेरी कुरबानी करनेका क्या अधिकार था ? मैने आपके भरोसे जीवनको बाजीपर लगाया था, आपने धोखेसे मेरा जीवन हरा दिया। अपने लिए आप दोनो धर्मात्मा होगे, मेरे लिए आप दोनो जालसाज है। मुझे आप दोनोने लूट लिया।

अब वह रो रही थी और कॉप रही थी। उसके ऑसू उसके गालो-पर बह रहे थे और मेरा धीरज मेरे हाथसे निकला जाता था।

रूपरानीने मेरी तरफ देखा और रोते-रोते कहा—मैने आज निश्चय कर लिया है कि उस आदमीके साथ न रहूँगी जिसने मुझे धोखेसे जीता है और जिसने मेरे नारी-जीवनपर अत्याचार किया है।

इस समय मुझे ऐसा मालूम हुआ कि वह स्त्री नही है, जमीनकी मिट्टीपर गिरा हुआ मनोहर फूल है। कल यही फूल टहनीपर झूमता था और मुस्कराता था; आज जमीनपर पड़ा है, और रोता है। मैने उसे लोभी ऑखोसे देखा और विनोद-भावसे कहा—इसमे ताजबहादुरका क्या दोष है, तुम्हारा रूप ही ऐसा है कि जो देखे, पागल हो जाये।

रूपरानीके ऑसू थम गये। उठकर मेरे निकट आ गयी और मेरे कन्धेपर हाथ रखकर मिन्नत-भरे स्वरमे बोली—क्या आपको मेरे रोनेपर भी दया नहीं आती ?

मेरे सामने काव्य और कल्पनाकी वह संगीतमय दुनिया आकर खड़ी हो गयी, जहाँ प्रेम मुस्कराता है, रूप खेलता है, यौवन नाचता है। जीमे आया, रूपरानीको कलेजेमे बैठा लूँ और कही भाग जाऊँ।

रातका समय था। चारो तरफ सन्नाटा था। मेरे सामने वह थी जिसका ख्याल मुझे रातको भी सोने न देता था। उसके सामने मै था जिसे वह जी-जानसे चाहती थी। मनके चोरका दाव चल गया। मैने उसके हाथ पकड़ लिये और उसे अपनी तरफ खीचा।

एकाएक बाहर मोटरका हार्न बजा और हम दोनो चौक पड़े। मैने रूपरानीकी आँखोमे आँखे डालकर मूक-भाषामे पूछा, क्या यह वही है? और उसने सिरके इशारेसे कहा, हाँ यह वही है। मैं सोचने लगा—मगर सोचनेका समय नही था। बाहर मोटरका दरवाजा बन्द होनेकी आवाज आयी—ताजबहादुर आ रहा था। मैने रूपरानीको दूसरे कमरेमे धकेल दिया, और—और ताजबहादुरने दरवाजा खटखटाया,—मैने सोचा—ताजबहादुरने फिर दरवाजा खटखटाया—मै क्या करूँ?—ताजबहादुरने जोरसे पुकारा, महताबराय।—मुझे रास्ता सूझ गया। मैंने खिड़कीमेसे बाहर झाँका—कौन है?

ताजबहादुरने कहा—मैं।

मैने जवाब दिया—आया—।

और?—मै सोच रहा था—और मेरे मनका चोर मेरे साथ लड़ रहा था और—मै हार गया, और मेरी सारी ताकत जवाब दे रही थी।

१७

ताजबहादुर

महताबरायने दरवाजा खोला और पूछा—खैर तो है? इतनी रात गये···

मैने कहा—ऊपर चलो।

हम ऊपर गये और कुरसियोपर बैठ गये।

मैने कहा—जानते हो, मै इस समय क्यो आया हूँ ?

महताबराय—कोई खास बात मालूम होती है।

मै—रूपरानी कही चली गयी है। यहाँ तो नही आयी ?

महताबराय—नही।

मै—तो मेरी आखिरी आस भी गयी।

महताबराय चौका।

मैंने रूपरानीका पत्र उसके हाथमे रख दिया और कहा—पढो।

महताबरायने पढ़ा और गहरी चिन्तामे डूब गया।

मैं—अब सवाल यह है, मुझे क्या करना चाहिये ? कल यह बात बच्चे-बच्चेकी जबानपर होगी; लोग मेरी तरफ देखेगे और हँसेगे; और कहेगे, इसकी स्त्री इसे छोड गयी है।

महताबरायने ठण्ढी साँस भरी।

मैं—मगर मुझे इसकी चिन्ता नही। मै सोचता हूँ, महताबकुमारी क्या करेगी ?

मेरी आँखोमे आँसू थे। मगर मैने उन्हे आँखोसे बाहर न निकलने दिया।

महताबराय—तुमने कुछ सोचा है ?

मैं—मैने सोचा है कि इसी समय लड़कीको लेकर किसी दूसरी जगह चला जाऊँ ? किसीको कुछ मालूम न होगा। चार दिनके बाद मशहूर कर दूँगा, रूपरानी मर गयी है। किसीको कुछ सन्देह न होगा।

महताबरायने कुछ सोचते-सोचते कहा—हूँ।

मै—भाई, मेरा तो ख्याल है कि और कोई रास्ता नहीं है। अगर कोई हो तो तुम बताओ।

महताबरायने मुस्कराकर गरदन उठायी और कहा—मेरा ख्याल है, पहले एक बार यत्न किया जाय।

मै—बेकार है। वह जाने कहाँ होगी ? और अब उसका जी फट गया है।

महताबराय—तुम जरा यहाँ बैठो और सिगरेट पियो। मै अभी आता हूँ। शायद काम बन जाय।

मुझे आश्चर्य हुआ। महताबरायने कपड़े पहने और बाहर निकल गया। मैं इन्तजार करने लगा।

एक घटेके बाद महताबरायका नौकर एक चिट्ठी लेकर आया और बोला—बाबूजीने यह चिट्ठी दी है।

मैंने चिट्ठी ले ली, और हैरान हुआ। महताबरायने लिखा था—

'रूपरानी साथके कमरेमें है। उसपर विश्वास करो और उसे घर ले जाओ। और मुझे भूलनेका यत्न करो। इस जीवनमें फिर मुलाकात मुश्किल है। रूपरानी अगर मेरी खुशी चाहती है तो अपने घरमें खुश रहे। मैं और मेरी माँ जा रहे हैं। देश छोटा है, परदेश बड़ा है। देशमे सबके लिए जगह नहीं है। परदेशमें सभी समा जाते हैं।'

'भगवान् सबका कल्याण करें।'

मै सब कुछ समझ गया। इससे पहले एक बार महताबरायने मेरी जान बचायी थी, आज इज्जत बचा गया। ऐसे महान् मित्र इस स्वार्थी दुनियामे कहाँ है ?

मैं धीरे-धीरे उठा और जाकर साथका कमरा खोल दिया। रूपरानी चुपचाप आकर मेरे पास खड़ी हो गयी।

थोड़ी देर बाद हम दोनो मिलकर महताबरायकी चिट्ठी पढ़ रहे थे और रो रहे थे।—और हमारे चारो तरफ रातका अँधेरा और सन्नाटा छाया हुआ था।

फ़रऊनका प्रेम

१

दोपहरका समय था। सौ दरवाजोके पुराने मिस्री शहर सीबापर सूरजकी गरमीके कारण बेहोशी और बेसुधी-सी छायी हुई थी। बाजारोमे, गलियोंमे और आबादीसे बाहर श्मशानका-सा सन्नाटा छाया हुआ था। कोई आवाज सुनाई न देती थी, कोई शक्ल दिखाई न देती थी; और यह वह समय था जब इस रग-रूप और भोग-विलासकी सगीतमय नगरी-पर किसीने मौतका जादू कर दिया था। निगाह सूरजकी तरफ देखती थी और चौंधियाकर जमीनपर गिर पडती थी। ज्वाला-सदृश आकाशसे एक सफेद रोशनी पैदा होती थी और जमीनकी हर एक चीजको अपनी लपटमे लपेट लेती थी। महलो, मन्दिरो और मीनारोंकी चोटियाँ, जो मिस्री चेहरोकी शक्लकी थी, मकानोंके ऊपर उठी हुई थी, मानो आगके सागरसे शोले उठ रहे थे।

मगर इस हत्यारी गरमीमे भी तलअत, फरऊन अमनसका अर्थमन्त्री, शाही खजानेके नये भवनमे इधरसे उधर और उधरसे इधर फिर रहा था, और हब्शी गुलामोको काम जल्दी समाप्त करनेके तगादे कर रहा था। आजसे एक साल पहले फरऊन अमनसने यह बड़ी इमारत बनानेकी आज्ञा दी थी और इसके लिए सिर्फ एक सालका समय मजूर किया था। कितनी कठिनाइयो, कितनी मेहनतो, कितने सोच-विचारसे तलअतने यह बड़ा भवन बनवाया था! आज उस सालका आखिरी दिन था जब साँझको बादशाह इसे देखनेको आनेवाला था।—और अभीतक इस भवनका भीतरी दरवाजा तैयार न था, जिसमे फरऊन अपने और अपने पूर्वजोके जमा किये हुए अनमोल हीरे और मोती और जवाहर रखकर निश्चिन्त हो जाना चाहता था। तलअतको मालूम था कि अगर सीबाकी

जमीनपर साँझकी छाया पडनेसे पहले-पहले दरवाजा तय्यार न हो गया, तो फरऊन अपनी सोनेकी लाठीसे उसकी गरदन तोडनेमे कभी सकोच न करेगा। और फरऊनके सामने बोलनेकी हिम्मत किसीमे न थी।

आखिर साँझ हुई, वह साँझ जिसके पीछे-पीछे तलअतके लिए आराम और विश्रामका दिन चला आ रहा था। फरऊनने अपने एक सौ जंगी जरनैलों, और एक हजार हब्शी गुलामोंके साथ अपने कोष-भवनमे प्रवेश किया। तलअतने पग-पगपर झुककर और अपना हाथ सीनेपर रख-रखकर सलाम किया और फरऊनके पाँवमे खड़ा हो गया। फरऊनने तलअतकी इस विनयको अवहेलनाकी आँखोसे देखा, मानो वह खुद खुदा था और तलअत उसका तुच्छ जीव। तब उसने मुस्कराकर उसकी तरफ मुँह मोडा और धीरेसे कहा—हमे सारा भवन दिखा दे, तूने क्या-क्या बनवाया है।

तलअत भवन दिखाने लगा। मगर इस समय वह सहमा हुआ, डरा हुआ, घबराया हुआ था, और उसके प्राण फड़फडा रहे थे।—क्योकि उसकी जिन्दगी मौतकी गोदमे थी, और कोई न कह सकता था कि मौत किस समय अपने ठण्ढे हाथोसे उसकी जिन्दगीका गला घोट देगी!

फरऊनने राज्यके इस खजाना-घरका एक-एक भाग देखा और उसे पसन्द किया और तलअतसे कहा—हम तुझसे खुश है। तूने अच्छा काम किया है।

तलअतको अब अपने सिरकी सलामतीका विश्वास हुआ। उसके मुँहकी चिन्ता, जिसने उसकी रौनककी जगह ले ली थी, दूर हो गयी और उसकी उदास आँखोमे जीवनकी ज्योति एक सालके बाद वापस आयी। और उसे खुशी हुई कि वह आज आरामकी नींद सोयेगा।

फरऊनने अपने प्रधान मन्त्रीको अपने सामने बुलाया और कहा—तुम्हारे बादशाहकी इच्छा है कि इस इमारतपर एक हजार हबशियोका पहरा बिठाया जाय; उन्हे रातके लिए एक-एक मशाल और एक-एक

बिगुल दिया जाय ताकि अगर कोई आदमी इस भवनके अन्दर पॉव भी रख जाय तो उसी समय सेनापतिको मालूम हो जाय, और अपराधी गिरफ्तार कर लिया जा सके।

प्रधानमन्त्रीने विनयसे सिर झुका दिया, मगर अभी सिर उठाने न पाया था कि फरऊनने फिर कहा—और तुम्हारा बादशाह नही चाहता कि इस भवनके अन्दर उसके खास अपने आदमियोके सिवाय कोई दूसरा आदमी पॉव भी रख जाय। इसलिए मुनादी करा दो कि जो कोई इस भवनमे प्रवेश करेगा वह अपनी मौतके मुँहमे प्रवेश करेगा, और उसे कोई ताकत बचा न सकेगी। यहॉतक कि अगर तुम्हारा शाहजादा, मिस्रका होनेवाला महाराज भी, इस आज्ञाका निरादर करेगा तो उसे भी यही दण्ड दिया जायगा।—तलअत, तू अर्थ-मन्त्री है, तेरा ओहदा तेरे ही पास रहेगा। हमारे सामने हर एक बातका उत्तरदाता तू होगा। और तू जानता है, हम कैसे सख्त है।

यह कहकर फरऊनने आगभरी ऑखोसे चारो तरफ देखा। गुलाम, जगी जरनैल, तलअत, प्रधानमन्त्री, सब जमीनपर झुक गये। फरऊनने अपना सोनेका डंडा उठाया और बाहर निकल गया। थोड़ी देर बाद उसने राजमहलकी दीवारपरसे सुना कि उसका हुक्म शहरके कोने-कोनेमे सुनाया जा रहा है और लोग यह हुक्म सुनते है और सहम-सहमकर खजाना-घरकी तरफ देखते है।

२

अगर फरऊनको अपने बलपर भरोसा था तो यह उसका दोष न था, क्योकि सारा मिस्र और मिस्रके निवासी स्वीकार कर चुके थे कि फरऊन दुनियामें परमात्माका नायब है और चॉद, सूरज, तारो, बिजलियोंका देवता है। उसकी मूर्तियॉ मन्दिरोमें रखी जाती थी,

उसकी बातोको भगवान्की भावना समझा जाता था और उसकी पूजाके लिए शब्द-कोशके पवित्र और सुन्दर शब्द खोज-खोजकर इस्तेमाल किये जाते थे। उसकी प्रजा उसे देवता मानती थी, इसलिए उसके निकट जाने, उसे छूने, उसके सामने सिर उठानेकी किसीमे हिम्मत न थी। यहाँतक कि उसकी स्त्रियाँ भी उसके सामने अपना दिल न खोल सकती थी। और फरऊन भी उन्हे अपनी उदास घड़ियोका मनोरंजन, अपनी वासनाओका खिलौना, अपनी शक्तिका प्रमाण समझता था और अपने दिल और दिलके प्यारको कभी उनके विश्व-विजयी रूपके सामने झुकने न देता था। न उन स्त्रियोको कभी ख्याल आता था कि फरऊन उनसे प्यार भी कर सकता है, क्योकि वह उस पाँच भूतोके नाश होनेवाले शरीरको अमर देवता समझती थी और हर घडी डरती रहती थीं कि न जाने, किस समय यह महादेव रुद्ररूप धारण कर ले। इसलिए हमे, जो बिलकुल एक दूसरे युग और दूसरे देशमे पैदा हुए है, हैरान न होना चाहिये कि लोग अपनी बेटियोको फरऊनके चरणोमे अर्पण कर देना पुण्य समझते थे और इस पुण्यके लिए हजारों और लाखो यत्न करते थे। और जब वह अपनी कुँवारी कन्याओको एक बेदिल और बेपरवाह बादशाहकी दो-चार क्षणोकी प्रसन्नतापर (क्योकि फरऊनको इन स्त्रियोसे ज्यादा सम्बन्ध रखनेमे अपनी निर्बलता नजर आती थी) बलिदान कर देनेमे सफल हो जाते थे, तो उन्हे ऐसी खुशी होती थी जैसे उन्हे स्वय भगवान् मिल गया हो और लोग उन्हें मुबारकबाद देते थे।

मगर अभी फरऊनके रनिवासमे मलिका-महारानीकी जगह खाली थी और देश-देशके राजे-महाराजे अपनी-अपनी अप्सरा-कन्याओके लिए कोशिशे कर रहे थे। कोई न जानता था कि फरऊनकी दयादृष्टि पानीकी किस बूँदको मोती और रेतके किस कणको सूरज बना देगी! मगर उन्हे इतना विश्वास था कि फरऊन किसी बहुत बड़े बादशाहकी बेटीके सिवाय किसी दूसरी औरतको अपने साथ राज-सिंहासनपर बैठानेके लिए कभी पसन्द न करेगा।

इसलिए लोगोकी उस हैरानीका अनुमान करो जो उनको एक दिन यह जानकर हुई कि फरऊनने हब्शी सुलतान शमलार्ककी शाहजादीको मिस्रकी मलिका-महारानी बनानेका निश्चय कर लिया है! लोगोने यह खबर सुनी तो उन्हे विश्वास न हुआ कि फरऊनकी पसन्द इतने नीचे भी जा सकती है।

मगर वह फरऊन था, और जो चाहे कर सकता था; और उसकी मरजीके सामने किसीमे सिर उठानेकी हिम्मत न थी। सॉझके समय जब सीबाकी सारी प्रजा राजमहलके सामने खडी थी, मिस्रका सबसे बड़ा पुरोहित राजमहलकी दीवारपर आया और उसने उस खबरसे, जिसपर लोग अबतक विश्वास न करते थे, या विश्वास करना न चाहते थे, सनसनी फैला दी।

मिस्रके पुरोहितने कहा—चॉद, सूरज, बादल और बिजलियोके देवता फरऊन अमनसने हब्शी सुलतान शमलार्ककी राजकुमारीसे ब्याह करने और उसे अपनी मलिका-महारानी बनानेका निश्चय कर लिया है और आज्ञा दी है कि उन दोनोकी सलामतीके लिए नीली छतवाले और बड़े घरवाले भगवान्से पूरा एक सप्ताह मन्दिरोमे प्रार्थनाऍ की जायॅ, और कुरबानिया चढायी जायॅ।

मगर प्रेम और प्रारब्धके देवता फरऊनके लिए एक दूसरी सुन्दरीका चुनाव कर चुके थे, जिसे देखनेका फरऊनको अभीतक अवसर न मिला था।

और दूसरी रातको जब चॉद अपनी चॉदनीकी चॉदी लेकर आसमान-घर आया तो शमलार्ककी शाहजादीने सात नदियोके पानीसे स्नान किया और चॉदनी-रातमे बैठकर वह मिस्री सुन्दरियोका नाग-नाच देखने लगी। इस समय वह खुश थी और अपने आनन्दपूर्ण भविष्यका विचार कर-करके मुस्करा रही थी। 'मिस्रकी मलिका-महारानी'—कैसे सुन्दर शब्द थे जिसकी कल्पना उनके अस्तित्वसे भी कही ज्यादा सुन्दर थी! सोचती थी, जब मैं फरऊनके साथ फरऊनके महलकी खिडकीमें लोगोंके

सामने खड़ी हूँगी, उस समय मेरी क्या शोभा होगी ! होठ खुशीसे काँप रहे होगे, गाल अभिमानसे तमतमा रहे होगे, और आँखे गर्वसे मुस्करा रही होगी ! जमीनवालोका यह सौभाग्य आसमानवालोको भी कम नसीब होता है। शमलार्ककी राजकुमारी खुशीके विचारोमे लीन थी कि उसकी एक दासीने आकर कहा—शाहजादी, भगवान् तेरे जीवनको जीवनकी सारी बहारोसे भरपूर रखे, और तेरी दुनियामे दुःख और दर्दकी छायातक न पड़ने दे। त्यूनस नीलके किनारे तेरे लिए पानी लेने गयी थी, मगर वहाँ एक मिस्री सिपाहीसे प्यार-मुहब्बतकी बाते कर रही है और उसे इस बातका कोई भय नही है कि तू यहाँ उसका रास्ता देख रही है।

शाहजादी, जिसके लिए इससे पहले इस बातकी कोई आशका न थी कि कोई उसकी आज्ञाका इस तरह अपमान कर सकता है, चौक पड़ी और उसका राजसी दबदबा इस खबरसे ऐसा घायल हुआ कि उसकी आँखोसे आगकी चिनगारियाँ बरसने लगी। उसने अपने एक हथियारबन्द सिपाहीको बुलाया और कहा—तू अभी जा और उस गुस्ताख गुलाम लड़कीके बाल पकड़कर उसे घसीटता हुआ मेरे सामने ला। उसने मेरा अपमान किया है। मै उसे सजा दूँगी। और जबतक सजा न दे लूँगी मेरा क्रोध ठण्डा न होगा।

और वहाँ नीलके किनारे त्यूनस (यही उस गुलाम लड़कीका नाम था) रेतपर बैठी थी और चाँदकी दूधिया रोशनीमे एक मिस्री नौजवानसे बाते कर रही थी। शाहजादीका हथियारबन्द सिपाही हब्शी था, और काव्य और कलाका उसने कभी नाम भी न सुना था; फिर भी, उसे ऐसा मालूम हुआ जैसे मिस्रकी नशीली रातमें मिस्रके दो चाँद मिस्रकी रेतपर बैठे प्रेम और यौवनकी पहेलियाँ सुलझानेकी कोशिश कर रहे है। उसकी आँखे इस सपनेकी सी मनमोहनी तस्वीरको देखना और बराबर देखते रहना चाहती थी। मगर वह हब्शी था और गुलाम था, और उसकी शाहजादीने उसे त्यूनसको बालोसे घसीटकर अपने सामने लानेकी आज्ञा दी थी। इसलिए, उसने इस तस्वीरकी शोभाको अपनी आँखोमें स्याह

कर लिया और मनकी कोमल अभिलाषाको अपने भारी पॉव-तले मसलता हुआ आगे बढा ।

त्यूनस घबरा गयी, और उसकी ऑखोमे अपनी मौत फिर गयी। मगर मिस्री नौजवान हॅस रहा था; और उसे गुलाम लड़कीकी घबराहट और गुलाम सिपाहीके क्रोध, दोनोंकी परवाह न थी।

हब्शी सिपाहीने आगे बढकर कहा—तू कौन है, जो मेरे बादशाहकी लौडीको उसके कामसे रोक रहा है ?

मिस्री नौजवानने पहले सिपाहीकी तरफ देखा, फिर निडरतासे अपने दोनों हाथ अपने सीनेपर रखे और मुस्कराकर कहा—मै मिस्रका एक छोटा-सा बेटा हूँ, मगर पवित्र नीलके पवित्र पानीकी सौगन्ध, मुझे तेरे हब्शी बादशाहकी इतनी भी परवाह नही, जितनी नीलके इस अथाह पानीको रेतके एक कणकी हो सकती है।

यह कहकर मिस्री नौजवान मुड़ा, और इधर-उधर टहलने लगा। और अपने पॉवसे रेतके साथ खेलने लगा।

गुलामने अपने मालिककी शानमे बे-इज्जतीके ऐसे शब्द आजतक न सुने थे। उसने तीर कमानपर चढ़ाया मगर मिस्री नौजवानने आगे बढ़कर उसके हाथसे तीर और कमान दोनों छीन लिये, उन्हे नीलके गहरे पानीमें फेक दिया, और उसकी बहादुरीपर बेपरवाहीसे हॅसने लगा। और बोला—मेरे सामने हथियार न उठा, मेरे सामने हथियार उठाना किसी-किसीका काम है।

इसके बाद दोनोमें लड़ाई हुई। अजीब नजारा था। काला गुलाम और गोरा मिस्री लड़ते थे, और उनकी लड़ाई ऐसी थी जैसे एक काला और एक सफेद बादल आपसमे टकरा रहे हो। गुलाम समझता था, यह लौडा मेरे सामने क्या ठहरेगा ? मगर उसे बहुत जल्द मालूम हो गया कि यह उसकी भूल थी। यह मोटा-ताजा नही है, मगर कमजोर भी नहीं है। इसके हाथ-पॉव तो लोहेसे भी कड़े है; दबाना चाहता हूँ दबते नही है, मोड़ना चाहता हूँ मुड़ते नहीं है। हमला करने चला था, अपने-आपको

बचाना भी मुश्किल हो गया। पहले जानता तो यह मूर्खता न करता। न आगे बढ़ता, न हेठी होती। मिस्री नवयुवक उसके साथ लड़ता न था, खेलता था, और उसकी जोर-आजमाईपर हँसता था। और उसे इस बातकी जरा भी चिन्ता न थी कि यह आदमी उसे हानि भी पहुँचा सकता है। मगर समय बीत रहा था और त्यूनस घबरा रही थी। वह चाहती थी, यह झगड़ा जल्दी खत्म हो।

पूरे दो घटे बीत गये, और हब्शी शाहजादीका क्रोध किसी तरह शान्त न हुआ। सहसा उसने बीस घुडसवारोंको अपने साथ आनेका हुक्म दिया और झीलकी तरफ चली। और वहाँ जाकर उसने वह देखा जो वह ठण्डे दिलसे न देख सकती थी। उसका आज्ञाकारी सिपाही रेतपर औंधे-मुँह मरा पड़ा था। त्यूनस पानीका घड़ा सिरपर रखे आनेका यत्न कर रही थी और मिस्री नौजवान उसके सामने घुटनोंके बल बैठा उसे रोकनेके लिए मिन्नते कर रहा था।

शाहजादीने यह हाल देखा और उसे इसमे अपनी और अपने राज्यकी बेइज्जती दिखाई दी। एकाएक उसने हाथ उठाया? त्यूनस घबरा गयी। इस घबराहटमे उसका घड़ा सिरसे गिरकर टूट गया और उसका पानी प्यासी रेतमे समा गया। अब रेतपर सिर्फ कुछ बुलबुले बाकी थे।—आशा मिट गयी थी, अब सिर्फ लालसा रह गयी थी। मगर इस लालसाका जीवन भी कितनी घड़ियाँ है?

हब्शियोंमे ब्याहके इस घड़ेका टूटना ऐसा असगुन समझा जाता था जिसके सामने वह हर तरहका सकट सहनेको तैयार हो जाते थे। उनके कान इसमे यह भविष्यवाणी सुनते थे कि अब यह विवाह-सम्बन्ध न हो सकेगा और दुलहिनके पिताके प्रारब्धमे अपमान और तिरस्कार लिखा है। शाहजादी दाँत पीस रही थी, त्यूनसका बदन काँप रहा था, बीस हथियारबन्द सवार अपनी शाहजादीके इशारेका इन्तजार कर रहे थे और मिस्री नौजवान कभी इधर देखता था, कभी उधर, और स्थितिको

समझनेका यत्न कर रहा था, मगर कुछ समझता न था। वह सिर्फ हँसता था।

भूमिपर नीलका अथाह पानी बह रहा था, आकाशपर स्वर्गके अनगिनत दिये जल रहे थे, दूर फासिलेपर सीबा नगरीके गगन-चुम्बी भवनोकी रोशनी अपने अन्दरके भोग-विलास और यौवन-क्रीड़ाकी चुगलियाँ कर रही थी, मगर नील-किनारेकी इस दुनियाको इन बातोका जरा ख्याल न था। इब्शियोकी शाहजादी, उसकी आधी लड़की आधी जवान दासी और मिस्री युवक अपने-अपने विचारोमे विलीन थे और तीनोंके विचार अलग-अलग थे।

एकाएक शाहजादीने ठण्डी साँस भरी और अपने घुड़सवारोकी तरफ देखा। त्यूनस और भी घबरा गयी और उसकी आँखे मिस्री युवककी आँखोसे मिली। इन आँखोमे एक सन्देशा था जिसने मिस्री युवकके सामने लड़कीका दिल खोल दिया। अब उसने वह सब कुछ समझ लिया जो वह इस समयतक समझना चाहता था मगर समझ न सकता था। देखते-देखते वह अपनी जगहसे उछला और त्यूनसको गोदमे उठाकर नीलमे पड़ी हुई नावमे कूद पड़ा। घुड़सवार आगे बढ़े, मगर उनकी शाहजादीने उन्हे रोक दिया और ऊँची आवाजमे कहा—मिस्रके बहादुर बेटे! अपनी जानका दुश्मन न बन। इस कमीनी लड़कीने जो अपराध किया है वह मामूली नही। तू इसे मेरे आदमियोके हवाले कर दे। मैं इसे आगमे जलाकर भस्म कर दूँगी, और हर वह आदमी जो इसकी सहायताको हाथ उठायेगा, अपनी मौतको आप अपने मुँहसे बुलायेगा। और फरऊन मेरी बात सुनेगा।

मगर मिस्री वीरने नावका रस्सा खोल दिया और पतवार हाथमे लेकर नावको खेने लगा। शाहजादीने अपने गलेकी पूरी शक्तिसे चीखकर अपने सवारोंसे कहा—दोनोको अपने तीरोसे बेध डालो? सवारोंने अपने तरकश खाली कर दिये मगर मिस्री नौजवान और त्यूनसको, जो नावमे लेट गये थे, कोई तीर न लगा, और नाव गहरे पानीमे चली गयी!

शाहजादी हाथ मलती थी, दाँत पीसती थी और अपने आदमियोंपर बिगड़ती थी।

३

यह नौजवान फरऊन अमनसके अर्थ-मन्त्री तलअतका एकलौता बेटा रेमफस था। वह जवान था, वीर था और सुन्दर था। उसकी तलवार पुरुषोके और मुस्कराहट स्त्रियोके दिलोमे हलचल मचा देती थी। वह जिधरसे निकल जाता था, लोग उसे देखते रह जाते थे।

रेमफस और त्यूनस एक-दूसरेको चाहते थे, और अब जब कि उनको विधाताने एक-दूसरेके प्रेम-पाशमे बाँध दिया था तो उनकी खुशीका ठिकाना न था। बुड्ढा तलअत भी उन्हे देखता था और खुश होता था, मगर जब उसे ख्याल आता था कि त्यूनस शमलार्ककी लौडी है, और शमलार्कके कहनेपर फरऊनके आदमी शहरके कोने-कोनेमे उसकी तलाश करेंगे, तो उसकी खुशी किरकिरी हो जाती थी। और उसकी आशकाएँ निर्मूल न थी। शमलार्क हब्शियोके क्रोधसे होंठ चबाता हुआ फरऊनके पास पहुँचा और बोला—तेरे एक आदमीने मेरी लौडी चुरा ली है। मैं तेरे पास फरियाद लाया हूँ। मुझे मेरी लौंडी दिलवा।

फरऊन उसी समय अपना सोनेका डंडा लेकर खड़ा हो गया और बोला—मिस्र देशका चप्पा-चप्पा छान डाला जाये और त्यूनसको ढूँढ़कर शमलार्कके हवाले किया जाये। यह फरऊनका शाही हुक्म है, मिस्र इसकी तामील करे।

मगर त्यूनस कहाँ थी?—खजाना-घरके बाहर तलअतके मकानमें, जहाँ किसी जासूसको सन्देह भी न हो सकता था कि इस जगह त्यूनस छिपी होगी, और तलअतने उसे आश्रय दिया होगा।

रातका समय था। आकाशपर चॉद-तारोंकी सभा सजी हुई थी। त्यूनस, जो मिस्रकी सबसे बडी सुन्दरी थी, रेमफसके साथ बागमें बैठी थी और फूलोकी पॅखुड़ियोके साथ खेल रही थी। रेमफस कभी फूलोको देखता था, कभी त्यूनसको देखता था, और फिर सिर झुकाकर किसी गहरे विचार-मे निमग्न हो जाता था। शायद सोचता था कि फूल ज्यादा सुन्दर है या त्यूनस ? पता नही, कितनी देर वह इस फूल-सुन्दरीकी समस्यापर विचार करता रहा। एकाएक त्यूनसने यौवनके मद-भरे स्वरमे कहा—रेमफस !

रेमफसने प्रेमकी इस पुकारको प्रेमके कानोसे सुना और झूमने लगा। और उसे अपने सवालका जवाब मिल गया। फूल रग और सुगन्धका नाम है, मगर त्यूनस रग, सुगन्ध और सगीतका नाम है।

त्यूनस फूलसे बढ़ गयी।

रेमफसने त्यूनसकी तरफ देखा और उन ऑखोसे देखा जिनमे प्रेमकी प्यास थी, चाह थी, जलन थी। स्त्रीकी ऑख पुरुषके इरादेको जितनी जल्दी पहचानती है, उतनी जल्दी कोई दूसरा कम पहचानता है। त्यूनस उठकर खड़ी हो गयी और फूलोंकी क्यारियोपर अपने नंगे पॉव रखती हुई, जो सफेद कबूतरोसे भी खूबसूरत और प्यारे थे, रेमफससे दूर चली गयी। रेमफसने अपनी हृदय-रानीकी चालमे ऐसा जादू-भरा और कला-पूर्ण नाच देखा जो मिस्रकी सबसे बड़ी नर्तकीके पॉवको भी नसीब न था। रेमफसको अपने सवालका एक बार फिर जवाब मिला। फूल रग और सुगन्धका नाम है, मगर त्यूनस रग, सुगन्ध, संगीत और नाच इन चार चीजोका नाम है।

त्यूनस फूलसे और भी बढ़ गयी।

जब किसीकी हृदयेश्वरी चॉदनीमे फूलोके पेडोतले खड़ी हो और अपने प्रेमीकी तरफ देख-देखकर मुस्करा रही हो, कोई पराया पास न हो और चारों तरफ सन्नाटा हो, ऐसे बहार और विहारके समयमे उसके दिलमें क्या कुछ होता है, इसे कोई प्रेमी ही समझ सकता है, दूसरा नही समझ सकता।

रेमफस आगे बढा। वह त्यूनसको अपने बाहुपाशमे कस लेनेके लिए अधीर हो रहा था। मगर त्यूनसने रेमफसका दिल रेमफसकी ऑखोमे पढा, और हरिणीके बच्चेकी-सी शोखीसे उछलकर खजाना-घरकी दीवारपर चढ़ गयी।

ओ भगवान्! रेमफसका लहू सूख गया। एक कदम और आगे और फिर त्यूनसको मौतके पजेसे बचाना आदमीकी ताकतसे बाहर हो जायगा। उसने अपना दम सीनेमे रोक लिया और धीरेसे कहा—त्यूनस, खुदाके लिए नीचे उतर आ! तू नही जानती, तू कहॉ जा चढ़ी है। और उस तरफ कूद जानेका क्या मतलब है! मेरी सुन त्यूनस, तिरियाहठ न कर। तेरी यह नासमझी मेरे और तेरे दोनोके जीवनको सकटमे डाल देगी। तू नही जानती त्यूनस, तू नही जानती।

मगर त्यूनसने रेमफसकी इस बातकी परवा न की और खजाना-घरके अन्दर कूद पड़ी।

रेमफसने वह देखा जो वह देखना न चाहता था। उसने एक क्षणमे विचार कर लिया और फिर यह सोचकर कि मरने और जीनेका आनन्द तभी है जब मनका मीत साथ हो, पागलोके समान दौड़कर आप भी दीवारपर चढ़ गया और मौतके मुँहमे कूद पड़ा।

४

त्यूनस, जिसे अबतक मालूम न था कि उसने क्या कर दिया है, दीवारके नीचे छिपी रेमफसके आनेकी राह देख रही थी और हॅस रही थी—उस अबोध बालककी तरह जो नागके साथ खेलता है, मगर नही जानता कि वह क्या कर रहा है। त्यूनस भी मौतकी गोदमे बैठी मुस्करा रही थी। इतनेमे रेमफस उसके पास पहुँचा और उसने अपने मुँहपर

ॲंगुली रखकर उसे चुप रहनेका इशारा किया। इस समय रेमफसका चेहरा ऐसा सहमा हुआ था और वह इस तरह डर-डरकर और धीरे-धीरे चल रहा था कि सुन्दरी त्यूनस भी कॉपकर रह गयी, और समझ गयी कि उससे कोई बड़ी भारी भूल हो गयी है।

मगर अभी रेमफस उसे कुछ समझाने और वह कुछ समझने न पायी थी कि एक पहरेदार एक हाथमे मशाल और दूसरे हाथमे बिगुल लिए सामने आया। उसने उन दोनोको देखा, और बिना कुछ सोचे-समझे बिगुल बजा दिया। इसके साथ ही पॉच सौ आदमियोने अपना-अपना बिगुल बजाकर एक-दूसरेको खबर दे दी कि कोई बाहरका आदमी खजाना-घरमे आ गया है। रेमफस त्यूनसको लेकर भागा और एक पेड-तले जा छिपा। मगर पॉच सौ बिगुल बजे, और पॉच सौ मशाले उसे खोजने लगी। रेमफस अपनी त्यूनसको लिये ॲंधेरा ढूॅढता फिरता था, मगर इस चॉदनी और मशालोकी रातमे उसे ॲंधेरा कही मिलता न था। इस समय ॲंधेरा उसके जीवनका प्रकाश बन जाता। मगर ॲंधेरा कहॉ था? फरऊनके गुलामोने उनको देखा, और गिरफ्तार कर लिया। रेमफसने सिर पीट लिया।

फरऊन अपने राजमहलकी बड़ी दीवारपरसे यह सब कुछ देख रहा था और क्रोधसे कॉप रहा था। जब उसके सामने खजाना-घरके अपराधी पेश किये गये और उसने उनमेसे एक रेमफस पाया तो उसने कड़ककर कहा—तलअतका बेटा और इस अपराधमे? क्या तू कह सकता है कि तूने हमारी मुनादी न सुनी थी?

रेमफसने बेपरवाईसे जवाब दिया—मिस्रका बादशाह जानता है कि मैं झूठ नहीं बोलता, और मै इस समय भी झूठ नही बोलूॅगा। अपना अपराध मजूर करता हूँ और मरनेसे नही डरता। मगर मैं मिस्रके बादशाहसे एक बात कहनेकी आज्ञा मॉगता हूॅ और मुझे आशा है कि उसे एक मरनेवालेकी आखिरी प्रार्थना समझकर मजूर किया जायगा।

फरऊनने अपनी लाल-लाल ऑखे रेमफसके चेहरेपर गाडकर पूछा—तू क्या कहना चाहता है ? कह, हम सुनेगे ।

रेमफस—मै मिस्रका बेटा हूँ, मैने मुनादी सुनी थी । मै जानता था कि जो खजाना-घरके अन्दर पॉव रखेगा उसे मौतका दण्ड मिलेगा । इसलिए, मैं हर तरहकी मौतकी हर तरहकी यन्त्रणाके लिए तैयार हूँ । मगर यह लड़की निर्दोष है । इसका कोई अपराध नही ।

फरऊन—यह फैसला करना हमारा काम है ।

रेमफस—मगर यह मिस्रकी रहनेवाली नही । न इसने वह मुनादी सुनी, न यह जान-बूझकर खजाना-घरके अन्दर गयी ।

फरऊन—(रेमफसकी तरफ देखते हुए) यह कौन है ?

रेमफस—गुलाम जातिकी एक लड़की, जिससे मिस्रके लोग ईंटें बनवानेका काम लेते है ।

फरऊनने कुछ देर सोचा और रेमफसकी बेपरवाहीको अपने शाही दबदबेका अपमान समझकर कहा—हमारा फैसला यह है कि रेमफसको मिस्रके सबसे बड़े पत्थर-तले दबाकर मार डाला जाय और उसकी लाश मछलियोंकी खुराक बननेके लिए नीलमे फेंक दी जाय । और इस गुलाम लड़कीको—

अब त्यूनस चुप न रह सकी । वह एकाएक आगे बढ़ी और फरऊनके पॉवमे गिर पड़ी । फरऊनने जरा परवा न की कि उसके पॉवमें कौन गिरा है और किस तरह गिरा है । उसने त्यूनसकी तरफ देखे बिना अपने आदमियोंसे कहा—इसे हमारे पाँवसे उठा लो । यह हमारे पॉवपर रहनेके लायक नही ।

त्यूनस खड़ी हो गयी और उसने अपने नारी-सौन्दर्य और बाले जोबनकी पूरी शक्तिसे फरऊनके हृदय-गढ़पर हमला किया । फरऊनने अब उसे देखा और वह एक ही बार सैकडो ससार देख गया । उसने लाखों स्त्रियाँ देखी थी, हजारों स्त्रियोके रूपसे खेला था, मगर उसके दिलका, दिमागका और ऑखोंकी पलकोका जो हाल आज हुआ, आजसे

पहले कभी न हुआ था। आज उसे अपना बल बिखरता हुआ और अपना राज्य सिकुड़ता हुआ मालूम हुआ। उसकी आँखे त्यूनसके मुँहपर जम गयी, और पाँव जमीनमे गड़ गये। वह त्यूनसको प्यासी आँखोसे देखने लगा।—और ऊपर नीले आसमानसे एक अजान अन्धा बालक फूलोंकी तीर-कमान हाथमे लिए एक शिकारपर तीर बरसा रहा था।

त्यूनसने अपने रूपसे फरऊनको बसमे कर लिया था, मगर वह यह बात जानती न थी। न उस गरीबको कभी यह ख्याल भी आ सकता था कि उसके रूपमे इतनी मोहिनी है। उसने समझा, फरऊनपर मेरी बेगुनाही-का असर हो गया है और वह हैरान हो रहा है कि यह लड़की इस संकटमे क्यों फँस गयी! तब उसने दूसरी बार फिर अपने आपको फरऊन-के पाँवमे गिराया और कहा—ऐ बादलो और बिजलियोंके देवता, यह मिस्री नौजवान निर्दोष है। दोष सिर्फ मेरा है। यह मुझे बचाने और मुझे तेरा हुक्म सुनानेके लिए मेरे पीछे-पीछे चला आया था। इसलिए, अपराध इसका नही, मेरा है; और दण्ड इसे नही, मुझे मिलना चाहिये। तेरा अपराध मैने किया है?

रेमफस—यह झूठ बोल रही है।

त्यूनस—नही बादशाह सलामत, मैं सच कह रही हूँ। यह मुझे बचाना चाहता है, इसलिए झूठ बोल रहा है। मैं गरीब हूँ, मगर मुझे जीवनका इतना लोभ नही है कि अपनी जगह किसी दूसरेको मरने दूँ। जिसका अपराध है, उसीको मरना चाहिये और अपराध मेरा है।

रेमफस, जो अपने लिए मौतका दण्ड सुनकर जरा भी विचलित न हुआ था, त्यूनसकी बातोंसे बिलकुल सहम गया और उसके माथेपर मौतका पसीना आ गया। उसके दिलके प्यारने भगवानसे प्रार्थना की कि फरऊन उसे ही सच्चा समझे, और उसे ही दण्ड दे।

फरऊनने त्यूनसकी सुकुमार देहको लोभकी आँखोसे देखा और अपने आदमियोसे कहा—इस समय इसे कैदखानेमे ले जाओ। हम फिर फैसला करेंगे।

त्यूनस और रेमफसको फरऊनके गुलामोंने पकड़ लिया और वह बाहर आकर एकको पूरबकी तरफ और दूसरेको पश्चिमकी तरफ ले चले। मगर वह दोनों एक दूसरेकी तरफ मुड़-मुडकर देखते थे और उनके दिल अपनी विवशतापर कुढ़ते थे। मगर कुढ़नेसे कुछ बनता न था।

फरऊनने अपने राजमहलकी दीवारपरसे त्यूनसको बन्दी-घरमे दाखिल होते देखा तो उसका दिल दुःखसे भारी हो गया और कलेजेमे कोई चीज चुभने लगी। वह अपने दल, बल, असर सबको भूलकर जमीनपर गिर पड़ा और उसकी ऑखोमे ऑसू भर आये। उसने प्रेमका नाम लाखो बार सुना था, पर प्रेमका मर्म उसे आज मालूम हुआ। उसका दिल इस तरह कभी व्याकुल न हुआ था, न उसके दिमागमे किसी ख्यालने इस तरह करवटे बदली थी। वह त्यूनसको बन्दी-घरके दरवाजे तक जाते देखता रहा। मगर जब वह अन्दर चली गयी तो वह घबरा गया और उसका दम अपने खुले महलकी छतपर घुटने लगा। गोया त्यूनस दुनियाकी सारी हवा-को अपने साथ ले गयी थी और अब फरऊनके लिए दुनियामे कुछ बाकी नही रह गया था। जब वह अपने महलके मोतियों और हीरोंसे जड़े हुए फर्शवाले कमरेमे पहुँचा तब भी उसे यही ख्याल हुआ कि वहॉकी कोई चीज गुम हो गयी है। वह बेचैनीसे उठकर टहलने लगा और उसकी ऑखे चारों तरफ किसी चीज की खोज करने लगी। मगर वह दिल-पसन्द चीज उसे कही दिखायी न देती थी। यहॉ तक की आधी रात बीत गयी और फरऊन बिना कुछ खाये-पिये और बिना लिबास बदले अपने बिस्तरे पर लेट गया।

५

जब रातके तीन पहर बीत गये तो फरऊनने धीरेसे दरवाजा खोला, और वह अपना सोनेका डंडा उठाकर महलसे बाहर आ गया। द्वारपाल

हैरान रह गये, मगर फरऊनके पास उनकी हैरानी देखनेके लिए समय न था। वह जल्दीसे आगे बढ़ा। चारो तरफ सन्नाटा था, कही कोई आवाज सुनाई न देती थी। यह आराम और नीदका वह समय था, जब नदियोकी लहरें भी ऊँघ जाती है और जमीनकी सड़कें भी सो जाती है। सिर्फ ऊँचा आसमान जागता है और पहरा देता है। फरऊनने बन्दी-घरकी मशाले देखी और सन्तोषकी साँस ली। यहाँ उसके दिलका चैन और आँखोकी नीद चुरानेवाली लड़की बन्द थी।

ऐसे आराम और विश्रामके समय फरऊनको, इस हालमे कि वह पागल-सा मालूम होता था, बन्दी-घरके दरवाजेपर देखकर पहरेदारोके प्राण सूख गये और वे भयसे जमीनपर गिर पड़े। फरऊनने उनमेंसे एकको उठाया और धीरेसे कहा—आज रात यहाँ जो गुलाम लड़की आयी है, हमे उसकी कोठड़ीमे पहुँचा दे।

पहरेदारने फरऊनको उस कोठरीमे पहुँचा दिया जहाँ त्यूनस बन्द थी। मशाल जलाकर एक कोनेमे रख दी, आप बाहर निकल गया और अपने पीछे दरवाजा बन्द करता गया। थोड़ी देर बाद बन्दी-घरके सारे नौकर जाग रहे थे, भयसे थर-थर काँप रहे थे और भगवान्से प्रार्थनाएँ कर रहे थे पर किसीकी जबानसे आवाज न निकलती थी।

फरऊनने कुछ घण्टोके बाद, जो उसके लिए कई सदियोसे भी बडे थे, त्यूनसको अपने सामने देखा तो उसके मनका चैन लौट आया। त्यूनस जमीनके कच्चे फर्शपर बेसुध पड़ी सो रही थी। उसके सिरके बाल बिखर गये थे और मुँह खुल जानेके कारण सफेद दाँत गहरे समुद्रके सच्चे मोतियोकी तरह चमक रहे थे। उसे सुध न थी कि उसकी देह नगी हो रही है, और उसके जोबनको दो लोभी आँखें देख रही हैं। उसे यह भी सुध न थी कि उसकी जुल्फे उसके मुँहपर फैल गयी हैं और इससे उसकी शोभा दुगनी-तिगुनी हो गयी है।

फरऊनने इससे पहले जब उसको रातके पहले पहरमें देखा था तो वह मनमोहिनी जरूर थी, पर सोई हुई न थी। लेकिन उसे क्या मालूम

था कि रूप जब सो जाता है, तो और भी नशीला हो जाता है, और जुल्फे जब बिखर जाती है तो और भी जहरीली हो जाती है। इसके सिवाय उसे यह भी मालूम न था कि स्त्रीको रातके पहले पहर और पिछले पहरमे देखनेमे बहुत अन्तर है। रात ज्यों-ज्यो गुजराती जाती है, और दुनिया ज्यों-ज्यों सोती जाती है, नारीका यौवन और यौवनका चमत्कार जागता जाता है।

फरऊन कुछ देर हैरान-परेशान खड़ा परी चेहरा त्यूनसको देखता रहा, इसके बाद कमरेमे टहलने लगा। फिर उस कुरसीको, जो पहरेदारने उसके लिए वहाँ लाकर रख दी थी, घसीटकर त्यूनसके निकट खींच लाया और उसपर बैठ गया। उसने त्यूनसकी फूल-देहको उठाकर अपने पाँवपर रख लिया और समझा कि मैने त्यूनसपर बड़ी मेहरबानी की है।

त्यूनसकी आँखे खुल गयी और सबसे पहली चीज जो उसने देखी, वह फरऊनकी आँखे थी। पहले तो वह समझ ही न सकी कि वह कहाँ है, और फरऊन उसके पास कैसे पहुँच गया है। मगर जब उसपरसे नीदका नशा उतर गया तो उसे साँझकी सारी बाते याद आ गयी, और उसकी नारी-बुद्धि सब कुछ समझ गयी। अब त्यूनस डर रही थी, घबरा रही थी, काँप रही थी, और न जानती थी कि क्या होनेवाला है।

यह देखकर फरऊनने त्यूनसके कंधेपर अपने हाथसे हलकी-सी थपकी दी और धीरेसे कहा, चिन्ता न कर—तू फरऊनकी मलिका महारानी बनेगी। फरऊनने तुझे पसन्द किया है।

त्यूनसने वह सुना जो सुननेके लिए मिस्रकी हजारो सुन्दरियाँ तड़प रही थी। मगर इससे उसे खुशी न हुई, उलटा भय और भी बढ़ गया। वह काँपती हुई खडी हो गयी और फिर जमीनपर गिरकर बोली—ऐ मिस्रके जमीन-आसमानके बादशाह, मुझपर कृपा कर। मै इस पदवीके योग्य नही, न मुझमे तेरे प्रेम-दानका बोझा उठानेकी ताकत है। तू बादशाह है, तेरा नाम सुनकर दुनियाके दूसरे बादशाह अपने महलोंमे काँपने लगते है, और मै एक गुलाम लड़की हूँ, जो यह भी नही जानती

कि बादशाहोंके सामने किस तरह बात की जाती है। मैं अपनी कमजोरियाँ जानती हूँ। तेरा दिल मुझसे खुश न होगा। तेरे साथ ब्याह करके परिस्तान-की परियाँ भी अपनी किस्मतपर फूली न समायेगी। मगर मै—ऐ मेरे बादशाह, मेरे माँ-बाप तुझपर कुर्बान हो, मुझपर कृपा कर, मैं इस राज-सम्मानके योग्य नही। तू बहुत बड़ा है—मै बहुत छोटी हूँ।

फरऊनने त्यूनसका जनाना हाथ अपने हाथमे पकड़ लिया और त्यूनसके इस हाथपर अपना दूसरा मर्दाना हाथ फेरते हुए जवाब दिया—मै फरऊन हूँ। मुझसे लोग काँपते है। जब मै अपनी शक्ति और शोभा लेकर सीधा खडा होता हूँ तो दुनिया मेरे सामने जमीनपर झुक जाती है। लोग मन्दिरके देवताओंकी तरफ देख सकते है, मगर मेरी तरफ आँख उठाकर देखनेके लिए उनके पास साहस नही। आज तक मैंने किसी चीजके लिए इच्छा नही की, मेरी हरएक जरूरत अपने आप पूरी हो जाती रही है। मगर कल रात जब मैने तुझे देखा, उस समय मुझे पहली बार मालूम हुआ कि जब आदमीका मन किसी चीजके लिए अधीर होता है, तो क्या होता है। मुझे रात-भर नीद नही आयी। रात-भर तेरी शक्ल-सूरत मेरी आँखोमे फिरती रही। मै रात-भर सोचता रहा हूँ कि इस समय तक मैं तेरे बिना कैसे जीता रहा। आसमानके देवता जानते हैं कि तू मेरे शरीर, मेरे प्राण, मेरे जीवनका एक भाग है। मेरे महलकी चलने, फिरने, बोलनेवाली तसवीरे जो अपने आपको स्त्रियाँ कहती हैं, जब मेरे निकट आती हैं, या दूसरे शब्दोंमे जब मैं उन्हे अपने निकट आनेकी आज्ञा देता हूँ, तो मुझपर उतना भी असर नही होता जितना पत्थरकी इस दीवारपर। मगर तुझे, हाँ, ऐ गुलाम जातिकी सुन्दरी, तुझे देखकर मुझे यह मालूम हुआ कि मै भी मर्द हूँ और मेरे शरीरमे भी एक दिल है और उस दिलमे किसीके लिए जगह है जो तूने पूरी कर दी है। दुनिया मुझे देवता समझती है और पूजती है। कल तक मेरी अपनी भी यही राय थी कि दुनियाके मर जानेवाले लोगोमे और मुझमे बहुत फर्क है। मैंने कई देशोपर हमले किये हैं और वहाँकी खूबसूरतसे खूबसूरत स्त्रियाँ चुन-चुनकर लाया हूँ।

मगर चार ही दिनोंमे मेरा दिल उन खिलौनोसे भर गया और फिर मेरी ऑखोने उनमे कोई मोहिनी नही देखी। मै प्रेमका नाम सुनता था, और हॅसता था। और समझ न सकता था कि लोग इस जालमे फॅसकर क्यो बावले हो जाते है। मगर तुझको देखकर मेरे दिलमे प्रेम जगा है और उस प्रेममें तू बैठ गयी है, और अब मुझे पता लगा है कि मै भी इस दुनियाका जीव हूँ, और मेरे सीनेमे भी एक साधारण दिल है, जो तड़पता भी है, अधीर भी होता है। इसलिए खुश हो कि तूने एक बेदिलके आदमीकी ऑखे खोल दी हैं, और उसे अपनी मरजीके सामने कमजोर कर दिया है। त्यूनस, मैं दुनियाके लिए शक्ति हूँ, बादशाह हूँ, देवता हूँ, मगर तेरे लिए प्रेम-पुजारीके सिवाय और कुछ भी नही हूँ। उठ, मेरे महलमे चल, मुझ-पर राज कर, मुझे अपनी मरजीका गुलाम बना—आज तक मै शक्ति और शोभामे जीता था, अब मै प्यार और पूजामे जीना चाहता हूँ।

फरऊन, जिसने आजसे पहले कभी किसीसे इतनी लम्बी बात-चीत न की थी, इस समय साधारण आदमियोकी तरह बोला और उसके मनकी दशा उसकी ऑखोसे प्रकट हुई।

त्यूनस स्त्री थी, और हर स्त्री अपने रूपकी विजयपर खुश होती कि उसने अपने जमानेके सबसे बड़े बादशाहको अपने पॉवमे झुका दिया है मगर वह इससे पहले प्यार कर चुकी थी और प्यारकी बाजीमे अपना मन और मनकी मरजी हार चुकी थी। इसलिए नारी-जगतकी इस अनुपम जीतपर उसे जरा भी खुशी न हुई, और उसने बन्दी-घरके खुरदरे फर्शपर घुटने टेककर कहा—ऐ मिस्रके सबसे बड़े बादशाह, तुझे दुनियाकी अच्छीसे अच्छी लड़कियॉ मिल सकती है, फिर तू मेरी तरफ अपना हाथ क्यों बढाता है? मुझमें तो कोई भी ऐसी चीज नहीं। लोग तेरे चुनावपर क्या कहेगे?

फरऊनने धीरेसे मगर दृढ़ स्वरमें जवाब दिया—फरऊन जो कुछ करता है, वह दुनियाके लिए आदर्श बन जाता है।

त्यूनस—ऐ बादशाह ! फिर सोच, तू एक गुलाम लड़कीके लिए इतना कुछ क्यो कर रहा है ?

फरऊन—उस गुलाम लड़कीको मिस्रकी मलिका महारानी बना देगा।

त्यूनस—और अगर उसके दिलमे फरऊनके लिए प्यार न हो तो—

फरऊन—फरऊनका प्यार उसे सब कुछ सिखा लेगा।

त्यूनसने जरा साहससे कहा—और अगर उस अभागिनीको किसी दूसरेसे प्यार हो तो—

फरऊनने इस जवाबको अपनी बेइजती समझा। देखते-देखते उसके मुँहका रँग बदल गया। वह कुरसीसे उठकर खड़ा हो गया, और अपना पॉव जमीनपर पटककर बोला—फरऊन उस आदमीको मिस्रके सबसे बड़े पत्थर-तले दबाकर मार डालेगा।

त्यूनस अवाक् रह गयी। उसने फरऊनके, हॉ उसी फरऊनके जिससे उसका मन घृणा करता था, पॉव पकड़ लिये, और अपनी ऑसुओंसे भरी हुई ऑखोसे उसकी तरफ देखते हुए कहा—दया कर, ऐ ससारके सबसे बड़े बादशाह ! दया कर। तू देवता है, तेरा दिल स्वर्गके जल-वायुसे बना है। तेरा काम दुनियाके बेटोपर दया करना है। तुझे ऐसा कठोर नही होना चाहिये, तू ऐसा कठोर नही हो सकता, तू ऐसा कठोर नहीं होगा। मै तेरी दयाका द्वार खटखाती हूँ। फरऊन फिर कुरसीपर बैठ गया और जरा नरमीसे बोला—अगर तू कठोर नही होगी, तो फरऊन भी कठोर नही होगा।

त्यूनसने धड़कते हुए दिलको सँभालनेका यत्न करते हुए कहा—मै स्त्री हूँ। और स्त्री सब कुछ कर सकती है, मगर अपनी इच्छाके विरुद्ध प्रेम नही कर सकती।

फरऊनने तड़से जवाब दिया—फरऊनकी मरजी यह भी करवा सकती है, और करवाकर रहेगी। अगर तू अन्तिम समय भी उस मिस्री युवककी

जान बचाना चाहे, तो पहरेदारसे कह देना। मुझे मालूम हो जायगा, और उसकी जान बच जायगी।

यह कहकर फरऊनने अपना भारी डडा उठाया और चुपचाप बाहर निकल गया।

त्यूनस फरऊनकी धमकीका मतलब समझना चाहती थी, मगर समझती न थी। हाँ, इतना जानती थी, और हर स्त्री जान सकती है कि फरऊन जो पहले ही आग है अब क्रोधसे शोला बनकर भड़क उठेगा और रेमफसको कड़ेसे कड़ा दण्ड देकर मारनेका हुक्म देगा। इस ख्यालसे उसका दिल हिल गया और वह रेमफसके लिए प्यारके आँसू बहाने लगी।

जब दिन चढा और आकाशमे सूरज निकल आया, तो साथके कमरेमे आदमियोके चलने फिरनेकी आवाज सुनाई देने लगी और यह आवाज दमबदम बढ़ती गयी। त्यूनसके कमरे और इस कमरेके बीचमें एक खिड़की थी और इस खिड़ेकीमे लोहेकी सलाखें लगी थी। त्यूनसने यह देखनेके लिए कि और कौन अभागा फरऊनके बन्दी-घरमे आया है, उसने खिड़की खोली और उस कमरेमे झाँककर देखा। और उसने जो कुछ देखा वह इतना भयानक था कि उसे अपनी रगोंमे लहूकी गति रुकती हुई, अपने कन्धे टूटते हुए और दिल डूबता हुआ मालूम हुआ।

रेमफस जमीनपर एक खुरदरे पत्थरके साथ जंजीरोसे बँधा हुआ था और उसके ऊपर छतके साथ हजारो मन भारी एक पत्थर जो उस कमरेसे जरा कम लम्बा-चौड़ा था, मोटी-मोटी जंजीरोंके सहारे लटक रहा था। वह जंजीरे एक बहुत बड़ी फिरकीके ऊपरसे गुजरकर एक पहियेपर लिपटी हुई थी जिसे खोलने और लपेटनेके लिए फरऊनके कैदी बैलोंकी जगह काम करते थे। त्यूनसने देखा रेमफसका मुँह पीला है और उसकी आँखोमे जीवनकी चमक धीरे-धीरे मर रही है। कानोसे सुनने और आँखोसे देखनेमें बहुत बड़ा फर्क है। अगर त्यूनससे कहा जाता कि तुम्हारे रेमफसकी इस तरह हत्या की जायगी तो शायद वह इतनी

भयभीत न होती और अपनी सर्वोत्तम वस्तु नारी-प्रेमकी बलि चढ़ानेके लिए तैयार न होती। और सचमुच, जब उसने यह बात खुद फरऊनकी जबानसे सुनी थी तो उसके मनपर इतना असर न हुआ था। मगर उसी धमकीको कार्यरूपमे पूरा होते देखना उसकी शक्तिसे बाहर था। वह सिसक-सिसककर रोने लगी और उसके ऑसू उसके गालोपर बहने लगे।

विवेक कहता है कि फरऊनका फरमान होगा कि दण्ड उस समय तक शुरू न किया जाय जब तक त्यूनस खिड़कीमे आकर देखने न लग जाय। क्योकि ज्यो ही वह खिड़कीमे आकर खड़ी हुई और जेलके दारोगाने उसे देखा, उन आदमियोकी पीठपर कोड़े बरसने लगे जो उस हत्यारी कलका खूनी पहिया घुमानेके लिए बैलोकी जगह जोते गये थे। वह चलने लगे। कल घूमने लगी। मौत आसमानसे जमीनपर उतरने लगी।

त्यूनस खिड़कीमे घायल पक्षीके समान तड़पने लगी। वह सब कुछ देख रही थी; वह सब कुछ समझ रही थी; यह सब कुछ उसकी ऑखोके सामने हो रहा था। कैदियोने कोड़े खाकर शरीरके सारे बलसे पहियेको घुमाना शुरू किया और उसके साथ ही वह पहाड़—मौतसे भी भयानक, हर वस्तुको पीसकर सुरमा बना देनेवाला पत्थर धीरे-धीरे नीचे उतरने लगा। त्यूनसको ऐसा दिखायी दिया जैसे यह बेजान पत्थर नहीं जीता-जागता अजगर है, जो मुँह खोले रेमफसकी तरफ बढ़ रहा है और थोड़ी देरमें···।

त्यूनस इससे आगे न सोच सकी, और सहमकर पीछे हट गयी। इस समय उसकी ऑखोंमे पानी न था। वह दुःखकी उस सीमापर पहुँच चुकी थी, जहाँ ऑखोके ऑसू सूख जाते हैं। उसका हृदय कॉप रहा था, सिर चक्कर खा रहा था, जीभ तालूसे चिमट रही थी, और चारों तरफ अँधेरा छा रहा था।

धीरे-धीरे वह फिर खिड़कीके पास गयी, और उसने वह दृश्य फिर

दूसरी बार देखा जिसे वह एक बार भी न देखना चाहती थी। अब वह हत्यारा पहाड़ छत और जमीनके अधबीचमे पहुँच चुका था। त्यूनसकी सारी देह कॉप उठी। क्या यह हो जायेगा? क्या यह पत्थर रेमफसके जीवनका अन्त कर देगा? नही, त्यूनसने कहा, नहीं। मैं उसे न मरने दूँगी, मै उसे बचा लूँगी।—फरऊन मेरे मुँहसे प्यारका एक शब्द सुननेको अधीर हो रहा है। मैं उसे आज्ञा दूँगी, और वह सिर झुकाकर उसका पालन करेगा—एकाएक दूसरा विचार आया।—इसका मतलब क्या होगा? वह बच जायेगा, मगर मेरे और उसके बीचमे एक समुद्र आ खड़ा होगा। एक किनारे मै, एक किनारे वह। दोनो जियेगे, दोनों तड़पेगे। मर-मरकर जीना भी कोई जीना है? इससे तो अच्छा है कि प्रेमके मार्गमे दोनों मर जायें, और दोनों अमर हो जायें। निराशाके जीवनसे तो प्रेमकी मौत ही भली।

एक बार फिर उसने दूसरे कमरेमे झॉककर देखा और उसे हजारो-लाखो बिच्छुओंने एक साथ काट खाया। पत्थर रेमफससे केवल एक-आध इंच ऊँचा रह गया था, दो-चार क्षण और—और फिर रेमफसका जीवन सदा-सदाके लिए समाप्त हो जायेगा। एकाएक त्यूनसने एक चीख मारी और खिडकीसे हटकर दरवाजेकी तरफ दौड़ी। दरवाजा बाहरसे बन्द था। त्यूनसने अपने दोनों हाथ उसपर मारे। दरवाजा खुल गया और पहरेदारने अपनी सगीनका सिरा जमीनपर रखकर सिर झुका दिया।

दौड़ो?—त्यूनसने चिल्लाकर कहा—और अपने बादशाहसे कहो, मैंने उसकी शर्त स्वीकार कर ली है।

आखिर वह स्त्री थी, अबला थी, और उसके मनमे रेमफसका प्यार था।

और वहॉसे हटकर जब वह खिड़कीमे आयी तो उसे यह देखकर कितनी खुशी हुई कि हत्यारी मशीनके पापी पहिये उलटे चल रहे है, और जो पत्थर पहले धीरे-धीरे नीचे जा रहा था, वह अब ऊपर आ रहा है।

रेमफस आश्चर्यसे इधर-उधर देख रहा था, और कैदखानेके आदमी उसकी जजीरे खोल रहे थे। रेमफस सोचता था, यह फरऊनको मुझपर रहम कैसे आ गया? यह तो रहम करना जानता ही न था।

त्यूनसके मनको सन्तोष हुआ और वह पीछे मुड़ी। इतनेमे दरवाजा खुला और फरऊन मुस्कुराता हुआ कमरेमे आया। त्यूनसने पूछा—वह बच गया?

फरऊनने उसकी तरफ लोभपूर्ण ऑखोसे देखा और धीरेसे जवाब दिया—हॉ वह बच गया। अब उसे केवल पॉच सालके लिए पत्थर काटनेका काम करना पड़ेगा।

६

दूसरे दिन ब्याह हो गया।

और जब फरऊन त्यूनसको शाही लिबासमे अपने महलकी बड़ी दीवारपर ले गया और लोगोने देखा कि उनकी महारानी कितनी रूपवती है, और उसकी शक्ल-सूरतमे कितना लावण्य है तो उनके आश्चर्य और आनन्दकी सीमा न रही—वह भूमिपर गिरे हुए थे और फरऊनके चुनाव-की प्रशसा कर रहे थे और अपने-अपने मनमे यह सोचकर खुश हो रहे थे कि उनकी मलिका त्यूनस जैसी सुन्दरी सारे देशमे न होगी। और त्यूनस भी आज कलकी त्यूनस मालूम न होती थी। कल वह गुलाम लड़की थी, आज मिस्रकी रानी थी। कल कुँवारी थी, आज दुलहिन थी। कल वह फटे-पुराने चीथड़े पहिने थी, आज एक साम्राज्यके सर्वोत्तम और अनमोल हीरे-मोती उसकी देहपर निछावर हो रहे थे। आजकी इस त्यूनस और कलकी उस त्यूनसमे जमीन-आसमानका फर्क था। आज उसे उसकी मॉ देखती तो वह भी न पहचान सकती। आज वह मिस्रकी सबसे

सौभाग्यवती सुन्दरी थी। आज उसे फरऊनने अपनी जीवन-संगिनी चुना था, आज वह दुनियाकी आँखोका तारा बनी हुई थी।

मगर क्या वह खुश थी?

नही, उसे राज्यकी इस शान-शोभा और ऐश-ऐश्वर्यके सिंहासनपर बैठकर भी अपना गरीब रेमफस याद आता था, जो किसी अजानी जगहमे पत्थर काट रहा था और जिसका दोष केवल यह था कि उसने उससे प्यार किया था। त्यूनस उसे याद करती थी, उसकी यादमे दिन-रात ठण्ढी आहे भरती थी और उसका ठण्ढी आहे भरना कभी समाप्त न होता था। फरऊन यह सब कुछ देखता था, और उसे पाषाण-हृदय मूर्ति समझकर उसके निकट न जाता था। वह उस शुभ घडीकी राह देख रहा था, जब रेमफसकी याद त्यूनसके मनसे धुएँकी तरह गायब हो जायेगी और वह उसकी शाही मेहरबानियाँ देखकर अपनी प्यारकी भुजाएँ उसके लिए फैला देगी। वह बादशाह था और अपनी बादशाहीमे किसी दूसरेका हिस्सा उसे मंजूर न था, चाहे बादशाही प्रेमकी बादशाही हो और चाहे वह हिस्सा केवल ख्यालका ही हिस्सा हो।

त्यूनसके त्रिया-हठके देखकर फरऊन यह तो समझ गया था कि उसे त्यूनसके प्यारकी बहुत दिनो प्रतीक्षा करनी होगी, मगर वह यह न समझता था कि उसका अपना अधीर हृदय इतनी लम्बी प्रतीक्षा कैसे कर सकेगा। मगर भगवानको उसकी बेबसी पर दया आयी और ब्याहके बाद अभी एक सप्ताह भी न गुजरने पाया था कि हब्शी सुलतान शमलार्कने अपनी बेटीके अपमानका बदला लेनेके लिए मिस्रपर धावा बोल दिया।

फरऊन आराम-पसन्द था, निर्दय था, स्वार्थी था। उसने अपना कोष भरनेके लिए हजारो-लाखों गरीबोंके जीवन मिटा दिये थे। मगर वह कायर न था। इसलिए जब उसने सुना कि सुलतान शमलार्कने उसपर चढ़ाई कर दी है, तो उसने जरा भी परवाह न की और सेनाको तैयार होनेकी आज्ञा दी और आप लड़ने-मरनेको तैयार हो गया।

रातका समय था। फरऊनने लोह-कवच पहना और त्यूनससे विदा माँगनेके लिए उसके मोर-महलमे गया।

त्यूनस समझ गयी कि फरऊन युद्धमे जा रहा है। फरऊनने उसके पास जाकर कहा—त्यूनस, शमलार्कने मिस्रपर चढाई की है।

त्यूनसने रुक-रुक कर पूछा—क्यो?

और वह जानती थी कि फरऊन क्या जवाब देगा। मगर फरऊनने वह जवाब न दिया, और कहा—यह मै नही जानता।

त्यूनसने धीरेसे कहा—मगर मै जानती हूँ।

फरऊन पहले चौका, फिर सँभल गया, फिर मुस्कुराकर बोला—तुम क्या जानती हो?

त्यूनस—वह मुझे माँगता है। अगर मुझे उसके हवाले कर दिया जाय, तो उसका गुस्सा बुझ जाये।

फरऊन—मगर तुम्हारे लहूसे।

त्यूनस—मिस्रके हजारों बेटे बच जायेगे। आप मेरा ख्याल न करे। देशके सामने मै कोई चीज नहीं। अगर मेरी मौतसे युद्ध रुक सके, तो मै ऐसी मौतका सिर-आँखोसे स्वागत करनेको तैयार हूँ।—आखिर मैं एक गुलाम लड़की हूँ।

यह कहते-कहते त्यूनसकी बड़ी-बड़ी आँखोमे आँसू लहराने लगे। यह आँसू न थे, त्यूनसकी अभिलाषाओकी पिघली हुई आग थी जिसे फरऊनने भी समझ लिया। उसने त्यूनसके कंधेपर अपना प्रेम-पूर्ण हाथ रखा और भावुकताके भार-तले काँपती हुई आवाज मे कहा—त्यूनस, तू फरऊनकी मलिका महारानी है। तू गुलाम लड़की नही है। और तेरी इज्जत मेरे वतनकी इज्जत है, तेरी इज्जत मेरे शाही दबदबेकी इज्जत है।

और यह कहकर उसने वह कपडा, जो त्यूनसके कंधोसे नीचे गिर गया था, उठाकर उसके कधोंपर ठीक तरह रखा और उसके मनोहर मुखड़ेको, जिसे राजसी ठाठने और भी मनोहर बना दिया था, लोभकी आँखोसे देखने लगा। इसके बाद उसने फिर त्यूनसके कंधेपर हाथ धरा,

और बोला—त्यूनस, तू मेरी बीबी है, मैंने तुझसे ब्याह किया है, तू मेरी मलिका है, मैने तेरे सिरपर ताज रखा है। तुझे मुझसे प्यार हो या न हो, मगर दुनिया और देवताओंकी ऑखोमे तू मेरी स्त्री है, मै तेरा पति हूँ, और तेरे मनकी गहराइयोका प्यार मेरी चीज है, जिससे तू मुझे परे नही रख सकती। मगर मै तुझे चाहता हूँ, और मेरा मन नही मानता कि तेरी ऑखमे दुःखके ऑसू देखूँ। इसलिए मै इंतजार कर रहा था कि तू मुझसे प्यार करना सीख लेगी, और मेरा प्यार तेरे मनमे मेरी जगह बना देगा। लेकिन आसमानके देवताओंकी क्या मरजी है, यह उनके सिवाय और कोई नही जानता। मै युद्धभूमिमे जा रहा हूँ, और नही कह सकता कि वहॉसे जीता लौटूँगा या वही मर जाऊँगा। इसलिए मै युद्ध-भूमिको जानेसे पहले तेरे मुँहसे केवल एक बात सुनना चाहता हूँ।

त्यूनसने फरऊनकी इस लम्बी बात-चीतका जवाब केवल एक शब्दमे दिया—क्या ?

फतऊन हताश नही हुआ, बोला—मुझसे कह, तुझे मुझसे प्यार है। ये शब्द युद्ध-भूमिमे मेरी भुजाओंका बल और मेरे मनकी शक्ति बन जायँगे। मै हिम्मतसे लडूँगा। मै दुश्मनको हरा दूँगा। मेरे सामने आनेका किसीको साहस न होगा।

त्यूनसने मुँहसे कोई जवाब न दिया। न वह जवाब दे सकती थी, न जवाब देना चाहती थी। वह चाहती थी, किसी तरह समय टल जाय, और वह इस संकटसे बच जाय। वह सोचती थी, फरऊनने ब्याहके बाद उससे कोई बात ऐसी न की थी जिसकी त्यूनस शिकायत कर सकती। ऐसे प्यार और सम्मानसे दुनियाका कोई पति अपनी स्त्रीसे कम पेश आया होगा। त्यूनस उसका दिल न दुखाना चाहती थी। वह चाहती थी, वह जो कुछ इसके लिए कर सकती है, करे। मगर वह कितनी बेबस थी! उसकी धारणा थी कि फरऊनसे प्यारकी एक बात करने का अर्थ रेमफसके साथ दगा करना है, और यह वह बात थी जो त्यूनस तीन लोक और

तीन कालमे करनेको तैयार न थी। त्यूनसने मुँहसे कोई जवाब न दिया, मगर उसके मुँहके रगने और सजल ऑखोने सब कुछ कह दिया। अभागे फरऊनके आत्म-सम्मानको इससे इतना धक्का लगा, और उसकी आशाओं-पर ऐसा कुठाराघात हुआ कि उसका मुँह उतर गया और वह अपनी भीगी हुई पलके पोंछने लगा। अगर इस समय कोई चित्रकार फरऊनके दिलको देख सकता तो उसे दुर्भाग्यकी ऐसी तस्वीर मिलती जो ससारके किसी चित्रकारको आज तक न मिली होगी।

त्यूनस चाहती थी, फरऊन उसपर क्रोध करे, उसे सजा दे, उसे अपनी हैवानी ताकत दिखाये। मगर फरऊनने उससे एक शब्द भी न कहा और मिस्रके नियमानुसार वह त्यूनसका हाथ चूमकर चुपचाप बाहर चला गया। फरऊनके इस शील और विनयको देखकर, जो उसकी देव-पदवी और पशु-प्रकृति दोनोके विरुद्ध था, त्यूनसका दिल टुकडे-टुकडे हो गया और वह पलंगपर लेटकर रोने लगी।

उन दिनोके मिस्रका रिवाज था कि बादशाह युद्ध-क्षेत्रमे जानेसे पहले आग, लोहे और प्रारब्धके देवताओको पूजता था, और इसके बाद अपनी मलिकाकी मुँह-मॉगी इच्छा पूरी करता था। इसलिए जब आधी रात गुजर गयी और फरऊन पूजा कर चुका तो त्यूनसके मोर-महलमे आया और बोला—मुझसे अपनी कोई इच्छा बयान कर, ताकि मैं उसे मिस्रके रिवाजके मुताबिक पूरा करूँ, और युद्धमे जाऊँ।

त्यूनसने अपनी फूल-देह फरऊनके पॉवमे फेक दी और सिसकियॉ भर-भर कर रोने लगी। काश उसे रेमफसके साथ प्यार न होता, या फरऊन उसके साथ ऐसा सद्व्यवहार न करता!

फरऊनने त्यूनसको अपने पॉवसे उठाकर अपने साथ चौकीपर बिठा लिया, और प्यार-भरे शब्दोमे कहा—कोई इच्छा?

त्यूनसने सिर ऊपर उठाये बिना जवाब दिया—कोई नही।

फरऊन—फिर भी कुछ तो कहो, कुछ तो बोलो। कुछ मॅगवा दूँ,

कुछ बनवा दूँ ? तुझे अपनी कोई माँग मुझसे बयान करनी होगी और मुझे उसको पूरा करना होगा।

त्यूनस—मेरे मनमे इस समय कोई माँग नही है।

फरऊन—कोई इच्छा ?

त्यूनस—कोई नही।

फरऊन—त्यूनस, कुछ माँग, कुछ कह।

त्यूनस—(सजल आँखोंसे फरऊनकी तरफ देखकर) क्या माँगूँ ? क्या बोलूँ ? आपने मेरे लिए सब कुछ कर रखा है।

फरऊन—(आग्रहसे) क्या ऐसी कोई बात नही जिसे मै पूरा कर सकूँ ? और जिसे तेरा दिल चाहता हो ?

त्यूनसने सोचा, कहूँ या न कहूँ ?

फरऊन—क्या सोच रही है ?

त्यूनसके मनमे आया, अब कह ही दूँ।

फरऊन—कह त्यूनस !

त्यूनसके मनमें आया, न कहूँ।

फरऊन अपनी जगहसे उठकर खड़ा हो गया और इधर-उधर टहलते हुए बोला—आज युद्ध-यात्राकी रात है। मैं बादशाह हूँ, तू मलिका है। आज तुझे मुझसे कुछ माँगना होगा, यह तेरा अधिकार है। आज मुझे तेरी इच्छाको पूरा करना होगा, यह मेरा धर्म है। तू जो कुछ कहेगी, वह हो जायगा। तू जो कुछ माँगेगी, वह तुझे मिल जायगा। अब कह, क्या तेरी कोई इच्छा नही है ?

त्यूनसको आशा सामने दिखायी दी।

फरऊन—कोई इच्छा जिसे बादशाह और शौहर पूरा कर सके।

त्यूनसको आशाके साथ निराशा भी दिखायी दी।

फरऊन टहलते-टहलते रुक गया।

त्यूनसने धीरेसे कहा—मेरी एक इच्छा है, मगर मुझे खतरा है, कि—

फरऊन—वह मैं पूरी न कर सकूँगा, क्या तेरा यह ख्याल है ?

त्यूनस—मेरा मतलब था, मैं कहना नहीं चाहती।

फरऊनने उसकी तरफ मुस्करा कर देखा, और कहा—मेरी भोली रानी, तूने सब कुछ कह दिया है! और जो कुछ तूने कहा है, उसे मै हँसते हुए करूँगा।

यह कहकर फरऊनने उसी समय और उसी जगह चमडेका एक टुकडा मँगवाया और उसपर कुछ लिखकर, और उसपर शाही मुहर लगवाकर त्यूनससे कहा—खुश हो, कि मैने तेरे मनकी बात पूरी कर दी है!

और त्यूनस खुश हो रही थी, और उसकी खुशी, उसके चेहरेसे, उसकी ऑखोसे, उसकी भाव-भगीसे प्रकट हो रही थी।

फरऊनने पहरेदारको बुलाया और उसे वह चमड़ेका टुकडा देकर कहा—यह शाही फरमान है, इसे इसी समय पत्थरोंके दारोगाके पास भेज दे।

पहरेदारने चमडेका टुकड़ा लिया और बादशाहको सलाम करके बाहर चला गया।

फरऊनने कमरेमे चारो तरफ देखा और धीरेसे कहा—रेमफस एक घंटेके अन्दर-अन्दर छूट जायगा।

इस समय उसके शब्दोमे जरा भी क्रोध, जरा भी कहर न था। और त्यूनस सिर झुकाये, ऑखे जमीनपर गाड़े सोच रही थी, क्या यह वही फरऊन है जिसके क्रोध और क्रूरताकी कहानियाँ सुनकर लोग अपने बन्द घरोके अन्दर कॉप उठते है? इस समय वह कितना सहृदय, कितना सरल, कितना साधु है! त्यूनसकी ऑखोमे पानी छलकने लगा।

फरऊन बाहर निकला।

रातका समय था। एक पहरेदार दीवारके साथ पीठ लगाये खड़ा था। शायद वह कुछ सोच रहा था, शायद वह थक गया था, शायद वह जरा ऊँघ गया था। फरऊनने उसे इस हालमे देखा तो उसका पशु-

स्वभाव जाग उठा। शराबीने शराब छोड़ दी थी, शराबखानेके सामने पहुँचकर फिर ललचा उठा। अब उसे शराब पीनेमे कितनी देर लग सकती थी, और ऐसी अवस्थामे जब कि कोई रोकनेवाला निकट न था। फरऊनने अपना सोनेका डडा उठाया, और यह सोचे बिना कि इसका परिणाम क्या होगा पहरेदारके सिरपर पूरे जोरसे दे मारा। पहरेदारकी नीद जरा देरके लिए खुली और जमीनपर तड़पकर मौतके गले मिल गयी। अब वह फिर वही फरऊन था; वही आग-भरा स्वभाव, वही पत्थर और लोहेका दिल, वही हिसा-प्रिय वृत्ति। त्यूनसका महल प्यारकी नगरी थी जहाँ जाकर उसकी प्रकृति बदल जाती थी और उसकी प्रकृति सदाके लिए बदल जाती अगर त्यूनस उसके प्यारका जवाब प्यारसे देती। मगर चूँकि ऐसा न होता था, इसलिए वह इसका बदला बाहर आकर अपनी प्रजासे लेता था और प्रेमकी आगको पापकी ज्वालासे बुझाना चाहता था।

७

बेकली और बेबसीकी यह बदनसीब रात फरऊनने अपने महलके ऑगनमे टहल-टहल कर काटी। इस समय उसका चेहरा ऐसा उदास और ऑखे ऐसी निराश थी, मानो उसपर ससारका सबसे बड़ा सकट टूट पड़ा हो। इस दयनीय दशामे उसे जो देखता, वही उसपर दया करता। मगर इस समय उसे देखनेवाला सिवाय आकाशके तारोके और कोई भी न था। और तारे भी ऊँघ गये थे।

जब दिन चढा, तो फरऊनकी ऑखोमे रत-जगेकी लालिमा और थकानकी अँगड़ाइयॉ थी, मगर उसने अपने जीवनकी इस हारको किसीपर प्रकट न होने दिया। और जब उसकी सतरगी सेना सुल्तान शमलार्ककी सेनासे लड़नेको चली तो उसने अपने सिपाहियोसे वीरताके ऐसे उत्साह-

जनक शब्द कहे कि किसीको सन्देहतक न हो सका कि उसके मनमे कोई चिन्ता भी है। कबूतरको जब शिकारीका तीर लग जाता है और घावसे लहू बहने लगता है तो वह अपने परोको सॅवार लेता है, और घातकके घावको छिपा लेता है। मगर क्या इससे लहू बहना भी बन्द हो जाता है? क्या इससे घावकी टीस भी कम हो जाती है?

आखिर फरऊनके जानेका समय आया और उसने निराशाकी ऑखोसे उस महलकी तरफ देखा जहॉ उसके मनकी मलिका थी, जगतकी जोत थी, रूहकी रोशनी थी। इसके बाद उसने एक ठण्ढी आह भरी और उचककर अपने जगी रथपर सवार हो गया।

घोडोकी पीठपर ताबडतोड़ कोड़े बरसे और घोडे अपने पॉवोकी सारी शक्तिसे दौडे। रथके पहिये सड़कके पत्थरोसे टकरा रहे थे और उनकी आवाजसे दूर दूरतक लोगोंको मालूम हो रहा था कि फरऊन अमनस दुश्मनसे लड़ने जा रहा है।

मगर आठ दिन बीत गये और युद्धका कोई फैसला न हुआ। दोनो तरफके आदमी सारा दिन लड़ते थे और सॉझको जो बचते थे अपने-अपने खेमोंमे चले जाते थे। हर सिपाही अपने-आपको मौतके मुँहमे समझता था और सवेरे कोई न कह सकता था कि वह सॉझको जीता लौटेगा या युद्ध-भूमिमें सदाकी नीद सो चुका होगा। इसपर भी उनको अपनी परवाह न थी। यह व्यक्तियोंके मरने-जीनेका सवाल न था, दो देशोकी मान-मर्यादा और हार-जीतका सवाल था। सिपाही लड़ते थे, बादशाह लड़ते थे, नेजे और भाले लड़ते थे। इसी तरह आठ दिन बीत गये, और कोई फैसला न हुआ।

नवें दिन जब नरसिंघा फूँका गया और युद्ध छिड़ने लगा, तो शमलार्कके एक आदमीने आगे बढकर ऊॅची आवाजसे कहा—सब कोई सुनो और सब कोई जानो। हमारा सुलतान मिस्रसे नही लड़ता, न उसे मिस्र-निवासियोसे वैर है। इस रक्त-पातका कारण एक गुलाम लड़की है। उसे हमारे सुपुर्द कर दो, हम इसी समय युद्ध बन्द किये देते है।

यह मेरी मॉग नही, मेरे मुल्ककी मॉग है, और मेरा सुलतान मुल्कके साथ है।

फरऊनने अपने घोड़ेके अगले दोनो पॉव हवामे खड़े करके जवाब दिया—फरऊन अमनस इस मॉगको अपने युगका सबसे बडा अपमान समझता है और उस असभ्य और अनपढ़ सरदारके साहसपर हैरान है जो कलतक फरऊनके फेके हुए टुकड़ोपर सन्तुष्ट था और आज सिर्फ इसलिए नाराज है कि उसकी बेटीसे ब्याह क्यो नही किया गया। लेकिन अगर उसकी बेटीको उस परीके सामने खडा किया जाय, जिसे वह अभीतक वही गुलाम लड़की समझ रहा है, तो स्वर्गके देवता स्वर्गकी सौगन्ध खाकर कह देगे कि त्यूनसका-सा रूप स्वर्गमे भी नही है, और त्यूनसको उस हब्शिनके सामने खड़ा करना सौन्दर्य-ससारका सबसे बड़ा अन्याय है और मै और मेरा मुल्क यह अन्याय नही कर सकते।

यह जवाब सुनकर दोनों तरफके सिपाही एक दूसरेका मुँह ताकने लगे। सहसा शमलार्कने अपना घोड़ा आगे बढ़ाया और अपना नेजा हवामे ऊँचा करके कहा—तो निर्दोष सेनाको कटवानेसे क्या फायदा है? आओ, हम-तुम दोनों लड़कर फैसला कर ले। झगड़ा हमारा है, नुकसान दूसरोका क्यो हो? जिनका झगड़ा है, वही लड़े।

फरऊन बहादुर था। उसने मुँहसे कुछ न कहा, मगर घोड़ेको एड लगाकर आगे बढा, और अपनी सेनाको पीछे रुके रहनेका इशारा किया। शमलार्क भी आगे बढ़ा। इस समय इन दोनोंकी ऑखोमे क्रोधकी आग जलती थी और नथनोसे शोले निकलते थे। छेड़े हुए सॉपोकी जो दशा होती है वही दशा इस समय इनकी थी। दोनोंके वीर सिपाही आस-पास खड़े थे और चुप-चाप हार-जीतकी प्रतीक्षा कर रहे थे। अजीब तमाशा था। बादशाह लडते थे, सिपाही देखते थे। आज यह वीर-घटनाऍ पुराने युगकी कहानियॉ बन कर रह गयी है जिनपर कोई विश्वास करता है, कोई नही करता। मगर उस समय बहादुरी सचमुच इतनी नायाब न थी, और बादशाहोंका लहू इतना महँगा न हुआ था।

जब दोपहर हो गयी और सूरज आसमानमे ठीक सिरपर पहुँच गया तो फरऊनने अपना नेजा ओर ढाल जमीनपर फेक दी, अपने घोड़ेको शमलार्कके घोडेके साथ मिला दिया और बिजलीकी-सी गतिसे उसके कमरबन्दमे हाथ डालकर उसे हवामे उठा लिया। एक तरफ हर्ष-ध्वनि थी, दूसरी तरफ भयका चीत्कार। एक तरफ जीतके लक्षण थे, दूसरी ओर हारकी आशंका। फरऊनने थोड़ी देर अपने दुश्मनको हाथपर उठाये रखा, इसके बाद पूरे जोरसे जमीनपर पटक दिया—इस समय वह चाहता तो उसे कत्ल भी कर सकता था। मगर फरऊनने उसे कत्ल न किया।

शमलार्ककी हब्शी सेनाने कौल-करारको भूलकर फरऊनपर हमला कर दिया। मगर फरऊनने अब भी हिम्मत न हारी और जब क्रोधसे उनपर अपना शेर घोडा छोडा तो सब तितर-बितर हो गये, और जो भी सामने आया, कट गया, या पीछे हट गया। फरऊनके सिपाही दुश्मनके इस कपट-व्यवहारपर हैरान थे और अभी अपने बादशाहकी मददको आगे न बढने पाये थे कि वह एक हब्शीकी तलवारसे घायल हो गया। फरऊनका घोडा अपनी पशु-बुद्धिसे स्थितिको समझ गया और अपने मालिकको युद्ध-भूमिसे ले उड़ा। थोड़ी देर बाद फरऊनका बेसुध शरीर दूर फासिलेपर, नील नदीके किनारे पडा था। मगर इस हालमे भी उसका स्वामि-भक्त घोडा उसके पास खड़ा था और उसके फिर उठनेकी प्रतीक्षा कर रहा था।

उधर शमलार्ककी देहका बन्द-बन्द दुखता था, मगर वह फिर भी उठकर घोड़ेकी पीठपर चढ बैठा और युद्ध होने लगा। लेकिन मिस्रके सिपाही फरऊनके न होनेसे मन हार बैठे थे। उनका साहस मर चुका था और उनकी भुजाओकी ताकत ठण्डी हो चुकी थी। यहाँतक कि जब रातका अँधेरा आकर दोनो तरफके सिपाहियोके बीचमे खड़ा हो गया, मिस्रके सिपाही मैदान छोड़कर भाग आये और उन्होने शहरका दरवाजा बन्द कर लिया।



दूसरे दिन शमलार्कके सिपाही, अपने देशके रिवाजके अनुसार, जलती हुई अँगीठियाँ अपने सिरोपर रखे सीबाके दरवाजेपर पहुँचे, इसका मतलब यह था कि वह सुलहकी शर्ते लेकर आये हैं। नगर-रक्षकने अपनी तसल्ली करके दरवाजा खोला और उन्हे अन्दर आनेकी आज्ञा दी। वे अन्दर आ गये।

मोर-महलके द्वारपर फरऊनके प्रधानमन्त्री और पुरोहितने शमलार्कके दूतोका स्वागत किया। सामने खुले मैदानमे लोगोकी भीड खडी थी और सुनना चाहती थी कि हब्शी बादशाहने क्या शर्त भेजी है।

सबसे पहले मिस्रका और इसके बाद हब्शियोका राष्ट्र-गीत गाया गया और जो वीर मारे गये थे, उनके माता-पिताओको बधाई दी गयी। इसके बाद शमलार्कके प्रधान दूतने खड़े होकर अपनी अँगीठीका धुआँ अपने मुँहपर मला और ऊँची आवाजसे कहा—फरऊन अमनस, मर गया है, अब मिस्रके निवासियोसे हमारी कोई लडाई नही। मगर युद्धका मूल कारण अभी मिस्रमे है और जबतक उसे हमारे हवाले न कर दिया जायगा, लड़ाई बन्द न होगी। इस लड़ाईका मूल कारण एक गुलाम लड़की है, और वह त्यूनस है। हमारा बहादुर बादशाह चाहता है कि आप लोग उसे हमारे हवाले कर दे। लड़ाई इसी समय बन्द हो जायगी और हमारे सिपाही शहरका घेरा उठा लेगे। मिस्र फैसला करे, वह क्या चाहता है?

प्रधान दूत यह कहकर बैठ गया। जवाबमे कुछ देर सन्नाटा रहा, इसके बाद प्रधानमन्त्री, युद्ध-सचिव और राज-पुरोहितने आपसमे परामर्श किया और राज-पुरोहित महलके अन्दर चला गया। लोगोके दम रुक गये।

वे सोचने लगे, देखे अब क्या होता है ! क्या राजपुरोहित त्यूनसको बुलाने गया है ? क्या उन्होने देश-हितके लिए त्यूनसको हब्शियोके सुपुर्द करना मंजूर कर लिया है ?

राजपुरोहित बाहर आया। प्रधानमन्त्रीने खडे होकर कहा—इसका निश्चय मिस्रकी मलिका आप करेगी।

और अभी यह शब्द हवामे गूँज ही रहे थे कि महलका दरवाजा फिर खुला और त्यूनस अपनी सबसे खूबसूरत पोशाक पहने बाहर निकली। इस समय उसका चेहरा फूलके समान खिला हुआ था, और उसपर वसन्तकी बहार खेल रही थी। लोगोका ख्याल था, वह उदास होगी, उनका यह ख्याल गलत निकला। वह इस समय खुश थी।

त्यूनस बाहर आयी। ऐसे जैसे अँधेरी रातमे चॉद आता है, जैसे कविकी कल्पनामे अलकार आता है, ऐसे जैसे पतझडमे वसन्त आता है। हब्शी बादशाहके हब्शी दूतोने इस हृदयग्राही रूप और यौवनकी छटाको देखा तो उनके दिल भी धडकने लगे, और युद्ध-सचिव और प्रधानमन्त्रीको भी अपना काम मुश्किल मालूम होने लगा।

मगर लोगोंकी भीडपर त्यूनसके रूपका कोई असर न हुआ। लम्बे-चौडे मैदानके अँधेरेको एक दीपक दूर नही कर सकता। उन्होने अपनी देह और आत्माकी सम्पूर्ण शक्तियोसे चिल्लाकर कहा—मलिका, हमारे बाल-बच्चोका ख्याल कर, हमारी स्त्रियोका ख्याल कर। कुछ लोग बोले—हमे आरामसे जीने दे।

कुछ आदमियोने कहा—अपने लिए सारे देशको संकटमें न डाल।

कुछ बोले—जो कुछ कह, सोचकर कह।

एक-आध आवाज आयी—जहॉसे आयी है, वही चली जा। तेरी जगह महल नही है।

युद्ध-सचिवने खड़े होकर हाथ उठाया और लोगोंको शान्त होनेका इशारा किया। इस बीचमे त्यूनस आगे बढ़ चुकी थी, और प्रधानमन्त्रीसे धीरे-धीरे सलाह कर रही थी। जब लोग चुप हुए, और एक नाजुक

महिलाके लिए अपनी आवाज भीड़तक पहुँचनेकी सम्भावना दिखाई दी, तो त्यूनसने अपनी जवान गरदन उठायी और अपनी जादूगर आँखोसे लोगोको देखकर कहा—मै नही चाहती थी कि यह युद्ध हो। मगर फरऊनने मेरा कहा न सुना, और युद्ध शुरू कर दिया। और मै अब भी नही चाहती कि युद्ध होता रहे। और चूँकि अब इसका फैसला करनेवाला फरऊन नही, मै हूँ, इसलिए मै फैसला करती हूँ कि यह खून-खराबा नही होगा और देशका अमन-अमान देशको वापस मिल जायगा।

लोगोने चिलाकर कहा—त्यूनस देवी है। त्यूनस जीती रहे। त्यूनसने हमे बचा लिया!

प्रधानमन्त्रीने फिर हाथसे इशारा किया और सारे लोग चुप होकर सुनने लगे।

त्यूनसने कहा—मै अपने-आपको शमलार्कके सुपुर्द करनेको तैयार हूँ। मगर मै चाहती हूँ कि मिस्रके बेटे उस प्रेम और श्रद्धाका अनुभव करें जो मेरे मनमे मिस्रके लिए है, और जिससे प्रेरित होकर मै मौतके मुँहमे जा रही हूँ।

यह कहते-कहते त्यूनसकी आँखोमे नशा-सा छा गया और उसके शब्द उसके होठोपर जम गये। इसके बाद उसने सिर उठाया और धीरे-धीरे पीछे मुडकर शमलार्कके दूतोके सामने अकड़ कर खड़ी हो गयी। यह इशारा इस बातका था कि वह उनके साथ चलनेको तैयार है।

युद्ध-सचिव, पुरोहित और प्रधानमन्त्री तीनोकी आँखे सजल हो गयीं, और वह उस सजाका ख्याल करके काँप गये, जो शाह शमलार्कके कैद-खानेमे त्यूनसकी प्रतीक्षा कर रही थी।

इतनेमे एक आदमी भीड़को चीरता हुआ आगे बढ़ा और वहाँ आकर खड़ा हो गया, जहाँ त्यूनस शमलार्कके दूतोके सामने खड़ी थी। इस समय उस आदमीका दम फूला हुआ था और उसकी आँखोसे आगकी चिनगारियाँ निकल रही थी। यह वीर रेमफस था जो युद्धमे दिल-

दिलेरी और जी-जानसे लडता रहा था, और जिसकी भुजाओने दुश्मनके छक्के छुडा दिये थे। सारे लोग उसकी तरफ देखने लगे। प्रधानमन्त्री और राजपुरोहितको अन्धकारमे आशाकी किरण दिखाई दी। त्यूनसकी दृढता उसे निर्बल होती मालूम हुई और लोग कान लगाकर सुनने लगे।

रेमफसने अपने गलेकी पूरी शक्तिसे कहा—मिस्रके रहनेवालो, जरा सोचो, यह क्या हो रहा है, और यह तुम क्या कर रहे हो ? क्या तुम्हे इस बातका भय नही कि तुम्हारी भावी सन्तान तुम्हे क्या कहेगी और तुम्हारे क्या-क्या नाम रखेगी? यह स्त्री कलतक चाहे गुलाम लड़की रही हो, मगर आज तुम्हारी मलिका है और तुम्हारे बादशाहकी बीवी है। इसका अपमान तुम्हारे देशका अपमान और इसकी बे-इज्जती तुम्हारे बादशाहकी बे-इज्जती है। मेरा सिर शर्मसे झुका जाता है, जब मै देखता हूँ कि यह अपमान तुम्हारा दरवाजा खटखटाता है, और तुम चुप-चाप खडे मुस्कराते हो और खुश होते हो। वीर माॅ-बापोके कायर बच्चो, अगर तुम्हारे दिलमे शर्म-हया-का एक परमाणु भी बाकी है, तो इस स्त्रीकी इज्जतको अपनी माॅकी इज्जत समझो, इसे अपनी मलिका मानो, और जगली बादशाहके जंगली दूतोंसे कह दो, कि जाओ, हम तुम्हारी बातका जवाब युद्ध-भूमिमे तलवारसे देंगे। इनसे कह दो कि तुम्हारे अपवित्र हाथ हमारी मलिकाकी पवित्र चादरको उस दिन छू सकेंगे, जिस दिन मिस्रकी भूमिपर कोई आदमी जीता-जागता न होगा। उठो, अमन-अमान और आराम-विश्रामकी आशाको आग लगा दो, अपने लहूकी गरमीको जिन्दा करो, और अपने अस्त्र-शस्त्र लेकर इन असभ्य जगलियोको मिस्रकी सीमासे दूर भगा दो। दुनियाका इतिहास तुम्हारे साहसकी प्रशंसा करेगा।

लोगोमे शोर मच गया। यह वक्तृता न थी, एक बिजली थी, जो एक-एक देहमे आग लगा गयी। कोई आॅख न थी जो क्रोधपूर्ण न हो, कोई दिल न था जो व्याकुल न हो, कोई दिमाग न था जो जोशमे न हो। अभी-अभी लोग त्यूनसके विरुद्ध थे, अभी उसके पक्षमें हो गये। उन्होने चिल्ला-चिल्लाकर कहा—हमारी मलिका हमारी माॅ है। हमारी

मलिका हमारी इज्जत है। जबतक हमारी रगोमे लहू है, उसका अपमान कोई नही कर सकता।

प्रधानमन्त्रीने उठकर लोगोको शान्त किया और ऊँची आवाजमे पूछा—मिस्रके बेटे क्या चाहते है?

जवाब मिला—हम अपनी मलिकाकी इज्जत चाहते है।

प्रधानमन्त्रीने फिर पूछा—कोई यह भी चाहता है कि मलिका शमलार्कके हवाले कर दी जाय?

जवाब मिला—कोई नही चाहता।

रेमफसने जोरसे कहा—मिस्रकी फतह हो!

लोगोंने सुरमे सुर मिलाया—मिस्रकी फतह हो!—मिस्रकी फतह हो!

राजपुरोहित त्यूनसको आदर और इज्जतके साथ महलके अन्दर ले गया। हब्शी दूत अपनी-अपनी अँगीठियोकी आग बुझाकर वापस चले गये, जिसका मतलब यह था कि सुलह-सफाईकी बातचीत रह गयी है।

दूसरे दिन फिर युद्ध हुआ और पूरे जोरसे हुआ। शमलार्कके सिपाही जानपर खेल रहे थे। उनके पास भुजाओका बल और हृदयका साहस था, मगर रेमफसकी जोशीली बातोका मुकाबिला करनेवाली चीज उनके पास न थी। वह आज नगी कटार बना हुआ था। जिधर झुकता था, परेके परे साफ कर जाता था और फिर कही टिकता न था। अभी यहाँ, अभी वहाँ। अभी सामने, अभी आँखोसे ओझल। वह गिरतोको सँभालता था, उभारता था, ललकारता था और मरे हुए हौसलोको जिन्दा कर देता था। आज वह हाड़-मासका आदमी नही था, जीती-जागती बिजली बना हुआ था। आज वह चलता-फिरता जादू बना हुआ था, जो जिधर जाता है जोश और जीवन छिड़कता जाता है। देखते-देखते बाजीका पाँसा पलट गया। हारे हुए जीत गये, जीते हुए हार गये। और केवल हारे ही नही, भाग गये। और साँझके समय सिपाही शहरको लौटे तो उनके चेहरे विजयकी खुशीसे लाल थे, और उनके आगे-आगे वीर रेमफसका रथ चला आता था।

अब त्यूनस मिस्रकी मलिका-महारानी थी, और चूँकि फरऊन अमनस मर चुका था, इसलिए उसे अख्तियार था कि राज-सिंहासनके लिए एक फरऊन और अपने लिए एक पति पसन्द करे। जो कलतक लौंडियोंकी लौंडी थी, वह आज मिस्रका बादशाह चुन सकती थी।

सौ दरवाजोंकी प्राचीन नगरी सीबाके अमीर-वजीर राजमहलकी सीढ़ियोंपर जमा हुए। उनके लिए चौकियोंका प्रबन्ध था। मगर जन-साधारणके लिए ऐसा प्रबन्ध होना असम्भव था। इसलिए वह महलके सामनेके मैदानमे बैठ गये। वह देखना चाहते थे कि आज किसकी किस्मत जागती है और मलिका त्यूनस किसको मिस्रका फ़रऊन चुनती है।

आखिर धीरे-धीरे महलका दरवाजा खुला, और रूपवती त्यूनस एक सौ पाँच कुँवारी सुन्दरियोंके साथ, जो ब्याहका मनको मोह लेनेवाला सुहाग-गीत गा रही थी, बाहर आयी। हजारों आँखोंने उसे प्यासी दृष्टिसे देखा, और हजारों जवानोंने जोरसे चिल्लाकर कहा—आसमानके महान् देवता हमारी सौभाग्यवती मलिकाको सलामत रखे।

राजपुरोहितने त्यूनसको सिंहासनके आधे हिस्सेपर बैठनेका इशारा किया और कहा—मलिकाकी फतह हो!

त्यूनस सिंहासनके आधे हिस्सेपर सकोचसे बैठ गयी।

राजपुरोहितने मिस्रके रिवाजके अनुसार पहले देवताओंसे प्रार्थना की, फिर मिस्रका राष्ट्र-गीत गाया गया, और फिर स्वर्गीय फरऊन अमनसका फैसला होने लगा।

९

पुरोहितने कहा—नये फरऊनका चुनाव करनेसे पहले मिस्रका रिवाज है कि हम पुराने फरऊनके शासन-कालकी आलोचना करे, और जिस

सिंहासनपर बैठकर वह हमारे मुकदमे सुनता रहा है, उसी सिंहासनके सामने बैठकर हम उसका मुकदमा सुने। क्या किसीको स्वर्गीय फरऊनके न्यायके विरुद्ध कोई शिकायत है? मै मिस्रका राजपुरोहित उसे फरऊनके सिंहासनके सामने पुकारता हूँ और मिस्रके स्वतन्त्र सिपाहियोका यह दरबार उसके प्राणोका रक्षक है। अगर किसीको शिकायत हो, तो आगे बढ़े।

सैकड़ो स्त्रियॉ आगे बढ़ी। उनकी ऑखोमे ऑसू थे, और चेहरे गरीबीका खुला हुआ नमूना थे। उनमेसे एकने कहा—हम वह अभागी स्त्रियॉ हैं जिनके पतियोने फरऊनका खजाना-घर बनाया था, और जिन्हे फरऊनने नीलके गहरे पानीमे डुबाकर मार दिया था। उनका दोष केवल यह था कि उन्होंने खजाना-घर बनाया था।

यह कहते-कहते वह विधवा रोने लगी। उसके साथ ही दूसरी विधवाऍ भी रोने लगी। लोग भी रोने लगे।

पुरोहितने उन्हे पीछे हटनेकी आज्ञा दी, और कहा—कोई और कुछ कहना चाहता है?

लोगोमे फिर हलचल हुई और कई बच्चे सीढ़ियोपर चढ आये। उनके साथ एक बूढ़ा भी था, जिसके पॉव मुश्किलसे उठते थे, और जिससे अपने हाथकी लाठी भी न सँभलती थी। उसने कहा—यह बच्चे उन अमीरोके है, जिनके सिर काटकर फरऊनने अपने खजानेको भरा था। और उनका दोष केवल यह था कि वे अमीर थे।

पुरोहितने उन्हे भी पीछे हटनेका इशारा किया और कहा—कोई और कुछ कहना चाहता है?

अबके एक बुढिया आगे बढ़ी। उसे आँखोसे दिखाई भी न देता था। उसने कहा—मैं उस चार सालके अभागे बच्चेकी मॉ हूँ जिसे फरऊनने अपने महलकी छतसे नीचे फेक दिया था। उसका दोष केवल यह था कि वह अबोध बालक भूलसे फरऊनके महलके अन्दर चला गया था।

लोग सिसकियॉ भरने लगे। जो दिलके ज्यादा नर्म थे, वह फूट

फूटकर रोने लगे। त्यूनस भी रो रही थी, राजपुरोहित भी रो रहा था, प्रधानमन्त्री भी रो रहा था।

और दीन-दुखी आते गये, और फरऊनकी बेरहमीकी कहानियाँ सुनाते गये और लोग रोते गये।

आखिर पुरोहितने अपना लकडीके समान खुश्क बुड्ढा हाथ उठाया और कहा—बस।

इसके साथ ही उसने कहा—फरऊन अमनसके जुल्मोकी पाप-सूची बहुत बड़ी है। हम बहुत कुछ सुन चुके, और जो बाकी है, उसे सुननेके लिए न हमारे पास समय है, न सुननेका कुछ लाभ है। अब हम यह देखना चाहते है, कि क्या कोई ऐसा आदमी भी है, जिसके साथ फरऊनने भलाई की हो? अगर है, तो वह आगे बढ़े।

चारो तरफ सन्नाटा था। लोग एक-दूसरेकी तरफ देख रहे थे। दो-चार-दस क्षण गुजर गये। मगर कोई आदमी आगे न बढ़ा। यहाँतक कि राजपुरोहित, युद्ध-सचिव, प्रधानमन्त्री और फरऊनके निजी सलाहकारोमेसे भी किसीने उसके हकमे दो शब्द न कहे। फरऊनने दुश्मन हजारो बनाये थे, दोस्त एक भी न बनाया था। त्यूनसको फरऊनपर बे-अख्तियार दया आयी। वह सारी दुनियाके लिए हिंस्र पशु था, मगर उसके लिए कितना दयालु, सहृदय, कितना विनयशील था! वह अपनी चौकीसे उठना चाहती थी कि पुरोहितने उसका मतलब समझ लिया, और उसे यह कहकर फिरसे चौकीपर बिठा दिया—यहाँ, मलिकाकी गवाही नही चलेगी।

त्यूनसके मनकी बात मनमेही रह गयी। सोचती थी, मेरे साथ जिसने इतनी नेकी की, मै उसके लिए प्रशसाके दो शब्द भी न कह सकी।

पुरोहिनने फिर कहा—क्या इस भरी सभामे एक भी आदमी ऐसा नही है, जिसके साथ फरऊनने भलाई की हो?

जवाबमें फिर वही सन्नाटा, वही चुप्पी। अबके भी कोई आदमी आगे न बढा। पुरोहितने कहा—फरऊन अमनस नर-पिशाच था। उसने

देवताओकी मरजीका निरादर किया और उनके कोपको ठोकर मारकर जगाया। फलस्वरूप उसे गुमनामकी मौत नसीब हुई। उसकी प्रजाने उसके सिंहासनके सामने उसके अत्याचारोकी बाते सुनायी, और उन बातोका किसीने विरोध न किया। इसलिए मै मिस्रका राजपुरोहित मिस्रकी प्रजाके सामने कहता हूँ कि फरऊन अमनसके नामको मिस्रके सुनहरे इतिहासमे जगह न दी जायगी, न उसकी यादगार बनायी जायगी, न मिस्रके निवासी उसे कभी याद करेगे। मूँगे और मोती और कमलके फूलोके स्वर्गमे उसे स्थान न मिलेगा, और वह सदाके लिए आत्माके इन पदार्थोंके लिए तरसता रहेगा।

पुरोहितका यह फरमान सुनकर सभी लोग खुश हुए। केवल त्यूनसकी आत्मा दुःखी हुई, और उसकी आँखोसे शोकका पानी बह निकला।

अब पुरोहितने त्यूनसकी तरफ देखा और अपना सूखा हुआ हाथ हवामे फैलाते हुए कहा—मिस्रकी मलिका, देवताओंने तुझपर कृपा की है कि तू मिस्रकी मलिका है और तुझे इस योग्य समझा है कि फरऊनके चुनावका काम तेरी दया और दानाईपर छोड़ा जाय। मगर खुदाके लिए उन ऑसुओको न भूल, जो फरऊन अमनसने बेकसूर गालोंपर बहाये है, और उन आहोकी तरफसे ऑखे बन्द न कर, जिनका जवाब फरऊन अमनसके पास भी नही है। मिस्रकी भलाईको अपनी भलाई समझ, मिस्रके नादान बच्चोका खयाल कर और मिस्रके भविष्यको साधारण बात न जान। आसमानके अमर देवता तेरे दिल और दिमागको प्रकाश दे, मिस्रके लोगोके लिए मिस्रके सबसे वीर बेटेको फरऊन चुन, जो तेरे साथ तख़्तपर बैठे, और तेरे साथ महलमे रहे।

पुरोहित यह कहकर बैठ गया। थोड़ी देर बाद परी-चेहरा त्यूनस अपनी चौकीसे उठी और बोली—मिस्रके रहनेवालो, मुझे बताओ, यह लड़ाई तुम्हारे लिए किसने जीती है? जब तुम हारकर शहरके अन्दर आ छुपे थे, और जब तुम्हारे अपमानमें कोई कसर बाकी न रह गयी थी, उस समय तुम्हे तुम्हारा भूला हुआ धर्म किसने याद कराया? जब तुम्हारी

मलिका अपने-आपको हब्शी बादशाहके हवाले करनेको तैयार हो गयी थी, तो उसको इस अपमानकी मौतसे किसने बचाया ?

लोगोने एक-सुर होकर जवाब दिया—रेमफसने ! रेमफसने ।

त्यूनस—तुम्हारे देशमे सबसे नेक, सबसे सहनशील, सबसे वीर कौन है ? वह कौन है, जिसने मिस्रकी किसी औरतको पापकी ऑखोसे नही देखा ? वह कौन है जिसकी तलवार दीन दुखियोकी सहायताके लिए सदा उठती रही है ? मुझे बताओ, वह कौन है ?

लोगोने फिर चिल्लाकर कहा—रेमफस ।

त्यूनस—तो फिर क्या तुम खुश न होगे, अगर मै उसे तुम्हारा फरऊन चुनकर तुम्हारे सामने पेश करूँ ?

लोगोकी खुशीका ठिकाना न था । उन्होंने कहा—त्यूनस, स्वर्गके देवता तुझे सलामत रखे, तूने मिस्रको मिस्रका सबसे बडा आदमी दिया है । तूने मिस्रकी इज्जत बढा दी है ।

शहनाइयॉ बज रही थी । मिस्रके नये बादशाहकी फतहके नारे लग रहे थे, और राजपुरोहित रेमफसके सिरपर ताज रख रहा था । त्यूनस कनखियोसे रेमफसको देखती थी और मुस्कराती थी, और लोग खुशीसे पागल हो रहे थे । सोचते थे, आखिर हमे फरऊन अमनसके खूनी पंजेसे छुटकारा मिला । अब वह संकट न होगे, दुःख न होंगे, अत्याचार न होंगे ।

१०

एक सौ एक दिनके बाद सीबामे एक खास खुशियोंकी रात आयी और अपने साथ इतने दिये और बत्तियॉ लेकर आयी कि सीबाके आसमानने कम देखी होगी । सारे शहरमे दिये जल रहे थे, सारे शहरमे रोशनी हो

रही थी। अगर उस दिन कोई सीबाको रोशनपुरी कह देता, तो जरा भी अत्युक्ति न होती। उस दिन उस रोशनपुरीका हर एक घर आनन्द-सागर बना हुआ था, जिसकी लहरोमे लोग तैरते फिरते थे। कही आतिशबाजीके तमाशे होते थे, कहीं नाच-रगके जलसे, कही साहित्यिकोकी सभाएँ—यह रेमफसके राज्याभिषेककी रात थी, और रेमफसने शाही खजानेका मुँह खोल दिया था ताकि वह रात इतिहासमे यादगार-रातका नाम पा जाय।

ऐसी रग रस और शान-शोभाकी रात थी। रेमफस और त्यूनस राजमहलके झरोखेसे बाहरकी दुनियाकी खुशियाँ देख रहे थे और अपने सुन्दर भविष्यको अपने आमने-सामने पाकर खुश हो रहे थे कि महलकी ड्योढ़ीमे, जहाँ सैकड़ो भिखमगे नये बादशाहका ब्याह-भोज खानेको जमा थे, एक और भिखमगा आया। उसके हाथ-पाँव काँप रहे थे, कपड़े फटे हुए थे और सिरके बाल मिट्टी पड़ने और पड़ते रहनेसे आपसमे इस तरह चिकट गये थे कि उन्हे अलग करना कठिन था। यह भिखमगा दूसरे हर एक भिखमंगेको हैरानीसे देखता था और गिरता-पड़ता अन्दर बढ़ा चला जाता था। दूसरे भिखमंगे उसकी तरफ न देखते थे, न देखनेकी परवाह करते थे और खाने-पीनेमे लीन थे। यहाँतक कि यह भिखमंगा आँगनके दरवाजेपर जा पहुँचा।

पहरेदारने उसे रोका और कहा—आगे कहाँ जाता है? आगे जानेकी मनाही है।

उस आदमीने पहरेदारको बड़े ध्यानसे देखा और फिर उन भिखमगो-की तरफ मुड़कर जो वहाँ जमा हो गये थे, कहा—मुझे किसकी मनाही है? मै फरऊन अमनस हूँ।

भिखमगे जोरसे कहकहा लगाकर हँसे, देरतक हँसते रहे और इसके बाद उस आदमीके आसपास जमा हो गये, जो अपने-आपको फरऊन अमनस समझता, कहता और बताता था।

भिखमगोने उसे छेड़ना और तग करना शुरू किया, मगर वह फिर भी बारबार कहता था—मै फरऊन अमनस हूँ।

एक भिखमगेने उसके कन्धेपर लाठी मारकर कहा—मगर यार, तेरा वह ताज कहाँ है ?

इसके जवाबमे इस भिखमंगेने उस भिखमगेको करुण-दृष्टिसे देखा, और कुछ न कहकर अपनी आँखे ऊपर उठा दी। एक दूसरे भिखमगेने अपनी प्याला लेकर उसके सिरपर उलट दिया, और कहा—यह लो, इसका ताज भी देख लो !

एक दूसरा भिखमगा बोला—जैसा मुँह, वैसा तमाचा।

तीसरेने आवाजा कसा—जैसा राजा वैसा ताज।

भिखमगे हँस रहे थे, वह आदमी अपने सिरपर रखे हुए प्यालेको हाथसे छू-छूकर देख रहा था। प्यालेका शोरबा उसके गालोंपर बह रहा था। पहरेदार यह विनोदपूर्ण दृश्य देखता था, और मुस्कराता था। अन्दर त्यूनस और रेमफस बैठे खुशियाँ मना रहे थे।

इतनेमे महलका दरवाजा खुला और अन्दरसे पुरोहित निकला। उसे देखकर अजनबी भिखमंगा खड़ा हो गया, और उसकी तरफ बढ़ा। पुरोहितने भी उसे देखा, और शोक, आश्चर्य, और खुशी, क्रोधके मिले-जुले भावसे चिल्ला उठा—फरऊन अमनस, तू कहाँ ?

हाँ, यह अभागा सचमुच फरऊन अमनस था, जो नीलके किनारे गिरा था, मगर मरा न था। उसने अपनी बाँहें पुरोहितके गलेमे डाल दी, और पागलोके समान हँसकर कहा—तुमने मुझे पहचान लिया, मगर यह फकीर न पहचानते थे ! यह मुझपर हँसते थे।

फकीरोने वह देखा, जो देखनेकी उन्हे सपनेमे भी आशा न थी। वह चीख मारकर उठे, और अपने पैरोंकी सम्पूर्ण शक्तिसे बाहर भाग गये। वह फरऊनसे डरते थे।

पुरोहितने फरऊनकी तरफ देखा, और उसकी पहली शान और इस दशाका ख्याल करके वह अवाक् रह गया। काल-चक्रकी हजारो कहानियाँ मशहूर हैं, मगर ऐसी कसक-कहानी किसीने आजतक न सुनी होगी—जो कलतक देवता था, लाखों आदमियोका भाग्य-विधाता था, वह आज

भिखमंगोंके कपड़ोमे भिखमगा बना खड़ा था, और पुरोहितके सिवाय और कोई उसे पहचानता भी न था।

पुरोहितने अफसोसकी ठण्ढी आह भरी, और कहा—फरऊन, तेरे दिन गुजर गये। मिस्रकी प्रजाने तुझे गुनहगार घोषित कर दिया है। अब तू बादशाह नही बन सकता।

फरऊनने पुरोहितका खुश्क हाथ जो हवामे फैला हुआ था, अपने हाथमें ले लिया, और कहा—मगर त्यूनस मेरी स्त्री है? मै उसे चाहता हूँ। मुझे बादशाही नही चाहिये।

पुरोहितने सोचकर जवाब दिया—हाँ, त्यूनस तेरी चीज है, तू उसे माँग सकता है। वह तेरी ब्याहता स्त्री है, तू उसका पति है, और अभी जीता है। और मिस्रका कानून तेरे हकमे है।

फरऊन खुशीसे नाचने लगा—तो मुझे और किसी चीजकी जरूरत नही, मुझे मेरी त्यूनस दिला दो।

पुरोहितने फिर एक ठण्ढी आह भरी, और कहा—आ।

दोनों महलके अन्दर गये, और वहाँ जा पहुँचे, जहाँ त्यूनस और रेमफस बैठे प्यार-मुहब्बतकी रगीन बाते कर रहे थे।

११

एकाएक दरवाजा खुला, और गुलाम लडकीने सिर झुकाकर कहा—राजपुरोहित और फरऊन अमनस आये हैं।

फरऊन अमनस!

रेमफस और त्यूनस दोनोके सिर घूम गये। क्या यह भी हो सकता है? मगर अभी उनकी हैरानी दूर न हुई थी कि गुलाम लड़की सलाम करके बाहर चली गयी और पुरोहित फरऊनको साथ लिये अन्दर दाखिल हुआ।

त्यूनस देखते ही फरऊनको पहचान गयी, और चीख मारकर रेमफससे चिपट गयी। इस समय उसे ऐसा सन्देह हुआ, जैसे शहरकी सारी रोशनियाँ बुझ गयी है, शहरका सारा सगीत बन्द हो गया है और शहरकी सारी खुशियाँ मर गयी है।

और यह उसके मनका वहम न था। शहरके लोगोको जब मालूम हुआ, कि फरऊन अमनस लौट आया है तो उन्होंने सारी खुशियाँ बन्द कर दी थी।

रेमफसने फरऊनकी तरफ देखा।

'मेरी स्त्री मुझे दे दो, मैं और कुछ नही चाहता।' फरऊनने रेमफससे कहा।

रेमफसने जोरसे कहकहा लगाया और जवाब दिया—तुम्हारी स्त्री अब तुम्हारी स्त्री नही। अब वह मेरी मलिका है और मै उसका बादशाह हूँ।

मगर पुरोहितने अपना हाथ हवामे फैलाया और रेमफससे कहा—फरऊन रेमफस, देवताओके नियमोंका निरादर न कर। यह ठीक है, कि अब यह मिस्रका बादशाह नहीं है, मगर त्यूनस इसकी स्त्री है, और मिस्रका धर्म इसके पक्षमे है।

रेमफसका लहू सूख गया। अगर उड़ते हुए पंछीको गोली मारी जाय, तो उसके पख खुलेके खुले रह जाते है। उसी तरह रेमफसका कहकहा अधबीच मे ही टूट गया। मनोहर आनन्दोत्सवमे किसीने मन्त्र पढ़ा और दुनिया भरकी शोभा काली हो गयी। त्यूनस मूर्तिकी तरह चुप थी और फरऊन अमनस खुशीसे दीवाना हो रहा था।

धीरे-धीरे रेमफसको स्थितिका ज्ञान हुआ। उधर यह हृदय-वेधक समाचार पाकर लोग महलके सामने मैदानमे जमा हो रहे थे। रेमफसने आगे बढ़कर फरऊनके सामने घुटने टेक दिये और कहा—मुझसे तख्त-ताज ले लो, मगर मेरे सीनेसे मेरा दिल जुदा न करो।

यह कहकर उसने अपना ताज उतारा, और फरऊनके हाथमे देकर कहा—लो अपना ताज।

मगर फरऊनने ताज लौटाकर और सिर हिलाकर जवाब दिया—बादशाही बहुत कर चुका, अब प्यारकी चाह है। ताज तुम रखो। मिस्र और मिस्रके लोग तुम्हे पसन्द करते हैं। मुझे मेरी त्यूनस दे दो। मैं और कुछ नहीं चाहता। और पुरोहित कह चुका है कि वह मेरी है।

यह कहते-कहते उसने त्यूनसका हाथ पकड़ लिया। त्यूनसकी सारी देह काँप गयी। इस तरह कोई पछी कसाईकी छुरी-तले भी कम तड़पा होगा। उसने अपना हाथ छुडाना चाहा, मगर फरऊनने हाथ न छोड़ा, और कहा—तू मेरी स्त्री है।

रेमफसने फिर कहा—फरऊन, तख्त-ताज ले ले। तुझे त्यूनस जैसी हजारों मिल जायँगी, मगर मुझसे मेरा संसार न छीन। हम एक-दूसरेके बिना जीते न बचेगे।

और जाने किस ख्यालसे फरऊनने ताज ले लिया, और शाही पलंग-पर बैठ गया। शायद सोचता होगा, मिस्र मुझे बादशाह नहीं बना सकता, मगर रेमफस मुझे बादशाह बना सकता है। क्योकि वह बादशाह है, और जो चाहे कर सकता है, और उसकी मरजीको पुरोहित भी नही टाल सकता। और जब वह फरऊन बन जायगा, तो उसके लिए त्यूनसको छीन लेना ज्यादा मुश्किल न होगा।

मगर यह उसकी भूल थी। क्योंकि रेमफस एक बार फरऊन बन चुका था, और त्यूनस उसकी स्त्री थी, और एक फरऊनकी स्त्रीको उसके जीते-जी दूसरा फरऊन भी नही छीन सकता : यह मिस्रका राज-नियम था।

अगर मानव-हृदयका अध्ययन चेहरेसे किया जा सकता है, तो त्यूनस और रेमफस ताज-तख्त देते समय भी उतने ही खुश थे जितने लेते समय। रेमफसने त्यूनसका हाथ अपनी बगलमे दबा लिया, और उसे खींचता हुआ महलसे बाहर ले गया।

वहाँ राजमहलकी सीढ़ियोंके सामने खुले मैदानमें हजारों लोग जमा थे, और यह सुननेको अधीर हो रहे थे कि फरऊनकी आमद क्या गुल खिलाती है ! जब उन्होंने रेमफस और त्यूनसको देखा कि उनके मुँहपर खुशी है, तो उन्हें विश्वास हो गया कि फरऊन अमनसकी बातको पुरोहितने स्वीकार नहीं किया। उन्होंने गगनभेदी स्वरसे कहा—आसमानके देवता फरऊन रेमफस और मलिका त्यूनसको सलामत रखें।

रेमफस यह सुनकर मुस्कराया और ऊँची आवाजसे बोला—अब मैं फरऊन नहीं हूँ, फरऊन वही तुम्हारा पहला फरऊन अमनस है। देवताओंके नियमने मेरी त्यूनस मुझसे छीनकर उसको दिला दी थी, मगर मैंने तख्त-ताज बेचकर उससे मलिका खरीद ली है। अब मैं फिर आपका वही रेमफस हूँ।

लोगोंकी आँखोंसे आग बरसने लगी। क्या उनका भाग्य-विधाता फिर वही निष्ठुर, अन्यायी, पाषाण-हृदय फरऊन अमनस है ? और यह सब कुछ करनेवाला रेमफस है ? अगर वह चाहता तो मिस्रके बेटे इस आततायीके अत्याचारोंसे बच सकते थे। मगर रेमफसने अपना ख्याल किया, अपने देशका ख्याल न किया; उसका धर्म था कि देशकी खातिर अपने प्रेमका बलिदान कर देता। जनतासे आवाज आयी—

तुमने अपनी परवाह की, मगर मिस्रका क्या बनेगा ?
तुम देश-द्रोही हो !
तुम मिस्रके दुश्मन हो !
तुम पापी हो !
तुम हत्यारे हो !
तुमने हमसे दगा किया है !

और रेमफस और त्यूनस बिगड़ी हुई जनताके सामने बेबस अपराधियों-के समान खड़े थे। वह आग-भरे लोगोंको देखते थे और थर-थर काँपते थे, और नहीं जानते थे कि अब क्या होगा। इतनेमें एक आदमीने आगे

बढ़कर कहा—यह देशका दुश्मन है, इसे पत्थर मारकर मार डालो, इसे कत्ल कर दो।

दूसरे आदमीने कहा—इसने जिस त्यूनसके लिए सब कुछ किया है उसे भी मार दो।

इस बातने लोगोपर वह असर किया जो चिनगारी बारूदके ढेरपर करती है। लोग क्रोधसे अन्धे हो रहे थे। उनकी बुद्धि उनके बसमे न थी। वह नही जानते थे, क्या करे, और उस आदमीको कैसे दण्ड दे जिसने उनके भविष्यको अपने प्यारपर निछावर कर दिया था। इस बातने उनको रास्ता सुझा दिया। वह अपने-अपने पैरोपर झुक गये, और जमीनके पत्थर उखाड़ने लगे। वीर रेमफस कॉपता था, मगर यह कॅपकॅपी अपने लिए नही, अपनी त्यूनसके लिए थी; और त्यूनस अबोध बालिकाके समान उसकी छातीसे चिमटी हुई थी। रेमफस बचनेके लिए चारो तरफ देखता था, मगर उसे कोई जगह दिखाई न देती थी। यहॉतक कि महलका दरवाजा भी पुरोहितकी आज्ञासे बन्द कर दिया गया था। अब वह अन्दर भी नही जा सकते थे।

रेमफसने कुछ कहना चाहा, मगर कौन सुनता था? 'मारो-मारो' की आवाजोमे उसकी आवाज किसीने न सुनी, और—पत्थर बरसने लगे। रेमफसने अपने हाथ फैलाकर त्यूनसकी फूल-देहको बचानेकी चेष्टा की, मगर इतने आदमियोके सामने अकेला आदमी क्या कर सकता है? देखते-देखते उसका सिर, छाती, कन्धे सब घायल हो गये, और त्यूनसको बचाते-बचाते वह आप भी सीढ़ियोपर गिरकर बेहोश हो गया। यही सीढ़ियॉ थी जिनपर कुछ दिन पहले इन्ही लोगोने घुटनोके बल झुक-झुककर इसी जोड़ेकी सलामतीके लिए नीले आसमानके अमर देवताओसे प्रार्थनाएँ की थीं। और आज—दोनों बेसुध होकर गिरे, मगर लोगोके मनकी अन्धी आग शान्त न हुई, और पत्थर बरसते रहे, यहॉतक कि उनके शरीर पत्थरोतले दब गये, और वहॉ मनो पत्थर जमा हो गये।

मगर पत्थर बरसते रहे।

१२

ऐसे जोश और गुस्सेके समय महलका दरवाजा खुला, और फरऊन बाहर निकला। लोगोंके हाथ जहाँतक उठ चुके थे वहीतक रह गये; और उनके गलेसे क्रोध और क्रूरताके जो शब्द निकल रहे थे वह उनके होठोपर जम गये। लोग अब उसपर हाथ न उठा सकते थे। वह फरऊन था। उसके पास सिपाही थे, और उसकी ऑखके इशारेमे मिस्रकी ईंटसे ईट बजा देनेकी हत्यारी शक्ति थी। वह जो चाहता, कर सकता था।

उसने आगे बढ़कर अपने हाथोसे पत्थर हटाये और प्रेमके अभागे जोड़ेको सुधमे लानेकी पूरी चेष्टा की। मगर उनको सुध न आयी। यह देखकर फरऊनको इतना दुःख हुआ कि उसका दिल टूट गया, और वह अपनी पदवी और अपना रोआब भूलकर सबके सामने फूट-फूटकर रोया। इसके बाद उसने अपने-आपको सँभाला, और ऑसुओसे सनी हुई और भावुकतासे भरी हुई आवाजमे कहा—मिस्रके लोगो, तुम इतने निष्ठुर, इतने हृदयहीन हो कि जो तुम्हारे लिए जान देनेको तैयार हो, उसे मारते हो, और इतने कायर और भीरु हो कि जो तुमपर दिन-रात अत्याचार करता है उसके हाथ चूमते हो। तुम तो इस योग्य हो कि तुम्हे पकड़कर जलती हुई आगमे फेक दिया जाय और तुम्हारी चीखे सुनकर कहकहा लगाया जाय। अगर तुम चाहते हो कि तुम्हारा यह महा-अपराध माफ कर दिया जाय, तो एक और पत्थर उठाओ, और मेरा सिर भी चूर-चूर कर दो। और मैं इकरार करता हूँ कि तुम्हारा दोष माफ करके मरूँगा।

यह कहते-कहते उसने अपना सिर झुका दिया, मगर मिस्रके किसी आदमीमे फरऊनपर हाथ उठानेकी हिम्मत न थी।

तब फरऊनने निराश होकर खुद एक बड़ा-सा पत्थर उठाया और उसे हवामें उछालकर अपना सिर उसके नीचे रख दिया। और चूँकि उसे पातकी घोषित किया जा चुका था, और दूसरी बार उसका राज्याभिषेक न होने पाया था, इसलिए उसका मृतक-संस्कार न किया गया और उसकी लाशको नीलके गहरे पानीमें पानीके जानवरोंकी खुराक बननेके लिए फेंक दिया गया।

मगर आसमानके अमर देवताओंको यह पसन्द न था कि वीर रेमफस और सुन्दरी त्यूनस इस तरहकी नामुराद मौत मरें। इसलिए जब रात तीन पहर बीत चुकी तो मिस्रके राज-वैद्योंकी सजीवनी दवाओंने अपना चमत्कार दिखाया, और प्रधानमन्त्रीने यह मुनादी कराके सारे शहरको खुशीसे हिला दिया कि रेमफस और त्यूनस बच गये हैं।

और दूसरी रात सौ दरवाजोंकी प्राचीन नगरी सीबामें फिर दीपमाला सजी, और रेमफस और त्यूनस महलके झरोखेमें खड़े अपनी प्रजाका आनन्दोत्सव देखते थे, और खुश होते थे। और अब उनको फरऊन अमनसके लौट आनेका जरा भी भय न था।

(एक विदेशी चित्र द्वारा प्रेरित)

सदासुख

१

कॉगड़ेकी सुन्दर और सुशीतल घाटियोमे बैजनाथ एक छोटी-सी बस्ती है जहॉ हिन्दुओका एक बहुत बड़ा तीर्थ है। यहॉ एक दिन प्रातःकाल लोगोने देखा कि बाजारमे एक बूढा परदेसी खड़ा है। यही सदासुख था।

सदासुख कौन था, यह कोई न जानता था। मगर वह कैसा था, यह सबको पहले ही दिन मालूम हो गया। उसकी शक्ल-सूरत भयानक थी, देखकर दिल दहल जाता था, मगर स्वभाव ऐसा मुलायम और मीठा था कि जी चाहता घण्टो पास बैठे रहे। नारियल ऊपरसे सख्त और खुरदरा होता है, मगर उसके अन्दरका पानी कितना मधुर और कितना गुणकारी होता है! वैसे देखनेको शायद उसका रग इतना साफ न हो, पर उसमे जो मिठास है, वह चश्मेके पानीमें भी नहीं पायी जाती। यही हाल सदासुखका था।

उस दिनके बाद बैजनाथमे एक नये युगका प्रारम्भ हो गया। सदासुख अनाथोंका बाप था, रोगियोका वैद्य, गरीबोका सहारा। चायके बागीचोंमे काम करनेवाली असहाय स्त्रियोको एक मददगार मिल गया। अब उनकी तरफ बुरी ऑखसे देखनेका साहस किसीमे न था। किसीने उनकी तरफ ताका और सदासुखने उसकी गरदन दबा ली। पहले मुसाफिरोंके लिए वहॉ कोई अच्छी जगह न थी, अब आबादीसे जरा परे हटकर सदासुखका झोपड़ा हर एकके लिए खुला था, जैसे किसी वियोगी-की ऑख हो, जो रातको भी बन्द नही होती। यह जगह पहाड़ी लोगोंके स्वभावके समान सादा थी, मगर मुसाफिरोंकी जो आव-भगत यहॉ होती थी, उसका बखान नही हो सकता। और इस सेवाकी तहमे अपना कोई स्वार्थ, कीर्तिकी इच्छा, ससारके यशकी अभिलाषा न थी। यह वह चन्दा

न था जो दिनके समय हजारोंकी हाजिरीमे दिया जाता है; यह वह सहायता थी जो छुपकर रातके अँधेरेमे की जाती है। यह वह सेवा न थी, जिसका उद्देश्य लोगोसे वाह-वाह लेना होता है; यह वह नेकी थी जो दरियामे डाल दी जाती है, और जिसे कोई नही देखता। यह परवानेकी कुरबानी न थी जिसे कवि देखते है, और कविता करते है; यह दानेकी कुरबानी थी, जो जमीनके नीचे अँधेरेमे मरता है, और जिसे कोई ऑख नही देखती।

यह महात्मा बहुत अमीर न थे! उन्हे हर महीने दो सौ रुपयेका मनीआर्डर आ जाता था। मगर उनका दिल बादशाह था। उनके झोंपड़ेसे कोई खाली हाथ न लौटता था। गरीब मजदूर, मुसाफिर, अबला स्त्रियॉ, जो कोई उनके पास जाता वह दिल खोलकर उसकी सहायता करते। लोग कहते थे, यह आदमी नही देवता है, चाहे तो मिट्टीसे सोना बना ले। बैजनाथके मन्दिरके देवता पुराने हो गये है, भगवानने नया देवता भेज दिया है। उनकी तरह इस देवताकी शक्ल-सूरत भी काली और कठोर है, मगर मन-मन्दिरमे भगवानकी जोत जलती है। फर्क केवल इतना है कि वह देवता हमारी ऑखोके ऑसू देखते है और फिर भी चुप रहते हैं, शायद कलियुगके प्रभावने उनके दिलसे भी दया-भाव छीन लिया है, मगर इस जीते-जागते देवताका दिल प्रेम और दयाका सागर है। यह दूसरोंकी ऑखमें पानी देखता है तो आप भी रोने लग जाता है। दूसरोंको बीमार देखता है तो आप भी बीमार हो जाता है। वह आसमानके देवता हैं, यह जमीनका फरिश्ता है! वह हमारे सामने रहते हुए भी हमसे दूर, हमारी दशासे बेसुध है। मगर यह देवता हमारे कितना निकट, कितना पास है!

२

एक दिन सन्ध्याके समय बैजनाथके ऐतिहासिक मन्दिरका पुजारी अपनी पूजा समाप्त कर चुका था कि इतनेमे द्वारपर एक मोटर-लारी आकर रुकी और उसमेसे दो स्त्रियॉ उतरकर मन्दिरमे दाखिल हुई। पुजारीने पूछा—माई, कहॉसे आयी हो ?

बड़ी स्त्रीने जो दूसरीकी मॉ मालूम होती थी, अपनी गठरी जमीन-पर रखते हुए जवाब दिया—महाराज बड़ी दूरसे।

पुजारी—तुम्हारे साथ कोई मर्द नही है क्या ?

स्त्री—मर्द भगवानने अपने पास बुला लिये। अब हम अकेली है। अकेली ही आ गयी।

यह कहकर स्त्रीने दुःख और सन्तापकी गहरी सॉस ली और सिर झुका लिया, और उसकी ऑखमे पानी आ गया।

पुजारी—यह लड़की कौन है ?

स्त्री—मेरी बेटी है महाराज !

पुजारी—तीर्थ-यात्रा करने निकली हो ?

स्त्री—हॉ महाराज, सोचा, आदमीका क्या भरोसा है। कौन जाने किस समय यमराज बुला भेजे। देवताओंके दर्शन तो कर लें।

पुजारी—माई, सच है। पर आजकल तो दुनिया अन्धी हो गयी है, परलोककी किसीको चिन्ता ही नही। तुमपर परमेश्वरकी कृपा हो गयी, जो मनमें यह संकल्प पैदा हुआ। तुम धन्य हो। परमेश्वर तुम्हारा भला करे।

स्त्रीने इसका कोई जवाब न दिया। बातचीतका प्रसंग बदलकर बोली—महाराज, कोई कमरा मिल जाय तो रातको पड़ रहे।

पुजारी—बराण्डेमे लेट रहो ।

स्त्री—कोई भय तो नही है ?

पुजारी—देवताके घरमे भय काहेका ? निश्चिन्त होकर सो रहो । पुजारीके चले जानेपर दोनों स्त्रियॉ कुछ देर वही बैठ रहीं । इसके बाद उठकर बराण्डेमे चली गयी और कपड़ा बिछाकर लेट रही ।

दूसरे दिन पुजारी आया तो वहॉ केवल लड़की थी, मॉ न थी । पुजारी चौंक पड़ा । अँधेरेमे बिजली चमक गयी । उसने सोचा, मॉ अपनी बेटीको इस तरह नही छोड़ जाती । वह उसे इतनी प्यारी होती है जितनी अपनी जान बल्कि उससे भी ज्यादा । मॉ प्रेम है और प्रेम सकटके समय साथ नही छोड़ता । इसने जरूर कोई कुकर्म किया होगा । जरूर कोई महापाप किया होगा, जिसे मॉका हृदय भी क्षमा न कर सका । ऐसी ही दशामे जननीका हृदय पत्थर बन सकता है, वर्ना नहीं । लड़की रो रही थी, और उसका हृदय-वेधक रुदन सुनकर पहाड़के बेजान पत्थरोंमे भी सूराख हुए जाते थे । वह सोचती थी, अब क्या करूँगी ? इस परदेशमे मेरा कौन है ? मुझे यहॉ किसका सहारा है ? गरीब चारो तरफ देखती थी । सब बेगाना थे, अपना कोई भी न था । किसीमे इतनी भी दया-उदारता न थी कि आगे बढ़कर उसे तसल्ली ही दे । उनके पास इस अभागिनीके लिए सहानुभूतिके दो शब्द भी न थे ।

इतनेमे सदासुख आते दिखाई दिये । लोगोने रास्ता छोड़ दिया । वह आकर खड़े हो गये और लड़कीकी तरफ देखकर बोले—क्यों इसे क्या हुआ है ? और यह क्यो रोती है ?

पुजारीने सदासुखकी तरफ अर्थपूर्ण दृष्टिसे देखा और कहा—इसकी माँ इसे यहॉ छोड़कर चली गयी है । अब बेचारी रो रही है कि क्या करे और किधर जाय ! सकटमे है ।

सदासुखकी आँखें सजल हो गयीं, ठण्डी आह भरकर बोले—वह मॉ न होगी, डायन होगी । मॉ होती तो जवान लड़कीको यों न छोड़ जाती । साथ जीती, साथ मरती ।

एक आदमीने धीरेसे कहा—मगर महात्मा, शायद यह बेटी ही बेटी न हो। मॉका कलेजा ऐसे ही पत्थर नही बन जाता। जरूर कोई बात होगी, जिसे न हम जानते है, न आप।

पहाड़के लोग सीधे-सादे होते है, मगर आचार-अनाचारकी बातोको वह भी खूब समझते हैं। इस बातका अर्थ सब समझ गये और एक-दूसरेकी तरफ देखने लगे। ऑखोसे पूछते थे, यह कलक कहॉसे आ गया? छोटा-सा गॉव है, यहॉ यह पाप एक दिन भी न छिपेगा। मगर सदासुख-का यह ख्याल न था। वे सोचते थे, यह कहते क्या है? अब किसीसे अगर एक बार भूल हो जाय, तो क्या उसे सुधारका अवसर ही न देना चाहिये? यह भी हो सकता है, भूल इसकी न हो, किसी दूँसरेकीही हो। और फिर यह लोग आप कहॉके देवता है। हम दूसरोके दोष बहुत जल्दी देख लेते है, अपनी तरफ हमारा ध्यान ही नही जाता। सदासुखने उन सबकी तरफ देखा, और कहा—भाइयो, यह समय ऐसी बातोका नही। जलते हुए घरकी आग बुझा नहीं सकते, तो कमसे कम उसपर तेल भी तो न छिड़को। बल्कि मैं तो कहता हूॅ, यह आग बुझाओ। यह दुखिया है, इसकी सहायता करो, इसे सहारा दो, इसका हाथ थामो। बोलो, कौन आगे बढ़ेगा? और कौन इसकी मदद करेगा? कौन इसे अपने घरमे जगह देगा।

लोग एक-दूसरेका मुँह ताकने लगे। वे हैरान थे कि सदासुखको हो क्या गया है, जो हमे एक दुराचारिणीको अपने घरमे रखनेको कहता है? यही शब्द अगर किसी दूसरेके मुँहसे निकलते तो वे पूंजे झाड़कर उसके पीछे पड़ जाते। परन्तु ये सदासुख थे, जिनके सामने किसीको सिर उठाने-की भी हिम्मत न थी। सब चुपचाप खड़े थे। टुकर टुकर देखते थे, मगर बोलते न थे।

सदासुखने एक-एक करके सबके चेहरोंकी तरफ देखा, कोई भी तैयार न था। तब उन्होने बेबसीकी लम्बी आह खीची और कहा—चल बेटी, मेरा झोंपड़ा तेरे लिए खुला है। मुद्दत हुई मेरी भी एक बेटी थी।

आज उसकी हड्डियाँ भी गंगा-जलमे घुल चुकी होगी। मै समझूँगा, मेरी वही बेटी फिर लौट आयी है। चल।

रोती हुई लड़कीके आँसू थम गये। उसने आश्चर्यसे सदासुखकी तरफ देखा और सहम गयी। वह समझ न सकी कि यह आदमी दैत्य है या देवता। शक्ल-सूरत दैत्यकी-सी थी, आवाज देवताओंकी-सी। उसने रुँधे हुए कण्ठसे कहा—आप जाइये, मेरे डूबनेके लिए नालेका पानी बहुत है। डूब मरूँगी, छुटकारा हो जायगा।

सदासुखने फिर उसी तरह नरमीसे कहा—बेटी डूबनेकी क्या जरूरत है! जबतक मैं जीता हूँ, तुझे जरा भी कष्ट न होगा। चलकर अपना घर सँभाल। आजसे तू मेरी बेटी है, मै तेरा बाप हूँ।

प्रेम दिलको मोह लेता है। लड़कीके हृदयमें हलचल मच गयी। यह आवाज पापकी आवाज न थी, न इसमे बनावट और दिखावेकी मिलावट थी। यह एक सत्यवक्ताके सच्चे भाव थे, जो दिलसे निकलते है, दिलमे जा बैठते हैं। लड़कीको अपना मरा हुआ बाप याद आ गया। वह भी इसी तरह बोलता था। उसकी आवाजमे भी यही माधुरी, यही कोमलता थी। वह इनकार न कर सकी।

थोड़ी देर बाद लोगोंने देखा, सदासुख एक गठरी उठाये अपने झोपड़ेको जा रहा है, और उसके पीछे-पीछे वह लड़की है।

३

इस लडकीका नाम भगवती था। बहुत खूबसूरत न थी, मगर बद-सूरत भी न थी। गोरा रग था, बड़ी-बडी आँखे, गोल चेहरा, आयु उन्नीस-बीस वर्षके लगभग होगी। सदासुखके झोंपड़ेमे उसे कोई तकलीफ न हुई। मगर वह फिर भी सदा उदास रहती थी। वियोगकी उस आगको कौन

बुझाता, जो उसके दिलमें जला करती थी। बैठे-बैठे रोने लगती थी। सदासुख पूछते, तुझे क्या चिन्ता है ? मगर भगवती अपनी बडी-बडी आश्चर्यचकित ऑखोसे उनकी तरफ देखती थी और आह भरकर चुप हो रहती थी। सदासुख भी जोर न देते थे।

इसी तरह दो महीने गुजर गये, भगवतीके लड़का पैदा हुआ। अब सदासुखकी हर जगह निन्दा होने लगी। लोग कहते—देखा, बड़े महात्मा बने फिरते थे, सारी पोल खुल गयी। कोई भला आदमी ऐसी स्त्रीका मुँह भी न देखता। आखिर माँ यों ही थोडे छोड गयी है। इन महात्मा ने यह भी न सोचा कि दुनिया क्या कहेगी ? मगर सदासुखको इन बातोंकी बिलकुल परवा न थी। वे सिर्फ यह सोचते थे—यह अनाथ लड़की है, इसके माँ-बाप नही हैं। इसके साथ किसीने बेवफाई की है। इसके दिलको ठेस न पहुँचे। बैजनाथके लोग उनकी छायासे भी बिदकते थे। न कोई उनसे मिलने आता, न हँसकर बात करता। ऐसी घृणा कोई चोरों और डाकुओसे भी न करता होगा। हॉ, आते-जाते मुसाफिर अब भी वही ठहरते थे। उनकी आव-भगत अब भी उसी उत्साह, उसी श्रद्धा, उसी भक्तिसे होती थी। फर्क केवल यह था कि पहले यह काम सदासुख करते थे, अब भगवती करती थी। सदासुख सारे-सारे दिन लड़केको खेलाया करते थे। यहॉतक कि रातको भी अपने साथ सुलाते। उसको देखकर उनका मुँह चमकने लगता था। उसकी भोली-भाली शरारतोपर उन्हे जरा भी गुस्सा न आता था। क्या मजाल जो उसकी कोई भी बात टल जाय। जो चाहता वही होता, जो मॉगता वही लेता। भगवती कहती—आप इसे सिरपर चढ़ा रहे है, बड़ा होकर तग करेगा। सदासुख जवाब देते—भई, मुझसे इसकी ऑखमे ऑसू नही देखे जाते। यह रोना-सा मुँह बनाता है, तो मेरे दिलमे न जाने क्या होने लगता है। तुम मानो या न मानो, मगर यह अपने मनमे जरूर कहता होगा, जब तुम छोटे थे, तुम भी इसी तरह करते थे। आज बडे हो गये तो बच्चोंकी प्रकृति ही भूल गये। न भई, मुझसे तो यह न होगा। आज हम इसका मन रखते है, कल यह हमारा मन

रखेगा। भगवती कहती—बिगाड़ लीजिये, आपकोही तग करेगा। सदासुख रामूको उठाकर गलेसे लगा लेते, और उसका मुँह चूमकर पूछते—क्यो बेटा, तू हमे तग करेगा ? रामू सिर हिलाकर कहता—हॉ कलूँदा। सदासुख खाना खाते, रामू उनकी गोदमे बैठा उनकी दाढ़ीसे खेलता। कभी कहता, बाबा कागदका जहाज बना दे। देर हो जाती तो कहता—बाबा बतान, हूती काता है ताम नही तलता। (बाबा शैतान, रोटी खाता है, काम नही करता।) भगवती टेढ़ी ऑखोंसे देखती, तो कहता—तू भी बतान। भगवती कहती—तू पाजी। रामू झट जवाब देता—हम लाजा, बाबा पादी, बाबा बतान, और यह कहते-कहते सदासुखके पीछे जाकर छुप जाता और उनके कन्धेसे छोटा-सा सिर निकालकर कहता—अब कीते मालेदी, हम बाबादीके पास। (अब किसे मारेगी, हम बाबाजीके पास।)

सदासुखके लिए रामूकी यह बाल-लीलाऍ ऐसी मोहिनी थी, जैसे यौवन-कालमे प्रेम और सौन्दर्यकी रस-भरी कहानियॉ भी न होगी। वे इनमे खोये-से जाते थे। उनको अपना आप भूल जाता था। उनको इतना भी ख्याल न रहता था कि अब मै बूढ़ा हूँ, कोई देखेगा तो क्या कहेगा ! कभी रामूको पीठपर सवार कराकर घोड़ा बनते, कभी भालूकी भॉति नाचकर उसका जी बहलाते। कभी उसकी जिदसे अपने सिरपर कागजकी टोपी पहनते, कभी बिल्लीकी तरह म्याऊँ-म्याऊँ करते। निष्काम प्रेमके यह अमृतमय दृश्य देख देखकर वियोगिनी भगवतीका मन नाचने लग जाता था। सोचती, अगर यह देवता न होता तो मेरा क्या बनता ? बच्चेको इस तरह ऑखकी पुतली बनाकर कौन रखता ? कभी सोचती, इनको कुछ हो जाय तो मेरा कौन है ? मारी-मारी फिरूँ, कोई सीधे मुँह बात भी न करे। इस ख्यालके आते ही भगवतीको चारो तरफ अन्धकार ही अन्धकार दिखाई देने लगता था। इस ख्याली भयसे भगवती रोने लगती। इसके बाद वह अपना सिर घुटनोपर रख लेती और सच्चे दिलसे बुड्ढे सदासुखकी सलामतीके लिए परमात्मासे प्रार्थना करती।

४

इसी तरह छः वर्षका लम्बा समय गुजर गया। मगर सदासुखके लिए यह छः साल न थे, छः दिन थे जो देखते-देखते गुजर गये। सोचते, अभी कल ही की बात है, भगवती कुटियामे आयी है। सदासुखको बुढ़ापेमे बेटीका प्रेम नही मिला था, उसकी उजड़ी हुई हृदय-वाटिकामे बाहर लौट आयी थी, उसकी आत्मारूपी सूखी नदीमे बाढ आ गयी थी। हर समय खुश रहते थे।

एक दिन रामूने हठ की—हम तो बन्दूक ही लेगे। बाजारमे किसीके पास देख आया था, घर आकर सदासुखसे लडने लगा। सदासुखने लाख समझाया, मगर बचपनके पास वह कान कहॉ जो बुढ़ापेका उपदेश सुने! रामू रोता था और कहता था हम तो बन्दूक ही लेगे, उठो चलकर लाओ, वरना हम खाना नही खायेंगे। कभी कहता—हम तुमसे बोलना ही बन्द कर देगे। कभी कहता—हम रातको तुम्हारे साथ नही सोयेंगे, कहानियॉ किसे सुनाओगे? कभी कहता—हम तुम्हारे बेटे नही बनेगे, प्यार किससे करोगे? क्या मजेसे कहते है—रामू हमारा राजा बेटा है। सदासुख और भगवती हँसीसे लोटे जाते थे और कहते थे, देखो तो, क्या-क्या धमकियॉ देता है, मानो राज ही छीन लेगा। इतनेमे रामू पीछेसे आकर सदासुखकी पीठपर गिर पड़ा और सिसक-सिसककर रोने लगा। यह उसका अन्तिम शस्त्र था। अब सदासुखसे न रहा गया। बोले—बेटी, यह तो ऑखे खराब कर लेगा, कहो तो कॉगड़े चला जाऊँ। शामतक लौट आऊँगा। बालक है, दो रुपयेकी बन्दूक पाकर नाचता फिरेगा।

भगवतीने सदासुखकी तरफ प्रेमपूर्ण दृष्टिसे देखकर कहा—बाबा,

बच्चोंको इतना सिरपर न चढाना चाहिये। अब जरा-सी बातके लिए इतनी दूर जाओगे, तकलीफ होगी।

सदासुख—लारीमे चला जाऊँगा। कौन छप्पन टके खर्च हो जायँगे। बस, अब जाने ही दो।

भगवती—मगर इसकी जरूरत ही क्या है?

सदासुख—रोता रहेगा, सारा दिन चुप न होगा।

भगवती—रोता रहेगा, तो रोता रहे। यह भी कोई बात है कि हम इसकी हर एक बात पूरी करे। आज बन्दूकके लिए रोता है, कल मोटरके लिए रोयेगा, परसो जहाजके लिए रोयेगा।

सदासुख—यह रोता है तो मुझसे देखा नही जाता! बताओ क्या करूँ?

भगवती—आपकी इन्ही बातोने तो इसको चौपट कर दिया है। पहले मुझसे डरता था, अब मुझसे भी नही डरता। कल कहता था—यह घर मेरा और मेरे बाबाका है, तुम्हारा नही है। अगर बहुत बोली तो बाहर निकाल दूँगा, फिर क्या करोगी?

सदासुख—(हँसकर) अरे, माँसे ऐसी बाते करता है तू?

मगर रामू तो दूसरी बात सुनता ही न था। सदासुखके ऊपर गिरकर बोला—उठो भी, जाकर बन्दूक लाओ।

सदासुखको और शह मिल गयी, धीरेसे बोले—बेटी, अब जाने ही दो, यह बन्दूक लिये बिना कभी न मानेगा।

यह कहते-कहते सदासुख खडे हो गये और सन्दूकसे कुछ रुपये लेकर काँगड़े चले गये। भगवती वहाँ उसी दशामें बैठी रही। वह सोचती थी, इन्हे मुझसे कितना स्नेह है। पिछले जन्ममे जरूर मेरे बाप रहे होगे। बाप न होते, तो इतना नेह न होता।

सायकाल सदासुख लौटे, तो बहुत खुश थे। वह केवल रामूके लिए बन्दूक ही न लाये थे, भगवतीके लिए धोती, जोड़ा स्लीपर और एक लोई भी खरीद लाये थे। बाप शहर गया था, बेटीके लिए कुछ खरीदे बिना

कैसे आ जाता ? यह चीजे मामूली थी, मामूली दशामे इनकी कीमत भी मामूली थी, मगर इनको जिस स्नेह और चावसे सदासुखने खरीदा था वह इस स्वार्थपूर्ण, स्नेहहीन, कपटी दुनियामे कहॉ है ? सोचते थे, रामू बन्दूक लेकर कैसा खुश होगा ! ऑखे चमकने लगेगी । होठ मुस्कराने लगेगे । आकर गलेसे लिपट जायगा । इसीकी बाते करेगा । ताज्जुब नही, रातको भी साथ लेकर सोये । भगवतीको हाथ भी न लगाने देगा । फिर सोचते, भगवती अपनी चीजे देखकर कहेगी, बाबा, यह क्या खरीद लाये ? अब तुम बहुत फजूलखर्च होते जाते हो । परन्तु उसके दिलमे जो आनन्दमय अभिमान होगा, उसे ससारका सर्वश्रेष्ठ कवि भी बयान नही कर सकता । खुशीसे पागल हो जायगी ।

सन्ध्याका समय था । रातका अन्धकार पहाड़ी सूनी सड़को और बिखरे हुए झोपड़ोंको अपनी गोदमे लेनेके लिए भागा चला आ रहा था, कि इतनेमे सदासुख अपने झोपड़ेके सामने जा पहुँचे । उनको आशा थी, भगवती और रामू दोनों दरवाजेपर खड़े मेरा रास्ता देख रहे होगे ? लेकिन वहॉ कोई भी न था । सदासुखका दिल धड़कने लगा । लपके हुए अन्दर चले गये । मगर वहॉ उन्होने जो कुछ देखा, उसपर उन्हे विश्वास न हुआ ।

चारपाईपर कोई पुरुष लेटा था, और उसके पास ही पायॅतीकी तरफ बैठी हुई भगवती उसकी तरफ प्रेमकी दृष्टिसे देख रही थी । सदासुखके पैर वहीं रुक गये । वे सॉस रोककर वही खडे हो गये । इतनेमे पुरुषने भगवतीका हाथ अपने हाथमे लेकर ठण्डी सॉस भरी और कहा— यह सब कुछ ठीक है, परन्तु तुम्हे मेरा कहा अब करना ही होगा । नही, मै नालेमे डूब मरूँगा ।

भगवती बोली—ऐसी बाते क्यो करते हो ? मै तुमसे बाहर थोड़ी हूॅ । जो कहोगे, वही करूॅगी ।

५

सदासुखकी आँखोसे चिनगारियाँ निकलने लगी। उन्होने, जो चीजे खरीदकर लाये थे, जमीनपर रख दी, अपने हाथकी पहाड़ी लकड़ी अपने हाथमे और जोरसे पकड ली। फिर एक पग आगे बढ़े और क्रोधसे बोले—तू कौन है यहाँ आनेवाला?

भगवतीने चौककर मुँहपर कपडा खीच लिया। पुरुष उठकर जमीनपर खड़ा हो गया। मगर उसके चेहरेपर भय और चिन्ताके कोई चिह्न न थे। उसने श्रद्धासे दोनो हाथ बाँधे और सदासुखको प्रणाम करके जवाब दिया—मेरा नाम कैलासनाथ है।

सदासुख—कौन कैलासनाथ? तुम्हारा घर कहाँ है?

कैलासनाथ—गरीबखाना लखनऊमे है। (थोड़ी देर ठहरकर) आपकी बड़ी तारीफ सुनी थी, आज दर्शन भी हो गये। सचमुच आप आदमी नही, देवता है। ऐसे देवता दुनियामे कम हैं।

सदासुखने एक बार भगवतीकी तरफ देखा, बोले—मगर तुम मुझे गलत समझ रहे हो। मै रुपया पैसा लुटाता हूँ, इज्जत नही लुटाता। मेरे लिए रुपया कुछ भी नही। इज्जत सब कुछ है।

कैलासनाथ चुपचाप खड़े रहे।

सदासुख—यह एक शरीफ बूढ़ेका झोंपड़ा है, किसी भड़वेका मकान नही। बोलो, तुम यहाँ कैसे आये? इस लड़कीको फुसलानेके लिए अवसर ढूँढ़ रहे होगे? आज मैदान खाली पाया, चले आये। मगर मै बुरा आदमी हूँ। सिर तोड़ दूँगा तुम्हारा।

भगवती रोते-रोते अन्दर चली गयी।

कैलासनाथने सिर झुकाकर जवाब दिया—किस मुँहसे कहूँ, मैं

वही पापी हूँ, जिसके कारण यह अबला इस दुर्दशाको पहुँची है। मगर मेरा इसमे जरा भी दोष नही। मैने माता पितासे बहुत कुछ कहा, पर उन्होने एक न सुनी। अब उनका शरीरान्त हो गया है, तो पता लगाकर हाजिर हो गया हूँ। आप यह सुनकर खुश होगे कि मैने अबतक ब्याह नही किया। माता-पिताने लाख कहा, परन्तु मैने साफ जवाब दे दिया कि मेरा ब्याह हो चुका है। सस्कार न हुआ तो क्या, दिल तो मिल चुके है। मै इसे ही ब्याह समझता हूँ।

सदासुखने कुछ सोचकर पूछा—तुम मुझे चकमा तो नही दे रहे ?

कैलासनाथ—भगवतीसे पूछ लीजिये।

सदासुखने भगवतीको बुलाकर पूछा—ये जो कुछ कहते है, वह ठीक है या झूठ ?

भगवतीने सिर हिलाकर कहा—ठीक कहते है।

कैलासनाथ—अपने मुँहसे क्या कहूँ, मेरे पास खाने-पीनेकी कमी नही, चाहूँ तो चार ब्याह कर लूँ। भगवानका दिया सब कुछ है, चार-पाँच सौकी आमदनी है। फिर भी दौड़ा आया हूँ। आखिर कुछ तो मुझे इसका ख्याल होगा ही। वर्ना वही पडा रहता।

सदासुख—छः साल बाद तुम्हे आज इसकी सुध आयी है। पहले कहाँ सोते थे तुम ?

कैलास०—पिताजी कहते थे, तुमने उसका नाम भी लिया, तो घरसे निकाल दूँगा।

सदासुख—और पत्र लिखनेमे क्या रुकावट थी ?

कैलास०—मुझे इनका पता ही मालूम न था।

सदासुखने लकड़ी हाथसे रख दी और ठण्डी साँस लेकर कहा—जानते हो, इस सतीने कितने कष्ट सहे हैं ?

कैलास०—परमात्माने जिन्दा रखा, तो अब इन्हे गर्म हवा भी न लगेगी।

सदासुख—दिन-रात रोती रहती थी।

कैलास०—यह तो चेहरा ही कह रहा है।

सदासुख—पहलेसे आधी भी नही रही। जिस दिन मैने इसे पहले देखा था, उस दिन इसका रग ही और था।

कैलास०—आप रग रूपकी कहते हैं, मै कहता हूँ, बच गयी है यही बहुत है।

सदासुख—तो आप इसे लेने आये है? मगर आपकी बिरादरी इसे स्वीकार कर लेगी क्या? अगर किसीने एक कड़ा शब्द भी कह दिया तो इससे सहन न होगा। यह पहले सोच लो।

कैलास०—मैने सबसे कह दिया है। घरके सब लोग तो मान भी गये है। जो न मानेगा, मै उससे सम्बन्ध ही न रखूँगा। मुझे पहले यह है बादमे कोई और है। आप जरा भी चिन्ता न करे।

सदासुख कुछ सोचने लगे। कैलासनाथ बोले—आप भी चलिये। वह कहती है बाबा न जायँगे, तो मै भी न जाऊँगी।

सदासुखकी आँखोमे पानी आ गया। बोले—बेटा, इसकी बाते न सुनो, यह तो पगली है। तुम खुद सोचो, मेरा वहाँ जाना क्या ठीक है?

कैलास०—एक बार नही, हजार बार ठीक है। मै आपको विश्वास दिलाता हूँ, वहाँ आपको जरा भी कष्ट न होगा।

इतनेमे रामू आ गया। उसके हाथमे कैलासनाथके लाये हुए खिलौने थे। रामू सदासुखको एक-एक खिलौना दिखाता था और झूमता था, मानो कहता था, देखो, हमारे पास कैसी-कैसी चीजे हैं! सदासुख कहता था, वाह भाई! यह खिलौने तो बहुत सुन्दर है। ऐसे खिलौने यहाँ किसीके पास भी न होगे। कहाँसे आये है?

रामू—(मुँह फुलाकर) दिल्लीसे।

सदासुख—तभी ऐसे बढ़िया है।

रामू—(खुश होकर) हाँ यह भालू भी दिल्लीसे आया है और यह पालकी भी दिल्लीसे आयी है।

सदासुख—अच्छा बेटा, मुझे एक बात बता, तेरी यह पालकी किसके लिए है ?

रामू—मॉके लिए ।

सदा०—और यह भालू ?

राम—(सोचकर) तुम्हारे लिए ।

सब कहकहा मारकर हँस पड़े । सदासुखने कहा—भई, तेरे खिलौने बडे अच्छे है । और क्यो न हो, दिल्लीसे आये हैं ।

रामू—(एकाएक बाबाकी तरफ देखकर) बाबा, यह भालू दिल्लीसे आया है तो तुम कहॉसे आये हो ?

कैलासनाथ खिलखिलाकर हॅस पड़े । सदासुखने जवाब दिया—हम कॉगडेसे आये है । कॉगड़ेका नाम सुनते ही रामूको अपनी बन्दूक याद आ गयी । सदासुखकी गोदमे बैठकर बोला— हमारी बन्दूक कहॉ है ? लाओ ।

सदासुख—अब बन्दूक लेकर क्या करोगे ? रहने दो । अब तुम्हे भालू मिल गया है ।

रामू—(सोचकर) हम बन्दूकसे इस भालूको मारेगे । लाओ ।

यह कहते-कहते रामूने सहमी हुई ऑखोसे अपने पिताकी तरफ देखा, कि भालू इनका है, उसे मारनेसे यह नाराज तो न हो जायँगे । मगर वहॉ क्रोध न था, वे मुस्करा रहे थे । रामू शेर हो गया । दूसरे क्षणमे उसने सदासुखसे बन्दूक ले ली, और भालूका शिकार खेलने लगा । कैलासनाथ अपने वीर पुत्रका तमाशा देखते थे और फूले न स्माते थे । उनके हृदयमे पितृ-स्नेह चॉदनी रातके समुद्रकी तरह लहरे मारता था । मगर सदासुखके मनमे अमावसका ॲधेरा छाया हुआ था । वे सोचते थे, क्या सचमुच ये चले जायँगे ? यह प्यार, यह सादगी, मनको मोह लेनेवाले बाल्यावस्थाके यह दृश्य, सब स्वप्न हो जायँगे ? रात को कोई बात करनेवाला भी न होगा । सूखा हुआ बाग पानी पाकर लहलहा उठा था, क्या अब वह फिर इसी तरह सूख जायगा । खुश्क नदी वर्षाकी बाड आ जानेसे ठाठे मारने

लगी थी, क्या अब वह फिर उसी तरह खुश्क हो जायगी ? सदासुखकी आँखोसे गरम पानीकी दो बूँदे टपक पड़ी।

जब चार-पॉच दिनके बाद उनके जानेका दिन आया, तो सदासुखके चेहरेपर जरा भी उदासी न थी। मगर भगवतीकी ऑखे सूज गयी थी। वह सारी रात रोती रही थी। वह बारबार कहती थी—बाबा, मुझे न भेजो, वहॉ मेरा जी न लगेगा। यह झोपडा मुझे राजमहलोसे बढकर है; किसी समय तो ऐसा मालूम होता है, जैसे यह तीर्थराज है। यहॉ आकर मै दुनियाभरके दुःखोसे छूट गयी थी। ऐसी शान्ति, ऐसी निश्चिन्तता मुझे और कही भी न प्राप्त होगी। मोटरमे बैठते समय भी उसकी ऑखोसे ऑसू बह रहे थे। उधर रामू रोता था, और कहता था—बाबा, तुम भी हमारे साथ चलो। कैलासनाथने कहा—आप चले आइये। हम आपको जरा भी तकलीफ न होने देगे। क्या आपको हमपर विश्वास नही है ?

सदासुख—विश्वास तो है। मगर मैने भगवतीको बेटी कहा है। बेटीके घर कैसे चला जाऊँ ? दुनिया जीने न देगी।

कैलास०—आप दुनियाकी परवा ही क्यों करे ? बकने दे।

सदासुख—पर अपना दिल भी तो नही मानता।

कैलास०—देखिये, दोनो रो रहे हैं।

सदासुख—तुम समझा देना। आखिर बेटीको अपने घर जाना ही पड़ता है। मुझे तो आज बडी खुशी है। परमात्मा करे, इसे कोई कष्ट न हो। बेटा, यह लड़की हीरा है। इसके दिलमे छल-कपट नही; न इसे बनावट आती है। मेरी तुमसे यही प्रार्थना है कि इसका दिल न दुखाना। और क्या कहूँ ?

कैलासनाथने कहा—इस बातकी आप जरा भी चिन्ता न करे। और हॉ, चिट्ठी लिखते रहना।

सदासुख—और तुम गर्मियोमे जरूर यहॉ चले आना। लखनऊमें ऐसी ठण्डी हवा कहॉ मिलेगी।

भगवतीने धोतीके ऑचलसे मुँह पोछकर कहा—जरूर आयेंगे। आप न कहे, तब भी आयेंगे।

सदासुख—तुम्हारा अपना घर है बेटी!

मोटर चली और देखते-देखते दूर निकल गयी। अब सदासुखका दिल उनके बसमें न रहा। वही खड़े-खड़े रोने लगे, यहॉतक कि मोटर पहाड़के ऊबड़-खाबड़ रास्तोमे गुम हो गयी। मगर उनके कानोमे अभीतक रामूके रोनेकी आवाज आ रही थी। उस रात सदासुख बहुत उदास थे। दो साधु आ गये थे, सदासुखने उनको खाना बनाकर खिला दिया, आप भूखे ही लेट रहे। मगर आधी राततक नीद न आयी। सोये, तो झटपट किसीने जगा दिया। मालूम हुआ, नम्बरदारके मकानको डाकू लूट रहे है। सदासुख लाठी लेकर वहॉ जा पहुँचे। दस डाकू थे, जिनके सामने घरके लोग हाथ बॉधे खड़े थे। पड़ोसी अपने घरोमे दबके बैठे थे। समझते थे, हम बोले, और इन्होने गरदन उतार ली। मगर सदासुखको जरा भी भय न था, आते ही ललकारकर बोले—अगर प्राणोका मोह है, तो चुपचाप चले जाओ, वरना एक-एकसे समझूँगा। कमजोर देखकर चले आये हो, मगर जबतक यह बुड्ढा जीता है, किसकी मजाल है, जो इस गॉवमे किसीका बाल भी बॉका कर जाय।

डाकू अवाक् रह गये। यह कौन है, जो परायी आगमे कूदता है? जरूर कोई असाधारण आदमी होगा। साधारण आदमियोमे ऐसा साहस कहॉ? डाकुओंके सरदारने आगे बढ़कर पूछा—तुम कौन हो?

सदासुखने लाठी भूमिपर टेककर उत्तर दिया—मै सदासुख हूँ। इस नामने डाकुओपर जादूका काम किया। सरदार बोला—हम आपसे नही लड़ सकते। आप हमे मार दे, तो भी हाथ न उठाये, गिरफ्तार कर ले, तो भी न बोले। फिर अपने आदमियोसे कहा—सब कुछ रख दो। एक पैसेकी भी चीज न लो। यह बैजनाथके देवता है, इनकी आज्ञा सिर-माथेपर।

६

दूसरे दिन गॉवके सब लोगोने आकर सदासुखके पॉव पकड़ लिये। नम्बरदारने कहा—हम आपसे वचन लेने आये है कि आप इस गॉवसे कभी न जायॅगे। एक-दो और आदमी बोले—चले कैसे जायॅगे? हम राह रोक लेगे, राहमे लेट जायॅगे, धरना देकर बैठ जायंगे? आखिर श्रद्धा भी कोई चीज है, उसे कुचलकर कैसे चले जायॅगे?

एक और आदमीने कहा—जबतक हीरेको कंकड समझते थे, तबतक इनकी परवा न थी। परन्तु अब ऑखे खुल गयी है, अब तो यह चरण कभी न छोड़ेगे।

सदासुखका हृदय प्रेमका सोता था, यह बाते सुनकर उनकी ऑखे सजल हो गयी, बोले—तुम मुझे वृथा ही शरमिन्दा करते हो। मै तो तुम ही जैसा साधारण आदमी हूँ। मुझमे असाधारण बात कोई भी नही। हॉ, सेवाका व्रत लिया है, उसे पूरा करूँगा। और कही नही यही सही। यहॉ भीं वही भगवान् है, यहॉ भी उसीका प्रकाश है, उसीकी सृष्टि है। कही और जाकर क्या बना लूँगा?

अब सदासुख फिर वही सदासुख थे, जिन्हें बैजनाथके निवासी सिर-ऑखोपर बिठाते थे। उनके दिलोमे सदासुखकी वही इज्जत थी जो आजसे छः साल पहले थी। घृणा चार दिनकी बीमारीके समान आयी, चली गयी, कहते—इसमे इनका क्या दोष था? इनके पास कोई चला आये, ये उसीकी सेवा करेगे। भला हो या बुरा, ये इसका ख्याल ही नही करते। कष्टमें देखा, अपने पास रख लिया; उसका आदमी आया, हॅसकर साथ भेज दिया। कमलका फूल पानीमे रहता है, मगर भीगता नही है। धूप नालियोंमे भी जाती है, पर उनसे लिपटती नही है।

मगर सदासुख खुश न थे, न उनके दिलको वह पहली शान्ति प्राप्त थी। प्रायः खोये-से रहते थे! अब बाहर चले जाते है, तो कोई उनकी प्रतीक्षा नही करता; रातको घरसे निकलते है, तो कोई जल्दी आनेका आग्रह नहीं करता, न पास बैठकर कोई तोतली बाते करता है, न कोई लड़ता-झगड़ता है, न शिकायते करता है। सदासुखका जी क्यों कर लगता? झोंपड़ा उन्हे काटनेको दौड़ता था। कभी यही स्थान उनके लिए घर था, उस समय इसमें प्रेम, पवित्रता और प्रकाश भरा हुआ था। अब इसमें कुछ भी न था। पहले झोपड़ा घर बना था, अब घर डेरा बन गया। ससार ही बदल गया।

इधर लखनऊसे पत्र आते थे कि भगवती उदास रहती है। रामू भी पहलेके समान नही चहकता। हाँ, आपका पत्र आता है तो दोनोंके चेहरे खिल जाते है। सदासुख लिखते—मै जरा भी उदास नही हूँ, न मुझे कोई चिन्ता है। भगवती लिखती—आपको खानेकी बहुत तकलीफ होगी। सदासुख जवाब देते—ऐसा स्वाद आता है कि तुमसे क्या बयान करूँ। शायद तुम विश्वास न करोगी, मेरी भूख बढ गयी है। भगवती पूछती—आपका स्वास्थ्य कैसा है? सदासुख उत्तर देते—बहुत अच्छा। पहले तुम्हारी चिन्तामे घुला जाता था; जबसे भगवानने तुम्हारी सुनी है, मै मोटा होने लगा हूँ। कुछ दिन भगवतीके पत्र आते रहे, इसके बाद बन्द हो गये। सदासुखने कई पत्र लिखे। मगर किसीका भी जवाब न मिला। यहाँतक कि रजिस्ट्री खत भी भेजे परन्तु उनका भी जवाब न मिला। सदासुख पहले झुंझलाये, फिर उदास हुए और इसके बाद बेपरवा हो गये। ख्याल आया, मै भी कैसा मूर्ख हूँ, घरसे सेवा करने चला था, यहाँ प्रेमके जालमे फँस गया। वह विद्यार्थी कितना मूर्ख है, जो स्कूल जाते-जाते राहमे किसी मदारीका तमाशा देखे, और वही रुक जाय।

अब फिर वही दिन थे, वही झोपड़ा था, वही यात्री थे। वही सदासुख थे, वही उनका सेवा-व्रत था, वही निश्चिन्तताकी नीद थी। इसी तरह एक वर्ष बीत गया। फिर सरदीके दिन आ गये; पहाड़ोंकी रौनक

घटने लगी। इन दिनों सदासुखके झोपड़ेमे यात्री कम आते थे। कभी-कभी कोई भी न आता था। सदासुख दिन-दिनभर बैठे रामायण और गीताका पाठ किया करते थे। सन्ध्या समय बैजनाथके श्रद्धालु लोग उनके पास चले आते और आगके आस-पास बैठकर वेद-शास्त्रोंकी बाते सुनते। ज्ञान-ध्यानकी यह सभा, प्रेम-भक्तिकी यह अमृत-वर्षा कई-कई घण्टे जारी रहती थी और लोग अपने भाग्यपर फूले न समाते थे।

अचानक एक दिन सदासुखने कहा—हम कल लखनऊ जायँगे।

लोग घबरा गये और हाथ बाँधकर खडे हो गये। उनको शंका थी कि शायद यह फिर न आयँ; मगर सदासुखने कहा—हम एक सप्ताहके अन्दर-अन्दर लौट आयेगे।

७

तीसरे दिन दोपहरको वे लखनऊमे थे। इस समय उनके दिलमे चावकी तरंगे और प्रेमकी उमंगे थी। आज वे अपनी बेटीसे मिलेंगे। आज उनका रामू उनके गलेसे लिपटेगा। पूरा एक साल बीत गया! देखकर चौंक उठेगा। शायद एकाएक पहचान भी न सके। मगर जो खुशी भगवतीको होगी, उसका अनुभव कौन कर सकता है? कैलासनाथसे सीधे मुँह बात भी न करूँगा। ऐसा निर्मोही आदमी भी किस कामका जो खतका जवाबतक न दे। अचानक अमीनाबाद बाजारमे उन्होने बहुतसे लड़कोंकी भीड़ देखी, जो किसीको घेरे खड़े थे, और उसे तंग कर रहे थे। दूसरे ही क्षण मालूम हुआ, बीचमे कोई पगली है, और आसपास लड़के हैं। लड़के छेड़ते थे, पगली गालियाँ देती थी। सदासुखने अच्छी तरह देखा, और चौक पड़े। यह शोहदोंसे घिरी हुई फटे-पुराने कपड़ोवाली स्त्री भगवती थी, जिसे अपने शरीरकी भी सुध न थी, न देश-कालका ज्ञान

था। हाय शोक, क्या देखने आये थे, क्या देखना पड़ा। सदासुखका सिर घूम गया। उनकी आँखोमे बाजारकी सारी दूकाने हवामे तैरने लगी। जमीन-आसमान चक्कर खाने लगे।

उन्होने इक्केवालेको किराया दिया और भगवतीकी तरफ बढ़े। इस समय उनका दिल टुकड़े-टुकडे हो रहा था। उनके पॉव काँप रहे थे। यह चार पगका फासला काले कोसोका सफर बन गया। उन्होने डॉट-डपटकर लड़कोको परे हटाया और खुद भगवतीके सामने जाकर खड़े हो गये। भगवतीने उनको पागलोकी तरह देखा और इसके बाद कहकहा लगाकर हँस पडी।

सदासुखने रुँधे हुए कण्ठसे पुकारा—भगवती!

भगवतीने बिना किसी तरहका भाव प्रकट किये सदासुखकी तरफ देखा और कहा—अबे, क्या तू भी इन लौडोका साथी है?

सदासुख—नही भगवती, मैं बैजनाथसे आया हूॅ। तू मुझे पहचानती है या नहीं?

भगवती चुपचाप सदासुखको देखती रही। इसके बाद सहसा बड़े जोरसे चिल्लाकर बोली—यह बूढा पागल है। यह बूढ़ा पागल है।

लड़के हँसने लगे। एक बोला—लो बाबा और दिखाओ सहानुभूति। तुम्हे भी पागल बना दिया।

दूसरा बोला—पगली है।

भगवतीने चौककर कहा—मुझे पगली कौन कहता है? मै जीभ काट लूॅगी उसकी।

यह कहकर वह जमीनपर बड़े जोर-जोरसे पॉव पटकती हुई एक कोनेकी तरफ चली गयी और वहॉ घुटनोपर सिर रखकर बैठ गयी। इसके बाद वही लेटकर धीरे-धीरे गाने लगी—

मैं प्रेम-नगरकी रानी।
प्रेम-नगरका राजा मुझसे बोले मीठी बानी।
मैं प्रेम-नगरकी रानी।

यह हृदय-वेधक दृश्य देखकर सदासुखका दिल भर आया, और आँखे सजल हो गयी। एक दूकानदारके पास जाकर पूछा—यह स्त्री इस दशामे कबसे है ?

दूकानदारने सदासुखको सिरसे पॉवतक देखा और कहा—अजी जनाब, एक अरसेसे। आप परदेसी है क्या ?

सदासुख—जी हॉ। (थोड़ी देरके बाद) तो क्या कैलासनाथने इसे घरसे निकाल दिया ?

दूकानदार—जनाब तो सब कुछ जानते है ?

सदासुख—जी नही, बहुत कम जानता हूँ ?

दूकानदार—क्या अर्ज करूँ, इस गरीबकी दुर्दशा देखकर रोना आता है। भले घरकी बेटी है। पहले मॉने आत्महत्या की थी, अब आप पागल हो गयी। एक लड़का था। मगर जनाब, लड़का क्या था, गुलाबका फूल था। वह भी मर गया।

सदासुखपर बिजली-सी गिर पडी, कई मिनट पत्थरकी तरह खड़े रहे, इसके बाद ऑखोसे ऑसू बहने लगे। दूकानदारने पूछा—आपसे कुछ रिश्तेदारी है क्या ?

सदासुख—(ठण्ढी आह भरकर) अब रिश्ता ही समझिये। मेरी मुँहबोली बेटी है।

यह कहकर उन्होने फिर भगवतीकी तरफ देखा, और अपना सिर झुका लिया।

दूकानदारने चौककर सदासुखकी तरफ देखा और कहा—जनाब बैजनाथसे तो नही आ रहे है ?

सदासुख—वहीसे आ रहा हूँ।

दूकानदार—माफ कीजियेगा। कैसी हिमाकत हुई जो जनाबको बैठनेको चौकी भी न दी। आइये, आरामसे बैठिये और मुझे अपना खादिम और इस दूकानको अपनी दूकान समझिये।

सदासुख चौकीपर जा बैठे।

दूकानदार—कैलासनाथसे आपकी बेहद तारीफ सुनी है। कहते थे, ऐसा आदमी मैने दूसरा नही देखा।

सदासुख—(सुनी अनसुनी करके) आश्चर्य है कि मुझे पता भी न लगा, और यहाँ सब किस्सा खत्म भी हो गया।

दूकानदार—बिरादरीके सब लोग कैलासके विरुद्ध थे। एक मै और एक और दो आदमी थे जो उसके साथ थे। बाकी सब विरुद्ध थे, यहाँतक कि उनके चचा साहब भी विरोधियोमे थे। कैलासनाथ चार महीने डटे रहे, इसके बाद उनमे दम न रहा।

सदासुख—मैने तो पहले ही कह दिया था कि तुम कमजोर हो, बिरादरीके सामने न ठहर सकोगे। उस समय कहते थे, बिरादरी मेरा क्या बिगाड़ लेगी? और सच भी है उनका क्या बिगड़ा, जीवन तो लड़कीका खराब हुआ। (भगवतीकी तरफ देखते हुए)—यह हाल कबसे है?

दूकानदार—कोई छः महीनेसे गरीबपरवर, पहले जाने कहाँ चली गयी थी। एकाएक एक दिन बजारमे आ निकली, और इस दशामे कि अपने तन-बदनकी सुध न थी। देखकर कलेजा फटता है जनाब, सारा दिन इसी तरह बकती-झकती रहती है, और लौडे तालियाँ बजाते है, छेड़ते है, तग करते है।

सदासुख—और, कैलासनाथ तो खूब मजेमे होगे। इसे इस हालतमे देखकर उनको लाज तो न आती होगी।

दूकानदार—पहले तो कहते थे, यह औरत नही, देवी है। इसका-सा प्रेम, त्याग, स्वच्छ हृदय दुनियामे और कहीं न होगा। मगर अब उनकी राय बदल गयी है। कहते हैं—आवारा है। बाल-कालमेही ताक झाँकका चस्का था, वर्ना अपने साथ दूसरोको भी न ले डूबती। कोई इसका जिक्र भी कर दे, तो बुरा मानते है। अपनी आँखोसे इसकी यह दशा देखते है, मुँह फेरकर चले जाते है। इतना भी नही करते, कि इसे घरमे ले जायँ।

सदासुखने लम्बी साँस छोड़कर कहा—आदमी इतना भी गिर सकता है, यह ख्याल न था।

दूकानदार—आदमी ! अजी मैं उसे आदमी नही समझता। दोष लड़कीका नही, उसी जालिमका है। अब चले हैं धर्मात्मा बनने। एक दिन बजारमें मिल गये थे, मैने वह खरी-खरी सुनायी कि जरा-सा मुँह निकल आया, जबान बन्द हो गयी। हवाइयाँ उडने लगी।

सदासुख—अगर हिम्मत न थी तो बैजनाथसे क्यो लाया था ?' गरीब वहीं पड़ी रहती। वहाँ अगर कोई सुख न था, तो दुःख भी न था।

दूकानदार—जनाब, वहाँ तो वह स्वर्गमे थी। आपका नाम सुनकर उसकी आँखे चमकने लगती थी। मैने सुना है, आपको वह बापसे भी बढ़कर चाहती थी। और आपका चेहरा कहे देता है, आप हैं इसी काबिल। बन्दापरवर, हम तो मुँह देखकर दिलका हाल बता दे।

सदासुख फिर रोने लगे।

दूकानदार—और, सच तो यह है कि जो आपने किया, उससे ज्यादा बाप भी न करता। सारा गाँव एक तरफ और आप अकेले एक तरफ और फिर एक परायी लडकीके लिए। यह मामूली बात नही। कैलासनाथ लोगोंके विरोधका मुकाबिला छः महीने भी न कर सके, आपने छः वर्ष किया। वह विषयकी प्यास थी, यह आत्माकी बेलाग मुहब्बत थी। वह आपकी बराबरी क्या करेगा, आपके जूतोंकी बराबरी भी नही कर सकता। कहाँ राम राम, कहाँ टी टी !

सदासुख—आपकी रायमे मुझे अब क्या करना चाहिये ? मेरा कैलासनाथसे मिलनेको तो जी नहीं चाहता। लाभ कुछ न होगा, उलटा दिल और भी खट्टा हो जायगा। कहिये तो लड़कीको अपने साथ ले जाऊँ। और कुछ न होगा, आँखोंके सामने तो रहेगी।

दूकानदार—लाख रुपयेकी बात कही आपने, मगर पगली है।

सदासुख—शायद दवासे ठीक हो जाय। रोग भयानक है, परन्तु असाध्य नहीं। मै कोशिश करूँगा।

दूकानदार—तो भगवानका नाम लेकर ले जाइये। यहाँ कौन बैठा है, जिसे इसकी चिन्ता हो। वहाँ आप तो होगे, वहाँ जनाब, इसे जरा तकलीफ न होगी। और यहाँ...

सदासुख—अरे भाई, यहाँ तो लड़के चगे-भलेका सिर फेर दे। कभी पत्थर मारते है, कभी मुँह चिढाते है, और वह गरीब खूनका घूँट पीकर रह जाती है। पागलपन और बढता है।

दूकानदार—यह लौडे पूरे शैतान है। बल्कि शैतानके भी बाबा। इनसे शैतान भी पनाह माँगता है।

सदासुख—तो यही निश्चय हुआ, शामको साथ ले जाऊँगा। कही चली तो न जायगी?

दूकानदार—जायेगी कहाँ, यही होगी।

मगर सन्ध्या-समय भगवती वहाँ न थी! सदासुखने सारा शहर छान डाला, सब बाजारोंमे तलाश किया; पर भगवती कही भी न थी। दूसरे दिन गोमतीसे लाश निकली। सदासुखने सिर पीट लिया। मगर कैलास-नाथकी आँखोमे पानी न था। उस दिन उनके यहाँ मित्रोंका निमन्त्रण था। चार बजेके लगभग उधर भगवतीकी लाश जल रही थी, इधर कैलासनाथ अपनी मित्र-मण्डलीके साथ बैठे मुस्करा-मुस्कराकर चाय पी रहे थे।

८

मगर परमेश्वरके यहाँ देर होती है; अन्धेर नही होता। इस बातको अभी दो ही महीने गुजरे होंगे कि कैलासनाथके भाग्यका पाँसा पलट गया। रुपया-पैसा, मकान-दूकान, कारबार सब सट्टेकी भेट हो गया। कल सब कुछ था, आज कुछ भी नही। वह शान, वह अमीरी, वह धन-दौलत सब

जाता रहा। कैलासनाथ परमात्माकी यह लीला देखते थे, और मन मसोस-कर रह जाते थे। वही लखनऊ था, जहाँ कभी ऐंठकर चलते थे। अब उनमे इतना भी साहस न था कि बाजारके बीचमेसे निकल जायँ। वही लखनऊके लोग थे, जो कभी उन्हे सिर-आँखोपर बिठाते थे, अब पहचानते भी नही। यहाँतक कि उनके सम्बन्धी भी उनको देखकर मुँह फेर लेते है। वह डरते है, कि कही कुछ माँग ही न बैठे। ऐश्वर्यका साथ सभी देते है, बुरे दिनोमे कोई पास भी नही फटकता। कैलासनाथ एक दिन गोमतीके किनारे जाकर बहुत देरतक रोते रहे। सोचते रहे, इस विशाल संसारमे मेरे लिए कोई आश्रय नही। परायोकी इस दुनियामे उनका अपना कोई भी न था, जिससे वे सहायता माँगते। इस समय उनको अभागिनी भगवती याद आयी। अगर आज वह जीती होती, तो क्या वह भी उनको इस तरह अकेला छोड़ देती? कभी नही। यह उसके लिए असम्भव था। वह ऐसा नही कर सकती थी। यह उसके स्वभावके विपरीत था। वह जब मरी थी, उस दिन कैलासनाथकी आँखोसे आँसूकी एक बूँद भी न गिरी थी, आज उसकी यादने उनको लहूके आँसू रुला दिया। आज उनको अपने आत्माकी गहराईमे उस अभावका अनुभव हुआ, जिसे ससारके सारे खजाने भी पूर्ण करनेमे असमर्थ हैं। दुर्भाग्यकी इस अँधेरी रातमे गोमतीके शून्य किनारे बैठकर रोते हुए कैलासनाथको बहुत दूर फासलेपर आशाका दिया जलता हुआ नजर आया। उनपर भावुकताकी मस्ती छा गयी। वे उठकर खड़े हो गये और उस प्रकाशकी तरफ लपककर चले।

कोई दो महीने बाद वे बैजनाथमे सदासुखकी झोपडीके सामने खड़े थे।

रातका समय था। झोपड़ीमे एक कुप्पी जल रही थी। अन्दर जाकर उनकी थकान, उदासी, निराशाका अन्त हो जाता, मगर उनमे अन्दर जानेका साहस न था। मुसाफिरने सैकड़ो कोसका सफर पैदल तय किया, और हिम्मत न हारी, मगर इस समय उसमे चार पग चलनेका भी बल न था। झोपड़ीका दीपक जल रहा था, मगर आशाका दीपक न जाने

कहाँ छिप गया था। वे आशाकी नीदमे यहाँतक चले आये थे मगर यहाँ पहुँचकर उनकी नीद खुल गयी और आशाका सपना समाप्त हो गया। अब फिर वही अँधेरा था, वही घोर निराशा। कैलासनाथ सोचने लगे— मै भी कैसा मूर्ख हूँ, जो बिना सोचे-समझे यहाँ चला आया। इतना भी न सोचा कि सदासुखके सामने यह काला मुँह लेकर कैसे जा सकूँगा? वे लाख भले हो, मगर मुझे देखकर जरूर ही मुँह फेर लेगे, सीधे मुँह बात भी न करेगे। शायद धक्के देकर निकाल दे, कहे—मेरे यहाँ तुझ जैसे पाषाण-हृदय आदमीके लिए स्थान नही। हाय अफसोस, मै यहाँ क्यों आया?

घरसे दूर, आधी रातके भयानक अँधेरेमे कैलासनाथने चारों तरफ आँखे फाड़-फाड़कर देखा, मगर कोई आश्रयका स्थान दिखाई न दिया। सवा साल पहले भी वे यहाँ आये थे, मगर उस आनेमें और इस आनेमे आकाश-पातालका अन्तर था। उस समय यहाँ उनके प्राण बसते थे; यहाँ भगवतीको देखकर उनका हृदय खिल उठा था। कदाचित् वे उसे लेकर यहाँ चले आते और दुनियाके कोलाहलसे दूर, बिरादरीके झगड़ोसे बाहर एक शान्ति-कुटीर बना लेते, तो उनके पवित्र आनन्दमय जीवनको देवता भी लोभ-भरी दृष्टिसे देखते! मगर अब... उनकी सोनेकी लका जल चुकी थी। उनको बोध हुआ, मगर कब? जब तीर कमानसे निकल चुका था, जब उनके वशमे कुछ न रह गया था। कैलासनाथका दिल बैठ गया। सहसा उनके पाँव काँपने लगे, और उनका शारीरिक बल जवाब देने लगा। उनको अपनी देह गिरती-सी मालूम हुई। वे लड़खड़ाते हुए दरवाजेकी तरफ बढ़े, मगर वहाँतक पहुँचने भी न पाये थे कि अचेत होकर गिर पड़े।

और उनके चारों तरफ आधी रातका अँधेरा था, पहाडकी सरदी थी, और परदेशकी बेगानगी थी।

जब उनको होश आया, तो उनके सामने सदासुख बैठे थे। कैलास-नाथने उनकी तरफ देखा और हैरान रह गये। यह आदमी कितना शुद्धात्मा, कितना उदारहृदय, कितना शान्तस्वभाव है। कैलासनाथने

देखा—उनकी ऑखोमे जरा भी रोष नही, मुँहपर जरा भी मैल नहीं। सदासुख उनकी तरफ प्यारसे देख रहे थे, और यह वह आदमी था, जिसने उनकी बेटीकी हत्या की थी। उफ, किस दर्जेकी क्षमा है। मगर शायद उन्होने मुझे पहचाना ही न हो। जरूर यही बात है। मेरी शक्ल-सूरत कुछ ऐसी बदल गयी कि मेरी मॉ देखे, तो वह भी न पहचान सके। उन्होने तो मुझे केवल एक ही बार देखा है। कैलासनाथने ऑखे बन्द कर लीं, और परिस्थितिपर विचार करने लगे। बहुत समय बाद खुशी आयी थी, एक झलक दिखाकर फिर गायब हो गयी।

सदासुखने कैलासनाथके सिरपर हाथ फेरा, और कहा—अब तुम्हारा जी कैसा है?

अरे, यह तो वही प्यारकी आवाज है, वही मीठे शब्द है, मनको मोह लेनेवाला वही लहजा, जरा भी रुखाई नही, जरा भी क्रोध नही। कैलासनाथको पहले सन्देह था, अब विश्वास हो गया, कि जरूर नही पहचाना, वरना मेरे समान पापीके भाग्यमे ये शब्द कहॉ? कैलासनाथ तिलमिलाकर उठ बैठे और पागलोकी तरह बोले—आपने मुझे अभीतक नही पहचाना।

सदासुखने उन्हे कन्धोसे पकड़कर चारपाईपर लिटा दिया और मुस्कराकर कहा—आरामसे लेटे रहो। मेरी ऑखे ऐसी नही कि किसीको एक बार देखकर भूल जायॅ।

कैलासनाथका कलेजा धकधक करने लगा। बोले—महाराज, मैं कैलासनाथ हूँ।

सदासुख—मैने देखते ही पहचान लिया था।

कैलासनाथ—फिर भी आपने मुझे उठाया, मेरी सेवा की, मुझे दवा दी। आपने मुझे बाहर क्यो न फेक दिया? पड़ा-पड़ा मर जाता।

सदासुख—भगवानका नाम लो। जीवन ऐसी तुच्छ चीज नहीं।

कैलासनाथ—अब जीकर क्या करूँगा? जब दिलमे कोई आशा

नहीं, तो जीवन किस कामका ? अब तो भगवान् मौत दे दें तो जी जाऊँ ?

सदासुख थोड़ी देरके लिए चुप हो गये, इसके बाद बोले—इतनी निराशा क्यो ?

कैलासनाथ—निराशा न हो, तो और क्या हो। अब मेरा दुनियामे कौन है ?

सदासुख—भगवान् तो है।

उत्तरमे कैलासनाथके मुँहसे एक भी शब्द न निकला। हॉ, ऑखोंसे ऑसू बहने लगे और इतना ही नही, मनस्तापके कारण उनकी सारी देहसे पसीना छूटने लगा।

रो-रोकर उनको नीद आ गयी! सदासुखने शान्तिकी सॉस ली। एक आदमीने, जो उनके पास ही बैठा था, धीरेसे पूछा—यह भगवतीका पति तो नहीं ?

सदासुख—वही है। तुमने खूब पहचाना।

उस आदमीने आश्चर्यसे सदासुखकी तरफ देखा और कहा—और आप इसकी सेवा कर रहे है! आपकी जगह मैं होता, तो इसे जूते मार कर बाहर निकाल देता। अन्धेर परमात्माका। ऐसा बदचलन—ऐसा जालिम—ऐसा शैतान—

सदासुख—यह देखना मेरा काम नही। मेरा कर्त्तव्य सेवा करना है। जो मेरे द्वारपर आ गया, मै उसका सेवक हूँ। चाहे वह कैसा भी बुरा क्यो न हो। हॉ, मेरे झोपड़ेमे उसे पाप-कर्मकी आज्ञा न होगी।

उस आदमीने देखा कि वह किसी देवताके सामने खड़ा है। वह देवता इस पतित, गिरी हुई, पापमे फँसी हुई दुनियासे बहुत ऊँचा है। उसका आदर्श उज्ज्वल, पवित्र, अनुपम है। उसके दिलमे श्रद्धाके भाव लहरें मारने लगे, उसकी ऑखोमे पानी भर आया।

सदासुखका झोंपड़ा बैजनाथमे आज भी खड़ा है। उसके पास ही

उनकी समाधि है। उनके एक श्रद्धालुने वहाँ सदाव्रत खुलवा दिया है। वहाँ गरीबोंको आज भी भोजन मिलता है। मगर जो बात सदासुखके जीवन-कालमें थी, वह अब कहाँ? उस समय इस झोपड़ेकी शोभा ही कुछ और थी।